



राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग-१



# राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण

भाग-१

डॉ० नारायणसिंह भाट्टी

निदेशक

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

प्रकाशक :  
राजस्थानी ग्रन्थागार,  
सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

संस्करण : १९८६

सर्वाधिकार : डॉ० नारायणसिंह भाटी

मूल्य : चार सौ रुपये (तीन खण्डों के)

मुद्रक :  
भारत प्रिण्टर्स,  
जोधपुर

## प्रस्तावना

राजस्थान के ऐतिहासिक स्रोतों सम्बन्धी सामग्री का बहुत बड़ा भाग यहां के विभिन्न ग्रंथागारों में बिखरा हुआ मिलता है। राजस्थान के भूतपूर्व रजवाड़ों के पास प्रायः उनका निजी संग्रह हुआ करता था जिनमें उस वंश से सम्बन्धित ख्यात, बातें तथा काव्यग्रंथ आदि रखे जाते थे। इसके अलावा राजकार्य से सम्बन्धित रेकार्ड भी हुआ करता था जिसकी अलग व्यवस्था होती थी। स्वाधीनता के पश्चात राजकार्य से सम्बन्धित अधिकांश रेकार्ड राजस्थान पुरालेखागार बीकानेर में राज्य-सरकार ने संग्रहीत करवा दिया। परन्तु विभिन्न रियासतों के अलावा बड़े ठिकानों में भी यह रेकार्ड बड़ी तादाद में सुरक्षित था, उसका कुछ ही भाग बीकानेर अभिलेखागार में पहुंच पाया। जहां तक राजघरानों के निजी संग्रहों का प्रश्न है जयपुर के पोथीखाने, जोधपुर के महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, बीकानेर की अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, उदयपुर का सरस्वती मण्डार आदि से इतिहासज्ञ परिचित हैं। क्योंकि इनका आंशिक उपयोग कर्नल टाड, कर्नल पाउलेट, डा० एल० पी० टेसीटरी तथा गौरीशंकर हीराचंद जैसे कुछ विद्वानों ने किया था। परन्तु इसके अलावा निजी संग्रहों में भी बड़ी महत्वपूर्ण सामग्री विद्यमान है। राजस्थान सरकार ने इस सामग्री को नष्ट होने से बचाने के लिए जोधपुर में राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना की तथा कलान्तर में उसकी कई शाखाएँ भी विभिन्न स्थानों पर खोली जिनमें कुल मिलाकर करीब दो लाख साहित्यिक व ऐतिहासिक कृतियां संग्रहीत की जा चुकी है। इसके अलावा स्वाधीनता के पश्चात राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, साहित्य

उदयपुर, अभय जैन ग्रंथालय वीकानेर, विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान वीकानेर, हाड़ौती शोध संस्थान कोटा, प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर जैसी कुछ महत्वपूर्ण निजी संस्थायें भी स्थापित हुईं, जिनमें अच्छी संख्या में इतिहास की उपयोगी सामग्री संग्रहीत की गयी है। इन संग्रहों का केटलागिंग का कार्य अभी अधूरा ही है तथा जो भी केटलाग बने हैं उससे उन कृतियों की उपयोगिता का पूरा पता लगाना कठिन है। ऐसी स्थिति में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिपद का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और उसके निदेशक ने मुझे बुलाकर राजस्थान के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों के सर्वेक्षण के बारे में विचार-विमर्श किया तथा मेरे निर्देशन में एक प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया जिसके अन्तर्गत सब से पहले जोधपुर स्थित संग्रहों का सर्वेक्षण करना अभीष्ट था। यह कार्य जितना महत्वपूर्ण था उतना ही दुष्कर भी, क्योंकि इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु हजारों ग्रंथों में से कुछ ग्रंथों को छांटना और फिर उनका अध्ययन करने के बाद सार रूप में ऐतिहासिक सामग्री को प्रस्तुत करना बड़ा श्रम-साध्य और सूक्ष्म-सूक्ष्म का कार्य है।

इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु सबसे पहले सर्वेक्षकों की नियुक्ति की गयी और उनको प्राचीन ग्रंथों को पढ़ने एवं उसमें से इच्छित सामग्री नोट करने की ट्रेनिंग देने में भी काफी समय लगा। इस सर्वेक्षण में सबसे पहले राजस्थानी शोध संस्थान के संग्रह का कार्य हाथ में लिया गया, तत्पश्चात् राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश फोर्ट जोधपुर और फिर निजी संग्रहों को भी हाथ में लिया गया।

सर्वेक्षण के प्रथम भाग में ख्यात, बात, वंशावली, वचनिका जैसे गद्यात्मक ग्रंथों के अलावा कुछ रासो, रूपक, विलास आदि काव्य भी लिये गये हैं। अलग-अलग ढंग से लिखी गई मारवाड़ से सम्बन्धित अनेक ख्यातें मिलती हैं। प्रत्येक ख्यात में सामान्य जानकारी के अलावा कुछ न कुछ नई सामग्री भी देखने में आती है क्योंकि उनमें ख्यातकार का निजी दृष्टिकोण भी परिलक्षित है। ख्यातों की तरह वंशावलियां भी इतिहास की महत्वपूर्ण साधन-सामग्री हैं। कुछ वंशावलियां ख्यात की ही तरह विस्तृत हैं तो कुछ संक्षेप में वंश विशेष का विवरण प्रस्तुत करती हैं। राठौड़ों की वंशावली के अतिरिक्त हाडो, गौड़ो, कछवाहों चंद्रवंशियों, चौहानों, नाथों, जैनियों आदि की वंशावलियां इस दृष्टि से उपयोगी हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ऐतिहासिक बातें व ठिकानों की ख्यातों को भी लिया

गया है। ऐतिहासिक बातों में तत्कालीन समाज और मान्यताओं का भी बड़ा जीवन्त चित्रण मिलता है।

दूसरे अध्याय में विगत, हाल, हकीकत से सम्बन्धित ग्रंथ है। यह अपने ढंग की विशिष्ट सामग्री है जो अनेक प्रकार की स्फुट परन्तु उपयोगी सामग्री से अवगत कराती है। इसमें जैनियों के गद्य व गोत्र, ओहदेदारों की विगत, जोधपुर रं नीवारणों की विगत, कायस्थों की खांपों तथा कुछ वीर काव्यों जैसी अछूती सामग्री को पहली बार प्रकाश में लाया गया है।

तीसरे अध्याय में कुछ विशिष्ट काव्य-ग्रंथों का परिचय है जो तत्कालीन इतिहास की जानकारी के प्रमुख श्रोत हैं और जिनका अध्ययन संस्कृति की जानकारी के लिये भी अपेक्षित है।

इस प्रकार प्रथम भाग में कुल १३३ ग्रंथों का विवरण महत्वपूर्ण उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण छांटते समय उनकी उपयोगिता को ध्यान में रखा गया है। पूरा प्रयास किया गया है कि तथ्य व उदाहरण शुद्ध रूप में प्रस्तुत किये जावें फिर भी त्रुटि होना असंभव नहीं है। अतः ऐसी भूलों के लिये विज्ञ पाठक हमें क्षमा करेंगे।

इस भाग के सर्वेक्षण कार्य को सम्पन्न करने में प्रोजेक्ट के गवर्नर हुकमसिंह भाटी ने विशेष योगदान दिया है। हजारों ग्रंथों में से उपयोगी ग्रंथों को छांटने तथा उनमें से महत्वपूर्ण सामग्री निकालने का कार्य उसने बड़ी दिलचस्पी से सीखा जिसके फलस्वरूप दुरुह तथा अस्पष्ट पांडुलिपियों सम्बन्धी जानकारी भी उसने सीमित समय में ही प्राप्त करली और ख्यात तथा वंशावलियों जैसे विशाल ग्रंथों का सारांश भी वह बड़ी योग्यता के साथ ग्रहण कर सका। अतः उसे मैं आशीर्वाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में ऐतिहासिक ग्रंथों के सम्पादन व लेखन में भी उसे कुशलता प्राप्त होगी।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद से इस प्रोजेक्ट को स्वीकृत कराने तथा उसकी रूपरेखा बनाने में प्रसिद्ध इतिहासविद् प्रो० शतीशचन्द्रजी (पूर्व अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) का विशेष सहयोग रहा है, साथ ही उनसे समय समय पर प्रोत्साहन भी मिलता रहा है, जिसके लिये मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ। परिषद के तत्कालीन निदेशक प्रोफेसर बी० आर० श्रोवर तथा अन्य



अधिकारियों के सहयोग के लिये भी मैं आभारी हूँ । यह सर्वेक्षण कार्य तीन भागों में कई वर्षों पहले सम्पन्न करके मैंने परिपद को भेज दिया था परन्तु इनके प्रकाशन की व्यवस्था परिपद के स्तर पर तत्काल सम्भव नहीं हो सकी थी ।

परिपद के वर्तमान अध्यक्ष प्रोफेसर इरफान हबीब तथा निदेशक डा० टी० आर० सरिन ने इस कार्य के महत्व को समझते हुए सर्वेक्षण के तीनों भागों के लिये परिपद से आर्थिक अनुदान स्वीकृत कराया जिससे यह सामग्री अनुसन्धानकर्ताओं तक पहुँच रही है, अतः मैं उनका कृतज्ञ हूँ ।

—नारायणसिंह भाटी

## विषय सूची

### पहला अध्याय

#### ख्यात, बात, वंशावली व वचनिका आदि

१. महाराजा अमर्यासिंह की ख्यात                      ...                      ....                      १  
 (क) महाराजा अमर्यासिंह, बख्तसिंह, रामसिंह, विजयसिंह तथा भीमसिंह  
 का वृत्तांत १, (ख) राठौड़ों की खांप १, (ग) कूपावती की खांप १
२. मारवाड़ की ख्यात                      ....                      ....                      २
३. राठौड़ों की वंशावली तथा ख्यात                      ....                      ....                      ४  
 (१) राव सीहा से राव रिड़मल तक का वर्णन ५, (२) राव जोधा, सातल  
 ५, मूजा का वृत्तांत ५, (३) मालदेव का वर्णन ५, (४) राव चन्द्रसेन का  
 वर्णन ६, (५) मोटाराजा उदर्यासिंह का वर्णन ६, (६) महाराजा सूरसिंह  
 तथा गजसिंह का वर्णन ६, (७) महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत ७,  
 (८) महाराजा अजीतसिंह का वर्णन ८, (९) महाराजा अमर्यासिंह व बख्त  
 सिंह का वर्णन ८, (१०) महाराजा रामसिंह व बख्तसिंह का वर्णन ८,  
 (११) महाराजा विजयसिंह का वर्णन १०, (१२) महाराजा भीमसिंह व  
 मानसिंह का वर्णन १०
४. राठौड़ों की ख्यात वंशावली आदि                      ....                      ....                      १०  
 (१) ईडर राठौड़ों की पीढ़ियां १०, (२) बीकानेर राठौड़ों की पीढ़ियां १०,  
 (३) जोधपुर राठौड़ों की वंशावली ११, (४) चौहान पृथ्वीराज ११, (५)  
 राठौड़ों की ख्यात ११, (क) राव सीहा का वृत्तांत ११, (ख) राव आस्थान  
 का वृत्तांत १२, (ग) राव घुहड़ का वृत्तांत १२, (घ) राव रायपाल का  
 वृत्तांत १२, (ङ) राव कन्हपाल का वृत्तांत १२, (च) राव जालणसी का  
 वृत्तांत १२, (छ) राव छाडा, टीडा का वृत्तांत १३, (ज) राव सलखा,

मलीनाथ और वीरम का वृत्तांत १३, (भ) राव चूंडा का वृत्तांत १३, (ज) राव कान्हा, सता का वृत्तांत १३, (त) राव रिड़मल का वृत्तांत १३, (थ) राव जोधा का वृत्तांत १४, (द) सातल व सूजा का वृत्तांत १४, (घ) राव गंगा का वृत्तांत १४, (न) राव मालदेव का वृत्तांत १४, (प) राव चन्द्रसेन का वृत्तांत १४, (फ) मोटा राजा उदयसिंह का वृत्तांत १५, (ब) सूरसिंह का वृत्तांत १५, (भ) गर्जसिंह का वृत्तांत १५, (म) अमरसिंह का वृत्तांत १५, (य) जसवंतसिंह का वृत्तांत १६, (र) मेड़ते परगने की बात १६, (ल) महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) की ख्यात १६, (व) महाराजा अजीतसिंह १७, (श) महाराजा अभयसिंह का वृत्तांत १६, (ष) महाराजा रामसिंह, बख्तसिंह का वृत्तांत २१, (स) महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत २२, (६) किशनगढ़ राजावां की पीढिया २३, (७) राठौड़ों की वंशावली २३, साय दानेसर २३

५. राठौड़ों की ख्यात वंशावली आदि ... २४

(१) जयचंद तथा सीहा का वृत्तांत २४, (२) राव आस्थान, ब्रूहड, रायमल आदि का वृत्तांत २५, (३) राव जोधा और गंगा का वृत्तांत २५, (४) शाहजहा के उमरावों के मनसब की विगत २५, (५) राव मालदेव का वृत्तांत २५, (६) राव चन्द्रसेन का वृत्तांत २५, (७) मोटा राजा उदयसिंह २५, (८) महाराजा सूरसिंह का वृत्तांत २६, (९) महाराजा गर्जसिंह का वृत्तांत २६, (१०) महाराजा जसवन्तसिंह का वृत्तांत २६, (११) महाराजा अजीतसिंह का वृत्तांत २६, (१२) राठौड़ अमरसिंह का वृत्तांत २७, (१३) बीकानेर के राजाओं का संक्षिप्त विवरण २७, (१४) राजाओं उमरावों का वृत्तांत २७, (१५) गहलोतों की वंशावली २७, (१६) कछवाहों की वंशावली २७, (१७) देवड़ा की वंशावली २७, (१८) भाटियों की वंशावली २८, (१९) हाडा चौहानों की वंशावली २८, (२०) बादशाही मनसब इत्यादि की विगत २८, (२१) पैडा रा कोस की विगत २८, (२२) दिल्ली के बादशाहों की वंशावली २८, (२३) सिरौही के शासक गर्जसिंह द्वारा वीर समाप्त करने का हाल २८, (२४) कान्हड़दे का वृत्तांत २६

६. जोधपुर राज्य का बस्तूर, कुटकर ख्यात आदि ... २६

(१) अरजो २६, (२) जोधपुर राजा रा बस्तूर २६, (३) जोधपुर की चारों की विगत ३०, (४) दिल्ली रा पाननाह मुगलों रा घराणा की ख्यात ३०.

हुमायूँ से सम्बन्धित एक रोचक वार्ता ३० (५) फुटकर ख्यात की बातों ३१, (६) कमठों नै नीवाणों की विगत ३४, (७) सैर वसिया तिण री याद ३४, (८) डावी नै जीवणी मिसलां री विगत ३४

७. बात ख्यात तथा अजीत विलास ..... ३४
- (१) सिध की विगत ३४, (२) भुटत री ख्यात ३५, (३) जमी धूजण री बात ३५, (४) सर्व संग्रहध्याति ३५, (५) अखतार हुवा तीणरी विगत ३६, (६) अठारै पुराण ३६, (७) दादूजी रै सिपां रा नाम ३६, (८) ग्रंथों री याद ३६, (९) उप पुराण ३६, (१०) फुटकर ग्रंथ ३६, (११) दुर्गादास का वृत्तांत ३६, (१२) कवित्त उदावतां री खाप री ३७, (१३) वंशावलिया ३७, (१४) महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) रिजक पावे तिण री विगत ३७, (१५) राजवंशों री सापाओं री विगत ३७, (क) गहलोत ३७, (ख) परमार ३७, (ग) चौहान ३८, (घ) सोलंकी ३८, (१६) मेवाड रै धणी रै परगना री विगत ३८, (१७) राव रत्नसिंह री बाकी ३८, (१८) गढ़ सहर बसायी री विगत ३८, (१९) राजकुलां रा उत्तन ३८, (२०) महाराजा जसवंतसिंह का गीत बारठ सांभो गांव रेपडावास री कहे ३९, (२१) महाराजा जसवन्तसिंह व हाडी रानी ३९, (२२) महाराज अभयसिंह सरबुलदखां रै राड री वणंन ३९, (२३) कुरख इनायत री याददास्त ३९, (२४) जोधपुर ओदादारां री याददास्त ४०, (२५) राठोड़ों री पापो री याददास्त ४०, (२६) गढ़ जोधपुर निवाणों री याददास्त ४०, (२७) राठोड़ों री पापों री याददास्त ४०, प्रथम जोधां री पापां ४०, (२८) पातसाही चाकर भा० जसवन्त सिंह रा चाकर काम आया तिण री विगत ४०, (२९) पातसाहो री ख्यात ४१, (३०) दिल्ली राजा पातसाह हुवा जिण री ख्यात ४१, (३१) बात परगने जोधपुर री ४१, (३२) अजीत विलास ४१, (३३) महाराजा अभयसिंह बखतसिंह रै राज री बात ४१, (अ) अभयसिंह द्वारा बादशाह से ईडर राज्य प्राप्त करना ४१, (ब) अभयसिंह का राज्याभिषेक और नागीर से इन्द्रसिंह को निकाल कर बखतसिंह को वहाँ रखना ४१, (स) मंडारी रघुनाथ को कैद में डालना ४१, (द) अहमदाबाद के आक्रमण का हाल ४२, (घ) महाराजा अभयसिंह की बीकानेर पर चढाई ४२, (न) अभयसिंह द्वारा फिर बीकानेर पर चढाई करना ४३, (प) बादशाह द्वारा बखतसिंह विर्जेसिंह को सिरपाव ४३, (फ) रामसिंह व बखतसिंह में उत्तराधिकार के लिए झगड़ा ४३, (य) महाराजा द्वारा जगनाथ पुरोहित

को खास रुका ४३, (भ) बखतसिंह की फलीधी पर चढाई ४३, (३४) भोसवालों में लोढा हुवा जा की ख्यात ४४

८. ख्यात बात संग्रह .... ४४

(१) पटीयाला रा जाट कोम सिधु तिण री ख्यात ४४, (२) राठोडों री ख्यात ४५, (३) पोकरणा बीरामण री उतपत ४५, (४) परगने जालोर री हाल ४५, (५) परगने डोडवाने री हाल ४६, (६) परगने भीनमाल री हाल ४६, (७) परगने मेडते री हाल ४६, (८) परगने सिवांणी री हाल ४६, (९) परगने मारोठ री हाल ४६, (१०) परगने सांचोर री बात ४७, (११) राठोडों री परवार री वशावली ४७, (१२) पंवारों री वंश री ख्यात ४७, (१३) खीचिया री ख्यात ४४

९. ख्यात ठिकाना रायपुर .... ४८

१ राव सूजा के कंबरो की विगत आदि ४८, (२) राव ऊदा का वृत्तांत ४८, (३) ऊदा के पुत्र खीवकरण का वृत्तांत ४९, (४) मालदेव का शेरशाह से युद्ध ४९, (५) राव रत्नसिंह खीवकरणोत का वृत्तांत ५०, (६) कल्याणसिंघ रतनसिंघोत का वृत्तांत ५०, (७) रायपुर के स्वामी राजसिंह का वृत्तांत ५०, (८) हिरदेनारायण और महाराजा भजीतसिंह का वृत्तांत ५१, (९) रायपुर के अन्य ठाकुरों का वृत्तांत ५१

१०. भाटियों तुंवरों री ख्यात अर जोधपुर रा रीत किरियावर .... ५२

(१) भाटी देरीया री ख्यात, जालड ५३, (२) बीकमकोर री ख्यात ५३, (३) गाजू री भाटियों री ख्यात ५३, (४) भोसा रा भाटियों री ख्यात ५४, (५) ठीकाणा कलाणपुर, चौहान ५४, (६) महाराजा गजसिंह री समै रा रीत किरियावर ५४, (७) महाराजा सूरसिंह री समै रा रीत किरियावर ५५, (८) महाराजा जसवंतसिंह की रानी जसवंत हाडी नै राणी पदो दिया री विगत ५५, (९) महाराजा विजैसिंघजी री राजलोकों री विगत ५५, (१०) तुंवरों री ख्यात ५६, (११) फुटकर ख्यात (संत) पुरसों री ५७

११. बोकानेर री ख्यात ... ५७

(क) राजा सुजानसिंह ५७, (ख) जोरावरसिंह ५९, (ग) राजा सूरतसिंह ६०, (घ) राजा रत्नसिंह ६१

१२. ख्यात बात संग्रह .... ६२

१३.	ख्यात बात संप्रह	....	...	...	६३
१४.	राठीड़ों की तबारीस	...	...	...	६४
१५.	नंगसी की ख्यात की नकल	....	....	...	६५
१६.	राजपूतों की ख्यात	..	..	...	६५
१७.	बांकीदास की ख्यात	..	..	...	६६
१८.	फुटकर बातों की विगत	....	....	...	६८
१९.	बीकानेर की ख्यात	....	....	...	६९
	(१) बीका जोधावत की वार्ता ७०				
२०.	फतेपुर का इतिहास	...	...	...	७०
२१.	ख्यात बात संप्रह	....	....	...	७२
	(१) राव उदौ भूजावत रिणमल्लोत रा परवार की विगत ७२, (२) ईंहर की ख्यात ७२, (३) बात बुंदेलों की घरतों की ७३. (४) बात मेवाड की ७३, (५) राठीड़ों की वंशावली ७३				
२२.	मालदेव की ख्यात	..	....	...	७३
२३.	राव रायपाल से राव गांगा तक की ख्यात	...	...	...	७४
	(१) राव रायपालजी की ख्यात ७४				
२४.	राव मालदेव की ख्यात	....	..	....	७४
२५.	राव चंद्रसेन की ख्यात	....	....	..	७५
२६.	महाराजा उदयसिंह की ख्यात	....	....	..	७५
२७.	गर्जसिंह की ख्यात	....	..	....	७५
२८.	जसवन्तसिंह की ख्यात	....	..	..	७७
	(१) चारणों को दिये ७७, (२) हाथी दीया देश में था सो वहा दीराया तफसील ७७, (३) लाख पसाव चारणों को सिरपाव और रुपिया दिया ७७, (४) पाषां दीवी ७७				
२९.	महाराजा अजीतसिंह की ख्यात	....	..	..	७८
३०.	अजीतसिंहजी की ख्यात	..	..	..	७८
३१.	अजीतसिंह की ख्यात	....	..	..	७९

३२. महाराजा भ्रजीतसिंह की ख्यात ... .. ८०
३३. घांधलों की ख्यात, जैतावतों की ख्यात तथा मुजाणसिंघ माघोसिंघोत की विगत .. .. ८२  
 (अ) घांधलों की ख्यात ८२, (आ) जैतावतों की ख्यात ८६, (इ) मुजाणसिंघ माघोसिंघोत की विगत ८७
३४. राव सीहाजी सूं धीरमदेजी तक की तवारीख ... .. ८८  
 (१) किन कारणों से भीनमाल के ब्राह्मणों ने सीहा को बुलाया वर्णित है ८८, (२) मुंदियाड की ख्यात के अनुसार राव सीहा का वृत्तांत ८९, (३) मुरारदान की ख्यात से राव सीहा का वृत्तांत ८९, (४) सीहाजी का विवरण राठीड़ों की वंशावली के अनुसार ८९, (५) सीहाजी का वृत्तांत कोमी हालती की पुस्तक के अनुसार ९०, (६) नीवाज की बही के अनुसार सीहाजी का वृत्तांत ९०, (७) 'नैणसी की ख्यात' के अनुसार सीहाजी का वृत्तांत ९०, (८) 'मंडारी किशनमल की बही' से सीहाजी का विवरण ९०, (९) 'मुंदियाड व प्रयागदास की ख्यात' से सीहाजी का वृत्तांत ९०, (१०) राव आसथान का वृत्तांत ९०, (११) राव सीहा का वृत्तांत ९१, (१२) पाबू तथा धूहड़ का वृत्तांत ९१, (१३) राव रामपाल का वृत्तांत ९१, (१४) कान्हपाल का वृत्तांत ९१, (१५) राव जालणसी का वृत्तांत ९१
३५. महाराजा अमर्यासिंह की ख्यात ... .. ९२
३६. महाराजा अमर्यासिंह की ख्यात ... .. ९७
३७. महाराजा विजयसिंह की ख्यात ... .. ९७
३८. महाराजा भीमसिंहजी की ख्यात ... .. १००
३९. महाराजा तखतसिंह की ख्यात ... .. १०२
४०. तखतसिंह की ख्यात ... .. १११
४१. मुरारीदानजी की ख्यात ... .. ११२  
 ख्यात की विशेषताएँ ११२, (१) सीहा का वृत्तांत ११२, (२) राव आसथान का वृत्तांत ११३, (३) राव धूहड़ का वृत्तांत ११३, (४) रामपाल का वृत्तांत ११३, (५) राव जालणसी का वृत्तांत ११३, (६) राव छाढा का वृत्तांत ११४, (७) राव तोडा का वृत्तांत ११४, (८) राव माला का वृत्तांत ११४, (९) राव धीरम का वृत्तांत ११४, (१०) राव

चूडा का वृत्तान्त ११५. (११) चूडा के पुत्रों का हाल ११५, (१२) राव रिद्धमल तथा जोधा का वृत्तान्त ११५. (१३) इसी प्रकार जोधा के पुत्र माणल व मूजा का वृत्तान्त दिया है ११५, (१४) राव मया का वृत्तान्त ११६. (१५) महाराज गजसिंह का वृत्तान्त ११६. (१६) महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तान्त ११७. (१७) भाटी मवलसिंह पृथ्वीराजोत्त का वृत्तान्त ११७. (१८) भ्रमरसिंह के पुत्र रायसिंह व पीन द्रुमसिंह का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक दिया है ११७ (१९) मालदेव का वृत्तान्त ११८, (२०) चंद्रसेन का वृत्तान्त ११८. (२१) मोटा राजा उदयसिंह का वृत्तान्त ११८. (२२) महाराजा मूरसिंह का वृत्तान्त ११९, (२३) गजसिंह का वृत्तान्त १२०, (अ) राव बीका के वंशजों का हाल १२०, (ब) राव मालदेव के वंशजों का हाल १२०, (१) मोटा राजा उदयसिंह १२०, (२) राव गम १२०, (३) राव चंद्रसेन १२०. (४) राममल १२१, (५) रतनमी १२१, (६) भाण १२१, (७) भोजराज १२१, (८) विक्रमादित्य १२१, (९) महेश १२१, (१०) तीलोक्ष्मी १२१, (११) पृथ्वीराज १२१, (१२) भासकरण १२१, (१३) गोपालदास १२१, (१४) झुगरसी १२१, (१५) लखमीदास १२१, (१६) रूपसी १२१, (१७) तेजमी १२१, (१८) ठाकुरसी १२१, (१९) इसरदास १२१, (२०) जैतसी १२१, (२१) जंतमाल १२१, (स) राव गांगा के वंशजों का हाल १२१, (१) मानसिंह १२१, (२) किसनदाम १२१, (३) वंरसल १२१, (४) कान्हा १२१, (५) सादुल १२२, (६) बाघा के वंशजों का हाल १२२, (१) चांपावत राठोड १२२, (२) उदावत राठोड १२२, (३) भेड़सिया राठोड १२२

४२. मुरारदान की ख्यात .... ' .... १२२

४३. राठोडों की ख्यात .... ' .... १२४

(१) राव रिद्धमल का वृत्तान्त १२५, (२) राव जोधा से मंगा तक हाल १२५, (३) मालदेव का वृत्तान्त १२६, (४) चंद्रसेन का वृत्तान्त १२६, (५) उदयसिंह का वृत्तान्त १२७, (६) मूरसिंह का वृत्तान्त १२७, (७) गजसिंह का वृत्तान्त १२८, (८) जसवंतसिंह का वृत्तान्त १२८, (९) महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तान्त श्रीर दुर्गादास १२८, (१०) महाराजा अभयसिंह का वृत्तान्त १२९, (११) महाराजा रामसिंह का वृत्तान्त १३०, (१२) महाराजा बखतसिंह का वृत्तान्त १३०, (१३) महाराजा विजयसिंह वृत्तान्त १३१



४४. राव सोहा सूं घोरमजी तक रयात .... १३१
४५. राठीडों री रयात फुटकर .... १३२
- (१) राठीडों री रयात १३२, (२) कवित्त गीत सग्रह १३२, (क) घोस-  
वालों रा कवित्त १३२, (ख) महाराजा जसवन्तसिंघजी रा छप्पय १३२,  
(ग) गीत राव रीटमलजी नै चीतोड़ चूक हुवो ती ममा री १३३, (घ)  
गीत महाराजा अजीतसिंघ री १३३, (ङ) गीत अर्जुनसिंघजी री गुजरात में  
कहो १३३, (च) गीत (कवित्त) विजैसिंघजी री पटेल आया सूं राड़ कीनी  
(खिडिया हुकमीचन्द कृत) १३३, (छ) गीत खीची गोरधन री १३३,  
(३) वंशावलि १३३, (४) फुटकर गीत कवित्त १३५, (५) महाराजा  
विजयसिंह का वृत्तांत १३५, पासवान की मृत्यु का वृत्तांत १३५, (६)  
महाराजा विजयसिंह रै कमठों री विगत आदि १३६, (७) महाराजा  
भीरसिंह का वृत्तांत १३६, (८) वाडमेर वस्ती री विगत सं १७२० में  
१३६, (९) हकीकत आवेर राजा जैयसिंघजी रै बडो कंवर रामसिंघजी  
री १३६, (१०) वात सेखावतों री १३६, (११) परगनों री विगत १३७,  
(१२) हुमायुं का शेखावतों से युद्ध का वृत्तांत १४७, (१३) हाकम आदि  
के रिजक में बढ़ोतरी का हाल १३७, (१४) महाराजा विजयसिंह के  
मुत्सहियों की विगत १३७, (१५) सहर वसियां री विगत १३८, (१६)  
वीर गीत १३८, (क) गीत १३८, (ख) कवत राव वीरम रा १३८, (ग)  
कवित्त चूंडाजी री १३८, (घ) राजाभो रा दूहा १३८, (ङ) गीत महाराजा  
वल्लतसिंह री (चारण सिंभूदान कृत) १३८, (च) राजा मानधाता री  
कवित्त छप्पय १३८, (छ) वीर विक्रमादित्य री कवित्त १३९, (ज) रावण  
री कवित्त १३९, (झ) महाराजा विजयसिंह री कवित्त १३९, (ञ) राजा  
सालिवाहन री कवित्त १३९
४६. रयात ठिकारणा भौंथड़ा .... १३९
४७. महाराजा गजसिंह, जसवन्तसिंह, अमरसिंह, सूरसिंह री रयात १४२  
(क) महाराजा गजसिंह री रयात १४२, (ख) जसवंतसिंह री रयात १४६  
(ग) अमरसिंह री रयात १४८, (घ) महाराजा सूरसिंह री रयात १४९
४८. कछवाहों री रयात अथवा वंशावली ... १५०  
(१) वंशावली १५०, (२) प्रस्तुत रयात की वंशावली १५०, (३) राजा  
नाकिल और हपुराय १५१, (४) जानड़दे, पवनजी और मलेसीजी १५१.

(५) पीपलजी छोटा भाई सिधणजी और राजदेव जी १५२, (६) केलणजी, कंतलदेव और जैणसी १५२, (७) उदैकरण, नरसिध, वणवीर और उधरणजी १५३, (८) चन्द्रसेन, पृथ्वीराज, भारमल और भगवंतदास १५३, (९) मानसिह और भावसिह १५३, (१०) जयसिह रामसिह १५३, (११) विगनसिह सवाई जयसिह १५४, (१२) ईश्वरसिह और माघोसिह १५५

४९. उम्मेदसिह हाडा की ख्यात .... १५६

५०. कवित्त, वात संग्रह आदि .... १५८

(१) कवित्त राठोड़ भोपत गोपालदासोत री १५८, (२) गीत मुरजमल जैतमालोत री (दुरसा आढा कृत) १५८, (३) अपोइणी मान फौज १५८, (४) राव जोधाजी री वात १५९, (५) लोद्वे जैसलमेर री वार्ता १५९, (६) वात सातलमेर री १६०, (७) ऐतिहासिक बातें १६०

५१. खेजड़ला माताजी री निसांणी तथा अचलदास खीची री वात १६१

(१) पेजड़ला माताजी री निसांणी १६१, (२) अचलदास खीची री वात १६१

५३. वार्ता संग्रह .... १६१

(क) बेताल पचीसी १६२, (ख) महाराजा अजीतसिह री कवित्त १६२

५४. फुटकर गीत बातें इत्यादि .... १६२

(१) गीत जैतसिह चंपावत री १६३, (२) राठोड़ रतनसिह महेसदासोत उजीण खेत काम आया तिणरी वचनिका १६३, (३) राव श्री रिडमलजी री वात १६३, (४) जलाल गहांणी री वात १६३

५५. वार्ता संग्रह इत्यादि .... १६३

(१) राजा रिसालू री वात १६४, (२) सिधासण वत्तीसी १६४, (३) जगदेव परमार री वात १६४

५६. फुटकर बातें दूहे इत्यादि .... १६५

(१) वीरमदे सोनगरे री वात १६५, (२) जलाल गहांणी री वात १६५, (३) बीजा सोरठ री वात १६५, (४) बोला रा दूहा १६६

५७. फुटकर बातें, गीत, प्रेम-पत्र इत्यादि .... १६६

(१) बीजा सोरठ री वात १६६, (२) जलाल गहांणी री वात १६६, (३) दिली रा पातसाहां रा नांव १६६, (४) उदैयपुर री सिमोदिया रा

नांव १६६, (५) राठीबां रा नाम १६७, (६) मांबेर जंपुर रा कच्छवाहां रा नाव १६७, (७) बूंदी रा हाटां रा नांव १६७, (८) भाटी जंसलमेर रा नाम १६७, (९) गीत महाराजा विजयसिंह री (धारण साहबदान कृत) १६७. (१०) गीत महाराजा भजीतसिंह री (अज्ञात कर्तृक) १६७

५८. वार्ता संप्रह ..... १६७  
 (१) मोहन कुमार री वार्ता रा दूहा (कवि जान कृत) १६८, (२) जंतसी उदावत री वार्ता १६८, (३) पनरमी विद्या राजा भोज री वात (भवानी-दास कृत) १६८, (४) अकल री वात १६९, (५) सदैववद्य सार्वलिंगा री वात १६९, (६) गोरा वादिल री वारता कवित्त दूहा १६९, (७) चंदकुंवर री वार्ता १६९, (८) साया फुलांणी री वार्ता १७०, (९) बीरमदे सोनगरे री वार्ता १७०, (१०) रामदास री वार्ता १७०
५९. वात संप्रह इत्यादि ... १७१  
 (१) गंगेव नीवावत री दोपारी १७१, (२) अचलदाम खीची री वात १७२
६०. वात संप्रह.... .. १७२  
 (१) डाढला मूंडण री वात १७२, (२) अचलदास खीची री वात १७२, (३) चादकुमार री वार्ता १७२, (४) चौथ माता री वात १७३, (५) महाराजा भजीतसिंह री सिलोको १७३, (६) सनीसर नं बीरुमादित्त री वात १७४
६१. वात संप्रह आदि ..... १७४  
 (१) अचलदास खीची री वार्ता १७४, (२) रिडमल खावड़िया री वात १७४
६२. बीर गीत, कवित्त तथा वात संप्रह आदि ..... १७५  
 (१) गीत सुरताण देवड़ री (बारट दुरसा कृत) १७५, (२) गीत हायी गोपालदासोत री (दुरसा आढा कृत) १७५, (३) गीत विठलदास चांपावत री १७६, (४) गीत हाडा दुरजनसिंध री (पूरा महीयारीया कृत) १७६, (५) गीत राठीइ रामसिंध करमसेनोत री (गाडण केसवदास कृत) १७६, (६) कवित्त राणो कूंभं रा (बारट राईपाल कृत) १७६, (७) गीत सुरतान देवड़ री १७६, (८) गीत राव अमरसिंध री (ईसरदास के पौत्र कृत) १७६, (९) गीत डूंगरपुर री सीसोदियो री १७६, (१०) गीत राठीइ हरीदास री (ईसर मालावत कृत) १७६, (११) गीत राठीइ रामसिंध

कल्याणमलोट री (पृथ्वीराज राठीइ कृत) १७७, (१२) गीत राठीइ महेसदास दलपतोट री १७७, (१३) गीत रा० ईसरदास नीबावत री (दुरसा कृत) १७७, (१४) गीत दलपत रायसिघोट री काम आयी तिण समे री १७७, (१५) गढ़ मांडियां री विगत नै जोधपुर महाराजाओं की पीडियां १७७, (१६) कवित्त राव चूंडा रै बेटां री १७७, (१७) गीत राव रिणमल रै बेटां री १७७, (१८) गीत राव अमरसिध री १७७, (१९) गीत राजि श्री दलकरनजी री (ईसर के पुत्र कृत) १७८, (२०) वात पातिसाहो सोबां री १७८, (२१) गीत रावल तेजसी महेवचे नु (केसवदास गाइए कृत) १७९, (२२) महाराजा जसवंतसिध रै परगनो रै दांम नै रूपयो री विगत १७९, (२३) अकबर बादशाह सं० १६३९ जेठ आसाढ में जागीरी दीधी रूपईयां मांहे तिणरी नकल १८०, (२४) महाराजा जसवंतसिहजी री जागीरी सं० १७१० रा १८०, (२५) गीत बरसी जगमालोट री १८१, (२६) गीत राजा मूरसिधजी री (दुरसा कृत) १८१, (२७) गीत मुरताण देवडा री (दुरसा कृत) १८१, (२८) वात पातिसाह फिरोजमाह री १८१, (२९) वात पातसाह बहलोल री १८२, (३०) दिल्ली रा तपत राजा पृथ्वीराज चहुवांण पछै पातिसाह हुआ तिणां ज वरस मास दिन पहर घड़ी तपत बैठा तिण री वात १८२, (३१) जोधपुर सों पंधार नुं मुलतांण रै पैडै री राह १८२, (३२) वात बलक रा पतिसाह री १८३, (३३) वात कुंकण देस री १८३, (३४) वात बिजापुर रै पतिसाह री १८३, (३५) वात बूंदेलां री धरती री १८३, (३६) वात गोल बूंडा साहिबी री १८३, (३७) गढ़ मंडिया अर फुटकर घटनाओं री विगत १८४, (३८) गागेव नीबावत री योपारी १८४, (३९) जलाल गाहांणी री वार्ता १८४, (४०) कवित्त उमादे सती रा १८४, (४१) दूहा श्री कृष्णजी रा (राठीइ पृथ्वीराज कृत) १८४, (४२) वात पाटण अणहलवाइ री १८५, (४३) सदयवछ सावलिगा री वार्ता १८६, (४४) दूहा रामचन्द्रजी रा (राठीइ पृथ्वीराज कृत) १८७, (४५) ओसवालों री जाति री विगत १८७, (४६) वात सिघसेन राठीइ री १८७

६३. वार्ता संग्रह ..... १८८

(१) मदन सतक वार्ता १८८, (२) पीवे विजै री वात १८८, (३) चौबोली री वात १८८, (४) दाढ़ाळा री वात १८९, (५) बैताल पचीसी १८९

६४. फुटकर बातें ... .. १६०  
 (१) पलक दरियाव री बात १६०, (२) गीदोली गणगौर में गईजै तिए री बात १६०
६५. फुटकर बात संग्रह .... १६०  
 (१) अचलदास उमा सांखली नै लालां मेवाड़ी री बात १६०, (२) राजा रसालु री बात १६०
६६. पनां री बात कवित्त आदि ... .. १६१  
 (१) राव रतनचंद साहुकार की बेटी पनां री १६१, (२) गीत रतनसिंघ री (खिडिया छत्रा कृत) १६१, (३) गीत बादरसिंघ चापावत री १६२, (४) नव कोटा री कवित्त १६२
६७. वार्ता संग्रह .... १६२  
 (१) जलाल गहाणी री बात १६२, (२) हितोपदेश री कथावां १६३, (३) मधुमालती री चौपाई १६३, (४) जखड़ा मुखड़ा री वार्ता १६३
६८. वार्ता संग्रह .... १६४  
 (१) जगदेव पंवार री वार्ता १६४, (२) राजा भोज माघ पिंडत डोकरी री कथा १६४, (३) चंद कुमार री वार्ता १६४, (४) सदैवच्छ सावलिग री वार्ता १६४, (५) पनरमी विद्या राजा भोज री वार्ता १६५
६९. विक्रमादित्य चौबोली राणी री कथा इत्यादि .... १६५  
 (१) विक्रमादित्य चौबोली राणी री कथा १६५
७०. कथा वार्ता इत्यादि ... .. १६६  
 (१) पना री बात १६६, (२) राव रिणमल खावडीया री बात १६७, (३) कुतबुदीन शाहिजादा री वचनिका १६७
७१. प्रतापसिंह म्होकर्मसिंह हरिसिंघोत री वार्ता आदि .... १६७  
 (१) प्रतापसिंह म्होकर्मसिंह हरिसिंघोत री वार्ता १६७, (२) कवित्त १६८, (३) गीत १६८, (४) सूर सती संवाद (मुहणोत शिवदास कृत) १६८, म्हाराज नागरीदासजी रा वणाया जोसर १६८
७२. अचलदास खींची री बात तथा सकुन शास्त्र आदि .... १६८  
 (१) हितोपदेश पंचाग्यांन १६९, (२) अचलदास खींची री बात १६९, (३) राव श्री मालदेवजी विरचित्त सकुन सास्त्र १६९

७३. ऐतिहासिक बातों का संग्रह .... २००
- (१) मालदेजी की बात २००, (२) राव चन्द्रसेन की बात २०२, (३) बात महाराजा उदैसिंह जी की २०२, (४) बात महाराजा सूरसिंह की २०२, (५) महाराजा अजीतसिंह की बात २०२, (६) बात भाटी केलण की २०२, (७) बात मेड़तीया की २०२, (८) बात सोजत की २०३, (९) ब्रंवावती नगरी की बात २०३, (१०) बात अखैराज रिड़मलोत की २०३, (११) बात तेजसी वरसिंध की २०३, (१२) बात अचळा पंचा-इणोत की २०३, (१३) बात जसवंत तिलोकसीयोत की २०३, (१४) बात राठीड़ तेजसी कूंपावत की २०३, (१५) बात मांडणजी कूंपावत की २०४, (१६) बात राठीड़ देईदास जैतावत की २०४, (१७) बात राव जैतसीजी २०४, (१८) बात राठीड़ खीवा उदावत की २०४, (१९) राठीड़ तेजसी डूंगरसीयोत की बात २०४, (२०) बात राठीड़ जसवंतसिंह जी डूंगरसियोत की २०५, (२१) बात सिवांणा की २०५, (२२) बात राव लखोजी सिरोही राज करै २०५, (२३) बात दीवांण मेवाड़ रा घणीयां की वंसावळी २०६, (२४) बात रांणा रायमलजी की २०६, (२५) राणां रतनसीजी की बात २०७, (२६) बात रांणे लाखेजी २०७, (२७) विगत मागळीयां की २०७. (२८) विगत घनीस राजकुळ की २०७, (क) सूर्यवंशी २०७, (ख) चन्द्रवंशी २०८, (ग) अगनवंशी २०८, (२९) घाठ पदविया की विगत २०८, (३०) दिल्ली रै पातसाहों की विवरो २०८, (३१) दिल्ली की पातसाही रा सोबां रा खालसा रा देसां की रेत २०८
७४. बात संग्रह .... २०९
- (१) नापा सांखला की बात २०९, (२) करणसिंधजी रै कुंवर की बात २०९, (३) मारवाड़ रै अमरावा की बात २१०, (४) कुंवरसी सांखले की बात २११
७५. फुटकर बातों गीतों कविताओं की संग्रह .... २११
- (१) रावत मोहकमसिंह चूडावत की बात २११, (२) कैवाट सरवहिया की नै अनंतराय सांखला की बात २१२, (३) गीत ठाकर साह्य श्री मूर-सिंधजी की (कल्याणदास चारण कृत) २१३, (४) ठाकर साहिब श्री मूर-सिंह की रूपग (नांनूराम भाट) २१३, (५) वीरमदे पनां की बात २१३, (६) रुकमणी हरण विजै व्याह २१३

७६. यात गीत बोहे इत्यादि .... २१४  
 (१) जलाल बूवना री यात २१४, (२) जगदेव पंवार री यात २१४
७७. वार्ता ब्रूहा कवित्त संग्रह .... २१५  
 (१) मोजदीन मेहताय री वात २१५, (२) रतना हमीर री वात २१५
७८. यात संग्रह इत्यादि .... २१५  
 (१) शिवगत री कथा २१६, (२) वात गणगोरीया माहै भोदोली गावँ छँ तिणरी २१६, (३) जगदेव पंवार री वात २१६
७९. तेजसिह व मांडण कूपायत री यात इत्यादि .... २१६  
 (१) वात राठीड़ तेजसी .कूपायत री २१७, (२) वात मांडण कूपायत री २१७
८०. तारा संबोल री वार्ता .... २१७
८१. जगदेव पंवार री वात आदि .... २१८
८२. कवित्त ब्रूहा वात संग्रह .... २१८  
 (१) राम रासी (दधवाड़िया माधवदास कृत) २१८, (२) राठीड़ रतन महेशदासोत री वचनिका (खड़िया जगा कृत) २१८, (३) ब्रूहा जेठवा रा २१९, (४) सालहोत्र (नकुल कृत) २१९, (५) अकल बहादरां री वात २१९, (६) जलाल गहांणी री वात २२०, (७) अनंतराय सांपले री वात २२०, (८) आलणसीह भाटी हराहुल री संवादो २२०, (९) राजकुल छत्तीस गीत २२०
८३. जामीरदारों री पीड़िया आदि .... २२१
८४. जदुवंश वंशावली .... २२१
८५. राठीड़ों की वंशावली, ऐतिहासिक बातें तथा गीत इत्यादि .... २२२  
 (अ) वीर गीत कवित्त संग्रह २२२, (१) गुण विवेक वार नीसांणी (गाडण केसोदास कृत) २२२, (२) गीत संपपरौ सेरसिध मेड़तीया री नै कुशल-सिध चापावत री २२३, (३) गीत महाराज बखतसिधजी री राजा जय-सिधजी सुं राड कीधी गंगवाणा तिरण समीया री २२३, (४) गीत जाति सपखरी महाराज श्री गजसिधजी री २२३, (५) गीत जाति संपपरौ महाराज जसवंतसिध री उर्जण रा समीया री २२३, (६) गीत जाति संपपरौ महाराज श्री अजीतसिधजी री २२३, (७) गीत जाति संपपरौ राजा सवाई

जैसिध री २२३, (८) गीत जाति संपपरी २२४, (९) गीत जाति संपपरी  
 (गणेश जी री) २२४, (१०) गीत जाति संपपरी (गणेश जी री) २२४,  
 (११) गीत संपपरी ईंद्र महाराज री २२४, (१२) गीत जाति संपपरी श्री  
 सूरज री २२४, (१३) गीत जाति संपपरी २२४, (१४) गीत जाति  
 संपपरी २२५, (१५) गीत जाति संपपरी २२५, (१६) गीत जाति संप-  
 परी २२५, (१७) गीत जाति संपपरी राजा अर्भसिध जी री २२५, (१८)  
 गीत जाति संपपरी अर्भसिह जी री २२५, (१९) गीत जाति सांणोर  
 (महाराजा अभयसिह री) सर बुलंदखी रै युद्ध री २२५, (२०) गीत  
 गीत जाति सांणोर २२६, (२१) गीत जाति सांणोर २२६, (ब) राठीड़ों  
 री वंशावली २२६, (१) सेतराम का वरुण २२७, (२) आसयांन का  
 वरुण २२७, (३) सोनिग का वरुण २२७, (४) धूहड़ आसयांनोत का  
 वरुण २२७, (५) जालणसी पुत्र छाडी तिण री गीत २२८, (६) गीत  
 तीडाजी री २२८, (७) गीत राव सलपाजी री २२८, (८) कंवर जग-  
 माल महमद वेगड़ा री बेटी गीदोलो लायी तिण री विवरण २२८, (९)  
 वीरमदे सलपावत री वार्ता २२८, (१०) गोगादे वीरमोत री वार्ता २२९,  
 (११) रांणुगदे रै पुत्र री वार्ता २२९, (१२) राव चूडा री वात २२९,  
 (१३) राव रिड़मल री वात २३०, (१४) जोधा री वात २३०, (क)  
 अथ गीत राव जोधाजी री २३०, (ख) अथ नीसांणी राव जोधारी २३०,  
 (अ) गीत अमरा विजावत री २३०, (ग) गीत राजा उदेसिधजी री २३०,  
 (घ) गीत राजा सूरसिध री अठताळी (माधोदास दधवाडिया कृत) २३०,  
 (ङ) गीत साह बहादर जीता तिण समीया री २३१, (च) गीत जाति  
 चितइलोल गजसिधजी री २३१, (छ) महाराजा जसवंतसिध री कवित्त  
 २३१, (ज) महाराजा अजीतसिध अर अर्भसिध री वात २३१, (स)  
 वार्ता संग्रह २३१, (१) तेजसीजी री वात २३२, (२) राठीड़ जसवत  
 डूंगरसियोत री वार्ता २३२, (३) राठीड़ देईदास री वार्ता २३२, (४)  
 राव मालदे जैता कूपा री वार्ता २३२, (५) राठीड़ कूपा री वात २३३,  
 (६) राठीड़ पोवा ऊदावत री वात २३३, (७) जैतसी उदावत री वार्ता  
 २३३, (८) चद्रसेन, उग्रसेन और आसकरण री वार्ता २३४, (९) सीवांणा  
 गढ़ री वार्ता २३५, (१०) नव कोटा री विगत री वात २३५, (११)  
 सोजत री वार्ता २३६, (१२) रांणा राघमल री वार्ता २३६, (१३)  
 चित्तीड़ रा घणियां री वंशावली २३६, (१४) जोधपुर रा घणी रै डावी



जीमणी मिसल री विगत २३६, (१५) मोटी छोटी आसामियों री विगत २३७, (१६) महाराज अमरसिंघजी री वार्ता २३८, (१७) सोनिगरा वीरमदे री वार्ता २३८, (१८) अनंतराय सांखला री वार्ता २३८, (१९) जगदेव पंवार री बात २३८, (२०) जपरा मुपरा री वार्ता २३८, (२१) शिवरात्री की वार्ता २३९, (२२) महाराज जसवंतसिंघ री वार्ता २३९, (२३) महाराज अजीतसिंघ री वार्ता २३९, (२४) एकलगिड़ वाराह री वार्ता २३९, (२५) वार्ता महाराज अभयसिंघ देवलोक हुवा, मारवाड़ में दिपो हुवो तिण समीया री २४०

८६. राठोड़ों री वंशावली आदि ... .. २४०  
 (१) राठोड़ों री वंशावली २४०, (२) छत्तीस कारखानों रा नाम २४१,  
 (३) अठारे सूर्यवंशी राजाओं रा नाम २४१
८७. बादशाहों की पीढ़ियाँ ... .. २४१
८८. कछवाहों री वंशावली ... .. २४२
८९. गौड़ों की वंशावली, बिन्है रासो, मिर्जा राजा जयसिंह के छप्पय आदि ... .. २४३  
 (१) गौड़ों की वंशावली (राव महेसदास कृत) २४३, (२) बिन्है रासो (राव महेसदास कृत) २४४, (३) रघुनाथ चरित्र (महेसदास कृत) २४४, (४) गीत अरजन जी को राव कल्याणदास कहै २४४
९०. नाथों की पीढ़ियों व बातें तथा मानसिंह रा गीत कवित्त ... .. २४५  
 (१) नाथों की वंशावली २४५, (२) मानसिंह री गीत लालस सैणा कृत २४६, (३) गीत महाराज अजीतसिंह जी री २४६, (४) गीत महाराज जसवंतसिंह जी री (उज्जैन युद्ध से सम्बन्धित) २४६, (५) गीत महाराज अजीतसिंह जी री २४६, (६) गीत हजूर साहवां री (मा० मानसिंह) २४६, (७) अनाईसिंह री कह्यो कवित्त २४७, (८) गीत चालकदान कहै (नाथ प्रशंसा) २४७, (९) गीत सांडू चैनो कहै २४७, (१०) गीत ओपो आढ़ो कहै, छोटी सावभडो २४७, (११) नीसाणी किसनगढ़ सूं वण आई (महाराजा मानसिंहजी की उपलब्धियों से सम्बन्धित है) २४७, (१२) मानसिंह की नीसाणी (घारट तिलोक री कही) २४८, (१३) गीत मानसिंह का भोपाल रा कहा गीत २४८, (१४) दोहा मानसिंह जी रा मेहू मोठा कहै

२४८, (१५) राठीड़ों की वंश वणंन २४८, (१६) आसिया बांकीदास कृत  
हृत्तर (मानसिह) का रूपक २४८

६१. चौहानों की वंशावली	...	..	२४६
६२. वंशावलिपां तथा पाटण बसिमां की बात	....	....	२५०
६३. पुरोहितों की वंशावली	....	..	२५०
६४. वंशावलिपां की वही	.	....	२५१

(१) पडिहार राजपूतों की वंशावली २५१, (२) सोलंखियों की वंशावली २५१, (३) पंवारों की वंशावली २५१, (४) कछवाहों की वंशावली २५२, (५) तंवर राजपूतों की वंशावली २५२, (६) बीकानेर की वंशावली २५२, (७) जोधपुर की वंशावली २५२, (८) जैसलमेर रावल की पीडिया (लिपाईं डाढी दमाराम मिती वंसाप संवत् १६१२ जैसलमेर जादव वंश सू) २५२

६५. राठीड़ों का दोहा, वंशावली तथा कायस्थों की खांप का नाम	....	२५२
---	------	-----

(१) राठीड़ों का दोहा २५३, (२) कायस्थों की पांपें २५३, (३) राठीड़ों की वंशावली २५३

६६. राठीड़ों की वंशावली, नागौर की हकीकत आदि	..	२५३
---	----	-----

(१) राजकुल छत्तीस २५३, (२) राठीड़ों की वंशावली २५३, (३) कीसन गढ़ रूपनगर का धरणीयां की विगत २५४, (४) राठीड़ों का कवित्त दोहा २५४, (५) अमरसिधजी नागौर पायी तिणरी विगत २५४, (६) नागौर की हकीकत २५५, (७) भगतों की वंशावली २५५

६७. राजाओं की पीडियां ख्यात बात संग्रह आदि	....	२५५
--	------	-----

(१) सहर बसियो की विगत २५५, (२) दिल्ली राज की विगत २५६, (३) बीकानेर राजाओं की पीडिया २५६, (४) आबेर राजा की पीडिया २५६, (५) उदयपुर रांणा की पीडिया २५६, (६) बात गौडा की २५७, (क) बात एक गौड़ नै सीसोदियों रै बैर की २५७, (ख) बात एक गौड़ों की कछवाहों बैर पडियां की २५७, (ग) बात एक गौड़ों की राठीड़ों रै बैर की २५७, (७) बात हुलां की २५७, (८) राठीड़ों की ख्यात बात २५८, (९) पंवार मेपा का तथा सोढी का पोतरां की बात २५६, (१०) पंवार रावल करमचद की बात २५६, (११) रिणधंभोर किलो रांणा की, रांणा

री तरफ सुं बूंदी री राव सुरजण रहतौ सु पातसाह अकबर नूं दीनौ तिण  
री विगत २६०, (१२) बूंदी ग राव नारण री बात २६०

६८. भंडारी किशनमलजी री बही री नकल (राजाओं री पीढ़ियां तथा जोधपुर  
राजाओं री फुटकर बातों और घटनाओं री संप्रह) .... २६१

(१) आसामियों काळ कीनौ री विगत २६२, (२) फासला री तादाद २६२,  
(३) जोधपुर सुं परगना बगैरे कोस इण मुजब २६२, (४) राव मालदेव  
री वरणन २६२, (५) उमरावों मुतसदियो ने ओदा बगसियां री विगत  
२६३, (६) महाराजा अजीतसिंह री सांभर विजय २६३, (७) राठौड़ों री  
वंशावली २६३, (८) पीढ़ियों रा कवित्त २६३, (९) गड़ रा कमठां री  
विगत २६३, (१०) धाम पधारियां री विगत २६३, (११) किशनगड़ री  
पीढ़ियां २६४, (१२) उदैपुर री पीढ़ियां २६४, (१३) जयपुर री पीढ़ियां  
२६४, (१४) बोकानेर री पीढ़ियां २६४, (१५) फुटकर ऐतिहासिक  
बातें २६४

६९. चौहानों की वंशावली .... २६५

१००. जयपुर रा राजाओं री वंशावली .... २६६

१०१. राठौड़ रतन महेसादासोत री वचनिका आदि .... २६६  
(१) राठौड़ रतन महेसादासोत री वचनिका २६७

१०२. आईन-ए-अकबरी भाषा वचनिका .... २६७

१०३. जैनियों की वंशावली व श्रावकों री विगत .... २६८

१०४. जैन वंशावली व श्रावकों की विगत आदि, भाग-२ .... २७०

१०५. जैनियों री वंशावली व श्रावकों री विगत, भाग-३ .... २७०

१०६. जैनियों री वंशावली व श्रावकों री विगत, भाग-४ .... २७१

### दूसरा अध्याय

#### विगत, हाल, हकीकत

१०७. राजल्लोकां री विगत, बीर गीत आदि .... २७३

(१) महाराजा अजीतसिंह री उवाकी हुवी तिण री विगत २७३, (२)  
अभयसिंह री मनसब २७३, (३) ओसवाळां रा गौत्र २७४, (४) चौईस  
साय चौहण री त्या री विगत आदि २७४, (५) राठौड़ कहाणां तिण री

विगत २७४, (६) चूक कर मारियों की विगत २७४, (७) नीसाणी राव जोधा की २७४, (८) गीत राठीड रायसिध कीलाणमलोत बीकानेर की २७५, (९) होळी की उत्पत्त कथा २७५, (१०) राठीड प्रधीराज की कही गीत (राव कल्याणमल की मृत्यु पर) २७५, (११) हाडा बुधसिंह की कवित्त २७५, (१२) गीत महाराजा अजीतसिंह की २७५

१०८. विगत बात संग्रह .... २७६

(१) राठीड अमरसिंह रा कवित्त मीसण लाखा जमलोत रा कहीया २७६, (२) दिल्ली में राज कीयों की विगत २७६, (३) बात पाटण अणहलबडा की २७६, (४) अहमदाबाद की सेरा की (द्वरी) विगत २७६, (५) दिल्ली रँ पातिसाहीं की विगत २७६, (६) राणा प्रताप की बात २७७, (७) राणा अमरसिंह की बात २७७, (८) राणा सांगा की बात २७७, (९) बात पातिसाही सोबा की, पंचोली आखंडरूप लिखाई सं० १७१५ काती सुदि १३ नै २७७, (१०) बात गोलकुंडा की नै करणाटक की २७७, (११) राजा जयसिध कछवाहा की जागीरी की विगत २७८, (१२) बात मेवाड की चहुवाण पूरबीआ की २७८, (१३) राणा रतनसी की बात २७८, (१४) बात बीकानेर की २७८, (१५) मेवाड रँ सांसणों की विगत २७८, (१६) रांगोजी परतापसीधजी नै कुंअर मानसिधजी कछवाहे हलदीघाटी धमणोर राड हुई तिण की २७९, (१७) पातिसाह फोत हुवा तिण रा संवत २७९, (१८) बात चीतौड की २७९, (१९) बात पुंवार रावत करमचंदजी की २७९, (२०) बात एक मेवाड की २७९, (२१) बात राणा उदैसिधजी की २८०, (२२) पासवानां रा द्योरू ठाकुर हुघां की विगत २८०, (२३) हीरा जवाहर की कीमत २८०, (२४) वारे आभूपण नाम २८०, (२५) महाराजा जसवंतसिंहजी रँ जागीर रा परगनों रा दाम की विगत २८०, (२६) देसों रँ गांम की संख्या २८१, (२७) महेसरयां की बहोतर पां २८१

१०९. मारवाड रा परगनां की विगत .... २८१

११०. जोधपुर रँ नीवाणों की विगत तथा वंशावतियां .... २८२

(१) नीवाणों की विगत २८२, (२) दिल्ली में राज कियां की विगत २८२, (३) राठीडों की वंशावली २८३, (४) आबेर रा राजा की पीढियां २८३

१११. अकबर का अमल दस्तूर की हकीकत आदि ..... २८३  
 (१) अकबर का अमल दस्तूर आदि २८३, (२) महाराजा विजयसिंह की  
 नित्य कर्तव्य २८३

११२. यादवास्त राठौड़ों की

११३. राजपूत शाखाओं की विगत आदि ..... २८३  
 (१) सूर्य वंशी राजा तथा सतजुग कल्पयुग की बर्णन २८४, (२) परमारों  
 की ३५ शाखाओं का नाम २८५, (३) सोलकियों की शाखाएँ २८५, (४)  
 चौहानों की शाखाएँ २८५, (५) राठौड़ों की शाखाएँ २८५

११४. महाजनों तथा राजपूतों की शाखाओं, भ्रौहृदेदारों की विगत आदि २८

(१) पातस्याओं की पुस्तक २८६, (२) बालगमद का बाग में धाम ६  
 ज्या की जात २८६, (३) महाजनों की साड़ी वारा जात की विगत २८७,  
 (४) पुराण उप-पुराण की विगत २८७, (५) राजपूतों की सायाँ २८७,  
 (६) राणाजी उर्दपुर का परगना की विगत २८७, (७) कूरव इनायत सर-  
 दारों नै होवे ज्या की विगत २८७, (८) जोधपुर का ओदेदार की विगत  
 २८७, (९) पठाण की छत्तीस जात की विगत २८७, (१०) राजा, राव  
 नै राणा की खिताब हुवै ज्याकि विगत २८७, (११) यादवास्ती मारवाड़  
 का सिरदारों के रेप भाईपो जीलो पठ उत्तर आका गाँवों की वा रेप की  
 विगत संमत १६०५ की साल २८७, (१२) मारवाड़ का सिरदारों की पाँच  
 ठिकाणा की विगत २८८, (१३) फुटकर बातों राजनीत प्रस्तावीक व  
 २८८, (१४) दिल्ली के बादशाह की सूबा की विगत २८८, (१५) अर्ज  
 सिंह रै परवार की विगत २८८, (१६) अलंकार आसायानू प्रबोध सास्त्र  
 २८८

११५. जंतायत राठौड़ों की हकीकत इत्यादि ..... २८६

(१) बागसिध भगवानदासोत और पीढ़ियों का हाल २८६, (२) गोईनदास  
 मगावत की पीढ़ियाँ २८६, (३) जगनायसिध बागसीधोत की पीढ़ी २८७,  
 (४) रामसिध कूँभसिधोत की पीढ़ी २८७, (५) देईदास जंतसिधोत की  
 पीढ़ी २८७, (६) मारवाड़ गजट की खुलासी २८७, (७) स्वामी दयानन्द  
 का जोधपुर आगमन २८९

११६. महाराजा मानसिंहजी रै गाँवों की तकसील . . .

११७. मारवाड़ के महाराजाओं, जापोरवारों की हाल ..... २६२
- (१) पांप चांपायतों रै ठिकाणों की पीढ़िया २६२, (२) कूंपायतों रै ठिकाणा २६३, (३) पांप जैतावतों रा ठिकाणा २६३, (४) पांप करनोता रा ठिकाणा २६३, (५) पांप जोधों रा ठिकाणा २६३, (६) पांप मेड़तियों रा ठिकाणा २६३, (७) पाप उदायतों रा ठिकाणा २६४, (८) पाप करमसोतों रा ठिकाणा २६४, (९) पांप पातायतों की २६४, (१०) खांप एपावतो की २६४, (११) पाप वालों की २६४, (१२) पाप मुंडा की २६४, (१३) पांप नरावत की २६५, (१४) खाप मंडलाजी २६५, (१५) खांप रायपालोतां की २६५, (१६) खांप देवराजोतों की २६५, (१७) खाप गोगादे २६५, (१८) पांप महेचा २६५, (१९) पांप जैतमाल २६५, (२०) पाप सिधल २६५, (२१) पांप भाटी २६६, (२२) पांप च्याणां की २६६, (२३) पांप रांणावता की, गाँव २६६, (२४) पांप सोलंपीयो रा, गाँव २६६, (२५) पांप ईदों रा गाँव २६६, (२६) पाप मांगलियों रा, गाव २६६, (२७) देवड़ों रा गाँव २६६, (२८) पचास पासवाना रा गाँवां की विगत २६७, (२९) श्रोतवालों की खापाँ (सिधवी) २६७, (३०) भण्डारीयों की खाँप २६७, (३१) पाप मुहणोत २६७, (३२) गड़ मडियों की विगत २६७, (३३) कवत्त पीरोजसा पातसा जात मका की जावता २६७, (३४) नागौर रै परगना कोलीया की रेख, गाँव की विगत २६८, (३५) राठीड़ों की पीढ़ियों की ह्यात २६८, भाटी गोयंददास प्रधान द्वारा की गई व्यवस्था (सूरसिंह का काल) २६८, मुहणोत नैणसी की मृत्यु सम्बन्धी ज्ञातव्य २६८, महाराजा तखतसिध की मातमी करावण जयपुर महाराज रामसिध आया तिण की विगत २६८, नकल बसीयत नावाँ महाराज थी तखतसिधजी की २६९
११८. जोधा राठीड़ों की विगत (प्रतिलिपि) ..... २६९
- (१) जोधा रतनसिधोत की विगत २६९, (२) जोधा प्रतापसिधोत ३०१, (३) जोधा किसनदासोत ३०१, (४) जोधा महेशदासोत ३०१, (५) जोधा सिवराजोत ३०२
११९. राठीड़ों रा दांनपत्रों की विगत की नकल ..... ३०२
१२०. शत्रुशासत हाडा की हाल (प्रतिलिपि) ..... ३०६

१२१. गद्य व मोत्रों की विगत आदि ..... ३०६  
 (१) जँनियों के ८४ गद्य ३०७, (२) ओसवालों की जातां की विगत ३०७,  
 (३) घोड़ों रा रंग रा दूहा ३१०, (४) गीत ठाकुरां कल्याणसींगजी नै  
 (आसिया बुधा कृत) ३१०

१२२. चौबीस तीर्यकर व सोले सतिषों की विगत ..... ३१०

### तीसरा अध्याय

#### ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ

१२३. कायस्थों के गोत्र, पत्री ओपमा आदि ..... ३१३  
 (१) कायस्थों के गोत्र ३१३, (२) पत्री ओपमा ३१३
१२४. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें आदि ..... ३१४  
 (१) वाराणसी विलास (देवकरण पंचोली कृत) ३१४, (२) ओपांगा  
 ३१५, (३) शाहजहाँ की दिनचर्या ३१५,
१२५. गुण भाषा चरित्र तथा गज गण रूपक बंद आदि ..... ३१६  
 (१) गुण आठ भाषा चित्र महाराजा गजसिंह जी की (हेम कवि कृत) ३१६  
 (२) (गज) गुण रूपक बंद (गाडण केसोदास कृत) ३१६
१२६. वीरगीत संग्रह, रस गुलजार आदि ..... ३१७  
 (१) अमलदारों की आपत बत्तीसी ३१७, (२) निसांणी राव राजा विसन  
 सिंहजी की ३१७, (३) गीत सावभड़ो भाला जालमसिध को मीसण बदन  
 जी कहै ३१८, (४) रस गुलजार (बदनजी मीसण कृत)
१२७. विजय विलास (बारट विशनसिंह) ... .. ३१९
१२८. अजीत चरित्र बाल (कृष्ण दीक्षित) ..... ३२०
१२९. राज विलास ..... ३२१
१३०. केहर प्रकाश ..... ३२४
१३१. अनय विलास ..... ३२४
१३२. छत्रपता-रासो (प्रतिलिपि) ..... ३२६
१३३. विरद सिणगार तथा वीरमाण ..... ३३१  
 (१) विरद सिणगार (करणीदान कृत) ३३१, (२) वीरमाण राव वीरम-  
 देजी की (बहादर डाडी कृत) ३३१

## संकेताक्षर-सूची

रा० शो० सं०	—	राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
रा० प्रा० वि० प्र०	—	राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
पु० प्र०	—	महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (शोध-केन्द्र) फोर्ट, जोधपुर
सेमी०	—	सेंटीमीटर
वि० सं०	—	विक्रम संवत्
ई० सन्	—	ईस्वी सन्
सं०	—	सम्पादक, संवत् (वाक्यानुसार)
ले०	—	लेखक
पृ०	—	पृष्ठ संख्या
मा०	—	महाराजा
म०	—	भण्डारी
मु०	—	मुहता
सि०	—	सरदार
प्रो०	—	प्रोहित
पं०	—	पण्डित
रा०	—	राव
पां०	—	खांप
ठा०	—	ठाकुर





## पहला अध्याय

# ख्यात, वात, वंशावली व वचनिका आदि

### १. महाराजा अभयसिंह री ख्यात

१. ग्रन्थ का नाम व कर्ता—महाराजा अभयसिंह री ख्यात, २. प्राप्ति स्थान—रा. शो. सं., ३. ग्रन्थांक—६४, ४. माप—२०.५ × १६.५ सेमी. ५. पत्र संख्या—१५६, ६. पंक्ति संख्या—१४, ७ लिपि समय व लिपि स्थान—वि. सं. १८५८, ई. सन् १८०१, ८. लिपिकार—अज्ञात, ९. भाषा व लिपि—राजस्थानी, देवनागरी, १०. विशेष विवरण—ख्यात में अंकित घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है :—

(क) महाराजा अभयसिंह, बखतसिंह, रामसिंह, विजयसिंह तथा भीमसिंह का वृत्तान्त :—

१. ग्रन्थ के प्रारम्भ में केवल एक पत्र में अभयसिंह का वृत्तान्त है, तत्पश्चात् हाथियों की लड़ाई को लेकर काका भतीज बखतसिंह व रामसिंह में मनमुटाव व रामसिंह के रीयां ठाकुर दोरसिंह के पास जाने का उल्लेख ।

२. महाराजा रामसिंह द्वारा आसोप और आउवा दोनों ठिकाने खींवजी को देने पर आउवा ठाकुर कुशालसिंह व पोरकरन ठाकुर देवीसिंह के रूष्ट होने का उल्लेख ।

३. बखतसिंह द्वारा जोधपुर गढ़ पर अधिकार व रामसिंह का मराठों से मिलकर अजमेर पर अधिकार करने का वृत्तान्त ।

४. मराठों से लोहा लेने हेतु बखतसिंह की आमेर नरेश माधोसिंह से भेंट व महारानी अंजनकुंवर के विपाक्त स्पर्श से ३ दिन पश्चात् बखतसिंह का देहान्त व विजयसिंह के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख ।

५. जयपा की मदद से रामसिंह द्वारा अजमेर इत्यादि लूटने का यड़यन्त्र व महाराजा विजयसिंह द्वारा जयपा को छल से मरवाने का उल्लेख ।

६. मराठों के बार-बार आक्रमण से मारवाड़ की स्थिति कमजोर व मुख्य सरदारों का महाराजा से विरोध तथा महाराजा द्वारा पोकरण ठाकुर देवीसिंह, रास ठाकुर केशरीसिंह, आसोप ठाकुर छनरसिंह को बन्दी बनाने का उल्लेख ।

७. विजयसिंह की भरतपुर के जाट शासक जवाहरसिंह से भेंट तथा दक्षिणियों (मराठों) को मारवाड़ से खदेड़ने के लिए असफल प्रयत्न, जयपुर नरेश माधोसिंह व जवाहरसिंह के युद्ध में महाराजा द्वारा जाट शासक को मदद देने का सविस्तार वृत्तान्त है ।

८. वि. सं. १८२६ में रामसिंह का देहान्त । विजयसिंह की अनुपस्थिति में उनके पौत्र भीमसिंह का अधिकार, कुछ सरदारों के आग्रह पर भीमसिंह का पोकलन जाना तथा वि. सं. १८४६ के आषाढ़ के महीने में भीमसिंह का राज्याभिषेक होने का उल्लेख ।

९. भीमसिंह के चचेरे भाई मानसिंह का जालौर के किले में अखेर राज द्वारा घेराव का वृत्तान्त ।

१०. महाराजा की जयपुर नरेश प्रतापसिंह की बहिन के साथ शादी, बरात में शामिल सरदारों की सूची अंकित है ।

११. कुछ सरदारों द्वारा दीवान जोधराज को मरवाने पर महाराजा द्वारा उनकी जागीरें जब्त करने का उल्लेख ।

१२. वि. सं. १८६० में भीमसिंह का देहान्त, महाराजा के उमरावों, चाकरो की रेख इत्यादि का वृत्तान्त । अन्त में उस समय अच्छी बर्षा, अच्छी फसलें व रुपये का एक मन धान मिलने का उल्लेख है ।

(ख) राठौड़ों की खांप :-

राठौड़ों की दो शाखाओं डावी मिसल (जोधराज के वंशज) तथा जिबणी मिसल (रिड़मलजी के आगे की पीढ़ी) में आने वाले राठौड़ों का उल्लेख है ।

(ग) कूंपावतों की खांप :-

केवल दो पत्रों में कूंपा से कूंपावतों की वंशावली दी गई है ।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है । ग्रन्थ पर गत्ता मंडा हुआ है । लिखावट सुवाच्य है । मुगल साम्राज्य के पतन व मराठा शक्ति के उदय के अध्ययन के लिए भी उपयोगी है ।

## २. मारवाड़ की ख्यात

१. मारवाड़ की ख्यात, २. रा. शो. सं., ३. १५५४०, ४. ३३×२४ सेमी., ५. १४५, ६. २६-२६, ७. वि. सं. १८७१-७२, ई. सन् -१५'१८'१५

८. अजात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ख्यात में विवरण-क्रम इस प्रकार है :—

ख्यात की प्रतिलिपि कहाँ से की गई है इसके बारे में सर्वप्रथम लिखा है—

“आ हकीकत जोसी तिलोकचंद रै थी सो जोसी तिलोकचंद कना सू ग्यानमलजी लिपाई सं. १८७१ वैसाख सुद १० थुक्रे ।”

ख्यात के प्रारम्भ में जोधपुर के शासकों द्वारा बनवाये गये भवन-निर्माण कार्य इत्यादि का वृत्तान्त है ।

प्रारम्भ—

“॥अथ गढ़ रा कमठा री विधा ॥ ठेट सू गढ़ री नीव रावजोधोजी दीवी  
..... वैसाप वद ४ बुधवार मूल नक्षत्र रो जन्म मंडोवर सू आय नै सं. १५१”  
शनीसर वार नै चांवड बुरज कांणी नीव दीनी” ।”

जोधपुर राज्य में दीवान कब्र कौन निगुक्त हुए उसके बारे में इस प्रकार जानकारी दी है :—

“दीवाणगी महाराज वपतसिहजी नागौर में पंचोली लालजी नै दीनी, पछे सिधवी सहमलजी नै दीनी पछे बेटे अमरचंदजी नै दीनी पछे सिधवी फतचंदजी नै दीनी, सिधवी फतचंदजी नै कैद हुइ पछे पालसै राय भंडारी वृसिधनादजी नै दीनी पछे मुहणोत सूत्तरामजी नै देण रै वासते बूंदी विहाव १८२१ वैसाप सुद ३ री हुवी, बुधसिध री बेटी सू, घाम माइ जगजी री जठे अपमान हुवी, आसाठ में भेड़ते घायभाई काळ कीनी । महाराज जसवंतसिहजी दोय तलाक काढ़ी थी १ ती हाडां रै परजीजण री, १ मुहणोतां रै दीवाणगी री, सी बूंदी परणाय नै दीवाणगी सूत्तरामजी नै दिराई । पछे १८२३ आसोज में सूत्तरामजी सूं रूह पंचो तद १८२३ चैत्र वद ४ सिधवी फतचंदजी नै दीवाणगी हुई । सिधवी ग्यानमलजी हाकम हुवा सो १८२९ फागण में हाकमी मुहणोत सवाईराम जी नै हुई १८३० फागण सुद ३ सूत्तराम नै राव पदवी हुई, १८३१ ..... वैसाप सुद १ सूत्तरामजी काल कीनी, महाराज काण पासे विराजियां कराई, १८३७ आसोज सुद १० रात पहर गयी फतचंदजी काल कीनी । पछे सिधवी ग्यानमलजी भारी कारज कीनी । सिरपाव नहीं हुवी । चैनमलजी ग्यानमलजी ..... मितो करबो कीनी । जठा पछे १८४७ मिंगसर सुद २ ..... ग्यानमलजी नै मुजरौ दीवाणगी री करायो । पछे भंडारी भांणीदासजी बात ठैराई दिपरियां । तद १८४७ माह सुद ५ प्रभाते सिरपाव भांणीदासजी नै । १८५१ वैसाप में भांणीदासजी नै कैद कीना, दीवाणगी भं. .... वचंदजी नै हुई सोमाचंदजी नै हाथी हुवी ।”

प्रस्तुत ख्यात में जोधपुर के शासक गजसिंह से महाराज मानसिंह तक का वृत्तान्त है। श्रोसवाल जाति के लोगों व अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रशामनिक कार्य आदि में भूमिका अदा की गई उसका वृत्तान्त दिया गया है। यथा—

“मुंहणोत सूरतराम दीपणियां कनै पकड़ीज गयो। हाथी उपर चढाय लीनी तद मावत नुं मुंके में कड़ी १ देनै कूद नै नागौर आयी। तोपपानै सारी डैरा सारा छुटीज गया। श्री हजूर (विजयसिंह) नागौर पधारिया तद सिधवी परतापमल फतैचंदोत हाकम थो सो सोमेलो लायो मुजरो कीनी। श्री हजूर कोट दाखल हुवा प्रतापमल नु बुलाय पूछियो कांई सरभरा छै सामान रो। प्रतापमलजी इसी अरज कीनी वरस २ रो सारी सामान कीनी छै, श्री हजूर नै साथि पधाराय सारी जिनस निजर गुदराई-धान, घृत, तेल, मूंग, घणो, घास रो बागरां, खूण, सोर, सीसो, पिछेवड़ी अमल और ही पंसारी जिनस चाहीजै जिति सारी घणीज दीठी, बोहीत राजी हुवा, वड़ी दाद फुरमाई—तू फतैचंद रै भलै हुवा छै ..... फतैचंद नै फुरमायो—थांरा पिंड नै म्हांरो लेणियो घणो, परतापमल उपर खूण करायो, आप वडा राजी हुवा।”

“सुद ६ रो दसरावो थो, भूजाइ दरबार हुवा नही। हाथी घोड़ा सस्त्र पूजिया होम हुवा, सुद १० भंडारी चुतरमुजजी मुहणोत जीतमलजी छूटा, सुद ११ कोटवाली प्रोहित रामसाजी रै हुई। गोढ़वाड़ रो हाकमी प्रोहित रामसाजी रै हुई। फलीधी मुंहता साहिबचंदजी रै हुई। दौलतपुरी कोलीयो भंडारी अररचंदजी लीनी। परवतसर व्यास विनोदीरामजी रै हुई। कातो वद १ डीडवाणो मारोठ राव तेजमलजी रै हुई, पाली, सोजत, सिवांणो, शिव, जालौर, सांचौर, भीनमाल सिधवी शिभूमलजी रै हुई .....।”

अन्तिम भाग—

“भंडारी हिन्दूमलजी नै इन्द्राजजी कैद कीनी सो छूटो नहीं। सिधवी ग्यानमलजी जोसी तिलोकचंद कना लिपाई मिगसर सुद १० सोमे १८७२ रा।”

यह ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। प्रारम्भ के कुछ पत्र खंडित व पानी से भीगे हुए हैं। सब पत्र खुले हैं। जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूंदी, जयपुर, उदयपुर और दिल्ली के बादशाहों के पीढ़ियों से सम्बन्धित एक-एक कवित्त लिपिबद्ध है।

## ५. राठौड़ों की वंशावली तथा ख्यात

१. राठौड़ो की वंशावली तथा ख्यात, २. रा० प्रा० वि० प्र०,  
३. २०१३०, ४. ५७ × २१ से० यि०, ५. ५०४, ६. २७—३६,

७. १९वीं शताब्दी का मध्य,      ८. भ्रमात,      ९. राजस्थानी, देवनागरी,  
१०. बृहदाकार बहीनुमा ।

ग्रन्थ में आदिनारायण से कन्नोज के राजा जयचन्द तक वंशावली दी है फिर महाराजा मानसिंह तक के राठौड़ राजाओं का विस्तार से वर्णन दिया है ।

प्रारम्भ—

“अथ राठौड़ों की वंशावली लिखते—ईश्वर अरूप है जिनके ज्या० बनाने की मनसा हुई जब जमीन, पानी, आग, हवा, आसमान वगैरे पैदा हुवा पछे ईश्वर का आदमी जसा रूप बना वो पानी में सो गया, उसकी नाभी में कंबळ पैदा हुवा, उस कंबळ में ब्रह्मा पैदा हुवा, ब्रह्मा के सरीर में से देवता रणेश्वर, जध, रापस पैदा हुवे—।”

वंशावली का विवरण—क्रम इस प्रकार है—

(१) राव सीहा से राव रिङ्गमल तक का वर्णन—

राव सीहा से राव रिङ्गमल तक की घटनाएँ जोधपुर की श्यात से मिलती-जुलती हैं । इसमें विविध राजाओं द्वारा लड़े गये युद्धों और राजलोक संतति आदि का हाल दिया है ।

(२) राव जोधा, सातल १, सूजा का वृत्तांत—

वर्णित है कि राव जोधा ने किस प्रकार अपना पौत्रिक राज्य पुनः प्राप्त किया, फिर मेवाड़ पर चढ़ाई कर अपने पिता का बदला किस प्रकार लिया । जोधा के कोंवरों को गांव आदि जागीर में मिले उसका विवरण वगैरा भी दिया है । भीम चूंडावत के पुत्र वरजांग का वृत्तांत अलग से दिया है । जिसमें अचलदास खीची की लड़की से विवाह करने, राव जोधा और सातल की उसके द्वारा की गई सेवाओं का वृत्तांत है । इसी प्रकार सेखा सूजावत और वीरमदे वाघावत का विवरण अलग से दिया है ।

(३) मालदेव का वर्णन—

मालदेव द्वारा लड़े गये युद्धों का वृत्तांत है । शेरशाह के मालदेव पर आक्रमण करने व जोधपुर छीनने का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

“रावजी की फौज रा असवार हजार दीयसौक काम आया ने पातसाही लोक पीएण घणो काम आयो—राव मालदेजी नीसरीया पीपलोद रा मापरो गया—पछे सूर पतसाह मंडते आयो पछे वीरमदे नू मंडती दीयो, राव कील्याणमल नू बीकानेर दीयो । पछे पातसाह जोधपुर आयो राव वीरमदे दूदावत नू पीएण साथे ले आयो—गढ़ भीळीयो तरे मालदेजी रा चाकर काम आयो—पातसा वरस भैंक गढ़

उपर रही। समत १६०१ रा पौस वद ५ दैवरी पड़ा नै मसीत कराई—किसी कांम वासतै पासता मंडीवर बाग मां सुं आंवा कटाया था तरै चारण दूहो कएँ—”

काय बावळ कांव माल बडाही मैड़तै

उए अहएँसै आंव वीरमदं बडाड़ीमो ॥१॥

मालदेव के भवन-निर्माण आदि कार्यों का विवरण देकर राजलोकों (रानियों आदि) की विगत बहुत विस्तार से दी है।

#### (४) राव चन्द्रसेन का वर्णन—

रावजी व मुगलों के बीच हुए युद्ध, वीरगति प्राप्त होने वाले वीरों की सूची आदि दी है। घटनायें अन्य ख्यातों से मिलती जुलती ही हैं। एक स्थान पर राणा उदयसिंह के जैसलमेर शादी करने हेतु जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“समत १६२६ रा भिगसर सुद ३ रांणी उदंसिध गांव नवसरा माहै होय नै जैसलमेर परणीजण नु गया था, राव चद्रसेन साथै जानिया हुआ (चद्रसेन वरात में सामिल हुए)—रावल हरराज गड़ री पीळा जड़ाय नै कैयो वीगर बुलायां आया सो म्है परणावां नही, तरै—राव चद्रसेन आपरी बेटी करमेती पो वद ६ परणाय नै बीदा कीआ।”

राव चन्द्रसेन ने अकबर की आधीनता स्वीकार नहीं की उस भाव का एक गीत अंकित है—

अदगी तुरी ऊजळा असमर, चाकर होण न डिगियो चीत  
सारा हिन्दुकार तरै सिर..... ॥१॥

#### (५) मोटाराजा उदयसिंह का वर्णन—

इनके राज्यकाल की कुछ घटनाओं का विवरण अंकित है। तत्पश्चात् फिर मालदेव राव राम तथा चद्रसेन का विवरण दिया है। राम के पुत्र भोपत के बारे में लिखा है—

“भोपत रांमोत माया री भांणैज, समत १६१२ फागुण सुद ६ बुधवार री जन्म समंत १६४० रा मोटे राजा नवसरा री पटी दीयो थी नै अकबर पातसाह आधी आसीप भोपत नै दीवी नै आधी आसीप राघोदासजी नु दीवी।”

#### (६) गहाराजा मूरसिंह तथा गर्जसिंह का वर्णन—

कुंवर गर्जसिंह ने वि० सं० १६६४ में आश्विन सुदि ५ को नडूल का थांण लिया तब वहां पर रखे गये सरदारों की विस्तृत सूची दी है। फिर राणा अमरसिंह की धरती के गाव बादसाह से मूरसिंह के नाम गीयंददास (भाटी) ने लिखवाये उसकी विगत दी है।

एक स्थान पर बैर आदि समाप्त करने का विवरण इस प्रकार दिया है—

“सोरोही सँ रायसिधजी रो बैर थो सो भागो, राव सूरसिध सारणश्रैर वीचे दे कंवरजी ने परणावण बीजा गुणतीस रजपूतां ने नालेर भलाया, दतांणी मुवा जीया रा भाई तथा बेटां ने नालेर भलाया । गुणतीस रजपूतां ने कंवर गजसिधजी परणीजसी तिण साथे परणाय देणा....।”

भाटी गोयंददास द्वारा राजकीय प्रबंध इत्यादि करने का उल्लेख है । रीति रिवाज संबंधी एक उदाहरण प्रस्तुत है—

“संवत् १६४८ रा महा सुदि ३ महाराज श्री सूरसिधजी कंवर पदे डाढी छंटाई तरे मंडोवर गोठ सयळी हुई तरे इतरो दीघो—वागा, घोड़ा, तरवारां, ७४, २०, २७,

रुपिया टका उमरावां रा पवासां हजुरीयां नु दीघा ।”

३३२ ४०

सूरसिंह द्वारा यादशाह की ओर से अनेक युद्धों में भाग लेने का वृत्तांत है फिरअधिनस्थ परगनों की सूची देकर राजलोक की विगत दी है ।

गजसिंह द्वारा की गई शाही सेवाओं का वृत्तांत है, फिर गजसिंह द्वारा चारणों आदि को लाख पसाव, हाथी दिये उसकी विगत दी है, आगे तुलादान की विगत भी अंकित है ।

गजसिंह के व्यक्तित्व के बारे में लिखा है—

“महाराज गजसिंह—दातार जुंभार हुवो एक करोड़ ने बारे लाख रुपिया पाघा दीघा । रुपिया ६६००००१ सूरसिधजी रा पाटीभोड़ा खजानां सँ काड़ पाघा ने पवाया । रुपिया १३००००१ बोहोरों रा माथे कीघा तिण में जालेर अडांणी म्हेली थी सु माराज जसवंतसिंहजी छुड़ाई, करज रा रुपिया ११२००००१ देने छुड़ाई ।

(७) महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत—

वर्णित है कि महाराजा जसवंतसिंह ने यादशाह की आज्ञानुसार किस प्रकार युद्ध कर (जैसलमेर की राजगद्दी से) रामचंद भाटी को हटाकर सबलसिंह को बैठाया ।

वि० सं० १६६८ में महाराजा ने उमरावों चारणों को छोड़े आदि इनायत किये उसकी एक सूची दी है । फिर धरमाट के युद्ध का विवरण व उसमें मारे गये वीरों की विस्तृत सूची अंकित है । जसवंतसिंह के प्रधान कामदारों की नामावली श्रीर राठोड़ अमरसिंह का अलग से वृत्तांत दिया है ।



(८) महाराजा अजीतसिंह का बर्णन—

दुर्गादास आदि सरदारों के द्वारा मारवाड़ पर अधिकार करने हेतु किये गये प्रयत्नों का वृत्तांत दिया है। महाराजा अजीतसिंह द्वारा विखे में चाकरी करने वाले लोगों को इनाम आदि देने तथा विरोधीयों को दण्ड देने, मरवाने का उल्लेख है। वि० सं० १७६४ में राजकीय पदों पर नियुक्त लोगों की सूची दी है। घटनाएं अन्य ह्यातो बातों से मिलती जुलती हैं। महाराजा को चूक से मरवाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“पातसाहजी फुरमावण सू जैसिघजी कंवरजी अभेसिघजी सु समंजास कीवी के सइदां ने महाराज अजीतसिघजी पातसाह फरूकसीयर ने भारीयो सु सइदां ने तो पातसाजी मराया ने पातसाजी रे मन में महाराज अजीतसिघजी री घणी पटके छै... जोधपुर लेसी... ने जमी जावसी सो आप अजीतसिहजी ने चूक कर काढो सो पातसाह रो गुसो मिट जावे ने आप सू राजी रैवे ने मंडारी रुधनाथ पण आहीज सला दीवी—महाराज ने चूक करण रो भाई वखतसिहजी ने जोधपुर लीपीयो, सो समत १७८० रा असाइ सुद ६ सांचोर रा चीतलावण रा चहुणी रो डोळो आयो थो सो महाराज व्याव कीयो थो ने असाइ सुद १३ अग्रहण रा महल मे पौढीया था सो रातरा कंवर वपतसिहजी आपरा हात सू चूक कीयो ने सिणमार चौकी पधार करणोत अमैकरण दुरगदासोत ने फुरमायो महाराज तु ने महासतीयां नुं मंडोवर पधरावण री त्यारी करावे..।

अन्त में राजलोक की विगत दी है।

(९) महाराजा अभयसिंह व वखतसिंह का बर्णन :-

अभयसिंह द्वारा अपने भाई वखतसिंह को नागोर देने का उल्लेख है तथा दीवान, मुत्सद्दी, बगसी इत्यादि की सूची दी है। वि० सं० १७८२ कार्तिक महीने में विभिन्न पदों पर की गई नियुक्तियों का व्योरा दिशा गया है। वि० सं० १७८५ मे केरु, नाघड़ा, डोहावास, रोहलो, पोपावास, बुटेलाव आदि गांगा (घाघलों के) पेशकसी के रुपये ठहरे उसकी विगत दी है।

अहमदाबाद पर लगाये गये मोर्चों (वि० सं० १७८७ आश्विन सुदि ७ का हाल व मारे गये वीरों की सूची अंकित है। अभयसिंह द्वारा बीकानेर, जयपुर पर की गई चढ़ाईयां, दक्षिणियों के खिलाफ शाही सेना में जाने इत्यादि सैनिक अभियानों का वृत्तांत दिया है। अन्त में उनके द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य का विवरण दिया है।

(१०) महाराजा रामसिंह व वखतसिंह का बर्णन :-

महाराजा रामसिंह द्वारा धामाडयो, मुत्सद्दियों को पट्टे, सिरोपाव इत्यादि

इनायत किये उसकी विगत दी है। महाराजा रामसिंह और घाउवा के ठाकुर कुमलसिंह के बीच मनमुटाव होने का उल्लेख इस प्रकार है—

“कुसलसिंघजो हजूर में गया ने अरज करी—काम रो मोमर छै राजधिराज वखतसिंहजी सु लड़ाई छै मु हमार कनोरांमजी ने बैराजो मती करो, तरे हजूर फुरमायो—भासोप तो में पीवजी ने परी दीवी, तरे कुमलसिंघजो अरज कीवी—चाकरा रा मुलामजा सुं श्रेक बरस ताही तो भासोप कनोरांमजी रे रखाईजे” महाराज फुरमायो—एक दिन ही नहीं, भासोप घाउवो धोनु ही पीवजी ने दीराजजे। तरे महाराज फुरमायो आप ही पधारो नव री तरे करजो”।”

महाराजा रामसिंह द्वारा पोकरन ठाकुर देवीसिंह को अपमानित करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“महाराजा रामसिंहजी सेखावटी रे गाव हंनपुर कोटडो जंपुर राजा ईसरोसिंघजी सुं मिलिया जरां राठोड़ उमराव ईसरोसिंघजी सुं मुजरो करण लाग़ा सु पेला परधान देवीसिंघजी मुजरो करण ने मिलण ने आघा हुवा तरे महाराज रामसिंघजी देवीसिंघजी रे छाती में हात दे ने पाछा धकेलिया ने ईसरोसिंघजी ने केयो ठाकर पीवकरण सुं पैला मोळो, तरे देवीसिंघजी तो पाछा हुवा नै डेरे उरा आया। पछे आपातीज री भूंजाई हुई, जरां सिरे दरवार हुवो हजूर रे थाळ आया तरे” देवीसिंघजी रा मुड़ा आगे धाळी मेली तरे महाराजा रामसिंघजी केयो, धाळी उठाय लै ने ठाकुरां पीवकरणजी आगे मेल दे” पछे देवीसिंघजी रे थाळी आई, “जीमिया नही।”

पोकरन ठाकुर देवीसिंघजी के प्रयत्नों से जोधपुर गढ़ पर वखतसिंह का अधिकार होने का उल्लेख इस प्रकार है :—

“पोकरन ठाकुर देवीसिंघजी, भाटी मुजांणसिंघजी मूं वात करण नु मीलाया मुजांणसिंघजी देवीसिंघजी रा सुसरा था..... रामसिंघजी सवारे थाने ही काड़ देसी” सो गढ़ सूंप देवो नही तो हुं थारे माये भरसूं। तरे मुजांणसिंघजी केयो—हूं श्रेकलो गढ़ में मालक नही छुं, तरे चवाण मोपमसिंघजी, महेशो सौरदारसिंघजी, धायभाई देवकरणजी यां ने फेर बुलाया नै” केयो मे गंनीमो ने लावसों जोधपुर विजेसिंघजी ने बँटांगमां” नही तो गढ़ सूंप दो मुसायदी धायमाई जी। “था तीनु सिरदारा ने लाप रो पटो देसी” सिरदारां हांकारो भरियो... दूजे दिन चारुं सिरदारों ने राजधिराज कने लाया, राजधिराज तीनु सरदारो मूं छाती भीड़ मिळिया”।”

(११) महाराजा विजयसिंह का वरान :-

महाराजा विजयसिंह की ख्यात में महाराजा के मराठों से संघर्ष का विस्तारपूर्ण वरान दिया है। जिसमें उक्त महाराजा के स्वामीभक्त सरदारों व अन्य कर्मचारियों द्वारा की गई सेवाओं का वृत्तांत है। अन्त में उनके राजलोक की विगत है, तथा वि० सं० १८३२ में सिधवी भींवरराज ने विभिन्न आसामियों से रूपये लिये उसका व्यौरा दिया है।

(१२) महाराजा भीमसिंह व मानसिंह का वरान :-

ग्रंथ के अन्त में महाराजा भीमसिंह और मानसिंह के राज्यकाल की घटनाये लिपिबद्ध है। महाराजा मानसिंह से संबंधित घटनायें प्रयांक १०७०६ रा० शो० सं० से मिलती जुलती है। इनके रानियां, कुंवर, कुंवरीयों व पड़दायतो की सूची के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है।

यह बृहदाकार ग्रंथ दो प्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। लिखावट ठीक-ठीक है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है। पत्र कुछ मोटे, हाथ के बने हुए हैं। राठीड़ राजाओं के इतिहास के अध्ययन हेतु ख्यात उपयोगी है। क्योंकि इसमें इन नरेशों व कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध होती है तथा अनेक घटनाओं पर भी विशेष प्रकाश है।

#### ४. राठीड़ों की ख्यात वंशावली आदि

१. राठीड़ों की ख्यात वंशावली आदि २. रा० शो० सं० ३. ६७२१  
४. ६५ × २५ से० मि० (वहीनुमा) ५. ६६ ६. ४५-५२ ७. १६ वी  
शताब्दी का मध्य ८. अज्ञात ९. राजस्थानी, देवनागरी १०. प्रस्तुत ग्रंथ में  
सन्निविष्ट कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है :-

(१) ईडर राठीड़ों की पीढ़ियां :-

सबसे पहले ग्रंथ में ईडर के राठीड़ शासकों राय सीहाजी के पुत्र राय सोनग से महाराजा बखतसिंह तक का हान है।  
प्रारंभ :-

“ईडर रा धणी राठीड़ कहीजे राय सिहोजी कनवज सु आया तिणरे बेटो  
गोनगजी ईडर जाय राज कीयो....।”  
(पत्र-३)

(२) बीकानेर राठीड़ों की पीढ़ियां :-

राय बीकाने से महाराजा जोरावरसिंह तक के राजाओं का संक्षेप में वृत्तांत है।

प्रारंभ :—

“धीकानेर टीकायत राव धीकोजी जोधाजी रो, राव लूणकरण बीकावत....  
भादि ।”

(३) जोधपुर राठोड़ों की वंशावली :—

राव सीहा से मालदेव तक शासकों के नाम व संतति का उल्लेख है फिर मालदेव, चन्द्रसेन, उदयसिंह, गजसिंह के राज्यकाल की कुछ घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है, आगे गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह को राज्य के हक से वंचित किये जाने पर अमरसिंह को बादशाह द्वारा नागौर की जामीर देने, बादशाह की और से कई युद्धों में भाग लेने और अन्त में उसे धोके से मरवाने का उल्लेख है ।

(पत्र-१ $\frac{1}{2}$ )

(४) चौहान पृथ्वीराज :—

यकायक चौहान पृथ्वीराज का वृत्तांत प्रारंभ हो जाता है । पहले उससे संबंधित एक कवित दिया है—

ईग्यारे से ईकावने चेत तीज रविवार  
कनवज दपल कारणे चलियो तस भर भार ।

आगे पृथ्वीराज और जयचंद के बीच युद्ध का वृत्तांत है, फिर पृथ्वीराज का सोरम में संजोगता से विवाह होने का उल्लेख इस प्रकार दिया है—

“पृथ्वीराज नै में (जयचंद) राजी हुव ने वरीयो तरे परथीराज ने सोनम में परणावण री तयारी करी तरे परथीराज कई हूं परणु नहीं, मारा सांवत घणा काम आया है तरे जचंद केयो थारा काम आया सुतो थे मानु दुगांणीया मारा काम आया सु में दायजा में दीया तरे संजोगता नै परणीया नै इतरो हतलेवो दियो  
“आदि ।”

(पत्र-१)

(५) राठोड़ों की ह्यात :—

इसमें राव सीहा से महाराजा अभयसिंह तक का इतिहास है ।

महत्वपूर्ण घटनाओं का यहां उल्लेख किया जा रहा है—

(क) राव सीहा का वृत्तांत :—

राव सीहा द्वारा मूलराज सोलंकी के कहने पर लापा फूलाणी को मारने की घटना वर्णित है ।

“बड़ो जगड़ो हुवो सीहाजी रे बुरछी लापे रे लागी ने पेत्रपाल रो वरदान हो...लाया ने मारियो तरे ईतरा रजपूत काम आया भाटी ५००, सोलंकी ६००, चावड़ा ४००, काती सुद १ सनवार भगड़ो हुवो । ...पछे सिहोजी

पाटण परणीजीया ...जसोदर वरमाण रूपीया एक लाप पेसकसी रा दीया ...  
(सीहाजी) वरस १७ ताई राज कीयी...।”

(ख) राव आस्थान का वृत्तांत :-

आस्थान द्वारा अपने भाई को सोनग के ईडर राज्य का अधिकार दिला कर खेड़ के गोहिलों को डाभीयों की मदद से प्राप्त करने का वृत्तांत है। गोहिलों के खेड़ से भागकर जैसलमेर जाना लिखा है। यथा—

“पछे गोयल भ्रोक वार छड जैसलमेर गया भाटी पाउ सगाई करी, जैसलमेर रा गढ़ उपर भ्रोक ठोड़ गोयल टुक कहीजै है... आदि।”

आगे आस्थान की रानियों, संतति आदि का उल्लेख है।

(ग) राव घुहड़ का वृत्तांत :-

आस्थान का उत्तराधिकारी होने व नागणोचियों की मूर्ति कनोज से लाने का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

“आस्थानजी रे टीके घूहड़जी बैठा, ईंदा रा भांणोज घुहड़ गांव बालेसर ईंदा रे गयो.....मामा मिलिया...घूहड़ केयो म्हारा देवता कीसा ? तरे कयो थारी मां नै पूछ तरे मां कयो—घूहड़ थारे देवी करणाटक छे। घूहड़ करनाटक ने चडियो, पडोयार एक साथे...कुळ देवी करणानट सुं चोर नै लया...देवी कयो—पेड तो हू रडूं नही नै मारे मुंदा आगे पाजरु दुवण लागो नै...चलदवरी सुपना में कयो हमे हूं थारा सू जाउं ...पछे उण मड़ मे नागणोची मुरती पथर री हुई जिए दिन सु नागणोचिया ने राठोड़ पूजण लागी ...।”

अन्त मे घूहड़ की रानियों, लड़कों का उल्लेख है।

(पत्र-१)

(घ) राव रामपाल का वृत्तांत :-

रामपाल के बडे दानी और वीर होने का उल्लेख है तथा बाड़मेर ५६० गावों के माथ जीतने का वृत्तांत है तत्पश्चात् रानियों, तथा १३ पुत्रों के नाम दिये हैं। राज्याभिषेक वि० सं० १२८५ और देहान्त १३०१ में होना लिखा है।

(ङ) राव कन्हपाल का वृत्तांत :-

इनके जन्म वि० सं० १२६१, सिंहासनारोहण सं० १३०१ और मृत्यु वि० सं० १३३२ के दिये हैं।

(च) राव जालणसी का वृत्तांत :-

अमर वृक्ष के फल को सोड़ों द्वारा तोड़ने पर उनको दण्ड देने का वृत्तांत है। उसके ६ पुत्रों, राज्यारोहण वि० सं० १६३२ और मृत्यु वि० सं० १३८५ होना लिखा है।

(घ) राव छाडा, टीडा का वृत्तांत :-

इनके केवल संतति का उल्लेख है।

(ज) राव सलखा, मलीनाथ और वीरम का वृत्तांत :-

इसमें पहले कुछ राव टीडा के पुत्र सलखा का हाल है, फिर मल्लीनाथ के पुत्रों का और वीरम के भगड़ों का वृत्तांत है। फिर वीरम द्वारा जोहियो से युद्ध करने उसमें काम भाये कुछ प्रमुख राठौड़ों, जोइयां के नाम और वि० सं० १४४० में मारे जाने का उल्लेख है। (पत्र-२)

(झ) राव चूंडा का वृत्तांत :-

वीरम की स्त्री मांगलीयाणी की कोख से चूंडा का जन्म होने व एक चारण द्वारा उसे मल्लीनाथ के पास ले जाने का वृत्तांत है, यथा—

“चूंडा ने नवा कपड़ा कराया ..... नै साथे लेने महवे राव मालदेजी कने से जाय नै केयो—वीरमजी रो तो बेटो है ने घारो भतीजो है... वीरमजी मालदेजी ने घणो दुप दीयो घो तिन सु घणो घादर (चूंडाका) कीमो नही....।”

चूंडा को सालोड़ी याने भेजने, वहां उसके द्वारा उत्पात किये जाने पर मलीनाथ स्वयं के सालोड़ी जाने का उल्लेख है।

“चूंडा ने सालोड़ी रे घाएँ मेलियो दिन दिन बात रस आवती गई.... रूपा री नदी बहए लागी, चूंडा नू बीभो जुड़तो गयो, घोड़ो रजपूतां री जोड़ होती गई....रावल माला ने खबर हुई तरे माले भौपा नुं भोलमो दीयो, कयो एक बार सालोड़ी जायसां, तरे भोपे चूंडा नै कहाड़ीयो रावल माला उठे आवे छै तूं कीणी बात रो डफाए राखजे मती सादी भांत मां रहे....माला आप दीठो तो कुंही नही... आदि।

आगे चूंडा द्वारा मंडोर हस्तगत करने और नागौर में रहते हुए राव केलण तथा सलेमखान द्वारा २ योद्धाओं सहित वि० सं० १४४८ में काल कदलित होने का वृत्तांत है। फिर राव चूंडा के ४ पुत्रों के नाम अंकित हैं।

(न) राव फाग्हा, सता का वृत्तांत :-

राव कान्हा के उत्तराधिकारी न होने व उसके बाद उसके भाई सता को राजगद्दी मिलने का उल्लेख है। (पत्र-१)

(त) राव रिड़मल का वृत्तांत :-

रिड़मल के मेवाड़ रहते हुए उसके भानजे मोकल के द्वारा एक हजार सेना की मदद से मंडोर हस्तगत करने का उल्लेख है। फिर चाचा मेरा द्वारा मोकल

राज्य के विकास में उत्तराधिकारी होना तथा रिड़मल के वहाँ  
राज्य के विकास के बारे में उल्लेख है। (पत्र-१२)

राज्य के विकास का वृत्तः :-

राज्य के विकास के किस प्रकार अपने पंचिक राज्य मंडोर पर अधिकार  
राज्य के विकास का वृत्तः है, फिर जोधे द्वारा मेवाड़ पर आक्रमण करने का  
राज्य के २४ पुत्रों के नाम दिये हैं जिसमें जोधा का सबसे  
राज्य के विकास है। जोधे ने अपने भाईयों तथा पुत्रों को गांव प्रादि  
राज्य के विकास है। मन्त में जोधा की रानियों का वृत्तः है। (पत्र-२)

राज्य के विकास का वृत्तः :-

राज्य के विकास में केवल इतना लिखा है—“राव सातल सूजी जसमादे  
राज्य के विकास का वृत्तः रा नु जोधपुर दीवी।” सूजा के जन्म और राज्यरोहण व  
राज्य के विकास दिये हैं। राव सूजे रो जन्म सं० १५०४ रा चैत सुदी १ बुध  
राज्य के विकास १५ डीन चड़ीयां, संवत १५४८ रा पाट बँठो, संवत १५७२ का काती  
राज्य के विकास है।” (पत्र-१)

राज्य के विकास का वृत्तः :-

राज्य के विकास का वृत्तः का प्राया पत्र फटा हुआ है। इसमें केवल इतना  
राज्य के विकास को ईडर से लाकर जोधपुर की गद्दी पर बैठाया और इसने  
राज्य के विकास पत्र मन्त और २ दिन राज्य किया इस प्रकार उसका संवत् १५८८  
राज्य के विकास देहात होना लिखा है। (पत्र-१)

राज्य के विकास का वृत्तः :-

राज्य के विकास, राज्यरोहण और मृत्यु के

संवत् १५६८ पौस वदी १ सुकरवार रो

संवत् १६१६

का

का

राज्य के विकास का वृत्तः :-

राज्य के विकास के उत्तराधिकारी ;

राज्य के विकास और उत्तराधिकारी का वृत्तः

राज्य के विकास के उत्तराधिकारी और राज्य के विकास

राज्य के विकास और राज्य के विकास

हुई मोटा गाजा रे हात री बरछी चद्रसेन रे लागी ।

वि० सं० १६२१ में राम के प्रयत्नों से अकबर की सेना का जोधपुर गढ़ पर आक्रमण.... इसमें दोनों ओर काम आये योद्धाओं का वृत्तांत और चन्द्रसेन का भाद्राजुण जाने का उल्लेख है, फिर वि० सं० १६२३ में चन्द्रसेन का अकबर से मिलने का उल्लेख, फिर अन्त में चन्द्रसेन के पुत्रों रायसिंह आसकरन और उग्रसेन संबंधी वृत्तांत है । (पत्र-१३)

(फ) मोटा राजा उदयसिंह का वृत्तांत :-

मोटा राजा उदयसिंह के जन्म, राज्यारोहण और मृत्यु के संवत आदि दिये हैं । इसमें जन्म वि० सं० १४६४ में होना लिखा है । यहाँ १५६४ होना चाहिये । वि० सं० १६४०-४१ में अकबर बादशाह द्वारा इन्हें जोधपुर, सोजत दिये जाने का उल्लेख है । मोटा राजा द्वारा की गई बादशाह की सेवाओं का वृत्तांत है । संवत १६४३ में जोधपुर के गांव जब्त हुए उनकी विगत दी गई है । फिर सोजत परगने के गांव दान दिये, जब्त किये उनकी विगत दी गई है । जो बात परगने के जोधपुर की से मिलती जुलती है । कही कही घटनायें आये पीछे लिख दी गई है और संवतों में हेर फेर अवश्य है । अन्त में उदयसिंह के रानियों संतति आदि का वृत्तांत है जो कि मारवाड़ के परगनों की विगत में नहीं दिमा है । (पत्र-६)

(ब) सूरसिंह का वृत्तांत :-

सूरसिंह के जन्म, राज्यारोहण और मृत्यु के संवत दिये हैं । बादशाह की इच्छानुसार सूरसिंह को उत्तराधिकारी बनाने फिर जालोर के शासक पहाड़खान को मार वि० सं० १६७४ भाद्रपद सुद ९ को गढ़ पर अधिकार करने और ५ परगने जहांगीर द्वारा और देने का उल्लेख है । इस प्रकार अन्य घटनायें विगत से मिलती जुलती हैं ।

(ग) गर्जसिंह का वृत्तांत :-

प्रारम्भ में बादशाह द्वारा मिले परगनों का वृत्तांत है, फिर दक्षिणियों से महाराजा के विजयी होने आदि घटनायें विगत से मिलती जुलती हैं । अन्त में पुत्रियों का उल्लेख है । (पत्र-६)

(घ) अमरसिंह का वृत्तांत :-

अमरसिंह का बादशाह की हाजरी में जाना, नागौर में रहते हुए बीकानेर नृप करणसिंह से युद्ध होने का वृत्तांत इस प्रकार है—



“अमरसिंह रै साथ नागौर नै वीकानेर रै राजा करण रै साथ गाव जापणियो वीकानेर नागौर रै काकड़ छै तीण उपर वेढ हुई सीव रै वासतै, नै अमरसिंहजी री फौज मांहे सिरदार सीधवी सीहमल भैरव पदमावत रौ मांणस हजार ३००० चढीयो……।” इस युद्ध में काम आये योद्धाओं के नाम दिये हैं। फिर चूक से अमरसिंह के मारे जाने पर लड़े तथा मारे गये योद्धाओं की सूची अंकित है। अन्त में रानियों व पुत्रों की विगत लिपिवद्ध है।

(घ) जसवंतसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा के जन्म (वि० सं० १६८३) राज्यारोहण (वि० सं० १६९४) के संवत् दिये हैं। परगने जागीर में पाये उसका उल्लेख है। अन्य घटनाओं का वृत्तांत विगत से मिलता जुलता है। संवत् १७१४ को उजैन के युद्ध में काम आये करीब १५४ योद्धाओं के नाम दिये हैं। (पत्र-७)

(र) मेड़ते परगने की बात :-

परगना मेड़ता किसने बसाया, कब कब किसके अधिकार में रहा, फिर मेड़ता के कुछ गावों की विगत दी है यह सारा वृत्तांत बात परगने मेड़ते री<sup>१</sup> से मिलता जुलता ही है, पर यह वार्ता संक्षेप में है।

प्रारम्भ :-

“मेड़ती आद सैर राजा मानघाता बसायोडौ छै, आगै राव कोनड़ री अमल हुवो हो पछै आ घरती सुनी रेही……पछै राव जोधोजी जोधपुर बसायो……तरै भायो वेटां नै घरती देवरण री वीचार कौयो…… अरसिंह दूदो सगा भाई था तिएण नुं राव कही—म्है थानु मेड़ती दा छॉं।” (पत्र-८)

(ल) महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) री ख्यात :-

इसमें वि० सं० १७१८ से महाराजा के अन्तिम काल तक की घटनायें क्रम-वद्ध वर्णित हैं, कुछ महत्वपूर्ण घटनायें इस प्रकार लिपिवद्ध हैं—

१. संवत् १७१८ महेसदास सुरजमलोट आउवा री पटौ दियो।
२. संवत् १७२० मारवाड़ में काळ पडियो दाव घणा मुवा, रु १ री धान सवा सात (सेर) विकीयो। संवत् १७२० कामदारो उपर पेसकसी ठहरी।
३. संवत् १७२१ दीपण सांमा सुं पन्तसाहजी महाराज नै हजूर बुलाया। दीपण रै सामा राजा जैसिंहजी नै नवाब दलेलपा नै मेलियो।

१. प्रसन्नित, सं० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर (मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग २, पृष्ठ ३७)

४. संवत् १७२२ कुंजीघाँ रो परगनी मंडेवो मू० उदेकरण आसकरणोत नै हाकम मेलीयो मु रा० आसकरण मथुरादामोत मेड़तीया मुं कजियी हुवो मुं काम प्राया ।

५. संवत् १७२३ साहजादा.....आजम नै महाराज रै पातसाह पोळें घालीया..... ।

६. संवत् १७२३ कवर पीरधीमीघजी नै पातसाह दोय हजारी मुनसव दोयो.....नै मालवा रो परगनो मु जावलपुर मुनसव में दोयो लाप ३५००००० दाम, पछै .....काळ परापत हुवा ।

७. संवत् १७२३ मोहणोत नैणसी मु दरदास दोनु भाइयों नै कंद कीया, १७२५ डड कर छोडीया .....पछै दोनु भाई औरंगावाद मु आवना पेट मार मुवा ..... ।

८. संवत् १७२६ कामदारों रो रोजगार बंधायो ... .. ।

९. संवत् १७२४ मे पातसाह गुजरात रा परगना ईजाफे में दीया ..... ।

१०. संवत् १७२४ में औरंगावाद रै पागनी तलाब सबळी बंधायो नै ऊपर बाग बड़ी करायो ।

११. संवत् १७२५ रा आसकरण बाबत पांप करणोत नै.....केसरीसिंघ रामचंदोत मुणोतों नै कंद कीया पछै (२) चाकरो नै मारिया ।

१२. संवत् १७२६ मे वीरामण सीवदान कोडीयो थो सु श्री जनाथजी रो घणी पूजा कीवी तरै अग्या सुपना में हुई भारवाड़ रा राजा जसवंतसिंघ म्हारी अस है सु उणा रा पान रा बीड़ा रो पीक पावै जद कोड जाता रैसी, तरै वीरामण श्रीजी नै आण सारी हकीकत कही .....मा० जसवंतसिंघजी पान रो बीड़ी दीयो हात मु तरै पाय गयो मु कोड जाती रही ।

१३. संवत् १७३५ श्री न्याय थो रोघपुरी श्री हीगलाजजी .....पीसोर आय नै श्रीजी कर्न स्माद (समाधी) सेणा रो दयाती मांणी नै दुरगादासजी नै केयो मांनु तपस्या सु हीगलाजी अग्या हुई तुं महाराज रै राणी जादमदे रै गरभ आव अवतार लेसी..... ।

अन्त मे जसवंतसिंह के रातियों आदि का हाल है । (पत्र-६)

(ब) महाराजा अजीतसिंह :-

अजीतसिंह और दलार्थभन के जन्म होने, भाटी रूपनाथ लवेरा केशरीसिंघ आदि के बादशाह से मिलने, बादशाह द्वारा उनको सिरोपाव इत्यादि देने और महाराजा की सम्पत्ति हवाले करने का वृत्तान्त है । इस समय इन्दरसिंह ने ३६

लाल रुपये में जोधपुर पाने की इच्छा प्रकट की। उमरावों द्वारा राजगढ़ी के लिए बादशाह से किये युद्ध तथा उसमें काम आये विभिन्न जातियों एवं खांपों के योद्धाओं के नाम हैं। फिर उमरावों के इन्दरसिंह से विचार विमर्श करने और उमरावों की इच्छा के विरुद्ध जोधपुर का किला हस्तगत करने का उल्लेख है। यथा—

“इन्दरसिंह गढ़ कोठारा रा ताळा तोड़ सारो माल लीयो.....पछे सोजतरी तरफ व्यास देवदत्त नै पकड़ण सारू वीका, जैतावत नै मेलियो। व्यास केयो वेड़ियो पँरू नही.....तरै व्यास मुवो।”

आगे वीर दुर्गादास राठौड़ द्वारा इन्दरसिंह और विरोधी सरदारों एवं मुगल सल्तनत से लोहा लेने का वृत्तांत चलता है। बादशाह औरंगजेब की मृत्यु, तत्पश्चात् अजीतसिंह के व उनके सहयोगी सरदारों द्वारा पत्रिक राज्य पर अधिकार करने का वृत्तांत है।

कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ इस प्रकार वर्णित हैं—

१. संवत् १७७६ में महाराज मेडतै पदाग्न्या तरै भंडारी वीठलदास, गौरधरदास, भगवानदासोत कंद में साथ था मु पातसाह कनी रो नै कंवर मोहकमसिंह मु मांजियो रा भरम पड़ीयो साठोरै जावतो मेडता में मारिया।
२. संवत् १७६८ वादरसाह रो साहजादो भोजदीन तखत बैठो।
६. १७६७..... महाराज रूपनगर डेरो कर आगे चालीया पछे राजा राजसिंहजी रूपनगर जावता कर नाळ २ दीवी रूपया १००००० नै हापी ? नौजर कीयो।
४. १७६८ में नागीर रा राव इन्दरसिंह रै कंवर मोहकमसिंह नै मार नै ईतरा जोणा नै दीली मैलीया.....।

(१) जोषो दुरजनसिंह, (२) महकरण, (३) धवेचो अमरसिंह,

(४) भाटी अमरसिंह.....मोहकमसिंह नासने वाड रा पैत में बड़ीयो ए पीण तारै चेत मे बैठा मु तुररो पाग में थो मु तावडा मुं चीळकीयो मु देखनै जाय पीता मु मार दीयो.....महाराज च्यारो नै ही पटो नै सिरपोव नै धवेचो अमरसिंह नै भाटी अमरसिंह नै हतपी २ ईनायत कीयो।

५. सं० १७७१ में कंवर सिरपाव हाती ? मोनीयारी माळ नै नौबत

६. सं० १७७१ राठौड़ नौबत बाजी।

७. १७७१ परधानगी भं० पीवसी नै ईनायत हुई नै दीवांणगी भं० रूपनाथ नै हुई ।

८. १७७२ में घासोज में वाई इन्दरकंवर री ठोळी दिल्ली भेजियो..... ।

९. १७७३ रा सावण वद ७ नागौर में महाराज अजीतसिंहजी री अमल हुयो..... ।

१०. १७७४ जेठ में मा० पीवसीजी री बेटो री नै पोतो री वीवा वडवोत रै महाराज अजीतसिंहजी कवरी सुं हुयो.....महाराज रु १०० वडवेड़ी में घालीया नै रु २५००० मा० पीवसिंहजी नै नोजर कीया रु १०० नीछरावळ कीया ।

११. सं० १७७६ हकोदर री जाळी जैसा नै भीटक मुरजनोत नै मेल मरायो..... ।

१२. सं० १७७५ महाराजा दिल्ली पदारीया, सं० १७७६ अजमेर सुं जोधपुर पदारीया ।

इसके बाद आगे महाराजा द्वारा बनवाये गये भवन इत्यादि का पल्लेख है फिर अन्त में पुत्रों, पुत्रियों, रानियों का विवरण आदि दिया गया है । घटनाएँ प्रायः 'अजीत विलास' से मिलती जुलती है । (पत्र-१६)

(श) महाराजा अमरसिंह का वृत्तान्त :-

सरदारों की इच्छा के विरुद्ध अमरसिंह के जयपुर नरेश जयसिंह की पुत्री के साथ विवाह करने पर जिन सरदारों ने महाराजा का साथ छोड़ा उनके नाम दिये गये हैं । भण्डारीयों आदि को कैद करवाने का वृत्तान्त है, फिर महाराजा के द्वारा वि० सं० १७८१ में नागौर से इन्दरसिंह को हटाकर रामकिसन को वहाँ हाकम नियुक्त करने और कार्तिक मास में बखतसिंह को नागौर देने का उल्लेख है । बखतसिंह को रकम आभूषण, हाथी ४, घोड़ा १००, ऊँट ४०, तोपें ३० और चाकर आदि दिये उनका ब्यौरा दिया गया है । बखतसिंह की जन्मपत्री भी अंकित है ।

महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. सं० १७८४ में भादवा में राजाधिराज बखतसिंह अजीतसिंहजी महाराज रै कंवर अणदसीधजी नै ईडर री राज दीयो । श्री अमरसिंहजी महाराज रै मुनसब में घो, पछै रा० रीदेरामजी उदावत आसंभी १६ सुं पगे राजाधिराज लगाथ नै पटा सारा बाल कराय दीया ।

१. देखें 'परम्परा' भाग २७, रा० शो० सं०, सं० रा० नारायणसिंह भाटी

२. सं० १७८५ रा काती वद १४ बखतसिंघजी .....राणावत श्रीधीसिंघ अमरसिंघोत री बेटी परणीया ।

३. सं० १७८५ रायसिंघजी आणंदसिंघजी जालीर री धरती मे दौड़ीया तरै मा० अनोपसिंघजी जोधपुर सुं फौज लेनै गया तरै पाछा परा गया ।

४. १७८५ आवेर सुं .....सीप कर कीसोरसिंघजी अजीतसिंघोत पंडेले परण जैसलमेर आया नै फलीदी रा गांव नै पोकरण रा गांवों में विगाड कीया तरै राजा बखतसिंह पोकरण पदारीया तरै किशोरसिंघजी जैसलमेर परा गया पछै राजाधिराज पोकरण नरावतो कर्न छुडाय नै राठीड़ महासीप भगवानदासोत चापावत नै पटे लिप दीवी ।

५. सं० १७८५ धांधलो रै पेसकसी ठहरी (८ धांधलों को गाव दिये उनके नाम दिये है ।)

६. सं० १७८१ रा फा० सुद ६ मा० अनोपसिंघ रूगनाथ रा बेटा नै जोधपुर री हाकमी ।

७. सं० १७८५ मीगसर वद ११ श्री राजधीराज रै माहाराज कंवर विजेसिंघ री नागौर मे जन्म हुवी तरै जोधपुर वघाई आई, तरै..... सीरपाव नै मोतीया री कंठी इनायत कीवी ।

८. तलाव अमैसागर करायी पाळ कराई अमैसिंघजी रू० तीन लाख लागी नै अघूरी रेयो । चौखो बाग करायी । कुअरी अठै एक करायी, कोट करायी, मैलों री नीव दीराई सु अघूरी रही ।

९. मंडोर माहाराजा अजीतसिंघजी री देवल करायी ।

१०. गढ़ जोधपुर कीला परकोठ पकौ करायी ।

आगे अहमदाबाद युद्ध का वृत्तांत है। युद्ध में काम आये योद्धाओं के नाम आदि लिपिवद्ध है ।

“१६६ सिरदार तथा रजपूत काम आया ६४० घायल हुवा, २६६ घोड़ा काम आया ५२१ घायल हुवा”

मराठों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए हुर्डा सम्मेलन का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

“पछै महाराजा आ बीचारी हीदसयांन में गनीम आवै सु इणों री बंदोवसत कर देवो तो गनीम आ सके नहीं, तरै महाराज राणाजी रै डेरै पघारीया पछै राणाजी नै राजा जयसीघजी दोनुं ही महाराज रै डेरै पघारिया.....पछै सारा राजा भेळा हुवा तरै मिसल उपर इण तरै बैठा—श्री राणाजी तो मिसल उपर बीचै बैठा नै श्री

महाराजजी जीवणी बाजू बैठा नै नीचे श्रीजी रँ कोटा रा हाडी महाराजजी दुरजन-सोघजी बैठा नै श्री राजाघोराज बगतसिंघजी बैठा । आ सला करी कँ गनीम हीदुसयान में आवै है जिण री जतन बांधणी नै कांकड़ सीवां री जमी महोमाह दावणी नही नै मांय री रीत सदांमंद मुजव रापो ।”

आगे सम्मेलन में विचार विमर्श हुए उस पर प्रकाश डाला गया है । फिर दक्षिणियों के खिलाफ महाराजा और समस्त हिन्दू नरेशों का शाही सेना के साथ जाने का वृत्तांत है । अभयसिंह द्वारा बीकासर की चढ़ाई का वृत्तांत है । तत्पश्चात् बखतसिंह का जयपुर पर चढ़ाई करने का वृत्तांत है । महाराजा का अजमेर पर अधिकार करना इत्यादि अनेक घटनाओं का वृत्तांत है । अन्त में महाराजा के पीछे सतिमां हुई उनका उल्लेख है । (पत्र-१४)

(घ) महाराजा रामसिंह, बखतसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा ने सिरोपाव आदि दिधे उसका उल्लेख है, फिर बखतसिंह का रामसिंह के पास टीका भेजना, रामसिंह का टीका स्वीकार करने से इन्कार करना व जालीर लेने की इच्छा प्रकट करने आदि का उल्लेख है । महाराजा का अपने सरदारों के साथ दुर्व्यवहार करने से सरदारों का बखतसिंह की ओर मिल जाना और बखतसिंह व रामसिंह के बीच युद्ध होने, उसमें मारे गये योद्धाओं के नाम आदि का उल्लेख है । बखतसिंह द्वारा पहले मेड़ता, फिर जोधपुर पर अधिकार करने का उल्लेख है ।

“संवत् १८०८ रा सायण वद २ श्री राजाजी महाराज बखतसिंहजी नै गढ़ सूप दियो । बखतसिंघजी रात रा गढ़ दाखल हुवा, सिणगार चौकी बीराजिया नै निजर निद्धरावळ हुई”

महाराजा द्वारा सिरोपाव पदवियां आदि दी गई उसका वृत्तांत इस प्रकार है—

१. दीवाणगी सींघवी फतेचंद नै सीरपाव
२. बगसी मुणोत सरतराम नै सीरपाव,
३. धानसांमा म० महेसदास सीरोपाव
४. प्रोयत बीजेराज नै तीवरी ईनायत
५. पीची सुंदर नै गढ़ री कीलेदारी ईनायत
६. वारठ करनीदान नै वारठ पदवी ईनायत
७. खीची गोरधन नै महाराज कंवर बीर्जेसिंघजी री कामदारी
८. पड़ीयार सीवदान नै जोधपुर री कोटवाली ईनायत
९. पड़ीयार जसा नै तोपपांना री दरोगाई ईनायत

१०. कछवावो जैसा नै कटक री कोटवाळी ईनायत
११. डोढ़ी री दरोगाई सांमायत गोवंदास अंगदराम नै
१२. घाय भाई पदवी हरनाथ जगनाथ बट्ठीदासोत नै
१३. साहबखान नै तोपखाने री दरोगाई ईनायत

मराठों की सहायता से रामसिंह द्वारा अजमेर पर अधिकार करने और मराठों के उत्पात आदि करने का वृत्तांत है । (पत्र-५)

(स) महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत :-

विजयसिंह के रानियों व पुत्रों का उल्लेख किया गया है । रामसिंह द्वारा राज हस्तगत करने के लिये फिर मराठों की सहायता से मारवाड़ में लूट मार मचाने, बीकानेर महाराजा गर्जसिंह और विजयसिंह द्वारा मराठों से युद्ध करने का उल्लेख है । इसमें विजयसिंह के बहुत से योद्धा काम आये उनके नाम दिये हैं । महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण इस प्रकार है—

१. सं० १८१२ जेठ सुदी १५ मं० दौलतराम, सुरतराम, हीमतराम, चौयमल, सांवतराम, कैद में था रू० २००००० ठेराय नै सं० १८१३ सांवण वद १६ नै पेशकसी करने.....छोड़िया ।

२. पा० लालजी नै छोड़ियो रू १५०००० पेशकसी रा लीया..... ।

३. सं० १८१३ में राजा रामसिंहजी जैपर..... ईसवरसिंघजी री बेटी परणीया ..... ।

४. सं० १८१३ में प्रो० जगु रामसरण हुवी, बहु लारै सत कीनी..... ।

५. सं० १८१३ आसोज में मेड़ती रामसिंघजी सु दीवाण फतैचंदजी छुडायी.....जाळोर री अमल हुवी ।

६. राजा रामसिंघजी मेड़ते रै गांव सु रीयावास डेरी कीयो, महाराज बीजेसिंघजी.....सिंघवी फतैचंद दीवाण फौज लेने चढीयो सु गांव मेसड़ डेरा कीया नै राड़ हुई तरै भागा.....फतैचंद चढतै राड़ कीनी भारी, दीपणीयों रा पण छूटा, हाथी पोसीजियो चढ़ण री ।

७. सं० १८१४ रा काती में श्रीजी कूच कर मेड़तै.....डेरा कीया, फतैचंद चढीयो सु खान सु राड़ कीवी सु खान भागी अजमेर गयी, लारै सु श्रीजी कूच कर पीसांगण डेरी कीयो.....इत्यादि ।

८. १८१६ ईडर सु वायां २ जोषपुर मेली ईणों री बीवाह आप करसो..... दोनू वायां री विवाह कियो..... ।

९. सं० १८१६ श्री आत्मारामजी.....रामसरण हुवा ।

१०. सं० १८२० रा वसाप नै श्रीजी बूंदी परणीजण नै पदारीया .. .... ।

११. सं० रा काती वद १ दीवाणगी मुणोत सुरतराम नै हूई नै घायभाई गनायराम रामसरण हुवौ ।

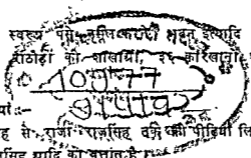
१२. सं० १८२१ रा दीपणी माघजी री फौज.....मारवाड मे घाई तरै वाण मुणोत सुरतराम नै फौज देनै बीदा कीयो सु रूपनगर री गाव भीटूटी राड ई .....राड विगड़ गई..... पछै दीवाणजी सिघवी फतैचंद नै हुई ।

१३. सं० १८२२ वसाख में श्रीवालकिसनजी री मीदर करायी..... ।

१४. सं० १८२४ रा काती में जाट जवाहरमल असवार हजार २५००० महाराज सु मिलण नै आयी तरै श्रीजी जोधपुर सुं कूच कर पोकरजी मिलिया ..... । (जाटों और जयपुर नरेश माघोसिंह के बीच युद्ध का वृत्तांत है ।)

१५. सं० १८२८ में गोडवाड़ री परगनों महाराजा विजयसिंहजी नै राणा सीजी दीयी ।

महाराजा द्वारा दण्ड स्वल्प पसि... भवन इत्यादि बनाने का तांत है । फिर मिसलों, राठोड़ों की शाखाओं, इन्हें कारखानों आदि का नोल्लेख है ।



किशनगढ़ राजा री पीड़ियां :-

इसमें राजा किशनसिंह से राजा राजसिंह वंश की पीड़ियां लिपिबद्ध है, राजसिंह के पुत्रों सामन्तसिंह आदि का वृत्तांत है (पत्र-१)

राठोड़ों री वंशावली :-

पहले एक कवित में राठोड़ों के कुल १३ कुलों के नाम दिये हैं, फिर प्रत्येक का वृत्तांत दिया है—

अभेपुरा, ईणवार, साप, दानेसर, मुरा, जड़येडीया, जैवंत, कपालीया कुंदरा, बगलण बलवंत ।

अहरपारकरा, आपा, पैरादा, चंदेल, बीरबरीया यरभापा, इणभांत साप अमंग राजकुळी रामेडरी, छत्रीवंस सारी सीरे, मिरणधारी कुल मांड री ।

दानेसर :-

राठोड़ राव धरमवव सीकार गयी तठै अणी रा रापेश्वर मीळीया तीण री कीवी तरै रेपेश्वर कयो वर मांग तरै अरज करी सु दान देऊ सौ हाजर हुवै ऐश्वर वर दीयो.....राका पुनम केहीजे सु उण दीन तुं चासी सु होसी सु ही पुनम नै बीरामण नै दान घणी दीयो, तिणसुं दानेसर साप केबाई ।

इसी प्रकार अन्य १२ शाखाओं का वृत्तांत है ।



यह ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर नहीं है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है। कुछ पत्र पानी से भीगे हुए हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रन्थ बहुत महत्वपूर्ण है।

### ५. राठौड़ों की ख्यात वंशावली आदि

१. राठौड़ों की ख्यात वंशावली आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०७, ४. ४६ × २३ सेमी०, ५. १४२, ६. ३०-३५, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ की कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

प्रस्तुत ख्यात का प्रारम्भ कनौज के राजा जयचंद की पुत्री संजोगता की शादी के लिए रचे गये स्वयंवर से होती है।

प्रारम्भ—

बीजेचंद की राव जैचंद मुं दळ पागुली कहायो, तिण री बेटी संजोगता मुं मोटी हुई तरै बाप था अरज कीवी मेह पिण हाजर हा जात री सोलंकणी नै सरूपदे उण पीण अरज कीवी तरै आप कहौ—मारा था सबळी हुवै तिण नु चाकर रापां तरै बेटी अरज कीवी राज राजसी जीग री आरंभ करी म्हारी दाय आवसी मुं परणासु.....सु चौरासी राजा आया नै एक राजा प्रथीराज चौहाण नै आयी, तरै सपतधात री मूरत करी.....कितराक दिन प्रथीराज सुणियो जरै प्रथीराज चंद भाट नै पूछीयो आ बात खरी कै खोटी ? तरै चंद भाट कयो खरी, तरै प्रथीराज चंद नुं कहौ—हालौ आंपां ही तमासौ देपां, तरै सावत नै सुखा साथै लीया तीण रा नांव....कवित—

ईग्यारै सै इकावने चैत तीज रवीवार,

कनवज देखण कारणै चल्यो त सांभर वार..... ।

ख्यात में वर्णित अन्य घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

#### १. जयचंद तथा सीहा का वृत्तांत :-

जयचन्द के कुंवरों आदि के नाम दिये हैं फिर राव सीहा के द्वारिका यात्रा सम्बन्धी गीत दिया है।

प्रारम्भ—

सुध मन जात हालियो सीहो, सेत सुत नै लीयै संग

राजा मूलराज नालेर मेलियो, ऊपर करी कनोजा आज ॥१॥

२. राव आस्थान, घूहड़, रायपाल आदि का वृत्तांत :-

राव आस्थान, घूहड़, रायपाल, जालणसी, सलखाजी, वीरमजी और चूंडाजी, रिड़मल, जोधाजी, गांगा के कुंवरो के नाम दिये हैं, फिर राव मालदेव ने अपने पुत्रों को गांव आदि दिये उसका उल्लेख है। (पत्र-४)

३. राव जोधा और गांगा का वृत्तांत :-

राव जोधा और गांगा ने ब्राह्मणों और चारणों को गांव दान दिये उनका विवरण अंकित है। (पत्र-३३)

४. शाहजहां के उमरावों के मनसब की विगत :-

बादशाह शाहजहां द्वारा उसके पुत्रों उमरावों को दिये जाने वाले मनसब (जात, असवार) की सूची अंकित है। (पत्र-१)

५. राव मालदेव का वृत्तांत :-

राव मालदेव के समय की घटनाओं के संवत् आदि दिये हैं, इसके अतिरिक्त विभिन्न युद्धों में मारे गये योद्धाओं का नामोल्लेख भी जगह जगह किया गया है। यथा—

“सूरसाह पातसाह धरणी लेण आयी तरै राव मालदेव रजपूत साम्है जाय नै वेढ की संवत १६०० पोस सुदि ११। राठीड़ जैते कुंपे राव मालदेजी री वेढ में तथा रावजी तथा रावजी रा इतरा रजपूत काम आया, रावजी रा बीस हजार असवार नवलाप घोड़ा सुं वेढ की जोधपुर लीयो, पछै दिने ५२४ जोधपुर राव मालदे फेर लीयो, सूरसाह मुवी १६०२।” (पत्र-४)

राव मालदेव द्वारा बनाये गये किले कोटड़ियों की सूची दी है। फिर ब्राह्मणों चारणों को गांव सांसण में दिये उसका विवरण दिया गया है। (पत्र-५३)

६. राव चन्द्रसेन का वृत्तांत :-

राव चन्द्रसेन की रानियों, कुंवरो के नाम दिये हैं फिर बादशाह अकबर की जोधपुर पर चढ़ाई, उसमें काम आये योद्धाओं के नाम आदि दिये हैं। चन्द्रसेन के पुत्र रायासिंह के दत्ताणी युद्ध में (वि० सं० १६४० कार्तिक शुक्ला ११) वीर गति प्राप्त होने का उल्लेख है। (पत्र-३३)

७.- मोटा राजा उदयसिंह :-

मोटा राजा उदयसिंह की संतति का उल्लेख है। फिर अकबर बादशाह की ओर से लड़े गये युद्धों का वर्णन है तथा उसके द्वारा गांव सांसण में दिये गये उसकी सूची दी है। (पत्र-३३)

८. महाराजा सूरसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा के परगनों के नाम, महाराजा की रानियों, कुंवरों का हाल, गांव सांसण मे दिये उसका वृत्तांत । वि० सं० १६६२ जहांगीर के शासन-काल में सूरसिंह द्वारा अहमदाबाद में उपद्रव दवाने, युद्ध में काम आये योद्धाओं के नाम आदि भी दिये है । महाराजा सूरसिंह द्वारा किये गये अनेक युद्धों का वृत्तांत तथा गांवों की विगत दी गई है । (पत्र-११)

९. महाराजा गजसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा गजसिंह की रानियों, पुत्र-पुत्रियों का विवरण, गांव सांसण में दिये उसकी विगत, बादशाह द्वारा लाख पसाव में हाथी आदि दिये गये उसकी विगत, महाराजा का दक्षिणियों से युद्ध करने, महाराजा को हाथी व हथिनियाँ कहाँ से प्राप्त हुई अथवा खरीदी गई उसका विवरण दिया गया है । बादशाह से प्राप्त हुए परगनों की सूची भी दी है । महाराजा गजसिंह के पुत्र अमरसिंह के परगने गांव जागीर में थे उसका ब्यौरा दिया गया है ।

१०. महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा जसवंतसिंह ने घोड़े, हाथी आदि बखसीस किये, पुत्र प्राप्ति के लिए महादेव की पूजा इत्यादि की उसका वृत्तांत इस प्रकार है—

“समत् १७०८ भिगसर वद १ महादेवजी की रोमेश्वर.....पूजा करण री सीरीमाली ब्रामण मदसुदन नु श्री राजाजी हुकम कीयो कंवर रै वासतै..... सु वरस १ में हीज कंवर श्री प्रथीसिंहजी री जन्म हुवी .....पूजा री विगत ..... ।”

जसवंतसिंह ने कुंवरपदे और राज्यप्राप्ति के बाद शादियों की उसका विवरण, फिर पुत्रियों की शादियों इत्यादि की उसका विवरण, महाराजा को दूसरी बार वि० सं० १७२८ चैत्र वदि ८ को अहमदाबाद का सूवा मिला उसका वृत्तांत, महाराजा की मृत्यु के बाद अजीतसिंह और दलयेथंभन के जन्म अवसर पर विभिन्न सरदारों द्वारा गुल, घृत, पकवान बनाने हेतु रुपये नजर किये गये उसका ब्यौरा दिया गया है । (पत्र-७)

११. महाराजा अजीतसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा अजीतसिंह के राज्य हक के लिये उमरावों द्वारा बादशाह से किये गये युद्धों, उसमे काम आये धायल हुए योद्धाओं का विवरण इत्यादि दिया गया है । इन्द्रसिंह द्वारा जोधपुर की राजगद्दी प्राप्त करने हेतु किये गये प्रयत्नों, अजीतसिंह की रानियों, संतति आदि अनेकानेक घटनाओं का (संवत् सहित) वृत्तांत है । अजीतसिंह का वृत्तांत इसमें विस्तार से दिया गया है । (पत्र-२८)

१२. राठीड़ अमरसिंह का वृत्तांत :-

फिर राठीड़ अमरसिंह का वृत्तांत दुवारा आ जाता है जिसमें उनके द्वारा लड़े गये युद्धों उनकी संतति व मृत्यु पश्चात् रानियाँ सती हुई उनके नाम व अमर-सिंह के साथ सरदार मारे गये उनकी सूची आदि दी गई है।

१३. बीकानेर के राजाओं का संक्षिप्त विवरण :-

बीकानेर के राजाओं (बीका से अनूपसिंह) संतति आदि का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। (पृष्ठ-२३)

१४. राजाओं उमरावों का वृत्तांत :-

राठीड़ व गहलोत राजाओं और उमरावों सम्बन्धी कुछ घटनाएँ बर्णित हैं और अकबर द्वारा जीती गई भूमि की विणत दी गई है। (पृष्ठ-२३)

१५. गहलोतों की वंशावली :-

गहलोतों की वंशावली दी है जिसमें पहले राजाओं में देव राजा से अब तक (५६ नाम), ब्राह्मणों में गोदसीदित्य में सोमराज तक (१५ नाम), रावलों में भोजराज से करन तक (२६ नाम), गहलोतों में राठौड़ के अमरसिंह राणा (जयसिंह राणा का पुत्र) तक (२० नाम) संतति बर्णित है। राजा मयमग-सिंह व उसके वंशजों की संतति आदि का विवरण अतिरिक्त दिया गया है। इसके अतिरिक्त अकबर की रणथंभौर पर बहादुर, मुहम्मद के बहन आदि सोदाहणों के नाम आदि भी दिये गये हैं। अन्त में राणा जयसिंह (क्रि. सं. १६५८-१७०६) के राज्यकाल में विभिन्न सरदारों व भायों की सूची में कुछ उदाहरण दिये गये उसकी सूची दी गई है। (पृष्ठ-२४)

१६. कछवाहों की वंशावली :-

कछवाहों की वंशावली दी है, जिसमें राजा नारायण के वंशजों, उनके संतति, रानियाँ आदि का विवरण दिया है।

१७. देवड़ों की वंशावली :-

सिरोही के देवड़ों की वंशावली दी है, जिसमें राजा मयमग-सिंह (२५ नाम) तक की संतति बर्णित है। फिर अकबर के राज्यकाल के कुंवरों के नाम भी दिये हैं।

१. विस्तार के लिये देखें—मुहम्मद बिन तुगलक (१३९८-१४१४) के राज्यकाल में जोधपुर.

२८ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

१८. भाटियों की वंशावली :-

भाटियों की वंशावली में श्री नारायण से रावळ जसवंतसिंह ((रावल अमरसिंह के पुत्र) तक (१३२ नाम) पीढ़ियाँ अंकित हैं। महारावल जयसिंह देवीदासोत, लुणकरण, मालदेव, हरराज, भीमसिंह, कल्याणदास, मनोहरदास इत्यादि जैसलमेर के राजाओं की रानियाँ, कुंवर-कुंवरियों का विवरण दिया गया है। (पत्र-२)

१९. हाडा चौहानों की वंशावली :-

हाडा चौहानों की वंशावली में पृथ्वीराज से राजाओं की पीढ़ियों दी हैं और राव भाखा के पुत्र नारायणदास के वंशजों की संतति का नामोल्लेख है।

२०. वादशाही मनसब इत्यादि की विगत :-

वि० सं० १७४१ में वादशाही मनसब इत्यादि दिया गया उसकी सूची, वादशाह की ओर से जोधपुर के शासक सूरसिंह, गजसिंह और जसवंतसिंह को टीका आदि इनायत हुआ उसका विवरण, फिर राठौड़ों की कुछ खांपों के बारे में जानकारी दी है। (पत्र-३)

२१. पंडा रा कोस की विगत :-

इसमें जोधपुर से अजमेर, आगरा से लाहौर जाते समय रास्ते में बीच के गांवों, नगरों के नाम, दूरी आदि दी गई है। इस प्रकार जोधपुर से अन्य नगरों के बीच के गांवों के नाम दूरी इत्यादि दी गई है। यथा—

जोधपुर सूँ जैतारण :— ३ नोहकौ बडी, २॥ जालेली, १॥ जाटीयावाव, २ बीसलपुर, २ चांदेलाव, २ कापरडो, ३ भावी, २-५ पचीयाक, २ धारीयो, २ गळणीयो, २ जैतारण (कुल २५-५ कोस) साढा पन्चीस। आगे मेड़ता से विभिन्न शहरों, नगरों, गावों की दूरी का हवाला दिया गया है। (पत्र-३६)

२२. दिल्ली के बादशाहों की वंशावली :-

दिल्ली में राजा सिंहासनासीन हुए (राजा दसरथ लुंवर से जहांगीर तक) व प्रत्येक ने कितने वर्ष राज्य किया उसका ब्योरा दिया गया है। (पत्र-३)

२३. सिरोही के शासक गजसिंह द्वारा बंद समाप्त करने का हाल :-

सिरोही के शासक गजसिंह (रायसिंह का पुत्र) ने राठौड़ों से मेल स्थापित करने व बंद समाप्त करने हेतु अपनी लड़कियों की शादियाँ की उसका ब्योरा दिया है। यथा—

“गोपालदास कीसनावत रैं बंद  
भाणा सिवराजोत री बेटी परणार्ई ... ..।

(पत्र-३)

२४. कान्हड़दे का वृत्तांत :-

जालोर के शासक कान्हड़दे के उत्सर्ग आदि कुछ घटनाओं का वृत्तांत इस प्रकार है—

“जाळोर ती भसुयां भागी …… नास नै दीली गयी, पातसाह भलावदीन कने पुकारी …… पातसाह उमराव भापरा डोढ़ लाख घोड़ा दे बीदा कीयो, सीवाणै कने वेढ हई …… भलाउद्दीन भाप भायी …… गढ़ कान्हड़दे रो भतीज सातल हुती तिए नुं भलाउद्दीन मार नै सीवाणी लिमो सं० १३६४ …… भलाउद्दीन जाळोर रो देस सूटियो सं० १३५८ बैसाख यद ५ बुधवार कान्हड़दे मारियो ।”

ग्रन्थ में घोड़ों की जातियों, रंग, ७२ 'कळाघो' के नाम, ८४ सिधों के नाम आदि भंकित है ।

(पत्र-१३)

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है । कपड़े का गत्ता लगा हुआ है ।

## ६. जोधपुर राज्य का दस्तूर, फुटकर ख्यात आदि

१. जोधपुर राज्य का दस्तूर, फुटकर ख्यात आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०६, ४. ६७ × २१ सेमी०, ५. १४३, ६. ३६-४०, ७. १९वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ में संकलित कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. धरजी :-

ग्रन्थ के प्रारम्भ में भंडारी अमरसी और पुरोहित बिरदमान की धर्जी (महाराजा भभयसिंह के नाम) की प्रतिलिपि लिखबद्ध है ।<sup>१</sup>

प्रारम्भ—

“भाराज धी अर्नसिधजी रं नावे धरजी भंडारी अमरसीध नै प्रो: बरदमान रो सं० १७८७ रा मीगसर वद १ रविवार रो …… सिध श्री अनेक सुकल सुभ घोपमान …… ।”

२. जोधपुर राज रा दस्तूर :-

इसमें जोधपुर राजघराने के शादी विवाह, राणीपदा, जन्म उत्सव आदि रीति-रिवाज सम्बन्धी सामग्री संकलित है ।

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० शो० सं०, 'परम्परा'—ऐतिहासिक दृष्टिके परखाने पृ० ७, जोधपुर

प्रारम्भ—

“अथ प्यात जोधपुर रा राज रा दस्तूर रो वही संवत १६१८ रा पोष वद ७ भौम—

संवत १६७६ म्हासुद १३ म्हाराराजधिराज गजसिधजी रो पांढा विवाह, संवत १६७८ रा मगरार वद २ माहाराज श्री गजसिधजी रो विवाह हुवौ कछुवावा रै ..... ।” (पत्र-४७)

३. जोधपुर रै चाकरों रो विगत<sup>१</sup> :-

जोधपुर राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था हेतु भंठारी, सिधयी, मुहता, पुरो-हित, व्यास आदि नियुक्त किये गये उसका वृत्तांत है । (पत्र-२)

४. दिल्ली रा पातसाह मुगलां रा घराणा रो ख्यात :-

इसमे मुगल वंश के शासकों (बाबर से फर्रुखसियर) का संक्षिप्त वृत्तांत है । प्रारम्भ—

“एक दिन बाबर कह्यो—अठारो पातसाही तो करां हां पिएण तिमरलंक हिंदुस्थान लीयो सो एक वपत हिंदुस्थान रो पबर लीजै तरं दरवेस रो रूप कर साथै पांच सो भला सिपाई.....हिंदुस्थान नूं बहीर हुवौ.....नै अठै सिकंदर पातसाही करै..... ।”

हमायूँ से सम्बन्धित एक रोचक वार्ता इस प्रकार है—

“हमाउ पातसाह बाबरसाह रै पाट..... वडो पातसाह हुवौ घणी घरती लीवी.....एक दिन पातसाह रै मन में आई हिंदुस्थान रा ठिकाणा देखिजै, तरं दरवेस रो रूप कर पांच सात आदमी.....कुत्ता साथै ईण भांत सिकार रमतां निकळियो । सो केई दिन आंवेर रहौ नै केई दिन जोधपुर रयो । पछै चित्तौड़ गयो सो उठै घणा दिन रयो, नै राणा सागा री बहू हाडी करमेती नूं बहन कह बोली नै उठा ती बहीर होवण लागी तरं बाई नै केयो—कुछ हमारे पास भागो तरं करमेती बोली—दूजो सह छै पण थांहरा भाणोज विक्रमादित्य नै उदैसिह न्हांना (छोटे) है नै म्हा सूं गुजरात रो पातसाह नै मांडवे रो पातसाह अदावदी है सो कोई जडी जंत्र देवो.....आदमी दोय साथै मेली आगै भापरां सूं जडी देसू.....आदमियां नै केयो—भापरां मे जडी नही आगै हालौ..... सु दिल्ली नेड़ी आयी.....पातसाह महलां दाखल हुवौ.....पातसाह बोलियो—बाई नूं हमारी दवाई कहजौ.....जद

१. प्रकाशित, मारवाड रा परगनी रो विगत (भाग २ परिशिष्ट ४, पृ० ४७८), रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

कांम पड़ै तद हमकूँ समाचार भेजीजो सो मैं आऊंगा । .....अरे समाचार कहजौ, हाडी करमेती नै केयो नै घणी पुसी हुई ।”

पछै संवत् १५८६ गुजरात री पातसाह बादरसाह चितोड़ आय लागी तरै हुमाउ पातसाह नै खबर मेली.....उठा सुं तुरत चढ़ियो जेठ सुद १२ दोपार गढ़ टूटो नै आयण री हुमायू आयो सो सुण नै बादर तुरत नाठी.....छूट न होवण पाई .....नै विक्रमादीत नै पाछो चितोड़ बँसाणियो ..... ।”

कुछ घटनाओं के बाद अकबर द्वारा भूमि हस्तगत की गई उसकी सूची दी है । फिर संतति का उल्लेख किया है, अकबर के वारे में लिखा है—

“अकबर पातसाह बडो पातसाह हुवो, ओ पातसाही करो, बडा बडा गढ़ फोट फतै कीया आप बडो करामाती हुवो संवत १६६२ काती सुद १४ ..... काळ कीयो ।”

अन्त में जहांगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब इत्यादि बादशाहों की संतति व कुछ घटनाओं का विवरण दिया गया है । (पत्र-४)

५. फुटकर श्यात री बातों :-

इसमें मारवाड़ के शासकों की ऐतिहासिक बातें वर्णित हैं ।

प्रारम्भ—

“हुटकर पीयात री बातों बहीयां में देपी जीद लीपी । रावजी श्री तीडोजी सीवाणै पातसहा अलावदीन ..... आयो तद सातल सोम चवाण भाणैजो थो त्योंरी मदत कर राव तीडोजी सीवाणै १३६४ काम आमा, तिणरै लारै अकेरसुं पाट कानराव टीके बैठी, छोटी भाई थो नै सलपेजी वीप में गांव गोपड़ी रैता था । पछै राव सलपेजी रै मलीनाथ..... ।”

(क) मलीनाथ के पुत्र जगमाल द्वारा अपने चाचा जैतमाल को मारने आदि घटनाओं का वृत्तांत इस प्रकार है—

“.....पछै जैतमाल नुं तो कंवर जगमाल मालावत दगो कर काका रै कटारी वाही सु जैतमाल सीवाणै जाय मुवी नै लारै सुं मलीनाथजी सिवाणै गया । जैतमालजी रै बेटा ४ था उणें दोने रावळ मलीनाथ वर दियो ये आयवणा जावो धारै भलो हीसी । सो पाटवी पीवकरणजी था तो राड़घड़ा रै नगर गया नै परमारां सुं छोडाय नगर लीयो..... ।

मलीनाथजी जैतमाल रै छोटी बाई थी नु सीवाणा सु पेड ले आया..... इण री ब्याह म्हे करसां सु इसी सकड़ रजपूत हुसी सु म्हारी घोड़ीमां घोड़े कोई गिनामत आय लेसी तीण नुं आ बाई परणांवसां । पछै जाळोर री गांव डोडीयाळ री



राव बालोत चुहाण थो .....सीयांणची में गांव कांणारुं घाय उतरीया उठा मुं हेरो लगाय जाय नं धोड़ीयां घाई लीवी नं सारं बाहर रावळ मलीनायजी चढ़िया, .....पछं मलीनायजी आपरी भतीजी डोटीपाळ रा राव नुं परणार्ई.....।”

(ख) वीरम द्वारा जोहिया दत्ता की रक्षा करने के कारण मलीनाय से मनमुटाव होने तथा वीरम के जोहियों से युद्ध होने पर वीरम व उसके सापियों के मारे जाने का उल्लेख है।

(ग) राव चूंडा द्वारा मंडोर पर अधिकार करने और नागौर में रहते हुए बीजा भाटी को मारने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

“राव चूंडे मंडोर लियो पछं नागौर लीयो तद भाटी बीजी गांव जालोड़े फलोधी रं राजसयांन कर रया था सु बीजाजी रं बावड़ी रा पिरोहीत मुं भोड़ कोई तरं हुवी थो, सु उण पिरोहित रावजी चूंडाजी नु नागौर सुं सीखाय भखाय जालोड़े साथ लेनं..... चूंडाजी नं उपर ले गयो सुं बीजीजी तौ गडी बारं निकळ सामा आय बाज नं काम आया तिए री छतरियां हनोज जालोड़ा रा कोट घाणे मोकळी छं । तिए सभे री पीरोयत बीजाजी कनं चाकरी करती थो तिए लूण खाय बीजीजी री ईसी हरामपोरी कर पीरोयत मराम्या.....सारं सतियां हुई नं ठकरांणी एक महासती थो तिए केयो—रती ती लकड़ा खिड़क राखी नं कंवर..... आवसी तरं उण सुं मिळ भळावण दं पछं बलसुं मास ६ ताई ठकरांणी बंठी रेही नं रती लकड़ा री चुणी राखी । पछं कंवर आवता सुण .....लकड़ा देख नं बरछी सू अेक लकड़ी.....हेटो नांपीयो नं केयो हमे मुंडा दिखावण नं अं लकड़ा कीज धुण रापीया है । पछं कंवर माहे गयो सु महासती कंवर नं केयो—हाय मुंगी री छाजली थो सु चौक में फंक दियो नं केयो—अं मूंग भेळा हुवं ती धारी परवार भेळी रेजी नं बरछी लागी महासती मोरां में आपरं, बताय दीवी.....पछं सती हो गया छं ।”

(घ) बात अेक रावळ जांम .....रं घणी वारठ ईसर सुरावत नुं कोड पसाव दीयो—

रावल जाम द्वारा वारठ ईसर को करोड़ पसाव दिया गया उससे सम्बन्धित वार्ता है। ईसर ने उस समय एक दूहा कहा जो इस प्रकार है—

अर मुणा सांठा पछं, मुज पत्यांणी मन ।

जांम कोड़ आपी नही, ती दीनी तीकम ॥१॥

(ङ) राव मालदेव द्वारा लडे गये विभिन्न युद्धों, युद्ध में काम आये योद्धाओं की सूची, संतति, रानियां इत्यादि का विस्तार से वृत्तांत दिया है।

(घ) चंद्रसेन व मोटा राजा उदयसिंह के ग्राम लोवावट में युद्ध हुआ (संवत् १६१६) उसका वृत्तांत है। इसमें दोनों ओर से युद्ध में काम आये थोड़ाओं की सूची भी संक्षिप्त है।

(ङ) मोटा राजा उदयसिंह और मूरसिंह के सम्बन्ध मुगलों से रहे उसका वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

“बात भेक मोटाराजा श्री उदयसिंहजी रें बडा कंवर सगतसिंहजी बडी रजपूत धो तीण बाप जीवतों पातमाही मुनसप जुदो पायो ही तीण मोटा राजा रें रांणी कछवाई मनरंगदेजी कछवाह राजा आसकरण गबालर रा धणी री बेटी ही.....पातसाह उण पर घणा राजी हा .....मोटा राजा कछवाइजी नुं सारां सोरें मानता । .....बात एक कोई केवें आसकरण ..... पेट रौ थो नव रोजा मुदें सुं .....आसकरण नुं पातसाह पूरौ मुकत्यार रापता । इणां रें बेटी होती सु पैला बीहाव चंदरसैनजी सुं तय थो नै .....चंद्रसेन नट गया..... पछें राणी कछवाई मनरंगदेजी रें बेटा मूरसिंह किसनसिंहजी नै बाई मन भावती..... ।”

आगे महाराजा मूरसिंह को गुजरात का सूबा (१६५२) मिला, इत्यादि अनेक घटनाओं का विवरण दिया गया है।

(ज) परगने फलोधी की बात :-

मुगलखान के फलोधी पर आक्रमण का विवरण इस प्रकार है—

“संवत् १६६० रा चैत बंद १२ परगने फलोधी की बात.....बलोच मुगलपान समायलपां. गांव कीरडी मार नै घणी बीत लियो, तिण दिन परगनी मुता जगनाथ रें हवालं छी सु जगनाथ ती जोधपुर धो नै मुती रूपसी फलोधी धो नै थांणादार भाटी अचलदास मूरतांणोत भाटी सगतसिंह..... । फलोधी पुकार आई नरें थांणा री साथ धार चडीयो कोस ४ आसरें तळाव पर धाय पोता, मामलो हुवी तठें राव री साथ इतरी काम आयी ..... । बलोच पछें १६६४ रा काती बंद ५ मुणोत नैणसी रें हवालं फलोधी कीयी.....मुगलपान .....फलोधी री तरफ आयी, मुहणोत नैणसी सामी चड़ियो .....बेढ हुई बलोच मुगलपान भाया सुं काम आयी..... ।”

महाराजा जसवन्तसिंह को बादशाह की ओर से मनसब, जागीर इत्यादि प्राप्त हुआ उसका विवरण तथा बादशाह की ओर से महाराजा के विरुद्ध युद्धों में भाग लिया उसका भी काफी विस्तार से वृत्तांत दिया गया है। (पत्र-२५)

६. कमठों न नीवारणों की विगत<sup>१</sup> :-

जोधपुर के शासकों, अधिकारियों तथा रानियों द्वारा भवन और जलामय आदि बनाए गये उसका विवरण दिया गया है ।

७. सैर बसिया तिए की याद :-

विभिन्न शहर किसने बसाये और उन पर कब किसका अधिकार रहा इत्यादि कुछ बातें संक्षिप्त संकलित है ।

प्रारम्भ—

“दोली आद सैर तुरा बसायो मु” .....पद्य ११०६ रा काती सुद ६ तुंवर अनंगपाल जीग करायो, जोतसी जगजीत कीयो यी” ..... ।” (पत्र-१२)

८. डावी न जीवणी भिसलां की विगत<sup>१</sup> :-

जोधजी द्वारा स्थापित डावी और जीवणी गिसलों का उल्लेख है ।

(पत्र-४)

प्रस्तुत वही अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध हुइ है । इस पर कपडे का गत्ता मंडा हुआ है ।

यह ग्रन्थ न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु सामाजिक अध्ययन हेतु उपयोगी है क्योंकि इसमें जोधपुर राजघराने के रीति-रिवाज सम्बन्धी अच्छी सामग्री संकलित हैं ।

७. बात ख्यात तथा अजीत विलास<sup>२</sup>

१. बात ख्यात तथा अजीत विलास, २. रा० शो० सं०, ३. १०६१३, ४. ३४.५ × २५ सेमी०, ५. ४५०, ६. २३-३१, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ में जोधपुर के राजाओं की जन्मपत्रियां अंकित है ।

ग्रन्थ मे लिपिवद्ध कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है :-

१. सिंध की ख्यात :-

इसमें वर्णित है कि सिंध में पहले ब्राह्मणों का राज्य था वहाँ बाहरी शक्ति का राज्य कैसे स्थापित हुआ फिर कब किसके अधिकार में सिंध रहा उसका वृत्तांत संक्षेप में है ।

१. प्रकाशित, पारखण्ड रा परगनां की विगत (भाग १ पृ० परिशिष्ट), रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

२. प्रकाशित, वही, पृ० ४६५, भाग-२

“अहवाळ अवासियों री गज सिध में हुवी तिणरी विगत :- पैकबरसा प्रब भूवा पछै वात्रफा प्रत पायां पछै वरस असी तथा निवै वरस पछै, हजाज बेटी जसप री भूम में पातसाह हुवी जिण समें अवासी महमद कासम री राम सु सिध में आयी सी तिण समम रा प्रडाहर विरामण बादसहर में सिध री मालकी करती सु अवासी महमद कासम री बेटै, प्रडाहर नै नीक्राळ दीयी नै राज री मालक हुवी.....आदि ।” (पत्र-६)

## २. भुंठत री ख्यात :-

इसमें भुंठत देश के लोगों का खान-पान, रहन-सहन, जन्म-उत्सव, अन्तिम संस्कार, विवाह, वहाँ की भौगोलिक स्थिति, दर्शनीय तीर्थ-स्थानों आदि का विवरण दिया गया है ।

### प्रारम्भ—

“भुंठत के राजा पत्नी ईष्ट विहनु सिव देवी आदिक पूजे छै, मत हिंदू छै । और पान पांन अंगरेजां माफिक कोई मांस को टाळी नहीं और वांको जनम होय यदि राग रंग बहोत होय और कोई मृत पावै यदि राग रंग करै.....कोई नै तो सुती गाई अर कोई नै बैठी.....कोई नै अग्नि में बालि करि राप होय..... आदि । (पत्र-३)

## ३. जमी धूजण री बात :-

वि० सं० १६०५ में भूकम्प आया उसमें जालोर, जयपुर, नागौर, भीनमाल, आबू, सिरौही और जोधपुर आदि शहरों में इससे मकान गिरे अथवा व्यक्ति मारे गये उसका विवरण दिया गया है ।

### प्रारम्भ—

“सं० १६०५ का भीति जेठ बदी ८ नै जमी धूजी सो घणी धूजी, राति आधि के घड़ी १ पहली धूजी सुं जाळोर सुं पवर इण माफक आई जाळोर का गढ़ में दिगाड़ घणी हुवी.....आदि ।” (पत्र-२)

## ४. सर्व संप्रहृष्यति :-

बद्रीनाथ के आसपास और बद्रीनाथ के तीर्थ स्थानों का नामोल्लेख है और बाद में भक्ति सम्बन्धी कुछ बातों का वृत्तांत है । यह ग्रन्थ कुचामन ठाकुर रणजीतसिंह के पठनार्थ लिखा गया—

“पठनार्थ राज्य श्री रणजीतसिंहजी स्योनाथसिधोत, स्योनाथसिधजी सुरजमलोत, सुरजमल समासिधोत, समासिध जालमसिधोत पांप मेड़तिया गोयंदासोत

## ३६ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

राजस्थान कुचांमणि । वद्रीनाथजी जातां तीरथ भावै सो लीपीजै छै, हरद्वार रा तीर्थ प्रथम—हर की पैडी १ कुसावर्त २ कनपल ३……… ।” (पत्र-३)

### ५. अवतार हवा तीएरी विगत :-

ईश्वर के विभिन्न अवतारों के नाम व अवतार तिथि इस प्रकार अंकित है—

“राम अवतार चैत सुदि ६, मछा अवतार चैत सुद ५, नरसिंघ अवतार वैसाप सुद १४, फुरसा अवतार वैसाप सुद ३, वावन अवतार भादवा सुद १२, कछा अवतार जेठ वद १२, वाराह अवतार चैत सुद ५, कृष्णा अवतार भादवा वद ८, बुधा अवतार जेठ सुद ८, कलकी अवतार जेठ सुद २ ।”

### ६. अठारै पुराण :-

१८ पुराणों के नाम और उसके आगे कथाओं की संख्या अंकित है ।

### ७. दादूजी रँ सिपां रा नाम :-

इसमें दादू दयालजी के ५५ शिष्यों के नाम दिये हैं इसके साथ ही शिष्यों के निवास स्थान भी छोटे अक्षरों में अंकित है । (पत्र-३)

### ८. ग्रन्थों री याद :-

इसमें विभिन्न विषयों के करीब ७७ ग्रंथों के नाम उनकी श्लोक संख्या और कही-कही कर्ता का नाम दिया है ।

(अ) श्री भागवत गीता श्लोक ७५० वेद व्यास कृत

(ब) विसनुं सहस्रनाम श्लोक १६३

(स) सूरज प्रकाश श्लोक ६०५० करनीदान कृत (पत्र-२)

### ९. उप पुराण :-

इसमें पुराण और आगे १८ उप पुराणों के नाम अंकित हैं फिर नीचे ४ वेद और ४ ही उप वेदों के नाम दिये हैं ।

### १०. फुटकर ग्रन्थ :-

इसमें पहले ६ संस्कृत के ग्रन्थ ६ ही पट शास्त्रों के नाम और २८७ फुटकर ग्रन्थों के नाम दिये हैं—

(अ) वसंत राज श्लोक

(ब) सिद्धांत कौमदी श्लोक

(स) चंद्रिका श्लोक

### ११. दुर्गादास का वृत्तांत :-

इनके बारे में लिखा है—

“दुर्गादासजी नव बेटीया बहनां रा ब्याव सादडी कीया । पैतीस हजार री

रेख सूं बाघावास महेकरणजी नूं देरीजीयी । तेजकरणजी महेकरणजी तो मेवाड़  
मे दुरगादासजी रै साथै गया था नै भ्रमंकरणजी जैपुर जैसिधजी कर्न गया...  
पादि ।” (पत्र-१८)

१२. कवित्त उदायतां री खांप री :-

एक छप्पय उदायतां के खांपों और वतन से सम्बन्धित है ।

प्रारम्भ—

उदरराज नीबोल अमर नीवाज अणंकल

रास कमप वत्तसेस भनी महड़ास लिया छन..... ।

१३. वंशावलियां :-

इसमें मारवाड़ (पुंज से महाराजा तखतसिंह तक), भाद्राजून (राव मालदेव से इन्द्रभाण), बीकानेर (जोध्या से गंगासिंह), ईडर (अणंदसिंह से उम्मेदसिंह), जैसलमेर (वाराह से गर्जसिंह), बून्दी (राव मुरजन से रावराजा रामसिंह), उदयपुर (राणा भूषणजी से महाराणा फतेसिंह), किशनगढ़ (मोटाराजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह से मोलमसिंह), सिरोही (रावळ सोभा से उदैभाण), जयपुर (राजा डूलेराय से रामसिंह), कोटा (राव रतन से रामसिंह) के नरेशों की वंशावलियां लिखबद्ध हैं । (पत्र-२)

१४. महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) रिजक पावं तिए री विगत :-

वि० सं० १७२२ में महाराजा जसवन्तसिंह को बादशाह की ओर से रोकड़ रुपये गांव आदि मिले हुए थे उसकी विगत दी गई है ।

प्रारम्भ—

“रोकड़ रूपया पावं पीडा का ३५००००, ईनाम २५००००, असवारां रा १२०००० । परगना जागीर रा जोधपुर रा गांव १०८६, पोरकरण गांव ७७ ..  
आदि ।” (पत्र-३)

१५. राजवंशों री सायाग्रों री विगत :-

इसमें गहलोतों, परमारों, चौहान और सोळंकियों की शाखायें इस प्रकार अंकित हैं—

(क) गहलोत—गेहलोत, मांगनीया, डाहलिया, ढीवाण, चंद्रावत, शिशो-दिया, आसायच, मोटसिरा, माहालण, वळा, अहाड़ा, केलवा, गोदरा, लवड़कीया, पीपाड़ा, मगरोपा, मावला, धोरणीया, गोजम, हूल, गोहील, मैर, वूटा, वूंटिया ।

(ख) परमार—परमार, पांणीसवल, सीकोरा, धीरीया, पूंट, गैलड़ा, सोडा, वहिया, जैपाल, भाथी, डल, कळोकिया, सापला, वालह, कांगुवा, कथोटीया, डेवल,

कूंकण, भांमा, छाहड़, काळा, जागा, पीथलीया, भायल, मोटसी, उमट, कालूमहा, ठूठा, हूबड़, घंघ, पेर, डोड, पेळ, गूंगा, कावा ।

(ग) चौहान—चहुवाण, गीळ, वेळ, हुरड़ा, माळण, सोनगरा, डेडरिया, निरवाण, सेपटा, ढीवडीया, पीची, बगसरीया, गोळवाड़, निरवाण, देवड़ा, हाडा, वेहण, वोड़ा, वाका, राकसिया, चीवा, चाहिल, सँळोत, बाळोत ।

(घ) सोलंकी—सोलंपो, मुटा, यागेल, नायचा, डहरा । (पत्र-१)

१६. मेवाड़ रं घणी रं परगनां री विगत :-

उदयपुर राणा के परगनो और गांवों की विगत दी गई है ।

प्रारम्भ—

“चितोड़ रा गांव ६०१, गोडवाड रा गांव ३६०, जवास रा गांव ३४०, गरवार रा गांव ५२……आदि ।” (पत्र-३)

१७. राव रतनसिंह री वीकौ :-

वि० सं० १६१४ में अजमेर का सूबादार कासिमखा ने जैतारण पर आक्रमण किया इस समय मालदेव ने राठोड रतनसिंह की मदद नहीं की तब राठोड़ रतनसिंह उदावत ने बड़ी वीरता से मुकाबला किया इसमें रतनसिंह वीरगति को प्राप्त हुआ और उसके साथ योद्धा मारे गये उन ३५ योद्धाओं के नाम दिये हैं ।

प्रारम्भ—

“सं० १६१४ रा चैत बदी ६ अकबर पातसाह री फौज जैतारण उपरि आई कासिमपां फौज ल्यायी……मालदेजी रतनसिंगजी री मदत न कीवी……आदि ।” (पत्र-३)

१८. गढ़ सहर बसायों री विगत :-

विभिन्न दुर्ग, शहर आदि किसने कब बनवाये अथवा बसाये, उसकी विगत दी गई है ।

प्रारम्भ—

“संमत् ६०२ वरपे चित्रंगदे मोरी चोतोड़ बसायो, पहला परमारा करायो छी……आदि ।” (पत्र-२)

१९. राजकुलां रा उतन :-

परमार, गहलोत, चौहान, सोलंकी, कछवाहा, भाटियों आदि राजकुलों का निवास स्थान कहाँ-कहाँ रहा यह अंकित है ।

प्रारम्भ—

धार, उजिया, आबु, परमारों रा उत्तन  
भाहड़, वैराटगढ़, परनालो गहलोतों री उत्तन .....आदि । (पत्र-२)

२०. महाराजा जसवंतसिंह का गीत बारठ सांभो गांव रेपड़ाबास री कहै :-

प्रारम्भ—

प्रथम पांच पकवान घृत धान मांडे पृथी,  
उमंडी नह छड़ी आडी वडै गढ़ जोधपुर दसां  
देसां विचै हेक वळ हुवी जसवास हाडी ॥१॥

२१. महाराजा जसवंतसिंह व हाडी रानी :-

गीत आढी प्रथीराज गांव हीमोला री कहै—

प्रारम्भ—

रचिया ध्रम जिगन प्रथी सिर रांणी  
रापण घर मोटी कुळ रीत  
हाथ सदा मोटा हाडी रा..... ॥१॥

जसवंतसिंह से सम्बन्धित इसी प्रकार के गीत कवित्त बारठ नरहरदास लखावत, भोजग जगा तेजावत (जोधपुर निवासी), बारठ धनराज, बारठ जगनाथ सांवलदासोत (मथानिया निवासी), चारण नगराज, आसीया बाघोराज, लालस बाघो, चारण कचरा, बारठ भैरवंदान चांवडदांनोत आदि कवियों के संकलित हैं ।

२२. महाराज अभयसिंह सरयुलंदखां रै राड़ री वर्णन :-

महाराजा अभयसिंह ने सूबेदार सरयुलंदखा पर चढ़ाई की और मुझ हुआ उसका वृत्तांत बखतसिंह ने ईडर के नरेश आनन्दसिंह को लिख भेजा उसका विवरण है ।

प्रारम्भ—

“स्व सुयां श्री भाई थी अणंदसिंघजी जोग्य अहमंदावाद रा डेरं थां  
राजाधिराज श्री वपतसिंघजी लिषावतं जुहार बंचावजी, अठारा समाचार श्रीजी  
री कृपा सुं भला है.....थे लिपियो थो मीयां सुं वेढ हुई तिण री फिकर हुई सो  
श्री ईश्वर रै प्रताप फतै हुई.....आदि ।” (पत्र-२३)

२३. कुरव इनायत री याददास्त<sup>१</sup> :-

जागीरदारों तथा मुत्सदियों आदि को जोधपुर के राजा की ओर से सम्मान



हेतु इनायत किये जाने वाले विभिन्न कुरबों का उल्लेख है।

२४. जोधपुर श्रोवादारों की याददास्त<sup>१</sup> :-

जोधपुर राज्य के ६० श्रोहदों के नाम दिये हैं। यथा—परघान, मुसायव, दीवाण... ..आदि। (पत्र-१)

२५. राठीडों की पापों की याददास्त :-

इसमें राठीडों की शाखायें अंकित हैं। यथा—धूहड़ीया, घांधिल, मुठु, वेगडा, बूला... ..आदि। (पत्र-३)

२६. गढ़ जोधपुर निवाणों की याददास्त<sup>२</sup> :-

जोधपुर दुर्ग में शहर के अन्दर तथा बाहर के जलाशयों की सूची अंकित है।  
 “प्रथम गढ़ उपरला निवाण की याद दास्त—  
 दौलतपांना का माणिक चौक में टांकौ  
 आयसजी देवनाथजी की समाधि में टांकौ ... ..आदि।”

२७. राठीडों की पापों की याददास्त :-

राठीडों की खांपे और उप शाखाओं की सूची के साथ-साथ गांव के नाम भी अंकित है।

प्रथम जोधा की पापां

(अ) भारमलीत (जोधा) राघोगढ रा, मालवा में छै

(ब) सिवराजोत जोधा गांव रामासडी में

(स) जोगावत जोधा गांव डेषाणा रा

इसी प्रकार उदावतों, मेडतियो की खांपें अंकित हैं।

२८. पातसाही चाकर मा० जसवंतसिंह रा चाकर काम आया तिए की विगत :-

वि० सं० १७१४ में औरंगजेव और मुराद के बीच युद्ध हुआ उसमें बादशाह और महाराजा जसवंतसिंह के योद्धा काम आये उनकी सूची दी है।

“सं० १७१४ रा बैसाप वदी ६ शाहजादा औरंगजेव मुराद बगस रै राडि हुई जिण कने जिवगी वाजु कोस ४ गाव चोरनारायण जठै काम आया पातसाही चाकर—

(अ) राव रतन महेसदासोत दलपतीत उदैसिघोत... .. (पत्र-६)

१. प्रकाशित, विगत भाग २ (परिमिष्ट पृ० ४८२)

२. प्रकाशित, विगत भाग १ (परिमिष्ट पृ० ५६६)

२६. पातसाहों की ह्यात :-

पहले बाबर से अकबर (द्वितीय) तक वंशावली दी है फिर औरंगजेब के उमरावों की सूची, फिर शाहजहाँ की दिनचर्या और कुछ उपदेश सम्बन्धी बातें वर्णित हैं। इसके आगे मुगल बादशाहों की बातें, छुदा पैगम्बर आदि अनेक धार्मिक बातें लिपिबद्ध हैं।

३०. दिल्ली राजा पातसाह हुआ जिए री ह्यात :-

प्रारम्भ—

“दिल्ली प्रथम बिदुमु राज कीनु पछे ईंद्र राज कीनी……आदि।”

इस प्रकार मुहम्मदशाह तक राजाओं व बादशाहों के नाम किसने कितने समय राज्य किया आदि लिखा है।

३१. बात परगने जोधपुर री :-

यह वार्ता मुहता नैणसी कृत ‘मारवाड़ रा परगना री विगत’ में बात परगने जोधपुर री के समरूप है। इसमें वि० सं० १७२४ तक की घटनायें लिपिबद्ध हैं। आगे गांवों की विगत इत्यादि नहीं दी गई है जो कि विगत में है। (पत्र-६१)

३२. अजीत विलास<sup>१</sup> :-

इस कृति का प्रारम्भ राव सीहा से होता है मालदेव, मोटाराजा उदयसिंह, जसवन्तसिंह और अजीतसिंह का वृत्तांत विस्तार पूर्ण दिया है।

प्रारम्भ—

“राव सीहोजी सेतराम री राव सीहोजी कनवज सुं आय सं० १२१२ रा काती मुद २ नापो फुलाणी नु मार ……आदि।”

इस ग्रन्थ में दुर्गादास और उसके साथियों का सल्तनत के विरुद्ध संघर्ष विस्तार के साथ दिया गया है। (पत्र-४७१)

३३. महाराजा अमर्यासिंह बख्तसिंहजी रं राज री बात :-

महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(अ) अमर्यासिंह द्वारा बादशाह से ईंडर राज्य प्राप्त करना।

(ब) अमर्यासिंह का राज्याभियेक और नागीर से इन्द्रासिंह को निकाल कर बख्तसिंह को वहाँ रखना।

(स) भंडारी रघुनाथ को कैद में डालना।

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, ‘परम्परा’ भाग २७, अजीत विलास, रा० शो० सं०, जोधपुर

(द) अहमदाबाद के आक्रमण का हान

अहमदाबाद के सूबेदार सरबुलंदखान के मराठों में मिलने और गुजरात दबा बैठने पर बादशाह द्वारा महाराजा अमरसिंह को अहमदाबाद का सूबा देने का उल्लेख इस प्रकार है- -

“पछे तीर विलंद ही दीपणीयां मुं मिळ गयो गुजरात दबा बंठी, पतस्याह चाकर पा स्थाने काडण लागी नै फुरमाण हुकम कोई मानै नहीं.....नै गुजरात में अनीत धणी करणी मांडी.....पछे पातसाह महाराजा (अमरसिंह) नै दरगाह बुलाया..... तरै श्री महाराज बीटी लियो । भरज करो—आप मुन वयती रपावें .....पातसाह धणी राजी हवी सिरपाव जुहार पजानी नै गुजरात री सीबी दियो ।

दिल्ली सुं पातसाह रा फुरमाण उपरा उपरी घणा तानीद रा आवै हमै जोधपुर सुं गुजरात नै डेग वारै किया गु फौज एक तो बडी श्री महाराज री, नै फौज दूजो नागीर सुं राजाधिराज (बखतसिंह) पदारिया नै सीजी फौज मारोठ री, मु मेदतीया बीजसिधजी वगैरे चौरासी री साथ । तीन फौजों सुं कूच कर रेबाई सीरोही हुय.....पालणपुर डेरा हुवा नै मियां नै पत मेलियो.....धे तीर खाली कियो नही, नै लोग नै जादा पोसता जावो छी मु ओ कोसी पातसाही चाकरी री इरादी छै.....तरै विचारीयो अमदावाद सहर नुं लागोजै तो मीयां सहेर री उपर करसी, मु पाच मोरचा सहर नै लगाया .....नै राइ कीयी मु गोळा जाय नै भद्र में मीयां री कबीलो थो जठै पड़ण लागे .....।”

दोनों और युद्ध में काम आये और घायल हुए योद्धाओं के नाम दिये हैं तथा वि० सं० १७८७ आश्विन सुदि १२ महाराजा का वहाँ अधिकार होने का उल्लेख है ।

“मिया नै कोल बचन दिराया । अमरसिधजी री मारफत बात हुई । सरबुलंदखान तोपखानी सारो उभी मेलनै जाती रयो नै आसोज सुद १२ सोम श्री दरवार री भंडी रूपीयो..... ।”

(घ) महाराजा अमरसिंह की बीकानेर पर चढ़ाई

दोनों भाइयों के बीच मनमुटाव होने और जोधपुर जयपुर के बीच हुए युद्ध का हाल है ।

“जैपुर बाळा इसा कायला पड़ीया सु राजपाट में इसड़ी ताप आगं कदैई दीठी नहीं । श्री राजधिराज (बखतसिंह) रै तीर १ नाक नजीक लागी, महाराज सुं मिलिया.....भाई बपता घणी ताकीद कीवी । अंगोछा सुं रंज भाटकी । फुरमायो—भगतीया नै म्है समभाय देवां छां, नै जैसिधजी तो इसा धूजीया सु पाछी

झूच कर जयपुर पधारिया सु फेर बारै नीसरीया नहीं । देवलोक हुवा जद बारै  
आया । इण भाव कजिया री गीत लिपंते—

हुंता गदां आंगवै । यजाई विपम गत नाद बाजा  
सवाई दळां नै बपतसी म्हाबळी, रोळीया पाग चौदिस राजा ॥

(न) अमर्यासिंह द्वारा फिर बीकानेर पर चढ़ाई करना

महाराजाधिराज बखतसिंह और उमरावों, फतेहचंद, अनोपचंद आदि का वृत्तांत है ।

(प) बादशाह द्वारा बखतसिंह विर्जासिंह को सिरोपाव

वि० सं० १८०४ में बादशाह की ओर से बखतसिंह, विर्जासिंह को सिरोपाव इत्यादि दिया गया उसका वृत्तांत है ।

(फ) रामसिंह व बखतसिंह में उत्तराधिकार के लिए झगड़ा

वि० सं० १८०६ में अमर्यासिंह के देहान्त होने पर रामसिंह के उत्तराधिकारी होने फिर बखतसिंह द्वारा रामसिंह से जोधपुर की राजगद्दी हस्तगत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“पेहला तो मेड़तै राइ हुई, सेरसिंघजी रीयां नै कुसलसिंघजी आउवो आमा सामा काम आया । महाराज बखतसिंहजी री फतै हुई……पछै जगु छाती में मुकी री दै उठा सुं श्री रामसिंघजी नै लेर नीकळया……देवीसिंघजी (पोकरण) री सला बात सुं जोधपुर री गढ सूप दीयी (बखतसिंह को), कजियो कारी न हुवी । रामसिंघजी रा भगड़ा में पचास लाप परच पड़ीया सुं छव महिनां में पचास लाप पाछा पैदास कर पजानै में मेलिया……आदि ।”

(ब) महाराजा द्वारा जगनाथ पुरोहित को खास रुका

महाराजा द्वारा खास रुका जगनाथ को लिखा गया उसकी प्रतिलिपि दी गई है ।

प्रारम्भ—

“प्रोहित जगनाथ सुं म्हारो नीमसकार बांचजौ तया ध्दानु कोइ वीरदाव लीपां सु तो हमे थांहरी वीरदाव लीपीजसी । नै थे तो भीयम पीतामह ही …… ।”

(भ) बखतसिंह की फलोधी पर चढ़ाई

महाराजा बखतसिंह द्वारा फलोधी पर चढ़ाई करने का उल्लेख है ।

३४. ओसवालों में लोढ़ा हुआ जां की ख्यात :-

यहाँ एक दन्तकथा में बतलाया गया है कि ओसवालों में लोढ़ा गोश्र की उत्पत्ति कैसे हुई ।

प्रारम्भ—

“नागौर की पटी में गाव भडाए, छै जठँ आगँ बडो सहर छौ जठँ माता बड़वासणि को थान छौ, सो माता बड़ी प्रतेष्ठावान ही सो माता की जाति देवा वासतै लुगाया दस वीस जाय थी ……… ।” (पत्र-३)

आगे ग्रंथ में महाराजा तख्तसिंह की संतति की सूची, विभिन्न राज्यों के राजाओं को अलग-अलग किस उपाधि के साथ पुकारा जाता था उसका उल्लेख (यथा—जोधपुर के राजराजेश्वर महाराजाधिराज, जयपुर के राजेन्द्र, बून्दी के रावराजा आदि), तख्तसिंह द्वारा नाहर की शिकार की बात, लाहौर के जाट रणजीतसिंह और अंग्रेजों के बीच ई० सन् १८३८ नवम्बर २७ को वार्ता हुई उसका वृत्तात ।

सिरडा ग्राम के ठाकुर प्रतापसिंह भाटी का वृत्तात, मारोठ बसा और उस पर किन-किन सरदारों का अधिकार रहा, कुचामन के ठाकुरों की याददास्त, रघुनार्थसिंह मेड़तिया की संतति का हाल, वि० सं० १९०५ में विभिन्न ठिकानों के ठाकुरों के नाम रेख इत्यादि का उल्लेख किया गया है ।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है । कृतियाँ क्रमबद्ध नहीं हैं । अनेक पत्र ग्रंथ में खाली पडे हैं । ग्रंथ पर गत्ता नहीं है ।

#### ८. ख्यात बात संग्रह

१. ख्यात बात संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १३५००, ४. ३३ × २५ सेमी०, ५. २३३, ६. २३-३०, ७. १९वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ की कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पटियाला रा जाट कौम सिधु तिए रो ख्यात<sup>१</sup> :-

पटियाला के संस्थापक अलासिंह और उसके वंशजों का संक्षेप में उल्लेख किया है ।

१ भारत के देशी राज्य, ले० सुखसम्पतराय मंडारी (पटियाला राज्य का इतिहास, पृ० ३) के अनुसार—

इस राजवंश के मूल पुरुष की उत्पत्ति जँसलमेर के राजवंश से हुई, उनके खेवा नामक एक वंशज ने नाडूली के जाट जमींदार की पुत्री के साथ विवाह कर लिया । इस जोड़े से सिधु नामक एक पुत्र की उत्पत्ति हुई—और सिधु जाट नामक जाति खडी हो गई, इस जाति में फूल नामक एक व्यक्ति हुआ और फूल के वंश में अलासिंह उत्पन्न हुआ ।

प्रारम्भ—

“पहला तो उतन गाय लुगवाल भोगी चाराजु रहता नै पछे इण रै माह अलासिध हुयो तिण घोड़ा राप नै खूट सोत मरू कीवी……” ।”

अहमदशाह अब्दाली द्वारा अलासिह से एक लाख रुपये बमूल करने और जब अब्दाली दूसरी बार हिन्दुस्तान में आया तब अलासिह के पौत्र अमरसिह को राजा की पदवी देने, उससे मित्रता आदि करने का उल्लेख है। फिर उसके बंशजों साहयसिह, करमसिह, नरेन्द्रसिह और महेन्द्रसिह का नामोल्लेख है। (पत्र-१)

२. राठौड़ों की श्वात :-

राजा भरत के पुत्र पुंज के १३ पुत्रों का विवरण दिया है, फिर सीहाजी की द्वारिका यात्रा आदि का वृत्तांत दिया है।

प्रारम्भ—

“राजा भरत करनाटक सुं गयाजी आया नै गयाजी सुं कासी आया सं० १००० में नै कासी में श्री वीश्वनाथजी की देवरी करायो नै वारा नै मार नै कनीज लीवी न वंगाले गढ करायो तिण रै वेटी पुंज हुयो तिण रै वेटा तेरे हुवा … …” ।”

प्रस्तुत श्वात में महाराजा विजयसिह (जोधपुर) तक के राजाओं का विवरण दिया गया है। इन राजाओं की संतति, विभिन्न युद्धों का वृत्तांत, युद्ध में काम आये योद्धाओं की सूची इत्यादि अनेक घटनाओं का विवरण दिया गया है। यह प्रायः अन्य श्वातों में मिलता है। (पत्र-१२८)

३. पौकरणा बीरामण की उत्पत्ति :-

पौकरणा ब्राह्मणों की उत्पत्ति कैसे हुई उससे सम्बन्धित एक काल्पनिक वार्ता दी हुई है फिर ब्राह्मणों की २२ शाखाओं और गोत्रों की सूची दी है।

प्रारम्भ—

“श्री सकंद पुराण मांय सुं नीकाळ पुलासी कीवी तिणरी श्री सकंद ३ बाच म्याम कारतिक पुछे देवता रा देव माने वाकव हुय फुरमायो ………” ।” (पत्र-६)

४. परगने जालोर की हस्त :-

जालोर की स्थापना, अलाउद्दीन द्वारा जालोर हस्तगत करने, कान्हड़दे चौहान के मारे जाने इत्यादि घटनाओं का संक्षेप में वृत्तांत है।

१. प्रकाशित, भारवाड़ रा परगना की विगत, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, परिशिष्ट, पृ० ५१३, भाग २, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

प्रारम्भ—

“प्रगने जाळोर री जूनी विगत कांनूगां री बही सूं उतरी, मंमत १३१२ रा चेत सुद ३ लगन माहै श्री जाळोर थापना कीनी……” १”

५. परगने डीडवाने री हाल :-

वर्णित है कि डीडवाना प्रारम्भ में वादशाह के अधीनस्थ रहा है फिर वि० सं० १४४४ में राणा लाखा ने अधिकार कर लिया। इस प्रकार डीडवाना कब किसके अधिकार में रहा इसका बहुत संक्षेप में उल्लेख है।

“डीडवाणी थेटू पातसाही सहर छै नै समत् १४४४ रा आसरै तो राणा लापे डीडवाणां सांभर री कबजौ कर लियो……” १” (पत्र-१)

६. परगने भीनमाल री हाल<sup>१</sup> :-

भीनमाल पर कब किसका अधिकार रहा बहुत संक्षेप में वर्णित है।

प्रारम्भ—

“१ प्रथम जुग में पुपमाल। कोस ८४ कहीजै। (पत्र-२३)

७. परगने मेड़ते री हाल<sup>२</sup> :-

विभिन्न राजाओं द्वारा बनाये हुए कुछ स्मारक, जलाशय और मन्दिरों आदि का व्योरा दिया गया है।

प्रारम्भ—

“मेड़ती वसीयो १५४५ रा वैसाख वद १३……” १” (पत्र-१३)

८. परगने सिवांण री हाल<sup>३</sup> :-

विभिन्न राजाओं द्वारा बनाये स्मारकों, जलाशयों तथा सीमा सम्बन्धी वृत्तांत दिया गया है।

प्रारम्भ—

“सीवांणां री किलौ आगी सं० १०१० पंवार सिवनारायण नै वीर नारायण राज कीयो……” १” (पत्र-६)

९. परगने मरोठ री हाल<sup>४</sup> :-

मरोठ की स्थापना कब हुई और कब किसके अधिकार में रहा आदि वर्णित है।

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणनिह भाटी, मारवाड़ रा परगनां री विगत (भाग २, परिशिष्ट, पृ० ४१७) रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

२. वही, पृ० ४३६

३. वही, पृ० ४३८

४. वही, पृ० ४२५

प्रारम्भ—

“श्री परगनी संवत् १११४ गौड़ बछराज माठा गुजर रै नाव सूं मरोठ वसायो । पैला गुजर री ढांणी थी ……।” (पत्र-३)

१०. परगने सांचोर री वात<sup>१</sup> :-

परगने का नाम सांचोर कैसे पड़ा और कब किसके अधिकार में रहा, विभिन्न गांव जागीरदारों के अधीनस्थ रहे आदि जानकारी दी गई है । यह विगत काफी विस्तार से दी गई है जो सांचोरा चौहानों के इतिहास के लिये उपयोगी है ।

प्रारम्भ—

“कदीम तो सगतीपुर सैर थी वसीया री ख्यात नही । उपर राज श्री सिवजी भाराज री थी, नै नदी सरसती बैती थी… ।” (पत्र-४५३)

११. राठौड़ों रै परवार री वंशावली :-

आदि नारायण से राव चूंडा तक वंशावली दी है, फिर राव चूंडा व उसके वंशजों (महाराजा भोमसिंह तक) के संतति, कुछ घटनाओं इत्यादि का वृत्तांत दिया गया है । (पत्र-२१)

१२. पंवारों रै वंश री ख्यात :-

राजा मुंग से पंवारों की ३५ शाखाओं का निर्माण होने व उदयाजीत के पुत्रों आदि का विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“पंवार में राजा मुंग हुवौ तीण रै बेटा ३५ हुवा तीण सुं पैतीस साप पंवार ही हुई…… ।” (पत्र-२)

१३. खीचियां री ख्यात :-

इसमें गागरोन के खीची शासकों, उनकी संतति आदि घटनाओं का वृत्तांत दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“राज प्रथीराज चहुवाण दिली में राज करता था जीणां रा भाई प्रसंग-राजजी जायल में राज करता था नै सांवत हुवा नै प्रसंगराजजी रा राव देवणसी मालवा में गया । नै गढ़ गागराण राज कीयो…… ।” (पत्र-५३)

१. प्रकाशित, मारवाड रा परगनां री विगत (भाग २, परिशिष्ट, पृ० ३५६) जोधपुर



अन्तिम भाग—

“.....पछे १८६५ रा साल मे डर गया जद भोपालसिधजी रा वेदा वीर्जसिधजी नै गादी बैठाया १८६६ मे ।”

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ में अनेक पत्र खाली पड़े हैं। पत्र भटमैले रंग के हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। यह ग्रंथ विविध जानकारी के लिये उपयोगी है।

### ६. ख्यात ठिकाना रायपुर

१. ख्यात ठिकाना रायपुर (उदावत राठीड़), २. रा० शो० सं०, ३. १२२७५, ४. २५.३ × १६ सेमी०, ५. १४, ६. १३-१८ ७. १६वीं शताब्दी मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रारम्भ में जोधपुर के शासक राव सूजा की सतति का नामोल्लेख करते हुए इनके पुत्र उदाजी के रानियों, कुंवरो के नाम दिये हैं।

प्रारम्भ—

१. राव सूजा के कंवरो की विगत आदि :-

“राव सूजाजी रै कंवर<sup>१</sup>—बागाजी, नगोजी, उदोजी, गांगांजी, प्रागदासजी, प्रथीराजजी, नापोजी, सेपोजी, देईदासली ।

राज श्री राव उदाजी रै राणी उलणजी—जीणां रै कंवर बुंगरसिधजी, लुणकरणजी, दूजा सांपलीजी रै कंवर पीवकरणजी, जैतसिधजी:..... “आदि ।”

प्रस्तुत ख्यात की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

२. राव ऊदा का वृत्तांत :-

(क) ऊदा द्वारा सीधल खीदा को मार जैतारण हस्तगत<sup>२</sup> करने, किला इत्यादि बनाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“राव ऊदाजी उदैपुर पधारतां समत् १५३६ साल बैसाप सुद ३ नै सीदल पींदा नै मार जैतारण लीनी नै १५४१ री साल महासुद नै जैतारण में राव उदैजी कीला री नीव दीराई नै १५४२ रा काती सुद १५ नै कमठी संमपुरण हुवौ जिगरा रूपया ८१००० लागा.....”

१. रेड (भारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग, पृ ११०) ने राव सूजा के १० पुत्रों के नाम दिये हैं जिनमें कुछ नाम इनसे भिन्न हैं।

२. विस्तार के लिये देखें, आसोपा—इतिहास निवाज, पृ० १२ से।

(ख) राव बीका जोधपुर में भगड़ा करके आये तब मार्ग में उदा का पुत्र डूंगरसिंह आदि के साथ लौटोती में युद्ध किये जाने का उल्लेख है।

(ग) ऊदा का निधन और पीछे सतिया हुई उनका नामोल्लेख।

(घ) ऊदा ने अपने पुत्रों को गांव आदि दिये उसका उल्लेख है।

“समत् १५५६ रा वैशाख सुद १० राव ऊदोजी वैकुण्ठ पधारिया' दाग बाडोयां मांय दीयो नै लारै सतिया ४ हुई.....।”

३. ऊदा के पुत्र खीबकरण का घृत्तात :-

(क) ऊदा के पुत्र खीबकरण को जैतारण मिलने की घटना इस प्रकार वर्णित है—

“राव मालदेजी दूजी वीहाव करण नै भाटीयां रै बीकमकोर पधारिया जिण बसत राव खीबकरणजी ईणा रै भाई गीररी राज करता हा वीणा नै जैतसिंहजी छीपीयै हा, तीकै बही—भाई जैतारण री गादी तो आपणी है फुरमावी तो अमल जाय करां..... खीबकरणजी वोलिया—आ बात ठीक है। पाट तो आपणी है डूंगरसिंहजी हा सो काम आ गया। जरै खीबकरणजी गीररी सुं घोड़ा १००० ले चढ़िया सो जैतारण जाय अमल कीयो..... लोग रजपूत सरब आण मुजरी कौनौ.....आदि।”

(ख) राणा सांगा द्वारा खीबकरण को बदनोर प्राप्त होने का उल्लेख इस प्रकार है—

“समत् १५७४ रा महा सुद ५ नै राणा सांगी बदनोर दीवी.....तरै उमरावों.....अरज कीवी कै उदावत खीबकरणजी नै बदनोर दीवी सु आछी बात करी नहीं, वे आपनै टली देसी .....बरस ७ राज कीनी नै पछै बदनोर छोड दीवी। जैतारण राज कीयो।”

४. मालदेव का शेरशाह से युद्ध :-

खीबकरण का मालदेव की ओर से शेरशाह से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त होने का उल्लेख इस प्रकार है—

“समत् १६०० री साल चैत वदि ५ खीबकरणजी काम आया, पातसा सूरसा लारै नव लाय घोड़ा हा नै मालदेवजी लारै असी हजार घोड़ा हा जिण में फौज

१. बातोपा के अनुसार (इतिहास निवाज, पृ० २३) वि. सं. १५६७ वैशाख सुदि १५ में ऊदा का स्वर्गवास हुआ।

मुसाहब ..... खीवकरणजी हा ..... पातसा सूरसा रा हाती रा द्वांत उपर पग दं  
सूरसा री ढाल पाड़ी नै पुद काम आया ... .. ।”

#### ५. राव रतनसिंह खीवकरणसोत का वृत्तांत :-

राव खीवकरण के पुत्र रतनसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसकी ठकुरानियों, मंतति आदि का हाल है, फिर वह किस प्रकार एक गुदड़ी बाबा के श्राप से मारा गया वर्णित है—

“पीरनड़ी उपर गुदड़जी री मंडी बीराजीया था.....अरज कीवी (रतनसिंह नै) महाराज पीरनडी री जागां ‘रतनसर’ हुसी तरै गुदड़जी कयी—अं पीरां रा मकान सो पीरनडी वाजै जिण माथै गुदड़जी सराप दीयी—धारै तीसरै दिन सर लगेला ईतरी सराप और दीयी कै उदा री तो गड़ी नहों नै अतीत री मंडी नही... पछै तीजै दिन बादसा री फौज .....आई जिण सुं भगड़ी कीनी.....रतनसिंह रै काळजा बीचै तीर लागी तरै देवलोक हुवी १६१७ समत<sup>१</sup> तीणरी छतरी गोपाल-दासजी कराई ।”

#### ६. कल्याणसिंह रतनसिंहोत का वृत्तांत :-

राव रतनसिंह के पुत्र कल्याणसिंह को अकबर द्वारा रायपुर मिलने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

“कल्याणदासजी दीली पधारिया सां बादसा अकबर कल्याणदासजी नै देष बोत पुसी हुवी नै पजानो अक कीरोड़ री बवसीयी नै आधी जैतारण री राज गांव ७० बपसीया जद राजथान रायपुर ठहरायी समत् १६२५ रा माहा में पुप नपत्र में आधी बसी ... .. १४० गाडा बसी रा ले नै रायपुर पवारीया ।”

कल्याणसिंह के रानियों कुंवरो के नाम दिये हैं, फिर रावजी के निघन पश्चात् वि० सं० १६८४ में दयालदास के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है तथा दयालदासजी के उत्तराधिकारी बलराम वि० सं० १७०४ में होने का उल्लेख है ।

#### ७. रायपुर के स्वामी राजसिंह का वृत्तांत :-

फिर राजसिंह के रायपुर राजगद्दी पर बैठने तथा जोधपुर महाराज जसवंतसिंह के साथ उर्जैन के युद्ध में (वि० सं० १७१५) बलराम के मारे जाने का उल्लेख है ।

१. आसोपा (इतिहास नींबाज, पृ० ४८) के अनुसार रतनसिंह अजमेर के सुबेदार काश्मिर्वा से लड़ते हुए वि० सं० १६९४ घंत्त वदि १० को मारा गया ।

## १० : राजस्थानी ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

मुसाहब .... खीवकरणजी हा .....पातसा सूरसा रा हाती रा दांत उपर पग दे  
सूरसा री डाल पाड़ी नै पुद काम घाया ... .. ।”

### ५. राव रत्नसिंह खीवकरणोत का वृत्तांत :-

राव खीवकरण के पुत्र रतनसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसकी ठकुरानियों, संतति आदि का हाल है, फिर वह किस प्रकार एक गुदड़ी बाबा के श्राप से मारा गया वर्णित है—

“पीरनड़ी उपर गुदड़जी री मंडी बीराजीया था.....अरज कीवी (रतनसिंह नै) महाराज पीरनडी री जागा ‘रतनसर’ हुसी तरै गुदड़जी कयी—घ्रै पीरां रा मकान सो पीरनडी वाजै जिण मायै गुदड़जी सराप दीयी—घारै तीसरं दिन सर लगेला ईतरौ सराप और दीयी कं उदा री तो गड़ी नहीं नै अतीत री मडी नहीं” पछै तीजै दिन बादसा री फौज .....आई जिण सुं भगड़ी कौनी.....रतनसिंह रै काळजा बीचै तीर लागी तरै देवलोक हुवौ १६१७ समत<sup>१</sup> तीणरी छतरी गोपाल-दासजी कराई ।”

### ६. कल्याणसिंह रतनसिंहोत का वृत्तांत :-

राव रतनसिंह के पुत्र कल्याणसिंह को अकबर द्वारा रायपुर मिलने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

“कल्याणदासजी दीली पधारिया सां बादसा अकबर कल्याणदासजी नं देव बोत पुसी हुवौ नै पजानी अक कीरोड़ री बपसीयो नै आधी जंतारण री राज गांव ७० बपसीया जद राजधान रायपुर ठहरायो समत् १६२५ रा माहा में पुब नपत्र मे आधी बसी .... १४० गाडा बसी रा ले नै रायपुर पधारीया ।”

कल्याणसिंह के रानियों कुंवरों के नाम दिये हैं, फिर रावजी के निधन पश्चात् वि० सं० १६६४ में दयालदास के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है तथा दयालदासजी के उत्तराधिकारी बलराम वि० सं० १७०४ में होने का उल्लेख है ।

### ७. रायपुर के स्वामी राजसिंह का वृत्तांत :-

फिर राजसिंह के रायपुर राजगद्दी पर बैठने तथा जोधपुर महाराज जसवंतसिंह के साथ उर्जन के युद्ध में (वि० सं० १७१५) बलराम के मारे जाने का उल्लेख है ।

१. आसोग (इतिहास नौवाज, पृ० ४८) के अनुसार रतनसिंह अकबर के सुबेदार काबिलगंघे से सड़ते हुए वि० सं० १६१४ पंच वदि १० को मारा गया ।

मुसाहव ..... खीवकरणजी हा ..... पातसा मूरसा रा हाती रा दांत उपर पग द  
मूरसा री ढाल पाड़ी नै पुद काम आया ..... ।”

#### ५. राव रतनसिंह खीवकरणसोत का वृत्तांत :-

राव खीवकरण के पुत्र रतनसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसकी ठकुरानियों, मंतति आदि का हाल है, फिर वह किस प्रकार एक गुदड़ी बाबा के श्राप से मारा गया वर्णित है—

“पीरनडी उपर गुदड़जी री मंडी बीराजीया था..... अरज कीवी (रतनसिंह नै) महाराज पीरनडी री जागां ‘रतनसर’ हुसी तरै गुदड़जी कयी—अं पीरां रा मकान सो पीरनडी बाजै जिण माथै गुदड़जी सराप दीयो—थारै तीसरँ दिन सर लगेला ईतरौ सराप और दीयो कै उदा री तो गड़ी नहीं नै अतीत री मंडी नहीं..... पछै तीजँ दिन वादसा री फौज ..... आई जिण सुं भगड़ी कीनी..... रतनसिंह रँ काळजा बीचँ तीर लागी तरै देवलोक हुवौ १६१७ समत<sup>१</sup> तीणरी छतरी गोपाल-दासजी कराई ।”

#### ६. कल्याणसिंह रतनसिंहोत का वृत्तांत :-

राव रतनसिंह के पुत्र कल्याणसिंह को अकबर द्वारा रायपुर मिलने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

“कल्याणदासजी दीली पधारिया सो वादसा अकबर कल्याणदासजी नै देप बोत पुसी हुवौ नै पजानो अक कीरोड री बपसीयो नै आधी जँतारण री राज गांव ७० बपसीया जद राजयांन रायपुर ठहरायो समत् १६२५ रा माहा मे पुप नपत्र में आधी बसी ..... १४० गाडा बसी रा ले नै रायपुर पधारीया ।”

कल्याणसिंह के रानियों कुंवरो के नाम दिये हैं, फिर रावजी के निधन पश्चात् वि० सं० १६८४ में दयालदास के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है तथा दयालदासजी के उत्तराधिकारी बलराम वि० सं० १७०४ में होने का उल्लेख है ।

#### ७. रायपुर के स्वामी राजसिंह का वृत्तांत :-

फिर राजसिंह के रायपुर राजगद्दी पर बैठने तथा जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह के साथ उजैन के युद्ध में (वि० सं० १७१५) बलराम के मारे जाने का उल्लेख है ।

१. आसोना (इतिहास नीवाज, पृ० ४८) के अनुसार रतनसिंह अकबर के मुबदार काश्मिर्घां हे सङ्घटे हुए वि० सं० १६१४ पंत वदि १० को मारा गया ।

कर मेवाड़ में पधारीया ... राणाजी भीमसिंघजी ने खबर हुई.....पटौ घेक ताप रो देणो फुरमायो पण ठाकरसा लियो नही .....पछे संमत १८३६ रा महा सुद ८ केसरीसिंघजी देवलोक हुवा तीणरी छतरी गुदली में ... है ।”

(ग) केसरीसिंघ के पुत्र फतेसिंघ और फतेसिंघ के पुत्र भीरसिंघ मेवाड़ के गांव में उत्तराधिकारी हुए उसका उल्लेख है। महाराजा विजयसिंघ द्वारा भीरसिंघ उदावत को मारवाड़ बुलाने का हाल इस प्रकार है—

“पछे बीरसिंघजी बडा मुरातवा सुं मनाय नै मेवाड़ मांय सुं रायपुर बुलाया .....नै पटौ इनायत कीनौ ... रूसीया घेक ताप हुकमनावां रा ठहरीया ” ।”

(घ) ठाकुर भीरसिंघ के निःसन्तान मरने पर उनके भाई उरजनसिंघ के १८५४ में उत्तराधिकारी होने और महाराजा मानसिंघ के साथ बरात में रूपनगर जाने, वहाँ १८७० आश्विन सुदि १५ में देवलोक होना लिखा है।

(ङ) उरजनसिंघ के निःसन्तान मरने पर रामपुरा से नाहरसिंघ के पुत्र रूपसिंघ का उत्तराधिकारी होना, वि० सं० १८७० कार्तिक सुदि १० शनिवार लिखा है।

(च) महाराजा मानसिंघ द्वारा मीरपा को कहला कर रायपुर वि० सं० १८७३ मार्गशीर्ष वदि १३ को आक्रमण कराने फिर वहाँ महाराजा द्वारा ही बन्दोबस्त आदि करने का उल्लेख है। अन्त में लिखा है—

“ठाकुर राज श्री रूपसिंघजी राज रायपुर में बीस बरस कीनौ सो बरस ३ तो रायपुर रया नै बरस १७ जोधपुर श्री हजूर री बंदगी में रया, ठाकर..... जोधपुर देवलोक हुवा नै रायपुर पाट श्री माधोसिंघजी बीराजीया ... ।”

प्रस्तुत ग्रंथ अपूर्ण है, इसके कुछ अन्तिम पत्र गायब हैं। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया हुआ है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

मारवाड़ के इतिहास और स्थानीय सामंतों का योगदान के अध्ययन के लिये ग्रंथ बड़ा उपयोगी है।

## १०. भाटियां तुवरों की ख्यात और जोधपुर रा रीत किरियावर

१. भाटियां तुवरों की ख्यात और जोधपुर रा रीत किरियावर, २. रा० शो० सं०, ३. १२८७५, ४. ७२ × १६ सेमी० (बहीनुमा), ५. ३२, ६. ४५-५२, ७. १६वीं शताब्दी, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में ग्राम देरपारी, जाखण, बीकमकोर, गाजू तथा मोसिया के भाटियों की विगत दी गई है फिर जोधपुर राजघराने के कुछ रीत किरियावर

कर मेवाड़ में पधारिया ... ..राणाजी भीमसिंघजी ने खबर हुई.....पटौ घेक लाप रो देणो फुरमायो पण ठाकरसा लियो नहीं .. ..पछे संमत १८३६ रा महा सुद केसरीसिंघजी देवलोक हुवा तीणरी छतरी गुदली में... ..है ।”

(ग) केसरीसिंघ के पुत्र फतेसिंघ और फतेसिंघ के पुत्र भीरसिंघ मेवाड़ के गांव में उत्तराधिकारी हुए उसका उल्लेख है। महाराजा विजयसिंघ द्वारा भीरसिंघ उदावत को मारवाड़ बुलाने का हाल इस प्रकार है—

“पछे बीरसिंघजी बडा मुरातवा सुं मनाय नै मेवाड़ मांय सुं रायपुर बुलाया .....नै पटौ इनायत कीनौ ... ..रुनीया अेक लाप हुकमनावां रा ठहरीया ... ।”

(घ) ठाकुर भीरसिंघ के निःसन्तान मरने पर उनके भाई उरजनसिंघ के १८५४ में उत्तराधिकारी होने और महाराजा मानसिंघ के साथ बरात में रूपनगर जाने, वहाँ १८७० आश्विन सुदि १५ में देवलोक होना लिखा है।

(ङ) उरजनसिंघ के निःसन्तान मरने पर रामपुरा से नाहरसिंघ के पुत्र रूपसिंघ का उत्तराधिकारी होना, वि० सं० १८७० कार्तिक सुदि १० शनिवार लिखा है।

(च) महाराजा मानसिंघ द्वारा मीरवां को कहला कर रायपुर वि० सं० १८७३ मार्गशीर्ष वदि १३ को आक्रमण कराने फिर वहाँ महाराजा द्वारा ही बन्दोबस्त आदि करने का उल्लेख है। अन्त में लिखा है—

“ठाकुर राज श्री रूपसिंघजी राज रायपुर में बीस बरस कीनौ सो बरस ३ तो रायपुर रया नै बरस १७ जोघपुर श्री हजूर री बंदगी में रैया, ठाकर..... जोघपुर देवलोक हुवा नै रायपुर पाट श्री माधोसिंघजी वीराजीया ... .. ।”

प्रस्तुत ग्रंथ अपूर्ण है, इसके कुछ अन्तिम पत्र गायब हैं। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया हुआ है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

मारवाड़ के इतिहास और स्थानीय सामंतों का योगदान के अध्ययन के लिये ग्रंथ बड़ा उपयोगी है।

## १०. भाटियां तुवरां री ख्यात अर जोघपुर रा रीत किरियावर

१. भाटियां तुवरां री ख्यात अर जोघपुर रा रीत किरियावर, २. रा० शो० सं०, ३. १२८७५, ४. ७२ × १६ सेमी० (बहीनुमा), ५. ३२, ६. ४५-५२, ७. १६वीं शताब्दी, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में ग्राम देरयारी, जाखण, बीकमकोर, गाजू तथा भोसियां के भाटियों की विगत दी गई है फिर जोघपुर राजघराने के कुछ रीत किरियावर

## ५४ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

### ४. ओसा रा भाटीयों री श्यात :-

इसमें वर्णित है कि भाटियों को ओसा ग्राम फिर ओसियां किस प्रकार प्राप्त हुआ ।

प्रारम्भ—

“महाराज श्री अजीतसिंघजी जैसलमेर रावळ अमरसिंघ री बेटी परणीया था तिए परसंग सुं अमरसिंघ री बेटी महाराज रै साळी लागती थो—बेटा तीण सायबसिंघ, उमेदसिंघ तीजी सेरसिंघ सुं उमेदसिंघ १७६६ रा महाराजा अभयसिंघजी ओसा (ग्राम) लीप दीयो थो नै उमेदसिंघ रै बेटी सरूपसिंघ तिण री बेटी महाराज अभयसिंघजी परणीया था । नै सरूपसिंघ रै बेटी भवानीसिंघ हुवो नै भवानसिंघ रा सरदारसिंघ हुवा सरदारसिंघ री बेटी महाराज भीबसिंघजी परणीया था तीण परसंग सुं ओसा पाहट गई मु सीरदारसिंघ रा परवार रतलाम परा गया नै सेरसंधोतों रै ओसियां लीपीजी, सेरसिंघ रै बेटा दो भाटी जालमसिंघ………आदि ।”

आगे भाटी सेरसिंघ के पुत्रों आदि के नाम दिये हैं । (पत्र-३)

### ५. ठीकाणा कलाणपुर, चौहान :-

चतरभुज के पुत्र को कल्याणपुर किस प्रकार कब मिला और उसके आगे उसके वंशजों का विवरण दिया गया है ।

यथा—

“७, चतरभुज, नै लालसिंघ रै बेटा ३ अहेमदावाद रा भगड़ा में काम आया महासिंघ, अमरावसिंघ, गुमानसिंघ लारै रय्या तीण रा ईण तरै ठीकाणा छ । ८, लालसिंघ चतरभुज तीण नै कीलाणपुर १८०८ में महाराज बखतसिंघ दीयो नै आगे अजीतसिंघजी इणा री बेन परणीया था बखतसिंघजी अभयसिंघजी यारा भाणोज या तीण परसंग सुं कीलाणपुर बांदीओ……… आदि ।” (पत्र-३)

### ६. महाराजा गजसिंघ रै समै रा रीत किरियावर :-

राणी प्रतापदे नै राणी पदो :-

प्रारम्भ—

“महाराज श्री गजसिंघ रै पटराणी प्रतापदेजी ना सीसोदीया भाण सगतावत री बेटी संमत १६६४ परणीया नै १६६६ राणी पदो दीयो तरै पटो लिप दीयो तिए री विगत—

३५०० बीलावास

२५०० वरणी

१५०० धाकड़ी

२००० वासणा

१००० हीमावास

५००० पालड़ी भेड़ता री



#### ४. ओसा रा माटीयों री ह्यात :-

इसमें वर्णित है कि भाटियों को ओसा ग्राम फिर ओमिया किस प्रकार प्राप्त हुआ ।

प्रारम्भ—

“महाराज श्री अजीतसिंघजी जंसलमेर रावळ अमरसिंघ री बेटी परणीया या तिए परसंग सुं अमरसिंघ री बेटी महाराज रै साळी लागती थो—बेटा तीण सायबसिंघ, उमेदसिंघ तीजो सेरसिंघ सुं उमेदसिंघ १७६६ रा महाराजा अभयसिंघजी ओसा (ग्राम) लीप दीवी थी नै उमेदसिंघ रै बेटी सरूपसिंघ तिण री बेटी महाराज अभयसिंघजी परणीया था । नै सरूपसिंघ रै बेटी भवानीसिंघ हुवो नै भवानसिंघ रा सरदारसिंघ हुवा सरदारसिंघ री बेटी माहाराज भीवसिंघजी परणिया था तीण परसंग सूं ओसा पाहूट गई सु सीरदारसिंघ रा परवार रतलाम परा गया नै सेरसंधोतों रै ओसिया लीपीजी, सेरसिंघ रै बेटा दो भाटी जालमसिंघ………आदि ।”

आगे भाटी सेरसिंह के पुत्रों आदि के नाम दिये हैं । (पत्र-३)

#### ५. ठीकाणा कलाणपुर, चौहान :-

चतुरमुज के पुत्र को कल्याणपुर किस प्रकार कब मिला और उसके आगे उसके वंशजों का विवरण दिया गया है ।

यथा—

“७, चुतरमुज, नै लालसिंघ रै बेटा ३ अहेमदाबाद रा भगड़ा में काम आया महासिंघ, अमरावसिंघ, गुमानसिंघ लारै रव्या तीण रा ईण तरै ठीकाणा छा । ८, लालसिंघ चुतरमुज तीण नै कीलाणपुर १८०८ में महाराज बखतसिंघ दीयो नै आगे अजीतसिंघजी इणां री बेन परणीया था बखतसिंघजी अभयसिंघजी धारा भाखेज था तीण परसंग सुं कीलाणपुर बांदीश्री……… आदि ।” (पत्र-३)

#### ६. महाराजा गर्जसिंह रै समै रा रीत किरियावर :-

रांणी प्रतापदे नै रांणी पदो :-

प्रारम्भ—

“महाराज श्री गर्जसिंघ रै पटराणी प्रतापदेजी ना सीसोदीया भांख सगतावत री बेटी संमत १६६४ परणीया नै १६६६ रांणी पदो दीयो तरै पटी लिप दीयो तिए री विगत—

३५०० वीलावास

२५०० वरणी

१५०० धाकड़ी

२००० वासणां

१००० हीगावास

५००० पालड़ी मेड़ता री

२००० थकड़ो

१७५०० गांव सात सोजत रा

गांव ५ मेड़ता रा, गांव १ जोधपुर री

रू० १०५६ रोकड़ पावै, नै दिहानगीर रा रोज रूपया २, बाहीयांमंडी रा १३६, होळी, दीवाळी रा रूपया २००, नै सिघोडा मण ८४ ... "आदि ।"

इसी प्रकार कुंवरपदे में गजसिंह और अमरसिंह को हाथ खर्व के लिये गांव इत्यादि मिले हुए थे वणित है ।

७. महाराजा सूरसिंह रं समं रा रीत किरियावर :-

इसमें महाराजा के रानी सौभागदे को राणीपदा दिया गया वणित है इस समय राज्य-कर्मचारियों आदि को ईनाम इत्यादि दिया गया उसका भी वृत्तांत है । यथा—

"बडा उमरावां री बहुवां नै भारी बागा नै मोर १, अतलस १, परकाळो २, नाळेर दीजै ।

उणां सूं छोटा उमरावां री बहुवां नै बागी पाच री ... परकाळो १, नै नाळेर १ ।

मोटा कामदारां नै दुसाला ... दरीजै नै बीजा सगळा मुसदी, पवास पासवांनै २ साडी दीजै ... पोळीयां नूं साडी पाच दीजै, डोल दमांम दरआई सुं श्रीछाड़ीजै ... आदि ।"

८. महाराजा जसवंतसिंह की रानी जसवंत हाडी नै राणी पदो दियां री वणित :-

महाराजा जसवंतसिंह की रानी जसवंतदे हाडी रानी का पद दिया उस समय खुशियें मनाई गई, देवताओं की पूजा इत्यादि की गई उसका ब्योरा दिया गया है । यथा—

"राणी पदा रा महरत रै दिन जलुसी हुप श्री हजुर नै राणीजी और रूजा सगळा महल पवांसां माणसां उमराव ... कामदार ... सगळा वणाव करै । श्रीजी री तरफ सूं बागी चूंदड़ी सूघी आवै रांगीजी रा वणाव नै बागा २ आवै नै फेर गहणों री डबो देरीजै ... आदि ।"

आगे राजाओं के कुंवर कुंवरियों के जन्म के अवसर पर रीत दस्तूर आदि किये जाते थे उसका भी वृत्तांत दिया है । (पत्र-१)

९. महाराजा विजेंसिधजी रं राजलोकों री वणित :-

महाराजा विजयसिंह के रानियों संतति आदि का हाल दिया है । यथा—

"... पासवांन गुलाबरायजी रं कंवर तेजसिधजी री जन्म सं० १८२५ रा काती सुद ६ री नै संमत १८३६ जाळोर तेजसिधजी रै पटे हुई, तेजसिधजी री

पालपो सिणगाय चौकी ताई आयती माधोसिधजी री बेटी ..... जयपुर जाय परणीया ..... ।

कंवरजी भोमसिधजी सेपावतजी रै दूजा कंवर ... भीमसिधजी १८२३ आसाठ मुद १२ री जन्म थो ... भोमसिधजी सीतला सूं चालिया भटियांणी सत कियो ... आदि ।” (पत्र-१३)

१०. तुंवरों री क्यात :-

तुंवरों की उत्पत्ति मूल पुरुषों का वृत्तात इस प्रकार दिया है —

“भागवं गोत्र मारधनी सापा.....भागवत में पीड़ी ८४ तो हतणापुर राज कीना री लेपे छै पछै सतालीक सूं दीली राज बांधीयो तीण सुं कीतीक पीड़ीयां पछै परीपत जनमेजै हुवा न पछै जनमेजै ग वंस में राजा तुंग हुवा जठा सुं तुंवर बाजीया नै उणा रा वंस में पडेग राजा हुवा तीणां सुं पंडेलवाळ वीरामण नै महाजन फंटीया .....तुंग राजा सुं पीड़ी पनरमी कनपालजी हुवा तिणां रै पुत्र नहीं छै, सीध नेमीनाथ री दया सुं पुत्र २४ हुवा तिणांरा ठीकांण बांधीया जठा सुं सापां फंटी सू पाटवी अनंगपालजी .....कंवर ३ वही अमजी रै बेटा रैणसी हुवा नै रैणसीजी रै अजमालजी, अजमालजी रै रामदेवजी हुवा सीध पुरस हुवा ... वीहाव तीन बेटा ७ हुवा—सादोजी, देवराजजी, गीरराजजी, गेहराजजी, भीवजी, वीकोजी, जैतोजी नै बाई चंदु सेतराव-देवराज नै परणाई । हमें इणां रा वंस रा रामदेवरै है ..... ।”

अनंगपाल के वंशज कनपाल के पुत्रों से तुंवरों की १३ शाखाओं का निर्माण होना लिखा है—

१. जावळी तुंवर, २. सपळ तुंवर, ३. सुठके तुंवर, ४. सुणीयल तुंवर,
५. तुयल तुंवर, ६. वंलीमनु तुंवर, ७. नवोळ तुंवर, ८. जगोरी तुंवर,
९. पना तुंवर, १०. बोडाणी तुंवर, ११. मोरी तुंवर, १२. कलाणी तुंवर,
१३. दवैत तुंवर ।

आगे लिखा है—

“नै राजा जैरत सुं पाच नप फटीया तिणरी विगत—राधौ तुंवर, कळीया तुंवर, जाटु तुंवर, जरावता तुंवर, सतरावळा तुंवर ऐ तुंवर बाजे..... अनंगपाल रै बेटे तुणपालजी राज गुवालेर बांधीयो थो सु पीड़ी ११ ताई राज रहौ..... पीड़ी ११ वीं मानसाजी.....सीकणा कनां सुं सं० १३५० में पातसाह अलावदीन गुवालेर छोड़ाय दीयो.....।

गोपीनाथ केसोदासोत्त रै बेटा दो-कीरतसिध, रूपसिध । किरतसिध रै . . . .  
 वेटियां दोनु' जोधपुर भा० अजीतसिधजी नै तो चाई राजकंवर परणाया नै दूजी  
 चाई रतनकंवर कंवरपदे वपतसिध नै परणाया, तिण परसग सुं बीकानेर सुं  
 कीरतसिध.....१७७५ रै जोधपुर आया नै महाराज अजीतसिध भेरवांन होय गांव  
 केलावी, भुजासर दीया . . . . ।"

आगे कीरतसिंह गोपीनाथोत्त के वंशजों का वृत्तांत चलता है, फिर केलावे के  
 ठाकुरों की वंशावली तेजसिंह तक दो है । (पत्र-६)

११. फुटकर ख्यात (संत) पुरसों री :-

संत हरीदास, कबीर, दादू, संत नगजी, संत रामराय, बाबा मस्तनाथ,  
 संत दरियादासजी आदि संतों की जीवन घटनायें वर्णित हैं । स्वामी नारायण ग्रंथ  
 का प्रचलन गुजरात में हुआ उसका भी वृत्तांत दिया है । (पत्र-४)

बीकानेर और जोधपुर के राजाओं की जन्म तिथियाँ आदि दी गई हैं फिर  
 उमरकोट के सोड़ा जसहड़ द्वारा देवा चारण भांवा को खारड़ा ग्राम दिये जाने व  
 उसके वंशजों का हाल है ।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है । ग्रंथ के अन्तिम पत्र  
 बीच से कीट भक्षित है पढ़ने में नहीं आते । ग्रंथ पर गत्ता मड़ा हुआ है । ग्रंथ  
 तंत्रों के प्राचीन इतिहास और विविध जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है ।

## ११. बीकानेर री ख्यात

१. बीकानेर री ख्यात, २. रा० शो० सं०, ३. १३४६७, ४. ३२ x  
 २४.५ सेमी०, ५. १५२, ६. १८-३३, ७. १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ,  
 ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में बीकानेर के राजा  
 सुजानसिंह, जोरावरसिंह, सूरतसिंह आदि का इतिहास वर्णित है ।

(क) राजा सुजानसिंह :-

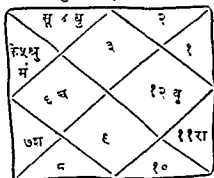
प्रारम्भ—

“अथ यात सुजानसिधजी री लिप्यते—

समत १७५५ वैसाख सुद ५ नै सुजानसिधजी गादी विराजिया सं० १७४५  
 सावण सुद ३ सोमवार.....जन्म

१. ओसा (बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १, पृ० २६४) ने दयालदास की ख्यात के अनुसार  
 सुजानसिंह का जन्म वि० सं० १७४७ श्रावण सुदि ३ सोमवार और गद्दीनजीन वि० सं० १७५७  
 में होना लिखा है ।

राजा सुजानसिंह की जन्म पत्री



(१) जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के बीकानेर पर चढ़ाई करने का वृत्तांत है। सुजानसिंह के पुत्र अर्भसिंह की जन्मपत्री अंकित है, जो अस्पष्ट है।

(२) वि० सं० १७७६ आषाढ़ वदि ८ को सुजानसिंह का डूंगरपुर जाने, वहां महारावळ रामसिंह सिर्वासिधोत की पुत्री रूपकंवर के साथ शादी करने, लौटते समय सलूवर के रावत केसरीसिंह और उदयपुर महाराणा संग्रामसिंह के वहां एक मास ठहरने फिर बीकानेर आने का उल्लेख है।

(३) विद्रोही भाटियों को दबाने का उल्लेख है—

“पछे भाटियों जोइयों देश में फिसाद कीयो जिए पर श्रीजी फोज कर नै  
 .....नोर (ग्राम) पघारिया व लोक हजार १६००० सूं सं० १७८७ सुं उठे भाटियां  
 मटनेर वगीरा श्री हजूर रै कु'च्या (तालियां) निजर करी तथा पायानामी हुवा.....  
 पछे पेसकसी रा रूपीया हजार २०००० ठैरीया.....सं० १७८५ काघल दौलतसिंह  
 आसकरपोत देस में घणो फिसाद कीयो सु इए नै सुजाणसिंहजी चूक कराय  
 मारीया.....।”

(४) जोधपुर महाराजा अर्भसिंह और बल्लसिंह द्वारा बीकानेर पर चढ़ाई करने का वृत्तांत है, फिर उदयपुर राणा द्वारा दोनों के बीच सुलह कराने का उल्लेख है। सुलह कराने वाले व्यक्तियों को सीरोपाव आदि देने और अर्भसिंह ने होली का त्यौहार नागौर में मनाया उससे सम्बन्धित गीत इस प्रकार है—

“पछे माराज चडावत, भाटी (सुरताणसिंह) तथा पंचोली नै घोड़ा सिरपाव  
 देय विदा किया। अर्भसिंहजी होळी नागौर री करी तिण भाव री गीत—

हुवो ताव सूजां ईसो राव बीकां हयै,

भाट पग अजावत नव वयू म्हाली

सीस गाढी तणै एकण समै

होळका कोस पैतीस हाली ॥१॥

सुजानसिंह व उसके पुत्र जोरावरसिंह के बीच मनमुटाव होने पर नौहर से उदासर ग्राम जाने, फिर दोनों में मेल होने व जोरावरसिंह द्वारा जैसलमेर के राव उदयसिंह को दवाने का वृत्तांत है ।

(६) बख्तसिंह ने बीकानेर पर अधिकार करने का विफल प्रयत्न किया उसका वृत्तांत दिया है । फिर सुजानसिंह के रायसिंहपुरे रहते हुए देहावसान होने, रानियां सती हुईं उनका उल्लेख है । (पत्र-८)

(ख) जोरावरसिंह :—

(१) जोरावरसिंह द्वारा यहां के जोधपुर के घाने उठाने चूरू के ठाकुर को निकालने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

“अर्भसिंघजी री तरफ सू धांण बैठा हा तिण सू फौज कर श्रीजी यांण उपर चढ़ीया, सु घाणा सारा उठाया..... १७८२ ठाकर संग्रामसिंह इंदरसिंघोत बना सू चूरू, छुड़ाय नै भूंभारसिंह इंदरसिंघांत नै दीवी.....संग्रामसिंहजी चूरू छोड़ जोधपुर गया..... ।

(२) अभयसिंह द्वारा बीकानेर पर चढ़ाई करने और बख्तसिंह का जोरावरसिंह का पक्ष लेने जालोर गढ़ आदि की मरम्मत के लिये २ लाख बख्तसिंह को देने का उल्लेख है ।

“अर्भसिंघजी रा डेरा बीसजपुर हुवा जठे भगड़ा री तजवीज हुई, पछे अभयसिंघजी परघांत मेलीया अरू बात ठहरी विण में बयतसिंघजी री परच लागी तो जाळोर रै मरमत नूं तिकै रा रूपीया लाय २ दीया, अर मेड़ती छोड़ायी, पछे राजा अर्भसिंघ री कूच जोधपुर हुवो..... ।”

(३) अभयसिंह का बीकानेर पर चढ़ाई का वृत्तांत विस्तार से दिया है । जयपुर नरेश सवाई जयसिंह के जोधपुर पर आक्रमण करने पर अभयसिंह की सेना बीकानेर से हटने और उदयपुर राणा के प्रयत्नों से दोनों के बीच मुलह होने का वृत्तांत है ।

(४) अभयसिंह और जयसिंह के बीच गगराने में युद्ध होने का उल्लेख है ।

(५) जोरावरसिंह द्वारा ग्राम सिरडा और धुरू पर अधिकार करने और अनूपपुर में देहांत होने का उल्लेख इस प्रकार है—

“पछे श्रीजी वूच कर अनूपपुरे डेरा हुवा, अठे श्रीजी रै दिन ४ मांदगी घणी रही स० १८०२ जेठ सुद ८ नै जोरावरसिंघजी अनूपपुरे में घाम पधारिया .....इतरी सतियों हुई—पवास सदा पातर गुलाब.....आदि ।”

(७) जोरावरसिंह के निःमन्तान मरने पर गजसिंह कैसे उत्तराधिकारी बना वर्णित है ।

(ग) राजा सूरतसिंह :-

(१) सूरतसिंह के जन्म (१८२२ पौष सुद ६) और गद्दीनशीनी (१८४४ आश्विन सुदि १०) की तिथियाँ और जन्मपत्री दी है ।

(२) विद्रोहियों को दण्ड देने, पैसे वसूल करने का वृत्तांत इस प्रकार है—  
“गांव काळू मांयकर डेरा चुरू हुवा, ठाकरां सीवसिंघजी पावा लाग़ा, पेसकसी रू० १२५००० ठैरीया तिण में ६५००० तो भराया अरू ३०००० छोड़ दीना, पछै राजपुर भटीपांन बाहादुर उपर गई तद पांन .... चाकरी में आय हाजर हुवा पेसकसी रू० २०००० लीया पिछै हाथी बगैरा पेत पांन बहादुर नै ईनायत हुवा, पछै कूच कर नंर (नौहर) पदारिया..... ।”

(३) जोधपुर के महाराजा विजयसिंह और जयपुर नरेश प्रतापसिंह से मेल स्थापित करने और भटनेर में भाटियों के उपद्रव रोकने हेतु राठौड़ सेना दो बार भेजने का वर्णन है ।

(४) खुदाबख्श के आग्रह से भोजगढ़ पर १८५६ में चढाई कर वहाँ बहावलखां को हटा कर खुदाबख्श को थानेदार नियुक्त करने का उल्लेख है ।

(५) चांपावत सवाईसिंह के प्रपंच द्वारा जयपुर नरेश जगतसिंह और बीकानेर राजा सूरतसिंह की सम्मिलित सेना का जोधपुर (मानसिंह) पर चढाई का वृत्तांत है ।

जयपुर बीकानेर नरेश खाटू में मिले उसका वृत्तांत इस प्रकार है—

“पछै डेरा पाटू हुवा, अर राजा जगतसिंघजी श्रीजी रा डेरां पधारीया श्रीजी सरायचां ताई सामी पधारीया, वा दोनुं साहब बराबर बीराजीया. सोपीन बात हुई.....राजा जगतसिंहजी रै सागै अमरख मुतसदी हुता तिकां सारां धीजी री नीजर निछरावळ करी, पाछै अंतरपांन री मनवार हुई वा हाथी १ घोड़ा २ मोरां ४ जड़ाउ रकम दीराया..... ।”

“जोधपुर बीकानेर के बीच मेल होने, सूरतसिंह द्वारा अमरचंद की मदद से विद्रोहियों को दवाने, चुरू पर अधिकार करने, राज्य के प्रतिष्ठित सरदारों के वहकाने पर अमरचंद सुराणा को मारने का उल्लेख इस प्रकार है—

“अमरचंद केयो—रू० २००००० लाप पेसकसी रा देसू..... मनं मारीयों कांही हात आवसी.... पीण दुसमणां रै डंड सूं कांही कांम, वारै तो जान सुं कांम तो सु अमरचंदजी नै मरायो ।”

(७) चूरू के ठाकुर पृथ्वीसिंह और उसके सहायकों द्वारा उत्पात आदि करने तथा भीरखां का बीकानेर पर आक्रमण करने का वृत्तांत है।

(८) सूरतसिंह और अंग्रेजों के बीच (वि० सं० १८७४) संधि स्थापित हुई उसकी शर्तें दी हैं, यथा—

“पहली (शर्त) भूतल दोस्ती भेद भ्रामस में सरकार कंपनी अंगरेज बहादुर की, महाराज श्री सूरतसिंहजी बाहादुर की, श्रीलाद उनकी हमेसा बेटे पोते पड़पोते सर पोते, कायम रहेगी, दोस्त दुसमण एक तरफ दोस्त दुसमण दोनों तरफ होंगे।” आदि आदि…… ।

(९) अंग्रेजों की मदद से विद्रोहियों को दबाने, सूरतसिंह की संतति का उल्लेख और अन्त में एक कवित्त दिया है। (पत्र-५१)

(घ) राजा रत्नसिंह :-

(१) रत्नसिंह के अंग्रेजी सरकार से कुछ नये गांव बसाने एवं भूमि संबंधी बातचीत होने वि० सं० १८६८ आश्विन वद १४ में श्रीजी (रत्नसिंह) के देसएलोक देवी के रुपये आदि भेंट करने का उल्लेख है।

(२) विद्रोहियों को दबाने, पेसकसी के रुपये आदि लेने और दिवान इत्यादि नियुक्त करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“समत् १८६६ वैसाख वद साह लपमीचंद, हुकमचंद नै अटक हुई सो पेसकसी ठंहराय दीवांगणी दीवी। जेठ सुद १३ नै मोहते लीलापर सोमदत्त नै दीवांगणी री पिजमत इनायत हुई, हाथी पालकी सीरपाव बगसीया।”

(३) वि० सं० १८६६ आश्विन सुदि १० श्रीजी के दिल्ली यात्रा के लिये रवाना होने, बीच में कहाँ-कहाँ डेरे हुए आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

“श्री माहाराज साहब महाराजकुंवर लक्ष्मीसिंहजी गणपतिसिंहजी के गवरनर साहब अंतर लगायी, अर पांन दीना’…… ।

महाराज साहब की पेसवाई में करनेल सदरलेन साहब आया सो जलो कांनी कोस ३ तक आया या श्री दरवार गवरनर साहब रै डेरे पधारिया…… महा सुद १५ तिण री याद तारीप १६ फरवरी सन् १८४३ किस्तां २५ सिरपेच, १ कीलंगी, २ मोतीयां री माल, १ दुसालां रा जोडा, २ रूमाल, लेहरौ १, दुपट्टी १, दिपणी, केस मुलतांनी १, मुलमुल थान २, पाष १, सफेद पेसकवज अंग्रेजी १, सरवार नग १, हाथी चांदी रै होडा री, ………घोड़ा २, चांदी रै संभारा, गुलबहन २, लांगी २, ढाल १, महाराज कंवर रै किस्तां री पाद १, किस्तां ५, राजासाही सिरपेच १, मोतीयां री माळा १, दुसालां री जोड़ी १,



जामेवार १, ख्माल १, .....दुपटौ बनारसी १, भुळवदन १, केस १, मुलमुल  
यान २, पाष सफेद १, तरवार १, घोड़ो १, चांदी रै साजवाद सुदो, पालपी  
भालरीदार, ढाल नग १, पड़दले सुदो.....पछै श्री महाराज साहब रै डेरें  
भाया.....।”

(४) अंग्रेजी सरकार से डाकुओं के प्रबन्ध के बारे में निश्चय कर सुराणा  
हुकमचन्द को डाकुओं के प्रबन्ध हेतु नियुक्त करना और विद्रोही ठाकुरों को दबाने  
आदि का वृत्तांत है।

(५) रत्नसिंह का जन्म १८४७ पीप वद ६ मंगलवार को होना लिखा है।  
जन्म पत्री अंकित है।

(६) ग्रंथ के अन्त में अनेक मरसीया कवित्त (विठू भोमा कृत) उद्धृत है  
इसके साथ ही ख्यात समाप्त हो जाती है।

कवित्त—

सरवण आठै सुकल अछै गुरवार

वार ईगीयारस हुवो, ईला हाहाकार

(पत्र-७२)

ख्यात में जोरावरसिंह के बाद गजसिंह और राजसिंह का वृत्तांत नहीं है।  
बीकानेर इतिहास के अध्ययन हेतु ग्रंथ उपयोगी है। साथ ही अंग्रेजों के साथ  
सम्बन्धों पर भी प्रकाश पड़ता है।

यह ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिपि घसीट  
है कहीं-कहीं पढ़ने में असुविधा होती है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मड़ा हुआ है।

## १२. ख्यात बात संग्रह

१. ख्यात बात संग्रह, मुहता नैणसी आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १३४६  
४, ३५ × २७ सेमी०, ५. १३६, ६. ३०-३३, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य  
८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रारम्भ में राव जोधा ने मोहितं  
से छापर द्रोणपुर लिया की ख्यात (भाग ३, पृ० १५८) से मिलती जुलती है।

मूल ख्यात का प्रारम्भ 'ख्यात भाटियों री' से होता है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः प्यात भाटीयां री। अ जदुवंसी कहींज तिएरै याद  
प्रे सोमवंशी कहींज श्री भागवत रै एकादश संकध ४ में तस में अत्याय में इतरा  
जादवां रा वंस कह्या विगत छै १ साकै, २ विम, ३ आंधक, ४ भोज.....।”

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में निम्नलिखित बातें संकलित हैं जो कि मुहता नैणसी की ख्यात<sup>१</sup> में वर्णित बातों के बिल्कुल समरूप नहीं हैं। कहीं-कहीं पाठ-भेद है।

देश गुजरात की याद, सरवरहीयां की पीड़ीयां, बात जाड़ेवां की, बात भाला<sup>२</sup> की, कछवाहां की ख्यात, पंवारों की उत्तपत, सांखलों<sup>३</sup> की बात, सोड़ों की ख्यात, सिसोदियां की ख्यात, हाडों की ख्यात, बूंदेलों की बात, बात गड़ मंडियां की, बात सिरोही रै देवडों की, भायलां राजपूतां की ख्यात, बात सोनगरां घौहाणा की, बात खीचियां की बांडी सोळंकियां की आदि।

प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र आकार में छोटे हैं तथा इन पर लिखावट भी ग्रन्थ व्यक्ति के हाथ की है, मूल ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर कपडे का गत्ता मढ़ा हुआ है।

### १३. ख्यात बात संग्रह

१. ख्यात बात संग्रह, मुहता नैणसी आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०५, ४. ३५ × २१.५ सेमी०, ५. १६०, ६. २२-२५, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ में कुछ राजाओं, उमरावों की वंशावलियां इस प्रकार अंकित हैं—

१. बापा रावल से राणा शम्भूसिंह (उदयपुर)
२. आदिनारायण से महारावळ वैरीशालसिंह (जैसलमेर)
३. राव बोका से डूंगरसिंह (बीकानेर)
४. महाराजा उदमसिंह से राजसिंह (किशनगढ़)
५. राव सोढदेव से सवाई रामसिंह (जयपुर)

इसके अतिरिक्त उदयपुर के कुछ उमरावों की वंशावली भी है। भागे जोधपुर के महाराजा अभयसिंह और विजसिंह के सम्बन्धित कुछ पत्रों की प्रतिलिपियां लिपिबद्ध हैं। प्रारम्भ के पत्रों में दीमक लग जाने से यह कृतियां पूर्णतया पढ़ी नहीं जा सकती है। मूल ग्रन्थ का प्रारम्भ 'सिसोदियां की ख्यात' से होता है—  
प्रारम्भ—

“अथ सिसोदियां की ख्यात की वारता लीपते—आदि सिसोदीया गैहलोत कहीजे। अक बात मूं सुणी इणी……राई पहेली दीपण नूं नासंक अंबक हुती।”

१. प्रकाशित, सं० बदरीप्रसाद साकरिया, मुहता नैणसी की ख्यात, भाग १, २ और ३, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में बूंदी रै घणियां री ख्यात, वागड़िया चहुवाणां री पीढी, वात दहियां री, बूंदेलों री वात, वात गढ़बंध रा घणियां री, वात सिरोही रा घणियां री, भायलां राजपूतों री ख्यात, वात चहुवाण सोनगरां री, वात बोड़ां रै खीचीयां री, पंवारां री उतपत, वात पंवारां री, सांखला सोढों री ख्यात, भालां री ख्यात, सिहोजी री वात आदि बातें लिपिवद्ध हैं ।

मूल ग्रंथ की कृतियाँ मुहता नैणसी की ख्यात में आई हुई बातों के समरूप हैं । ग्रंथ अपूर्ण है इसके अन्त के कुछ पत्र चुप्ट हैं और प्रारम्भ व अन्त के अधिकांश पत्र कीट भक्षित हैं । ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिवद्ध हुआ है । ग्रंथ पर गत्ता नहीं है ।

### १४. राठीड़ों री तवारीख

१. राठीड़ो री तवारीख (मुहता नैणसी री ख्यात) (प्रतिलिपि) मुहता नैणसी, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३७ ४. ३४.२ × २० सेमी०, ५. २६१, ६. ३३, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत रजिस्टर में अनेकानेक ऐतिहासिक बातें संग्रहीत हैं जो मुहता नैणसी की ख्यात से ली गई हैं । इन बातों की प्रतिलिपि कहाँ से की गई, इसके बारे में लिखा है—

“कविराजा सा श्री गणेशदांनजीसा रै हवेली सुं पुस्तक री नकल..... ।”  
इसमें निम्नलिखित बातें, ख्यातें अंकित हैं—

सीसोदीयां री ख्यात, बूंदी रा घणियां री ख्यात, वात सिरोही रा घणियां री, भायलां राजपूतों री ख्यात, वात चहुवाण सोनगरां री, वात सोनगरां री, वात पीचीयां री, वात सोलंकियों री, पाटण आयां री वात रुद्र प्रासाद सिद्धराव करायी तिणरी, कछवाहां री ख्यात, वात खेड़ रा गोहिलां री, पंवारां री उत्पति, वात सांखला जांगलू गया जद री, पंवारां री साखां, भाटियां री ख्यात, वात भालां री, राव सीहा री वात, आस्थान री, कान्हडदे री, मल्लीनाथ री, वीरम री, चूड़े री, भरड़कमल चूंडावत री, राव रिणमलजी, राव जोधा, बीका री, भटनेर री, कांघल री, राव सलखा री, गोगादेजी री, जंसलमेर री वार्ता, पावू री बातों, गोगा वीरमदोत री वार्ता, वार्ता जयमल वीरमदे नै मालदेव री, वार्ता नरखद सक्तावत री, वार्ता राव जोधा री छाप र ड्रोगपुर लीघी तिणरी, वात मोहिलां री, परमारां री री वंशावली, राठीड़ों री वंशावली, बीकानेर री पीड़ियां, दिल्ली राजा हुवा तिकां री विगत, वार्ता राठीड़ों री तिण में सेतराम बरदाईसेनोत री, छतीस राजवंश

राजपूतों की तवारीख, वार्ता चंद्राजतां की, वात भाई उदा उगमणउत की, बूंदी की वार्ता, वात क्यामखानियां की उतपति, संगम राव राठीड़ की वार्ता इत्यादि ।

अन्तिम भाग—

“.....मूलू रै पुत्र कांधल पिण स्याम रौ लूण उजाळियौ, सांम घरमां में पातसाही फौज सूं लड़नं कांम आयौ । इती राठीड़ों की तवारिख संपूरणम् पुस्तकम रामकरणजी रौ सूं नकल ॥ इति ।”

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है, लिखावट साफ है, पत्रों पर लाइनें खींची हैं, ऊपर कागज का गत्ता मढ़ा हुआ है ।

### १५. नैणसी की ख्यात की नकल

१. नैणसी की ख्यात की नकल, नैणसी, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४७, ४. ३४ × २१ सेमी०, ५. १८४, ६. ३२, ७. वि० सं० १६७१ (प्रतिलिपि समय), ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इस रजिस्टर के प्रारम्भ में संयमराय के पुत्र मूलराज की वार्ता अंकित है, प्रतिलिपि अपूर्ण है ।

प्रारम्भ—

“.....घोड़ों नै मांहे बांधियौ घास न्हाकियौ घणौ दाणौ दिधी मूलू रै सिगड़ी कर ठार उडाई । तेल मसलियो अंणी रोटी तरकारो कर मूलू नूं घणौ प्रीत सूं जीमायौ । रात रात माळी मूलू नूं घर मांहे राखियौ..... ।”

इसके अतिरिक्त भाटियों, राठीड़ों व अन्य राजपूत राजाओं एवं योद्धाओं की अनेक ऐतिहासिक बातों की प्रतिलिपियां दी गई हैं ।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है ।

### १६. राजपूतों की ख्यात

१. राजपूतों की ख्यात, बांकीदास, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०१, ४. ३२.५ × २५ सेमी०, ५. १८० ६. १६-२३, ७. १९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में राजस्थान के विभिन्न राजाओं, उमरावों सम्बन्धी अनेक बातें फुटकर नोट के रूप में लिपिबद्ध हैं । यह बांकीदास की ही ख्यात है ।

प्रारम्भ—

“अथ राजपूतों की ख्यात लिपते—परमारराज श्री हरक जिण रौ बडी बेटी मुंज छोटी बेटी सिधु राव २ भोज १ बात करणाटक रौ राजा तेलपदेव ..... ।”

इसमें राठीड़, गहलोत, भाटी, कछवाह, चौहान, पड़िहार राजाओं का वृत्तांत दिया गया है इसके साथ मुसलमानों, मराठों, चारणों की भी बातें वर्णित हैं। इसमें लिपिबद्ध की गई बातों का शृंखलाबद्ध वृत्तांत नहीं बनता व कुछ बातों की पुनरावृत्ति भी हो गई है। राजपूताना के इतिहास के विस्तृत अध्ययन हेतु उपयोगी है।

अन्तिम भाग—

“वेळी १, अमरो २, रांणो ३, मूरा ४, करमसी ५, कांघल ६, भीमराज ७, अणेरज ८, उदैभाण ९, हरराम १०, जीतावस हुवो १३०३।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर गता चढ़ा हुआ है। पत्र मटमैले रंग के हैं।

### १७. बांकीदास री ख्यात

१. बांकीदास की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर) हिन्दी रूपान्तर कर्ता श्यामकरण आसोपा, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६७१, ४. २४.४ × २२.४ सेमी०, ५. ४२०, ६. १७-१८, ७. (वि० सं० १९४९ में हिन्दी रूपान्तर) ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में (बांकीदास द्वारा) राजपूत राजाओं से सम्बन्धी फुटकर लघु वार्ताएँ दी हुई हैं। जिसके आगे पृष्ठ संख्या भी अंकित है। इसका हिन्दी रूपान्तर पण्डित श्यामकरण आसोपा ने किया, जैसा कि ख्यात के प्रारम्भ उद्धृत है—

“कविराजा श्री मुरारदानजी के यहाँ से आई ख्यात की पुस्तक का तर्जुमा लिखा पंडित श्यामकरण ने संवत् १९४९ चैत्र सुदी ४।

॥ अथ राजपूतों की ख्यात ॥

परमार राजा श्री हर्ष जिसका बड़ा बेटा मुंज और छोटा पुत्र सिधुराज उसका भोज कर्णाटक के राजा तेलपदेव ने मृणालवती बहिन के कहने से घर-घर भीख मंगा कर राजा मुंज को शूली दी.....।

उदाहरणों के लिए कुछ बातें प्रस्तुत है—

१. ७२१—घड़सी ने अपनी बसी वीकमपुर रखी और सिध के बादशाह का नौकर रहा, सिध के बादशाह का दूसरे बादशाह से जंग हुआ.....घड़सी ने सफेद हाथी की सूंड काटी तब सिध का बादशाह बहुत खुश हुआ और घड़सी को जैसलमेर दिया।

२. ७२३—फिर घड़सी ने जैसलमेर से अपने मनुष्य भेज कर घाट से केहर, हमीर को बुलाये, घाप तलेटी में था जसा भाटी आसकरण के पुत्र जो घोड़े सवार थे घड़सी को तलवार गर्दन पर मारी जिससे घड़सी का सिर कट कर अलग पड़ा ।

३. ७२४—घोड़ा घड़सी का घड़ लेकर गढ़ पर गया, घड़सी के पुत्र नहीं था इसलिये रावल माला की बहिन विवली ने केहर को टीका दिया और घड़सी को चूक होने के बाद नवमें दिन इसने सत किया ।

४. ७२८—पहले भाटियों की राजधानी लौदवे थी, भाटी सालवाण के टीके भोजदेव बैठा जब भाटी जैसल दिल्ली में फौज लाया और भोजदेव को मार कर घाप मालिक हुआ ।

५. ७२९—फिर जैसल लौदवे कोट कराने लगा जब ब्राह्मण ईसा जो करीब १२० वर्ष का था जिसने आकर जैसल को कहा कि मेरे भेत के पास एक रड़ा (मगरा) है वही श्री कृष्ण ने गदा की चोट जमीन पर देकर पानी प्रकट किया और पांडवों को पिलाया और कहा कि कल्युष में भरे वंश के इस जगह रहेंगे तो तुम उस जगह कोट करा । फिर जैसल ने इसकी बात मानी और जहाँ कृष्ण ने गदा से कूप किया उस पर से पत्थर की मिला अलग करके कुए को दुरस्त बंधाया और नाम जैसला ब्रह्मा रखा, फिर इसी जगह गढ़ कराया और नाम जैसलमेर दिया ।

६. ८५६—राठौड़ ठाकुरसी जैतसी लूणकरणोत का जैतपुरे से भटनेर तैली से मिलावट कर तिसरनी लगा कर भटनेर का किला राठौड़ों से छीन लिया, ठाकुरमी का बेटा बाधा अकबर के सामने कुत्ते की तरह पकड़ा गया ।

७. ५४—कर्णाटक के मुसलमान रसोई वड़ी चतुराई के माथ पकवान और मांस भी एक अद्भुत प्रकार का बनाया करते हैं ।

८. ५३—गांव हैदराबाद की सरहद में 'वाके' हैं उनमें उभूधश्रीनिथ्य मनुष्यों में पड़ने का रिवाज है और वे लोग परों में पकड़िये पकड़ कर दीड़ा करते हैं ।

९. ६०—बड़े गुसाईंजी बिठलरायजी मंगल १५८८ में भीमगनी में आकर बसे..... ।

१०. ६२—बापे गेहलोत ने भीमगनी ब्रगाई ।

११. ७५—महेचा अपनी चिट्टी में मर्यादाश्री के तेज प्रताप से लिखा करते हैं । महादेवजी के तेज प्रताप से हीस नाश और मन्मीनाबके प्रताप से ऐसा भाटी लिखा करते हैं ।

सिनवाड़े पुष्करणी शिवदान का दोहा—

सिवायी वैरी सालती, छुरियां भीड़ें तंग,  
जैसाणो जरका करै, जोधांणा सूं जंग ॥१॥

ग्रन्थ में राजाओं से सम्बन्धी प्रशस्ति गीत, दोहे, कवित्त और बाकीदास कृत दोहों की प्रतिलिपियाँ दी हैं ।

अन्तिम भाग—

बोगनि आई वापड़ी, बैताला री बंर,  
बीजा गांवा बाजरी, बोगनि आई कर ।

॥ इति ॥

मुगल बादशाहों, अंग्रेजों सम्बन्धी बातें, औपधियों के नुस्खे इत्यादि भी दिये गये हैं । प्रस्तुत ख्यात पर शीर्षक गलती से मुरारदान की ख्यात लिखा है परन्तु इसके संकलनकर्त्ता मुरारीदान नहीं है यह ख्यात उनके यहाँ से मिली है जैसा कि प्रारम्भ में लिखा है यह बांकीदास द्वारा संकलित ख्यात है ।

### १८. फुटकर बातों री विगत

१. फुटकर बातों री विगत (प्रतिलिपि) बांकीदास, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६२, ४. ३३ × २५.५ सेमी०, ५. ५४, ६. १८-२०, ७. २०वीं शताब्दी का आरंभ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, महाजनी देवनगरी, १०. इसमें करीब ७४२ फुटकर ऐतिहासिक बातें नोट के रूप में लिखी गई हैं, यह बातें किसी संग्रहालय की फाईल से ली गई है । इसमें अधिकांश बातें जोधपुर महाराजाओं से संबंधित है । प्रारंभ का पत्र लुप्त है अतः प्रारंभ की ८ बातें इसमें नहीं है । बांकीदास री ख्यात के समरूप है ।

प्रारंभ—

“६. चापावत देवीसिंघ महासिंघोत नै पकड़ियो जद बोलीयो—मैं गढ़ में कीवी जीसी गढ़ भूहामे कीवी लं० ५८ ।

१०. कीसोरसिंघजी ईक .....उदैपुर परणाई रामसिंघजी बखतसिंघजी रै जंग हूवो जद रामसिंघजी रै सामल रह, महाराज कीसोरसिंघजी लंबर ६०

११. फरकसेर माराज अजीतसिंघजी नूं गुजरात सोबी दीयो जद मंडारी बीज रै सूबी रैयो पछे मेमदसाह अजीतसिंघजी नूं गुजरात री सूबी दीयो जद अचनाय मंडारी भाडो बैठो अनोपसिंघ सूबे रैयो .....लंबर ६१”

प्रन्तिम—

“७४६ संमत १७३८ डीडवारणो री पेसकसी से चांपावत भजवसिप वीठल-  
दासोत मकराणो सूटियो, काती वद १४ सैर मेड़तो सूटीमो” “ईत्यारपांन पातसाही  
फीज से भामा, लड़ाई कीताईक भजवसिप वीठलदासोत कांम भायो काती वद १  
वार सोम” संवर ६२६

७५० जगड़ा में तीन चारण कांम भायो, मेड़तिया सिरदार कांम भायो,  
पांच चांपावत काम भायो ‘सं० ६२७”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के द्वारा लिपिवद्ध किमा गया है। लिखावट साफ  
नहीं है।

## १६. बीकानेर की ख्यात

१. बीकानेर की ख्यात की हिन्दी में अनुवाद (राव बीका से अनूपसिंह तक)  
२. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४२, ४. २७ ५ × २२ सेमी०, ५. ३०२,  
६. १५-१६, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारंभ, ८. भ्रजात, ९. हिन्दी मिश्रित  
राजस्थानी, १०. इसमें दयालदास की ख्यात<sup>१</sup> का हिन्ही में अनुवाद दिया है।  
प्रारंभ में राव जोधा से संबंधित विवरण देकर राव बीका से राजा अनूपसिंह तक  
बीकानेर के विविध राजाओं का विस्तृत इतिहास दिया गया है।

प्रारंभ—

“जोधोजी की ख्यात—जोधोजी ने मोयलों से छापर द्रोणपुर लिया जिसकी  
विगत (हाल)

मोयल सुदजपोत जात चौहान जो छापर द्रोणपुर का मालिक था जिसका  
हाल मोयलों के बीच इती पुस्तें हैं— १. चौहान, २. चाहा, ३. घणसू राणा चाहा  
का बेटा गवण केहलाया, ४. राणा इंद्रवीर, ५. भर्जन, ६. सुरजन, ७. मोयल, इस  
मोयल की श्रीलाद के ऐल मोयल केहलाये, इन मोहलों के नाम से यह इलाका  
मोयलावाटी केहलाता था, पहले इस परगने को छापर का परगना कहते थे....।”

इस प्रकार इसमें राव जोधा द्वारा मोयलों से छापर द्रोणपुर हस्तगत करने  
का वृत्तांत दिया है और फिर जोधा के कुंवरो की नामावली दी है।

(पत्र-४)

१. मूल ग्रन्थ अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में है।



(१) बीका जोधावत की वार्ता :-

बीकानेर की स्यात का प्रारंभ राव जोधा के पुत्र "राव बीका की वार्ता" से होता है—

"कुंवर श्री बीकाजी का जन्म संवत् १४६५ के श्रावण सुदि १५ को हुष्रा सांखली नौरंगदे के पेट के श्री बीकाजी २ बीदाजी । बीकाजी की जन्म पत्री । एक प्रस्ताव राव जोधाजी दरवार कीये हुवे विराज थे और सब भाई, वो अमराव व कुंवर हाजर थे जिस समय कुंवर बीकाजी.....काका कांघलजी के पास विराज रावजी से मुजरा करके और कांघलजी के कान में बीकाजी कुछ बात करने लगे, इतने में राव जोधाजी न देख कर फरमाया ..... आज तो काका भतीज र सला होती है सो ऐसा मालूम होता कै कि कोई नई जमीन पर कब्जा करेंगे.....।"

राव बीका की जन्म कुण्डली भी अंकित है ।

अन्तिम भाग—

"मुजाणसिध का जन्म सम्वत् १७४७ के श्रावण सुदि ३ सोमवार शके १६२३ ५२/३० सुजाणसिधजी की जन्म पत्री ।" (जन्म पत्री अंकित नहीं है)

इसमें दयालदास की स्यात के अनेक गीत, कवित्त तथा बीकानेर के विविध राजाओं की जन्म पत्रियां इत्यादि अंकित है । प्रातलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है ।

प्रारंभ के कुछ पत्र खण्डित है, कागज मटमले रंग के है, लिखावट साफ है, प्रतिलिपि का समय (ई० सन् १८६२-६३) कही-कहीं पर हाशिये में अंकित है ।

बीकानेर के इतिहास के अध्ययन हेतु उपयोगी है ।

## २०. फतेपुर का इतिहास

१. फतेपुर का इतिहास (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३७०७५ ४. ३०.७ × २०.२ सेमी०, ५. ८, ६. २२, ७. १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में क्यामखां मुसलमानों का इतिवृत्त है । क्यामखां मुसलमानों की उत्पत्ति से लेकर बंशावली दी है तथा कुछ विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा बसाये गये गांवों इत्यादि का वृत्तांत भी दिया गया है ।

प्रारम्भ—

"यादिदास्ती फर्तपुर का नवाबां की . चवाण दद्रेरो बारा गांवां सूँ छो, जैकी राव मोटो, रावजी जांके बेटा छै (६) हुवा, बडौ तो जसवंतजी १, छोटी करमसिंघ २, तीजी जबरदी ३, चौथी जगमाल ४, पांच उर्जसिंघजी ५, छटो भोजराजजी ६, जामै तीन मुसलमान हुवा, समत १३६३ वै की साल दीली में हुवा....

जसवंतजी द्या जे कौ तो नाम मुसलमान में जयदापां जैका ती भाड़ोद की पटी का क्यांमपांनो ।

करमसी को नाम मुसलमानी में क्यांमपांजी, तीसरा को नाम जबरदीपां को बारा गांवा सूँ कडे राज करयो, क्यांमपांजी हंसार राज करयो बावन पड़गना सूँ....।

इसमें मुख्य घटनायें इस क्रम से लिपिबद्ध है—

१. नवाब जलालपांजी ती.....समत १४७५ का साल जलालसर गांव बसायी, कुवौ करायी ।

२. दिवाण अमदपांजी का अमदाणि क्यांमपांनी बाज्या, दिवाण अमदपांजी दिपणाई कोटरी वांद, गढ़ करायी, बावड़ी पुदाई, जोड़ो पुदवायो, संवत १५२६ के साल बादशाह अकबर गांव ५२ दीया (५० गांवों के नाम अंकित हैं) ।

३. नवाब दरड़े दौलतपांजी दौलताबाद गांव बसायी, कुवौ करायी, समत १५२२ का साल ।

४. नवाब फदनपांजी ती फदनपरे गांव बसायी, कुवौ करायी समत १५७० साल दीली बादस्या जांगीर । नवाब फदनखांजी के येक बेटा हुवा....ताजपां, ताजसर बसायी, कुवौ करायी समत १५६६ की साल ।

५. "जलालपां ती गांव आठ सूँ दांतारू कोटड़ी बांदी.....जलालपां जी तीसरी भाई मधुकर जकी मिरड़ कोटड़ी बांधी गांव २५ सूँ । (गांवों के नाम दिये है)

६. नवाब अलफपांजी अलफसर गांव बसायी, कुवौ करायी समत १६५२ को साल बघनोर को परगनो पायी..... ।

७. फकरूलापां कोटड़ी विकमसर बांधी, चारूं भायों की श्रीलादि का अलफपांनी क्यांमपांनी बाज्या ।

८. नवाब दौलतपांजी ती दौलतपरी बसायी किलो करायी समत १६८२ ....।

९. नवाब तारपांजी ती वडौ तारपरी बसायी कुवौ करायी समत १७५० साल..... ।

१०. नवाब दीनदारपाजी..... गांव बसायो झाड़ोद की पटी में दीदारपरी, कुवी करायो समत १७३० की साल ।

११. नवाब सीदपांजी....सीदपरी बसायो, कुवी करायो समत १७५२ साल, बेटा दोय....। नवाब सिरदारपांजी के ठाकर सेवस्यंघजी के फतेसर माडोली बीच भगड़ी हुवी असरकपा गाड़ोदा को ठाकर कामि आयो ।

१२. क्यांमपांजे दिली नू समत १७८८ से फतैपुर सेवसंघजी लीनू ।

अन्तिम—

“... जरा सेवसंघजी तो फतैपुर राज कीयो अर सादूलसिंघजी भूंगण राज कीयो ।”

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। लिपि सुवाच्य है। बहुत से पत्र अंत में रिक्त पड़े हैं। कागज हाथ के बने हुए है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंडा हुआ है। यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि है जो अपूर्ण है।

## २१. ख्यात बात संग्रह

१. ख्यात बात संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०४, ४. ७० × २६.५ सेमी०, ५. १३०, ६. ४०-५२, ७. १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें निम्नलिखित विभिन्न कृतियां वर्णित हैं—

१. राव उदो मूजावत रिणमलोत रा परवार री विगत :-

इसमें राव मूजा के पुत्र उदा (जिससे उदावत शाखा का निर्माण हुआ) व उसके वंशजों का वृत्तांत दिया गया है। उदावतो के विभिन्न ठिकानों की पीढ़ियों इत्यादि का व्यौरा भी दिया गया है।

प्रारंभ—

“राव उदो मूजावत सीधलां रै मासीयाई था। सिधल रै ब्याव बेटे री थो तर उदेजी नै ले गया था पछे जान चढ़तां पेट दुखाय उदोजी घरे रह गया नू अनपूरणा देवी रै पूजारी सीधलां नू चढ़तां वरजीया.....पछे उदोजी सार मूं बन्दोबस्त कर लियो नै सिधलां री जान पाछी जैतारण नहीं आई.....।”

२. ईडर री ख्यात :-

महाराजा अजीतसिंह के पुत्र आनंदसिंह ईडर के नरेश किस प्रकार बने और आगे आनंदसिंह के वंशजों का विवरण है।

### ३. घात बुंदेलों की धरती की :-

हाडा चौहानों ने बुंदी किस प्रकार हस्तगत की आदि का वृत्तांत दिया गया है। (पत्र-१)

### ४. घात मेवाड़ की :-

रावल दलपत और उसके वंशजों का वृत्तांत दिया गया है। फिर राणा लाखा से राणा अमरसिंह तक के राजाओं की संतति आदि का विवरण दिया गया है। (पत्र-५)

### ५. राठौड़ों की वंशावली :-

कन्नौज के राजा जयचंद से जोधपुर के शासक राव मालदेव तक के राजाओं की संतति आदि का उल्लेख है। (पत्र-६)

ग्रंथ के अन्य पत्रों में विभिन्न राठौड़ सरदारों के वृत्तांत इत्यादि जागीर में थे उसका ब्योरा दिया गया है। इनका कोई श्रुंखलाबद्ध वृत्तांत नहीं है।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवान्य नहीं है। ख्यात अपूर्ण है। इसमें पत्र वेसिले विखरे हुए हैं।

## २२. मालदेव की ख्यात

१. मालदेव की ख्यात भाग १ (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६७, ४. २७.५ × २२.४ सेमी०, ५. ३० ६. १४-१५, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. मालदेव द्वारा अपनी रानी (भाली स्वरूपदे) की बहिन से शादी की इच्छा व्यक्त करने से ख्यात का प्रारम्भ होती है।

### प्रारम्भ—

“राव मालदेवजी भाला तेजसिंघ की बेटी ब्याही थी और रावजी भाली के वस में थे और गांव खैरवा भाली सरूपदे को पट्टा दिया था……कोई समय रावजी भालों के यहां महमान गये थे और भाली सरूपदे सब रनवास संग था…… भाली के एक छोटी बहन और थी वो अति रूपवती थी……।”

इसमें मालदेव द्वारा लड़े गये युद्धों व उनके पुत्र राव राम सम्बन्धी कुछ घटनायें अंकित हैं। वृत्तांत जोधपुर की ख्यात से मिलता जुलता है।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है।

### २३. राव रायपाल से राव गांगा तक की ख्यात

१. राव रायपाल से राव गांगा तक की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. राव प्रा० वि० वि० प्र०, ३. १५६६०, ४. २७.४ × २३ सेमी०, ५. १३६, ६. १५-२०, ७. वि० सं० १६४६ (ई० सन् १८६२), ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें मारवाड़ के शासक राव रायपाल से राव गांगा तक के राठौड़ राजाओं का वृत्तांत है। जो जोषपुर की ख्यात से मिलता जुलता है।  
प्रारम्भ—

राव रायपालजी की ख्यात :-

“राव रायपाली ने देव वंशो भाटी राजपूत मांगे को सर्वस्व घन देकर अपना भिक्षुक बनाया। मांगा का बेटा चंद के वंश के रोहड़िया चारण कहलाते हैं क्योंकि भाटी बुध को रोहड़ यानी जबदंस्ती कंद करके चारण किया जिससे इस वंश के चारण रोहड़िये कहलाये.....। रायपालजी संवत् १३०१ में देवलोक हुए रायपालजी के राजलोगों की विगत .....।”

इसमें प्रत्येक शासक की कुछ जीवन-घटनाओं व संतति आदि का हाल दिया है तथा राव चूंडा के पौत्र व भीम के पुत्र वरजांग और नरबद सतावत एवं जोधा के पुत्रों का वृत्तांत अलग से दिया है।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्त के हाथ से की गई है। प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र खंडित है। पत्र मटमेले रंग के हैं।

### २४. राव मालदेव की ख्यात

१. राव मालदेव की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६८, ४, २७.३ × २२.२ सेमी०, ५. ५६, ६. १४, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें मालदेव द्वारा की गई चढ़ाइयों का वृत्तांत है। मालदेव के अधीनस्थ परगनों (४२) की सूची, भवन-निर्माण आदि कार्य, संतति व सतियों की नामावली के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है।  
प्रारम्भ—

“राव मालदेवजी के घोड़े और पैदल मिलकर असी हजार ८०००० फौज तैयार रहती थी और जब इनकी ठकुराई थी।

प्रथम जो जमीन भाई बेटों के नीचे विभाजित करके दी गई थी वही जमीन बादशाही के तौर पर राव मालदेवजी ने की।”

इसमें मालदेव के शासनकाल का वृत्तांत, जोधपुर की ख्यात से मिलता जुलता है।

### २५. राव चंद्रसेन की ख्यात

१. राव चंद्रसेन की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६६, ४. २७.४ × २२.३ सेमी०, ५. ४४, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. जोधपुर के शासक राव चंद्रसेन के शासनकाल की घटनाओं का संक्षेप में वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

“संवत् १६१६ के भ्रगहन में राव चंद्रसेन मालदेवजी के पाट बंठा। संवत् १६२० में राम ने बादशाह भकवर की फौज लाकर जोधपुर के घेरा लगाया तब राम को सोजत देने से चंद्रसेन के यहाँ से जोधपुर का घेरा उठा……।”

चंद्रसेन द्वारा जोधपुर पर अधिकार करने हेतु मुगलों इत्यादि से किये गये युद्धों का वृत्तांत दिया है, फिर अन्त में उसकी संतति इत्यादि का हाल अंकित है। वृत्तांत जोधपुर की ख्यात से मिलता जुलता है।

### २६. महाराजा उदयसिंह की ख्यात

१. महाराजा उदयसिंह की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६७०, ४. २७.४ × २२.३ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. ३६, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. मोटा राजा उदयसिंह के शासन-काल की प्रमुख घटनाओं में शाही दरबार की ओर से लड़े गये युद्धों और अन्त में उसकी रानियों आदि का हाल संक्षेप में है।

प्रारम्भ—

“महाराजा श्री उदयसिंहजी का जन्म संवत् १५६४ के माघ सुदि १३ रविवार के दिन घड़ी २१ और पल ३२ के समय में हुआ……। राव मालदेव के समय इनको फलीषी दी थी सो महाराजा फलीषी में जाकर रहे।”

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। इस ग्रंथ की घटनाएँ जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती हैं।

### २७. गजसिंह की ख्यात

१. गजसिंह की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६६, ४. २७.४ × २२.४ सेमी०, ५. १०६, ६. १५, ७. वि० सं०

१६४६, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह गजसिंह की ख्यात का हिन्दी रूपान्तर है जिसमें उनके शासन-काल (वि० सं० १६७६-१६९५) घटनाओं का विवरण दिया गया है, जो प्रायः अन्य रयातों से मिलता जुलता है।

प्रारम्भ—

“महाराज गजसिंघजी का जनम संवत १६५२ के काति सुदि ८ का और संवत १६७६ के भासोज सुदि ८ बुरांनपुर में गद्दीनसीन हुए। बड़ा महाराज सूरसिंहजी देवलोक हुए तब बादशाह जहांगीर का फुरमान आया कि दखन जावो तब ताकीद से दखन को पधारे.....।”

महाराजा द्वारा चारणों को लाख पसाव, हाथी तथा गांव आदि दान दिये गये उसकी सूची दी है। अन्त में उनकी संतति, रानियों का हाल दिया गया है। अंत के कुछ पत्र लुप्त होने से ख्यात अपूर्ण है।

## २८. जसवन्तसिंह की ख्यात

१. जसवंतसिंह की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर) २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६१, ४. २७.४ × २२.५ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. १०५, ६. १६-२३, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. यह किसी राजस्थानी ख्यात का हिन्दी रूपान्तर है। इसमें जोधपुर के शासक महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के शासनकाल का विस्तृत विवरण है।

प्रारम्भ—

“महाराजधिराज महाराजा जसवंतसिंघजी की ख्यात :-महाराजा जसवंतसिंहजी का जन्म संवत १६८३ के माघ कृष्ण ४ मंगलवार के रोज बुरहानपुर हवेली में हुआ और महाराजा गजसिंघजी ने बादशाह साहजहां से अरज संवत १६९१ के सावण शुक्ला ६ मुकाम काश्मीर में पाटवो कंवर अमरसिंहजी को गद्दी से अलग करके छोटे कंवर जसवंतसिंहजी को मालक करने की बात जमाई.....।”

इसमें विशेष रूप से महाराजा के सैनिक अभियानों का वृत्तान्त दिया गया है। पृष्ठ १६ पर महाराजा द्वारा उमरावों, चारणों को छोड़े, हाथी आदि इनाम किये गये उसकी सूची इस प्रकार दी है—

“संवत् १६९८ के भासोज सुदि ११ मुकाम लाहौर महाराजा जसवंतसिंघजी एक दिन इतनी बखसीस की, तफसील.....उमरावों को—

१. राठौड़ महेसदास मूरजमलोत नुं घोड़ो सुरंग

२. राठौड़ नारखान राजसिंहोत नुं घोड़ो कुमेत कीमत रु० १००

३. राठीड़ रतनसिंह राजसिंहोत नै घोड़ो सूंजपसाव कीमत रू० १४५०
४. राठीड़ चर्तभुज नरहरदासोत
५. राठीड़ विठलदास किशनसिंहोत को घोड़ो हरीवज
६. राठीड़ भ्रमरो आसकरणोत नै घोड़ो खानाजाद
७. राठीड़ रूघनाथ राजसिंहोत नै घोड़ो नगीनो, जैसलमेर का
८. राठीड़ मानसिंह सुरजनेत को माणक खानाजाद
९. राठीड़ दलपत आसकरणोत को सोवनकलश
१०. राठीड़ सुजानसिंह रायसिंहोत को नीलकंठ
११. देवड़ा भ्रचलदास रावतीत को रंगरंगीलो
१२. राठीड़ बाजखां लिखमणसेन

चारणों को दिये :-

१. वारह चुडराव कलावत
२. वारठ नरुराजसी अखावत नै घोड़ो खानाजाद
३. वारठ जसा पंचायणोत नै खरीद आगरा रौ
४. वारठ गोरधनदास को तोडर खानाजाद
५. खिड़ियो जगमाल को घोड़ो निलो खंडेला को
६. वारठ भीवराज रामदासोत को घोड़ो
७. दधवाड़ीयो सुंदरदास माधवदासोत को हंसलो
८. वारठ काम राजसिंहोत

हाथ दीया देश में था सो वहां दीराया तकसील :-

१. राठीड़ गोरधन चांदावत को रणजीत
२. राठीड़ गोपालदास सुंदरदास को जगनाग
३. राठीड़ विठलदासोत को रामप्रसाद

लाख पसाव चारणों को सिर पाव और रुपिया दिया :-

- १५०० आढो किसनो दुरसावत
- १५०० लाळस खेतसी

पाषां दीवो :-

- १४ वादलाई उमरावों को
- १४० कसूंबल बाजे लोकों को

पृ० ८३ पर महाराजा के कामदार, प्रधान व मुकतीयार आदि की सूची दी है। रानियों की सूची के साथ रूपात समाप्त हो जाती है। ; . . .



प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है। पत्र मटमेले रंग के हैं। ग्रंथ जसवंतसिंह के समय के अध्ययन के लिये बड़ा उपयोगी है।

### २६. महाराजा अजीतसिंह की ख्यात

१. महाराजा अजीतसिंह की ख्यात (प्रथम भाग - हिन्दी रूपान्तर)  
२. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६३, ४. २७ × २२.४ सेमी०, (रजिस्टर नुमा)  
५. ६२, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञान,  
९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें महाराजा जसवंतसिंह की मृत्यु (वि०सं० १७३५)  
से वि० सं० १७३८ तक की घटनाओं का विवरण दिया गया है।

प्रारंभ—

“महाराजा अजीतसिंहजी की ख्यात :-

महाराजा श्री जसवंतसिंहजी पिसावर देकलोक संवत १७३५ के पौस वदि १० हुप्रै तव राठौड़ रनछोढदास, सुरजमल, संगरामसिंह.....सला कीवी .....

महाराजा जसवंतसिंह के पेशावर में देहान्त होने के पश्चात् जिन सरदारों अन्य राज्य कर्मचारियों, रानियों आदि ने वहां से लाहौर की ओर कूच किया उनकी सूची तथा जिस मार्ग से वे चले उसका ब्यौरा दिया गया है। लाहौर में अजीतसिंह का जन्म हुआ इसके बारे में लिखा है —

“मिती चैत्र वदि ४ बुधवार संवत १७३५ को पिछली रात घड़ी ७ रही थी जब राणी जामदमजी के कंवर महाराज श्री अजीतसिंहजी सत मासीया जनमा।”

इसके बाद प्रसिद्ध कथा सन्यासी रिघपुरी की वार्ता दी है जिसमें उक्त साधु ने समाधी लेते समय महाराजा जसवंतसिंह को कहा था कि वह उनके रानी की कोख से जन्म लेगा।

अन्तिम—

“संवत १७३६ सरा हुआ और उदावत जगरामजी मेवाड़ में रांणजी के चाकर.....।”

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है।

### ३०. अजीतसिंहजी की ख्यात

१. अजीतसिंहजी की ख्यात, दूसरा भाग (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६४, ४. २७ × २२ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. ६१, ६. १५.

७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें महाराजा अजीतसिंह के समय वि० सं० १७३६ से १७६४ तक की घटनाओं का हिन्दी रूपान्तर है।

प्रारम्भ—

“.....रहा था वह भी मुलक में आकर राठीड़ों के सामिल होकर जैतारण में तुरकों का थांगा रहता था उसके उपर चढ़ाई कीवी थी.....।”

अन्त—

“महाराज अजीतसिंहजी और जैपुर जयसिंहजी का कूच मय अपने उमरावों और खटले के पिछ्छा देवलीयें कि तरफ पधारै। और यह दोनों महाराज पिछ्छा खाना होकर देवलिया आयें जिसकी खबर बाद .....।”

विशेष रूप से ख्यात में राजपूतों द्वारा मुगलों को तंग करने, युद्ध करने, युद्ध में वीरगति प्राप्त होने वाले व्यक्तियों की सूची, गांव आदि लूटने का वृत्तांत दिया है। दुर्गादास तथा मुकुन्ददास खीची द्वारा राजकुमार अजीत की सुरक्षा हेतु किये गये महत्वपूर्ण कार्यों का विवरण भी दिया है।

### ३१. अजीतसिंह की ख्यात

१. अजीतसिंह की ख्यात, तीसरा भाग (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६५, ४. २७ × २२ सेमी० (रजिस्टर नुमा), ५. ११०, ६. १५-१७, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें महाराजा के शासन-काल की वि० सं० १७६४ से वि० सं० १७८० तक की घटनायें अंकित है।

प्रारम्भ—

“.....शाह को पहुचो तब दिवांन खानखाना से ऐतराज हुवा कि इन दोनों महाराज को क्यों जाने दिया। तब खानखाना ने अरज कीवी कि हमने तो आपसे पहीले ही अरज की थी कि आप अभी इन दोनों को नाराज मत करावे.....।”

अजीतसिंह की पुत्री (सूरजकंवर) का संबंध जयपुर नरेश सवाई जयसिंह के साथ होने पर दस्तूर आदि का उल्लेख इस प्रकार है—

“.....सगाई की सो भंडारी विठलदास प्रोहित अखैराज का बेटा जैसिंह और नाथावत व्यास प्रोहोकरनो दीपचंद साथे सूरसागर के महलों इस माफक भीजवाया जिसकी तफसील—

१. नारीयल २ सोने और रूपे से मंडे हुवे जिसमें सोना तोला ५
२. सोपारियां ११ रूपे से मंडी हुई रूपो तोला २.५
३. नालेर १ रूपे से मंडा हुवा जिसमें रूपा तोला ६
४. मोपारियां सोने से मंडी हुई ११ जिसमें सोना तोला २.५
५. फूल सोना को जिसमे सोनी तोलो १ और रूपो तोला १

रोकड़ रूपीया १००० और निछरावल ५०० और नेगदारां रा ५०० हाथी १ मेघमाला और वागा ४ उमदा नै घोड़ा ४ सोना रूपा री सागतां रा....."। जैयसिंहजी के टीको प्रोहित जैसिंह ने निकाला और मोतीयों के आला चैपिये, आरती कीवी और जयसिंहजी नै आरती की घाली में मोहोरों ४ डाली और रूपिया २५ घालीया जिसमें से मोहूरें ३ और रूपिया २० मंडारी विठलदास ने जैयसिंहजी को पाछा दीया और साथ वालां को अमल की मनवार अर खारमंजना करवाई..।

मिती भादवा सुदि १ को महाराज अजीतसिंहजी और अभयसिंहजी तसेटी के महल देखने को पधारे वहां से किले पधारे .....और जैयसिंहजी रणवास जुहार कहलाया, मांह से पिछो आसीस केलाई और मांह से खिनखांप के थान इस माफक भेजे, विगत—

माजी श्री देवड़ीजी ने रोकड़ रूपिया १०० और थान १

देवलीये के सिसोदणीजी ने सरेजन भेजे

भटीयाणोजी जैसलमेर वाला ने सरेजन भेजे

भालीजी को रूपिया ५०० और चहुवानजी दोनों के रोकड़ थान आये ....।"

अजीतसिंह द्वारा विरोधी सरदारों को दण्ड देने अथवा मरवाने, बिले मे चाकरी करने वालों को गांव आदि देने, राजकीय नियुक्तियां, मुगल बादशाहों से संबंध इत्यादि का विवरण दिया है।

अन्तिम भाग—

"कंवरजी अर्भसिंहजी के उपर बादशाह की मरजी बहुत थी और कंवरजी और राजा जयसिंह के आपस में सला घणी इसकी हकीकत महाराज को जोधपुर में लागी सो महाराज जयसिंहजी को चालाक समझता.....।"

पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है। अजीतसिंह के जीवनकाल की घटनाएं और उस समय की राजनैतिक उथल-पुथल के अध्ययन हेतु यह ख्यात उपयोगी है।

### ३२. महाराजा अजीतसिंह री ख्यात

१. महाराजा अजीतसिंह री ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०
३. १५६३८, ४. ३३.२ x २५ सेमी०, ५. २६, ६. २०-२३, ७. २०वीं शताब्दी

का प्रारंभ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें महाराजा अजीतसिंह के बाल्यकाल की कुछ घटनाओं की प्रतिलिपि की गई है।

प्रारंभ—

“समत् १७३५ रा पौस वद १० माराज जसवंतसिंहजी पेसावर में देवलोक हुवा पौस वद ११ राठीड़ रिड़छोड़दास मुरजमल संगरामसिंध, उर्देसिंध, दुरगादास, पंचोली अणरूप……पातसाही मु अरज कराई मुलह रापण वासते … …।”  
विवरण क्रम इस प्रकार है—

१. जसवंतसिंह के मृत्यु के पश्चात् बादशाह द्वारा जोधपुर राज्य खालसे करने, मुलतान से शाहजादे अकबर, आगरे से शाइस्ताखां, गुजरात से मुहम्मद अमीनखां और उज्जैन से अमघखां तथा दक्षिण से राव अमरसिंह के पुत्र इन्दरसिंह को (जोधपुर राज्य इनायत करने के लिये) बादशाह औरंगजेब द्वारा बुलवाने का उल्लेख है।

२. कुंवर अजीतसिंह के लाहौर में पैदा होने, शुभ समाचार जोधपुर पहुँचने उत्सव इत्यादि मनाने तथा बघाई लाने वाले व्यक्ति को इनाम देने का उल्लेख है।

३. बादशाह द्वारा कुंवरों (अजीतसिंह व दलघंभन) को दिल्ली बुलवाने, सरदारों के दिल्ली पहुँचने, राठीड़ रूपसिंह भारमलोट की हवेली में वि० सं० १७३६ श्रावण वदि ३ को उपस्थित सरदारों की सूची खांपानुसार दी है।

(पत्र-८)

४. बादशाह द्वारा इंदरसिंह को जोधपुर राज्य दिये जाने पर सरदारों में संदेह होने व बालकों को दिल्ली से बाहर निकालने, तिस पर शाही सेना का राठीड़ों पर आक्रमण करने का वृत्तांत दिया है—

“राठीड़ों तरवार जाय मीलीया नै राज लोक घोड़ा चढ़ीया उभा हा जिणां रा माथा काट नै चद्रभांजजी……सांमल हुवा, लड़ाई भारी हुई पातसाही फौज रा पांच सौ तो काम आया नै सातसो आदमी घायल हुवा महाराज जसवंतसिंधजी रा राजपूत दिली रा वाका में काम आया तिणरी विगत … …।”

५. इसके आगे वर्णित है कि दिल्ली का कोतवाल बादशाह के हजूर में एक बालक पेश करता है और कहता है कि मैं अजीतसिंह को पकड़ लाया हूँ बादशाह ने उसे मुसलमान बना कर उसका नाम सुहम्मदी राजा रखा।

६. अजमेर के फौजदार तहव्वरखां के साथ हुई राठीड़ों की लड़ाई का विवरण इस प्रकार है—

“घणा राठीड़ था सु अजमेर री सोबादार तेवरयां अढ़ाई हजारी तीण रा डेर पोररजी था, तिण उपर गया फौज री अणी दोय करी एक तो उदावतां री नै अक मेड़तियां री, समत १७३६ रा भाद्रवद ११ लड़ाई हुई तेवरयां भागी, मेड़तीया भला लडीया उदावत लूट घरे आया। इण लड़ाई में कांम आयां री विगत .....।”

७. इंद्रसिंह के जोधपुर गढ़ में आने का उल्लेख, इस समय उपस्थित सरदारों की नामावली दी है। नागौर होय जोधपुर आया रातेनाडे डेर कीया, भाद्र वदि ५ जोधपुर गढ़ में ने सैर में इतरी साथ थो “उहड़ भगवांगदास, राठीड़ सबलसिध .....आदि।”

अन्तिम भाग—

“सारा सीरदार कांमदारों ने रातानाडा ले गया महाराज इंद्रसिधजी रै पगां लगा दीया।”

यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है जो अपूर्ण है क्योंकि इसमें महाराजा अजीतसिंह के केवल बाल्यकाल की कुछ घटनायें अंकित हैं।

### ३३. घांधलों री ख्यात, जैतावतों री खांप तथा सुजाणसिध माघोसींघोत री विगत

१. घांधलों री ख्यात, जैतावतों री खांप तथा सुजाणसिध माघोसिधोत री विगत (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४६, ४. ३२ × २४.५ समी० ५. २१६, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १६५०, ई० सन् १८६३, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें आस्यान के पुत्र घांधल, रिड़मल के प्रपौत्र जैता व मोटा राजा उदर्यासिंह के प्रपौत्र सुजाणसिंह व इनके वंशजों का विवरण दिया गया है।

(अ) घांधलां री ख्यात :-

इसमें राव आस्यान के पुत्र घांधल और उसके वंशजों का हाल है। इसमें अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का संवत सहित विवरण दिया है। जो नैगली की ख्यात में नहीं है।

“भेक दिन रावजी आसयांनजी धापरी मजलत कर ने विराजिया था उन वसत में प्यार ही कंवर आय नै मुजरी कियो, कंवरों री विगत—

पूहड़जी, घांघलजी, चाचगजी, जोगपसावजी, अरे च्यार ही भाई भेळा हुवा जद रावजी फुरमायी के पेड़ री राज तो अक जणारै आवसी दूसरा आप आपरी जमी बगेरे घाव नेक पुन ही प्रबन्ध करी.....।”

प्रमुख घटनाओं का विवरण क्रम इस प्रकार है :—

१. घांघल द्वारा बाड़मेर के चौहानों से युद्ध करने, उसमें विजयी होने का उल्लेख इस प्रकार है :—

“रजपूत अक सो पांप-पांप रा साते रवाने हुवा सू उठा सू पादरा बाड़मेर उपर गया उठे चवाणी सुं जाय अगड़ो कियो ।

दूहा—

जुड़ीयो आसजधान रा, भागा भलु चंवाण ।

जुध जीतीयो सो घाघ तां, रिण सुर दोय सहंस जिण ॥१॥

“समव १२७६ महा सुद ५ गुरवार चवांण सुं जुध हुवी जठे दु तरफ आदमी १०० आसरै काम आया, इण अगड़ा में पेत घाघलजी रै हात रयो, तरवार आछी बजाई पछे महा सुद २ ने कोलुमंड री नीव दीवी नै आपरी राजसधान बांदीयो ।”

२. घांघल के ८ ठकुरानियों व उनसे उत्पन्न हुए कुंवरों कुंवरियों के नाम अंकित हैं । उनके पुत्र पाबू के बारे में लिखा है—

“दूसरो व्याव अपसरा स्वर्ग लोक री जिण रै पाबू अवतारीक हुवा ।”

३. वर्णित है कि गोरखनाथ की कृपा से घांघल को एक अप्सरा प्राप्त हुई, जिसकी कोख से पाबू उत्पन्न हुआ, जिसका विवाह उमर कोट के सोढ़े सूरजमल की पुत्री फुलकंवर से हुआ .....“उमरकोट रा सोढ़ा सूरजमलजी आपरी बेटी फुलकंवर रो टीको पाबूजी रै मेलीयो टीका इण मुजब था—हात्ती दोय, घोड़ा सात और माल हजार ३००००)”

पाबू का वहनोई जींदराव खीची चारणों की गायें चुरा ले गया उसकी वार पाबू और बूढ़ा चढ़े, अन्त में लड़ते हुए मारे गये । पाबू की मृत्यु की तिथि वि० सं० १३२३ भाप सुदी १० दी है ।

पाबू के पीछे चहुआणजी, गेहलोतजी १४ स्त्रियां चित्ता में प्रविष्ट हुई उससे संबंधित एक गीत दिया है ।

प्रारंभ—

चंवाण करी चीत चाव गेलोतण हर बीत मईद ।

उपर चडि नेर पाबू संग सती हुई .... ॥१॥

४. इसके आगे घांघल के पुत्र बूड़ा का वृत्तांत दिया गया है, प्रारंभ में लिखा है—

“बूड़ाजी कोलुमंड रहता सां भ्रोक दिन आपरी लोक लेने चढ़िया सो देवड़ा मूलराज सुं भगड़ो कर गांव ३०० सू पारीवादर सीनी (वि० सं० १२६५ भादवा वद २ शनीसरवार ।”

इसमें मुख्य रूप से बूड़ा की पुत्री की शादी गोगा चौहान के साथ करते, जिंदराव खीची द्वारा बूड़ा व पावू के मारे जाने पर उसके पुत्र भरड़ा द्वारा उस खीची को मार कर अपने काका व पिता का वैर लिये जाने का वृत्तांत सविस्तार दिया है। यथा—

“जिन्दराव नै समत १३३६ में माह वद १३ नै पोर लारली रात रा मारीयो…… (भरड़ा) माइयों नै केयो हमे थे फौज लेने कोलुमंड जावो सो कोबू मंड ले जावो, नै इतरी बात याद राखजो के जोदराव रा बेटा नै मारजो मती म्हारो दांन दियोड़ो है, हमें थाने क्यूंही डर नही इतरी कहने भरड़ा अलोप हुवा सो अजेस पूजो जै ।”

५. आगे कोलू ग्राम के घांघल करणाजी का वृत्तांत है जो राव मालदेव के समकालीन थे। वर्णित है कि मालदेव का पुत्र उदर्यसिंह रूठ कर करण के पास गया, करण उदर्यसिंह को लेकर अकबर के पास गया जहां उसे मोटा राजा की पदवी मिली। उदर्यसिंह के उत्तराधिकारी होने पर करण को १० हजार का पट्टा इत्यादि दिया गया। “करणजी रै नावे पटो हजार दस १०००० री दीयो नै कुरब ईनायत कीयो नै रसोड़ा री दरोगाई दीवी……नै काका पदवी दीवी…… आ बात समत १६४१ री है ।”

६. करण के पुत्र नथमल के पुत्रों आदि का विवरण दिया है। फिर नथमल के ज्येष्ठ पुत्र पंचायण जो महाराज गजसिंह के रसोड़े का दरोगा था उसका वृत्तांत दिया है। अमरसिंह ने अपने पिता गजसिंह को पंचायण (घांघलों) द्वारा जहर दिलवाने के प्रयत्न का विवरण इस प्रकार अंकित है—

“अमरसिंहजी महाराज साहब नै चूक करण री वृवीचारी……आप रसोड़े आयने पंचायणजी नै केयो…… थाल में जहर कर देवो तो थानू घणा बदावसां…… कंबरजी जेर री पुड़ियां इणा नुं सूपी नै आ पाछा पदारिया। पंचायणजी मनमे सोची के मारा हात सुं अ। बात हुवं तो सात पीड़ी नरक में जावे नै बचन पलदं तो छुथीपणी लाजे सो……आपरै बेटा भाइया नै बुलाया नै केयो—कै जोधपुर रा घणी री……चाकरी करी तो रसोड़े री दरोगाई लेजी मती नै कदास लेवो वो

मालक नै हाय सूं जैर करजी मली.....बेटा भायां नै सीख दीनी नै.....केयी ये सालवे कनै जावी, जहर रौ प्यालो पीयी (१६८६ फाल्गुन वदि ३)

भाव रौ कवित—

कर परमेश्वर याद ग्यांन चित धारिर, सांम कांम सरीर,  
जहर तन मह जारे, .....॥१॥

..... मंडोवर दाग दियो ।

पछें महाराज साहब पंचाण रौ मौसर करायो जोधपुर सहर घाटूं मीसल रा उमरावां नुं जीमाया.....रू० ५०००० लागी ।"

७, फिर इसके वंशज ईंदरदास व उनके पुत्र मनोहरदास को जसवंतसिंह द्वारा गांव इत्यादि देने का उल्लेख इस प्रकार है—

"महाराज श्री जसवंतसिंघजी मनोहरदासजी नै तो सालवो दियो नै ईसर-दासजी नै केरू दीवी इणा स्यांम घरमा सुं महाराज साहब री बंदगी कीवी ।"

वर्णित है कि मनोहरदास उज्जैन की लड़ाई में मारा गया तब उनका लड़का उदंकरण सालवे का ठाकुर बना, इसका विवाह नारवे के खोचीयों की पुत्री से हुआ जिनके चार पुत्र केसरीसिंह, भोकमसिंह, रामसिंह, किसनसिंह हुए, जिन्होंने अजीतसिंह के बिसे में साय दिया ।

फिर केसरीसिंह सालवे का ठाकुर बना । आगे केसरीसिंह के पुत्र लालसिंह व उसके वंशजों का भी वृत्तांत है ।

इस प्रकार सालवे के घांघल ठाकुरों का वृत्तांत दिया है जिसमें उनके शादी विवाह, कुंवरों कुंवरियों के नाम तथा जोधपुर राजघराने में की गई सेवाओं का विशेष रूप से विवरण दिया गया है । (पत्र-३२)

१८. घाघलों के कुछ अन्य गांवों के ठाकुरों व उनके वंशजों का उल्लेख है जिसमें उनके वैवाहिक सम्बन्ध कहीं-कहीं हुए तथा पुत्रों के नाम आदि दिये हैं । गांवों के नाम इस प्रकार है—

- (क) कैरू—गोयंददास मनोहरदास की पीढ़ियां
- (ख) भोकलसर—भेहकरण स्यामसिंघोत की पीढ़ियां
- (ग) रोमला—बेणीदास सुरतसिंघोत की पीढ़ियां
- (घ) बुटेलाव—आईदान की पीढ़ियां
- (च) चांदरक—कुंभकरण कलावत री पीढ़ियां

घांघल राठौड़ों के इतिहास तथा सामंतों की मान्यताओं के अध्ययन हेतु यह सामग्री उपयोगी है । (पत्र-६४)



(घ्रा) जैतायतों की याप :-

इसमें राठोड़ जैता के वंशजों का विवरण दिया गया है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. प्रारम्भ में राव रिड़मत के पुत्र अखैराज का वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

“रावजी थी रिड़मतजी राज करे, तिणारं पाटवी कंवर अखैराजजी जिणारं चितौड़ राणा री वाई री टीकी भायी जद रावजी सुं केणी भाय गपौ के अखैराज नै हर कोई बेटी परणावे एक तो राज री घणी नै दूजी मोटीयार, सो बूडा नै परणावे तो म्हाने परणावे सो आ खवर अखैराज सुण पाई .....।”

पिता के इस प्रकार के बोल सुन कर अखैराज का चितौड़ राणा की पुत्री से विवाह नहीं करने का उल्लेख है।

२. अखैराज के पुत्रों के नाम दिये हैं जिसमें फिर उनके पुत्र पंचायण, जिन्हें सोजत मिली हुई थी के कुंवरों के नाम दिये हैं। फिर राव सूजा की मृत्यु पर चार पंचायण इत्यादि राठोड़ सरदारों द्वारा गांगा को उत्तराधिकारी बनाने की घटना दी है। पंचायण द्वारा सोजत वीरम (राव सूजा का पुत्र) को देने तथा बगड़ी हस्तगत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“वीरमजी पंचायणजी बन गया और गोद में बैस नै कयो—हूं राज री घली छूं हमे मनै कही केवौ हूं कठी जाउं जद पंचायणजी मन में विचारियो और सोजत पट्टे रीवी, पछै पंचायणजी पाछा जावता हा सो गांव मुरठावे डेरा हुवा वीरमजी नै सोजत १५७४ रा चैत सुद ३ नै हुई, बगड़ी सींघल नै मारनै कबजो कीयो।”

३. आगे राव जैता के वृत्तांत में उसके राजलोक की विगत दी है फिर राव मालदेव की और से लड़े गये युद्धों का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

“राव जैतसी री जनम १५५४ रा भादवा री, अे वडा दातार सूरवीर हुवा.....राव जैता बगड़ी राज करे.....।”

४. वि० सं० १६०० में बादशाह शेरशाह से लड़ते हुए जैता, कृपा के मारे जाने के पश्चात् जैता का पुत्र पृथ्वीराज बगड़ी के ठाकुर बने, उनके कुंवरों की नामावली दी है। पृथ्वीराज के वृत्तांत के बाद नारायणदास, राघोदासोत, शिव-नारायणसिंह नायावत (नाया के पुत्र), सांघतसिंह जगराजोत इत्यादि जैतावत राठोड़ों की पीढ़ियां, उनके शादी विवाह और उनमें से कुछ विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा जोधपुर राजघराने में की गई सेवाओं का विवरण दिया गया है।

(इ) सुजाणसिंह माघोसिंहोत्तरी विगत :-

इसमें जोधपुर के महाराजा उदयसिंह के पौत्र व माघोसिंह के पुत्र सुजाणसिंह व उसके वंशजों का विवरण दिया गया है। प्रारम्भ में इनसे सम्बन्धी कुछ कवित्त, दोहे (पत्र-३) दिये हैं।

दूहा प्रारंभ—

आद वडो धररात बहु अख नर लोय ।

वंस छत्तीसां मानली त्यां सीरीखा न कोय ॥१॥

कवित्त—

अयसथान पाट हुवो घुहड़ अतुलीबल

महीरेलण रायपाल, कांन जालणसी……

फिर इनका विवरण इस प्रकार दिया है—

१. “मोटा राजा उदैसिंहजी संमत १६४१ रा जेठ सुद ५ जोधपुर पाट बैठा, महाराजा माघोसिंह उदैसिंहोत्तरी 'पीसोगण' वीसनदासोता कर्ना सु' लीवी, बादशाह अकबर री बखत में समत १६५६ री साल में …… ।”

२. इसके पश्चात् माघोसिंह की ठकुरानियों व कुंवरों के नाम दिये हैं, फिर इनके पुत्र सुजाणसिंह की संतति का विवरण दिया गया है।

३. औरंगजेब द्वारा मनसब इत्यादि दिये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“सन्वत् १७४५ बादशाह औरंगसाह महाराजा सुजाणसिंहजी ने पांच सदी मुनसप दीयो, सोम्लत जैतारण सिवांणो गढ़ दीना …… ।”

४. सुजाणसिंह के पुत्र करणसिंह और जुंभारसिंह<sup>१</sup> पर (वि० सं० १७३६) में राणा अमरसिंह जैतसिंहोत्तरी की चढ़ाई का उल्लेख है इससे सम्बन्धित अनेक गीत भी दिये हैं।

प्रारम्भ—

कीधा केसरीया भर सीलह कीधी रांणो सुण दरबार आयी,

भाइ भीड़ भाछै गा भाइ औ जुजारां आयी…… ॥१॥

५. इसमें यह भी अंकित है कि महाराजा अजीतसिंहजी ने इनको (वि० सं० १७७० सुजाणसिंह व करणसिंह) चूक कर मरवाया।

१. धीर विनोद (भाग २, पृ० ७५२) के अनुसार ये बड़े धीर थे, बादशाह की तरफ से इन्हें पुरस्कार आदि परलने मिले थे किन्तु वजह से उदयपुर वासी के साथ इनका झगड़ा रहता था।

६. इसके बाद जूँभारसिंह के पुत्र फतेहगिह की संतति का विवरण दिया है, इस प्रकार पीसांगण, जूनीया इत्यादि ठिकानों के राठोड़ सरदारों का वृत्तांत दिया है, जो इन गांवों व माघोसिंह के वंशजों के इतिहास के अध्ययन हेतु उपयोगी है।  
अन्तिम भाग—

“.....सूरजमलजी रँ सांरली रँ पु० विसनसिंह बनदसिंह बसतसिंहोत पीढ़ी जुनीयो, इणां रँ मैहल सांरली रँ पुत्र जोरजी ।” (पत्र-३६)

प्रतिलिपि के बारे में एक स्थान पर लिखा है—

“कुल गुरू हजारीमल री बही री नकल सरू कीवी ता २७ मई जेठ वद १९५० ।”

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। पत्र मटमैले रंग के हैं ऊपर गत्ता चढ़ा हुआ है।

यह ग्रंथ मारवाड़ के राठोड़ योद्धाओं, सामन्ती प्रयाओं और आंतरिक व्यवस्था की विस्तृत जानकारी के लिये बड़ा उपयोगी है।

### ३४. राव सीहाजी सूं वीरमदेजी तक री तवारीख

१. राव सीहाजी सूं वीरमदेव री तवारीख (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६५२, ४. ३४.८ × २१.६ सेमी०, ५. १६१, ६. २०-२६, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह ग्रंथ अनेक ख्यातो के आधार पर तैयार किया गया है, स्थान-स्थान पर इन ख्यातों का उल्लेख है, विवरण इस प्रकार है—

इसमें मारवाड़ के संस्थापक राव सीहा से वीरम तक के राठोड़ राजाओं का वृत्तांत विभिन्न ख्यातो के अनुसार दिया है। प्रारम्भ में दिया है कि जब सीहाजी मारवाड़ में आये उस समय आस-पास की भूमि पर किसका अधिकार था। यथा—

“राव सीयोजी महाराज जयचंदजी रा पोता और गुजरात रा राजा भीमदेव सोलंखी रा भांणोज था, महाराज जयचंदजी सुं कनौज री राज छूटने पर रावजी कुछ बेलियो रँ साथ अटी उटी कीणी स्वतंत्र राज (ब) सावण री अभीलासा सुं फिरता..... संवत १२६८ में रावजी द्वारका री जात्रा करण सारू आ नीकळीया उण वक्त राजस्थान में निचे लिखीया हुवा राजा था—पूरब में बछवा ..... ।”

१. किन कारणों से भीनमाल के ब्राह्मणों ने सीहा को बुलाया वसित है—  
“आय पुकार कीवी कै मोरी गांव मुलतान री वादसा आय खुटीयो है और बांध पकड़ीया है नै जजिया मांगै है और कवै है ‘राकर लेवों’ द्वारका सुदी धरती

ले लीवी है सो द्वारकानाथ री जात्रा कोई करण पावै नहीं । पला ठाकुरों नै तुरक कर दिया है सारों री बेटियों, जुगायों बुलावै है भनीत घणी चडी है सो आप म्होरी उपर करावौ । सीहाजी भा बात मुण कैयौ—ये चाली धारी बार करण भाउं हूँ..... ।”

फिर दोनों धोर से युद्ध में मारे गये कुछ योद्धाओं के नाम इत्यादि दिये हैं ।

२. मुदियाड़ की श्यात के अनुसार राव सीहा का वृत्तान्त :-

इसमें कुछ घटनाओं के संवत् इस प्रकार दिये हैं—

१. सीहो सेतराम री समत १२१२ रा भासोज मुदि ७ श्री द्वारकानाथजी पधारीया ।

२. भासधानजी बडा बेटा री जनम समत १२१८ रा काती बढ १४ बार प्रसपत ।

३. सोनगजी.....री जन्म १२२३ पौस बढ १ री ।

४. अजजी .....री जन्म १२२५ असाढ बढ १ ।

३. मुरारदान की श्यात से राव सीहा का वृत्तान्त :-

प्रारम्भ—

“पाली रा डेरों सीहोजी वन में सिकार गया सीहाजी री बँर सुती थी तिरण नुं मुहणो (स्वप्न) लाघो जाणै म्हारी पेट फाटी छै बेळी (दो लड़के) जायो छै तिरण नुं नाहर ले जावै छै..... ।”

इस घटना के बाद सीहा के राजलोक [की विगत में पांच पुत्रों के नाम—आसधान, अज, सोनग, भीम और रामसेन के दिये हैं (रामसेन नेनौ धको मूवौ तिरणी छत्री गढ़ गोमंदाणे है .....पितर हुवौ ।) तत्पश्चात् लाखा फूलानी के मारे जाने व उसके सम्बन्धी कुछ दोहे (लाखै लाख समापियौ.....१) दिये हैं । फिर सीहाजी का वृत्तान्त हिंदी भाषा में दिया है, घटनायें प्रायः एक जैसी ही हैं ।

(पत्र-११)

४. सीहाजी का विवरण राठौड़ों की वंशावली के अनुसार :-

प्रारम्भ—

“१३५ राव सेतराम को सीहो व गांगो २ सांगो ३ राव सीहा नै जती खरतर गच्छ में श्री जिनदत्तसुरीजी असीस दीधी से कया—पाली नगर ब्राह्मण पलीवाल वसै, छतीस हजार घर पालीवालों रा ।”

(पत्र-४)



५. सीहाजी का वृत्तांत 'कोमी हालती' की पुस्तक के अनुसार :-

प्रारम्भ—

“राठीड़ मुल्क के मालक हैं दूसरे राजपूत उनकी दी हुई रोटी खाते हैं।  
१ राठीड़ मारवाड़ में कन्नौज से आये हैं और इसी से इनकी खांप कन्नौजिया है……।”

इसमें राव सीहा से जसवन्तसिंह द्वितीय तक की वंशावली भी दी है।

(पत्र-१)

६. नौबाज की बही के अनुसार सीहाजी का वृत्तांत :-

प्रारम्भ—

“रावजी सीहोजी वडो ठाकुर हुवो वडा साथ रो धणी हुवो सु सीहोजी भेक  
समै मास ६ सिकार रमती नै भाई अन्ह कन्नौज रहती……।”

(पत्र-५)

७. 'नैणसी की ख्यात' के अनुसार सीहाजी का वृत्तांत :-

प्रारम्भ—

“राजा सिधसेन कनवज सूं द्वारका जात्रा करण नै पधारिया आप गोत्र  
कदंब बहुत कियो ते मन विरक्त हुवो……।”

(पत्र-३)

८. 'भंडारी क्रिशनमल की बही' से सीहोजी का विवरण :-

प्रारम्भ—

“सीहोजी १२१२ श्री द्वारकाजी रो जात्रा करण पधारिया आसोज मुद ७  
जातरा कीवी, पाछा पाटण पधारिया गुजरात रा धणी मूलराज सोलंखी रो मदत  
कर लाखा फूलांणी उपर गया सु … …।”

(पत्र-३)

९. 'सूदियाड़ व प्रयागदास की ख्यात' से सीहाजी का वृत्तांत :-

प्रारम्भ—

दोहा—

राठीड़ रै आदि लग, सिधां ऐह सुभाव,

धीया पुत्त महेलिया, मुख लज्जा धर चाव ॥२॥

सेतराम से सीहो ३ वाको सीहा रो—राव सीहो वडो ठाकुर हुवो वाडा साथ रो  
धणी हुवो मास ६ सिकार रहती……।

(पत्र-६)

१०. राव आसथान का वृत्तांत :-

इसी प्रकार विभिन्न ख्यातों के अनुसार राव आसथान व अन्य राठीड़  
राजाओं का वृत्तांत दिया है। आसथान द्वारा गोहिलों से खेड हस्तगत करने,  
ईडर के भीलों को मार कर अपने भाई सोनग को देने तथा आसथान के संतति का  
हाल है।

(पत्र-३६)

११. राव सीहा का वृत्तांत :-

आगे फिर से सीहाजी का वृत्तांत दिया गया है। एक जगह लिखा है—  
 “सीहोजी किताक दिन पाली रै कन्नोज में गया सो गढ़ गोयंदाएँ राज कियो अन्त  
 नै कनोज रो टीको दियो बर्य १३ गोईनदाएँ राज कियो श्री गोड़ वीरामएँ नै  
 गुर किया ४० सांत्ण दिया। सीहोजी घांम पधारिया तरै बेटां नै कयो—ये पाली  
 जाय रहीजी उठारो राज थारै भावसी……” (पत्र-१०३)

१२. पावू तथा घूहड़ का वृत्तांत :-

राठीड़ पावू के वृत्तांत के पश्चात् घूहड़ का वृत्तांत दिया है।

प्रारम्भ—

“आस्थानजी रै तारै उणी रा बडा कंवर घूहड़ गादी बैठा भे बड़ा बहादुर  
 था……कनोज सुं पाछा भावती वगत रावजी आपरी कुळ देवी चक्रेस्वरी करणाटक  
 देस सुं लाया और गांव नागाणां ……स्थान कीबी ……” (पत्र-११)

१३. राव रायपाल का वृत्तांत :-

विभिन्न स्यातों के अनुसार राव रायपाल से सम्बन्धित घटनाओं का उल्लेख  
 किया है।

प्रारम्भ—

“घूहड़जी रै तारै उणों रा बड़ा कंवर रायपालजी गादी बैठा भे बड़ा ही  
 दातार और बहादुर हुवा पहले तो आपरा बाप रो बैर लेण सारू सं०…… में  
 मंडोर उपर पड़ीहारां सुं लड़ाई करण वास्ते पधारिया ……” (पत्र-६)

१४. कान्हपाल का वृत्तांत :-

कान्हपाल के संतति व भाटियों से युद्ध का वृत्तांत दिया गया है।

प्रारम्भ—

“रावजी श्री कन्नयरायजी बडा अकलवर था नै बहादुर था नै इगरे कंवर  
 ३ था सो भीमकरणजी बड़ा बहादुर था। उएँ समै में रावजी सारै नै जैसलमेर रा  
 भाटियां रै सरहद बावत तकसार खड़ी हो गई ……” (पत्र-४)

१५. राव जालणसी का वृत्तांत :-

इसके बारे में लिखा है—

प्रारम्भ—

“राव जालणसिधजी कानड़जी रा पाटवी कंवर गादी बैठा इण वगत  
 जैसलमेर रा भाटी तुरकां री मदत सुं कर खेड़ और महवे उपर आपरो जोर नौक  
 दियो हो जिणनै दूर कर आपरो दखल जमायो, ……पछै रावजी सिध लूटी और

ठठा मार मुलतान रै हाकीभ उजावलसां री फौज सुं जंग कीयी ..... फतै हुई, फेर  
तुरक फौज ले सं० १३३६ मउवे उपर आया ..... रावजी काम आया ..... ।”  
(पत्र-४३)

इसी प्रकार राव छाडा, टीडा, कान्हड़देव, सलखा, मल्लीनाथ तथा धोरमजी का वृत्तांत विभिन्न बहियों से उतारा गया है। जिसमें प्रशस्ति गीत, दोहे यथास्थान आये हैं।

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। मारवाड़ के इतिहास अध्ययन हेतु यह सामग्री उपयोगी है। कई ख्यातों की सूचना इससे मिलती है।

### ३५. महाराजा अभयसिंह री ख्यात

१. महाराजा अभयसिंह री ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०,  
३. १५६३२, ४. ३३.५ × २४.५ सेमी०, ५. ५६, ६. २०-२४, ७. २०वीं  
शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इस ख्यात  
में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह का विस्तार से तथा रामसिंह बखतसिंह का  
संक्षेप में वृत्तांत है।

ख्यात का प्रारम्भ अभयसिंह के जन्म, राज्यारोहण और मृत्यु इत्यादि के  
संवत्तों से किया गया है। दिल्ली में रहते हुए अपने पिता अजीतसिंह के मारे जाने  
के समाचार सुनने पर बादशाह की सेवा में उपस्थित होने, जम्त किये परगने  
(नागीर, केकड़ी, घटीयाली, मरोठ, फूलीया, परबतर) मा० अभयसिंह को पुन  
लौटाने इत्यादि का वृत्तांत आगे दिया है।

प्रारम्भ—

“माराज श्री अभयसिंहजी रा राज री कारवाई री ख्यात—माराज श्री  
अभयसिंहजी समत १७५६ रा मीगसर वद १४ वार सन री जनम जाळीर मे नै समत  
१७८१ रा सावण वद ८ सुकर राजतीलक बीराजिया दीली मे नै सं० १८०५ रा  
आसाढ़ सुद १५ सोमवार देवलोक हुवा अजमेर में।”

ख्यात में अंकित घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. महाराजा के आमेर नरेश जयसिंह की पुत्री से विवाह करने, सरदारों  
की राय नहीं मानने का उल्लेख है, आगे अप्रसन्न हुए सरदारों की सूची (खांपानुसार)  
अंकित है।

२. सरदारों की राय के अनुसार भंडारियों को कैद करने, फिर मुक्त  
करने, इन्दरसिंह से नागीर छीनने व बखतसिंह को नागीर इनायत करने का  
विवरण दिया है। यथा—

“समत १७८२ रा काती में श्री दरबार माराज बखतसिंघजी नै राजधिराज री पीठाव दीयो नै नागौर ईनायत कीयो नै…… मुतसदी पवास पासयांन वगैरै चाकर दीया रै जवाहर री रकमों दीयो जिणरी विगत …… ।”

३. वि० सं० १७८२ में राजकीय नियुक्तियों का विवरण इस प्रकार उद्धृत है—

“१ परधानगी चांपावत नरसिंघ भगवानदासोत नै दी, भं० पीवसी सुं तागीर सं० १७८१ रा फागुण सुद ६ हुई ।

१ दीवाणगी भंडारी रूधनाथ नै दी छी नै उठण री कुरव दीयो ।

१ बपसी पंचोळी रामकीसन रै धी सुं राजाधिराज बखतसिंघजी कनै नागौर गयो नै अठै भाटी बालकीसन काम करतो ।

१ पांनसांम प्रीपोत रीणछोडजी नै दीयो ।

१ जोधपुर री हाकमी भंडारी अनोपसिंघ रूधनाथोत नै हुई ।

१ मेड़ता री हाकमी भं मानरूप पौमसीराव सांवत रै हुई ।

१ वारठ गोरपदांन केसरीसिंघोत ।

१ देरासरी व्यास फतैचंद दीपचंदोत रांमसरण हुवौ तरं …… फतैचंदोत नुं पछै उदैचंदोत नै व्यास पदवी दीयो ।

१ राजगुर प्रोहीत सूरजमल अर्पराजोत नै तींवरी दीयो ।

१ दोड़ीदार गूजर विजेराम ।

१ जोधपुर सीकदार सोभावत दयालदास बैणीदासोत पछै समत १७ …… में दयालदास कीसनदास रै रही ।”

४. भंडारी रूधनाथ को हटा कर भंडारी अमरसिंह को दीवान पद पर नियुक्त करने उसे सीरोपाव इत्यादि देने का उल्लेख है ।

५. वि० सं० १७८५ में धांधलों को गाँव इत्यादि दिये गये उसका ब्यौरा दिया गया है ।

६. किशोरसिंह द्वारा पोकरण फलीदी में उत्पात करने, रायसिंह आनंदसिंह द्वारा जालोर के गांवों में लूट-खसोट करने महाराजा द्वारा इस प्रकार के उपद्रवों को दबाने का उल्लेख है ।

७. बादशाह की ओर से अहमदाबाद महाराजा को इनायत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“महाराज अमरसिंघजी दीली हा सो पातसाहजी समत १७८५ रा अहमदाबाद सोबो माराज नै ईनायत कीयो, इण माफक नीबाजस कीयो सीरोपाव कड़ा मोती



कीलंगी जड़ाउ तरवार हाथी रोकड़ा रूपीया १५००००० पनरे लाप दीया नै बीरात रूपीया १२००००० वारे लाप अहमदाबाद उपर कर दीवी नै तोपयांनो नै नवाब अजीमुलापांन साथे फौज दे माराज री दीली सुं कूच जंपुर नवी वसती थो उठै जैसिघजी सुं मिल काती में जोघपुर पधारिया .....मं० अमरसिंघ नै दीली रापीयो थो सो रू० १५००००० पनरे लाप कढ़ाय नै मेलीया नै अहमदाबाद नै कूच री त्यारी कीवी ..... ।”

८. महाराजा अभयसिंह के अहमदाबाद पर आक्रमण करने तथा अभयसिंह और राजधिराज वल्लतसिंह के सरदार मारे गये अथवा घायल हुए उनकी सूची दी है। महाराजा का वहाँ अधिकार होने, वहाँ नियुक्तियों इत्यादि करने का उल्लेख है।

९. कवि करणीदान को अहमदाबाद में सीरपाव इत्यादि देने का विवरण इस प्रकार है—

“चारण कविया करणीदान नै अहमदाबाद में सीरपाव दीयो हायी कड़ा मोती घोड़ो लाप (पसाव) सीरपाव दीयो परगने सोजत री गांव आलाबाद दीयो ..... ।”

१०. पीलुजी गायकवाड़ के चौथ वसूल करने हेतु मारवाड़ में जाने, अभयसिंह द्वारा विरोध करने और छल से पीलुजी को मरवाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“सु मुसदी तो अजाण था नै वात करण गया सो.....बुक करने पीलु नै कटारी सुं मारियो, आदमी १८ काम आया फौज पीलु री भागी ।”

११. स्वर्गीय खंडेराव दामाड़े की पत्नी उमावाई की जोघपुर पर चढ़ाई करने चौथ इत्यादि का उल्लेख इस प्रकार है—

“समत १७८६ रा फागुण लागता असवार हजार सीतर ७०००० उना आई तरै राजधिराज नुं बुलाय नै जोघपुर मेड़ता बगेरै प्रगना सुं फौजां बुलाई सो दोनुं सायव तो किला दापल हीज रैया नै सारी फौज रा भुतसदीयां रा डेरा कीलकीला नदी उपर हुवा फौज हजार २०००० बीस थी दरवार री थी। करणोन दुरगादासजी रै नै पाहेराव रै भाई चारी थो तिण सुं करणोत अमंकरण दुरगादासोत नै उमा छन मेलीयो सो उमां केयो—मारी गुजरात में चौथ है ..... तरै दोठ साप १५०००० रूपीया करणोत अमंकरण देना ठैराया नै थी हतूर में अरत्र बोबी मो कीतराक रै धा वात दाय भाई नही नै राड़ करणी ठैराई ..... मारी फौजां मारां मु उठी मुं उमां री फौज चढ़ी सो जीवगज री फौज मुं अमनी

हुवी जीवराज काम आयी.....पछै दूज दिन करणोत अमैकरणजी नै मेल नै वात कराय रूपीया २००००० दोग लाय देणा ठैराया नै उमा री पाछी कूच करायी ।”

१२. बखतसिंह की बीकानेर पर चढ़ाइयों का पृत्तांत दिया गया है ।

१३. मराठों के बढ़ते प्रभाव को रोकने हेतु रणथंभीर का किला सवाई जयसिंह को देने का विवरण इस प्रकार है—

“सवाई जैसिंघजी पानदोला री मारफत अरज कराई कै रीणथंभीर री कीली मने इनायव हुवे तो गनीमा नै भे अ्रावण देवौ नहीं.....आ पवर भंडारी अमरसिंघ नै हई तरै पानदोरा नै केयो कै रीणथंभीर री कीली तो इण नै इनायत हुवौ ओ अठी री तो जावतो ओ करसी नै बीटली री कीली मानू इनायत हुवे सु जाळोर कांनी से जावतो म्है कर लेसां ... तरै रीणथंभीर री कीली जैसिंघजी नै देणी मोकुव ठैरीयो ।”

१४. दक्षिणियों का मुकाबला करने के लिए महाराजा और अन्य राजपूत राजाओं का शाही सेना के साथ जाने, गुजरात के हाकीम, रतनसिंह भंडारी का मराठों से युद्ध, उसके द्वारा गुजरात में जुलूम करने इत्यादि घटनायें वर्णित है ।

१५. बखतसिंह द्वारा कुछ अधिकारियों को कैद कर दण्ड म्बरूप रूपये वसूल करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“राजधिराज वपतसिंघजी पंचोळी लालजी नुं कैद कर २००००० दोग लाय लीया, दीवाणजी सिंघवी साहमल नै दीवी नै साहमल रामसरण हुय गयो तरै समत १७६५ रा सांवण सुद १५ सिंघ अमरचंद सामलोत नै दीवाणी दीवी.....पछै चैत सुद ७ भंडारी गिरधरदास रतनसिंघ मनरूप दौलतराम वगैरे बोबसतां सुं कैद कीया.....नै भंडारी अमरसिंघ दीली धो सु उठै कैद करण नै जादमी सोळै आया.....काम सोंपीयो तिणरी विगत—

१. दीवाणजी पंचोळी लालजी रै नांव ।

जोधपुर सोवो पंचोली रामकीसन..... ।

वगसी रामकीसन रै नांवै धी सो बालकीसन नै दीवी ।

जोधपुर कचेड़ी में हाकम पंचोळी पेमकरण लालजी री बेटो ।

मेड़त री हाकमी लालजी रै बेटा रै ।”

१६. महाराजा के बीकानेर पर चढ़ाई करने, अमर नरेश सवाई जयसिंह के जोधपुर पर चढ़ाई करने, फिर मेल होने तथा बखतसिंह और जयसिंह के बीच गगराने में युद्ध होने, राजाधिराज को और से मारे गये योद्धाओं की सूची इत्यादि अंकित है ।

१७. "भंडारी राम रूपनाथ रायचंदोत रूपीया आठ लाख दरवार में भरोया नै समत १७६८ में रामसरण हुवी ..... । संमत १७६६ रा भादवा सुद ४ पंचोत्री लालजी रामकीसन दीवाण नै बालकीसन बगसी नै वोवसतां समेत कैद कौयौ" । समत १७६६ रा काती बद १ औघा दीया तिणां रे विगत—

दीवाणगी भंडारी राय अमरसिंघ पीवसीघोत नुं, कुरब वैठण रो सदामंद मुजब नै सीरपाव ईण मुजब—

पालपी, हाथी, कड़ा, मोती, मोतियों की कंठी, सीरपेच । सोबो भंडारी मनरूप ..... नै सीरपाव वैठण रो कुरब.....पालपी, कड़ा, मोती, सीरपेच ।

भंडारी दौलतराम थानसिंघ पीवसीघोत नै जोघपुर रे हाकमी बड़ा नै रूपीया १००० ।

१८. बीकानेर राजा जोरावरसिंह के निःसंतान मर जाने पर उनके चाचा आनंदसिंह को उत्तराधिकारी बनाने हेतु जोघपुर की ओर से की गई चढ़ाई आदि का वृत्तांत दिया है ।

१९, महाराजा द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य आदि का विवरण दिया गया है ।

२०. महाराजा की मृत्यु, अन्त में उनकी रानियों व कुंवरो की नामावली अंकित है ।

आगे महाराजा रामसिंह का वृत्तांत है ।

२१. रामसिंह के राज्याभिषेक होने, नियुक्तियों, उमरावों को हाथी इत्यादि किये उसकी सूची अंकित है ।

२२. रामसिंह का उमरावों से झगड़ा इत्यादि होने, बखतसिंह व रामसिंह के बीच युद्ध में दोनों घोर काम आये योद्धाओं के नाम । बखतसिंह का जोघपुर पर अधिकार करने का उल्लेख है ।

२३. लवरे ठाकुर मुजानसिंह ने गढ़ बखतसिंह को सौंप दिया उनमें सम्बन्धित दूहा उद्धृत है—

"घारो नाव मुजाण थो, अब कं हुवी अजाण,

आथ्रम चौथे आवीयो, ओ चूकौ अवसाण ॥१॥"

२४. बखतसिंह और रामसिंह के बीच खटपट आदि प्रायः उन्ही घटनाओं का वृत्तांत है जो अंशंक २३१, रा० शो० सं० में है । ख्यात के अन्त में महाराजा के पीछे सनी हुई रानियों आदि से नाम दिये हैं ।

अन्तिम भाग—

“व्यास उदैचंद वेटा मुषो कैड में षो तिण नुं सतीयां छुडाया । संपुरण माराज अभयसिंघजी रामसिंघजी बसतगिंघजी ताई १८०६ ।”

प्रस्तुत ख्यात की प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है । लिपि सुवाच्य नहीं है । अर्भसिंह व बलतसिंह के समय की इसमें विशेष जानकारी है ।

### ३६. महाराजा अभयसिंह की ख्यात

१. महाराजा अभयसिंह की ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६५६, ४. २७.७ × २२.४ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. १५६, ६. ११-१३, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. यह जोधपुर के शासक महाराजा अर्भसिंह की ख्यात का हिन्दी अनुवाद है । जिसमें उनके जीवन सम्बन्धी घटनाओं का सविस्तार वृत्तांत दिया है ।

प्रारम्भ—

“महाराजा श्री अभयसिंहजी संवत १७५६ के अग्रहन यदि १४ शनिवार के दिन गांव जालौर में प्रकट हुए संवत १७८१ के आवण यदि शुक्रवार के दिन दहली में महाराज का राजतिलक हुआ…… जोधपुर में महाराजा श्री अजीतसिंहजी देवलोक हुए तब बलतसिंहजी ने आण दुहाई महाराजा अर्भसिंहजी की फिराई …… प्रादि ।”

प्रारम्भ में महाराजा के राजतिलक, बादशाह की ओर से मिले परगनों की विगत तथा जयपुर नरेश जयसिंह की पुत्री से विवाह करने जाने पर रूठे सरदारों की सूची खापानुसार दी है । फिर राजकीय नियुक्तियों का विवरण दिया है । महाराजा के सैनिक अभियानों, भवन-निर्माण कार्य तथा अन्त में रानियों व संतति आ उल्लेख है ।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है । अर्भयसिंह के काल को समझने व तत्कालीन घटनाओं की जानकारी हेतु उपयोगी है ।

### ३७. महाराज विजयसिंह की ख्यात

१. महाराज विजयसिंह की ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३६, ४. ३३ × २५.६ सेमी०, ५. १००, ६. २२-२३, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में जोधपुर के शासक महाराजा विजयसिंह के राज्यकाल की घटनाओं का

विवरण दिया गया है। इसका प्रारम्भ उक्त महाराजा के जन्म, राज्यारोहण आदि संवतों से किया गया है।

प्रारम्भ—

“महाराजा विजयसिंघजी की जनम समत १७८५ रा मीगसर बंद ११ वसपतवार रा, समत १८०६ रा भादवा मारोठ में टीके विराजीया संवत १८०६ रा मा बंद १२ संगलवार जोधपुर पघार सीणगार चौकी राजतोलक विराजीया समत १८४६ रा असाढ़ बंद ७ देवलोक हुवा। मुसायब पीची गोरघन नै दीवी दीवान वगसी श्री महाराजधिराज रापीया सु सरू रापीया।

समत १८०६ श्री महाराज मारोठ सु कूच कर मेड़तै पघारीया, मेहला दापल हुवा……।”

१. वर्णित है कि राजा किशोरसिंह (महाराजा अजीतसिंह का पुत्र) ने जब समय भिणाय पर कब्जा कर लिया तथा केसरीसिंह उदावत बखतसिंहोत द्वारा वह मारा गया।

२. रामसिंह द्वारा जोधपुर हस्तगत करने हेतु आपाजी सित्रिया की मदद से कृष्णगढ़ अलियावास को लूटने, बीकानेर के राजा गर्जसिंह द्वारा विजयसिंह की मदद करने, फिर रामसिंह और विजयसिंह के बीच युद्ध होने (वि० सं० १८११ आश्विन वदि १३), युद्ध में विजयसिंह के हारने, विजयसिंह के सरदार काम आपे उनकी सूची दी है।

३. रामसिंह द्वारा नागौर, जालोर, फलीदी पर आक्रमण करने (जोधपुर, नागौर, जालोर नै डीढवाणो तो महाराज री अमल रयी बाकी जायगा रामसिंघजी नै आपरी अमल हुवौ……) जयअपा को महाराजा द्वारा छल से मरवाने इत्यादि घटनायें वर्णित है।

४. महाराजा के दक्षिणियों से संधि होने का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—  
(वि० सं० १८१२)

“पछै अठै नागौर सि० फतेचंद देवीसिंघ मांसिधोत दीपणियां सुं वात करी के आदो मुलक देणो कीयो नै इकावन लाप रूपीया पेसकसी रा ठेहराय पांच हजार गांव मारवाड़ रा सुं अड़ाई हजार गाव रामसिंघजी रै जिण मे मेड़तौ, प्रवससर, मारोठ, सोजत, जाळोर, भीणाय, केकडी, देवलीया रा सोले गाव……महाराजा रामसिंघजी रै नै जोधपुर, नागौर, डीढवाणो, फलीधी, जैतारण अे प्रगना मा० बीजसिंघजी रै, अजमेर दीपणीया नै दीयो इण तरै वात ठेहरी रू ६००००० रोवड़

दीया नै बतीस हाथी भरणां में दीया नै अक रावटी लाप में दीवी ..... दिपणियां नै कूच करायी ।”

५. मंडारी दौलतराम, सुरतराम, पंचोली लालजी इत्यादि व्यक्तियों से पैसे वसूल कर उनको मुक्त करना, धाय भाई जगा के आचरण से सरदारों का रूष्ट होना, फिर महाराजा के अज्ञानुसार कुछ सरदारों को कैद करवाने फिर उनको मरवाने इत्यादि का वृत्तांत है ।

६. महाराजा द्वारा मेड़ता पर अधिकार करने पर राम द्वारा मेड़ता पुनः हस्तगत करने के हेतु किये गये प्रयत्नों का वृत्तांत है ।

७. जोशी बलू को विरोधी सरदारों से पेशकसी वसूल करने भेजना (वि० सं० १८१८), फिर बलू के सैन्य अजमेर पर अधिकार करने हेतु जाने तथा मराठों से हुए युद्धों का वृत्तांत है ।

८. बलू द्वारा धाय भाई की शिकायत महाराजा को करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“जोसी बलजी धाय भाई री चुगली पाई के मुलक में पइसो पैदास करां जीतरौ धायभाई उड़ावै है नै पवास राषी तीण रै बीस हजार रौ गेणी है, कुसी बटे छै, घोड़ा छव बीसी राषै छै सु अक अक घोड़ा तीन तीन रूपीया रोजानी री ..... महाराज ..... धायभाईजी नुं जोधपुर बुलायी ..... धायभाई खना सुं रसालौ उरौ लियो ..... ।”

इसके आगे महाराजा का बूंदी विवाह करने हेतु जाने का उल्लेख है ।

९. वि० सं० १८२२ में उज्जैन की तरफ से महादाजी सिधिया द्वारा पुनः मारवाड़ पर आक्रमण करने इत्यादि घटनायें वर्णित है ।

१०. वर्णित है कि भरतपुर के जाट राजा जसवन्तसिंह ने जब जयपुर पर चढ़ाई की उस समय महाराजा विजयसिंह ने जाट राजा के सहायतार्थ सेना भेजी ।

११. रामसिंह की मृत्यु के पश्चात् साभर पर महाराजा का अधिकार, वि० सं० १८३४ में आंबाजी के खिराज लेने हेतु दुंडाड़ में आने, महाराजा द्वारा बड़ी सेना भेजने पर उसके मेवाड़ में जाने का उल्लेख है ।

१२. जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह को मा० विजयसिंह द्वारा दक्षिणियों के विरुद्ध मदद देने (१८४४), महाराजा का अजमेर पर अधिकार होने का उल्लेख ।

१३. वि० सं० १८४७ में महादाजी सिधिया ने फिर चढ़ाई की, इस बार महाराजा के सहायतार्थ बीकानेर राजा गजसिंह तथा कृष्णगढ़ के प्रतापसिंह बुलाये गये, मराठों की सेना अजमेर चल कर आलणियावास के पास पहुँची, उसके

साथ फ्रेंच जनरल डी वोईने था। इसमें भी विजयसिंह को हार कर मराठों से संधि करनी पड़ी।

१४. कुछ सरदारों द्वारा उपद्रव करने, भीमसिंह द्वारा गढ़ पर अधिकार करने, फिर सरदारों द्वारा समझा बुझा कर इसे हटाने इत्यादि घटनाओं का विवरण दिया है।

१५. अन्त में महाराजा के राजलोक की विगत में उसके कुंवरो का विवरण कुछ विस्तार से दिया है।

अन्तिम भाग—

“महाराज श्री विजैसिंहजी बूंदी परणीज नै पाछा पधारतां पवासी री बेटी पदमावती बाईं नुं बूंदी रा रावराजा उमेदसिंहजी रा पवास रा वाभा नुं परणार्थ सु जोधपुर परणीजण नै आया सु परणीज पाछा जावता मेड़ते आया।”

यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। कागज मटमैले रंग के हैं। ऊपर गत्ता चढ़ा हुआ है। लिखावट अशुद्ध है।

इसमें महाराजा विजयसिंह के राजकाल का विस्तृत वर्णन दिया है। ये घटनायें जोधपुर की ख्यात से भी मिलती जुलती हैं।

### ३८. महाराजा भीमसिंहजी री ख्यात

१. महाराजा भीमसिंहजी री ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०.  
३. १५६४५, ४. ३२.५ × २६ सेमी०, ५. १२, ६. २८-३०, ७. २०वीं  
शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत  
ख्यात में जोधपुर के शासक महाराजा भीमसिंह के राज्यकाल की घटनायें हैं।  
प्रारम्भ में महाराजा के जन्म, राज्याभिषेक तथा मृत्यु के संबन्ध हैं फिर ख्यात का  
प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

प्रारम्भ—

“महाराज श्री भीमसिंहजी पोकरण सुं जैसलमेर परणीजण नुं पधारीया सो उठै महाराज श्री विजैसिंहजी देवलोक हुवा री पबर पोंहती तरै ताकीद सूं बूब कर पोकरण पधारीया नै पोकरण सूं सांतरा उंट लेन महाराज नै सवाईसिंहजी चढ़िया सो सीमोरीयां री बारी होय असाड सुद ६ रात रा सापण पोल (जोधपुर) पधारीया .....।”

घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. वर्णित है कि महाराजा विजयसिंह के पुत्र जालमसिंह और प्रपौत्र मानसिंह राज्य मिलने की श्रान्ता न देख कर मुल्क में लूटमार करने लगे, फिर मानसिंह पुनः जालोर तथा जालमसिंह गांव सिरियारी चले गये ।

२. महाराजा द्वारा अपने पक्ष के लोगों को जागीर में गाव इत्यादि देने का उल्लेख है ।

३. नियुक्तियों के बारे में लिखा है--

“समत १८५२ मे दीवाणगी भं० मानीदास सुं तापीर करम० सोभाचंदोत नुं दीधी, नै मुसायवी सोभाचंदजी रै नावै हुई ... सीवचंद भूठ घणी बोल्तौ तिण सुं काम भगाड़ी चलियो नौ तरै समत १८५३ में सि० जोधराज रै नावै दिवाणगी कराई नै वेटा नोलराज रै नावे हुई नै काम आप करतौ सो सीरदार मुसदी पवास पासवान वगैरे रो पातर नही रापतौ, वडौ जवरदस्त घणी रा हुकम बीना कीणी नुं धारतौ नही जिणसुं जोधराजजी उपर सारा बैराजी ... ।”

४. महाराजा द्वारा अपने भाइयों को मरवाने तथा वि० सं० १८५४ में अखेरज की अध्यक्षता में जालोर (मानसिंह) का घेराव डालने, नगर पर कब्जा नहीं होने पर अखेरज को कैद कर उससे ६०००० रु० वसूल करने का उल्लेख है । आगे वर्णित है कि अखेरज बीमार रहने लगा महाराजा ने १८५७ में अखेसागर तालाब बनवाया और इसी वर्ष जब अखेरज का देहान्त हुआ तब उसका शव इसी तालाब पर दग्ध किया गया ।

५. वि० सं० १८५७ में भीमसिंह की शादी सवाई प्रतापसिंह (आमेर नरेश) तथा इसकी (प्रतापसिंह) की शादी विजयसिंह की पौत्री के साथ पुष्कर में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न होने का उल्लेख है । भीमसिंह के साथ चले सरदारों को विस्तृत सूची खांपानुसार दी है । इस समय मौका पाकर मानसिंह द्वारा पाली में लूट ससोट करने का भी विवरण दिया है ।

६. सानेई ग्राम के सामबसिंह भाटी द्वारा अन्य उपद्रवी सरदारों की भ्रंशानुसार जोधराज को छल से मारने का उल्लेख है, जिस पर महाराजा द्वारा आडवा, आसोप, चंडावल, रास, रोयट तथा नौवाज के पट्टे जब्त किये जाने का उल्लेख है ।

७. धि० सं० १८६० में इन्द्रराज, वनराज, गुलराज तथा गंगाराम द्वारा चारों तरफ से जालोर पर आक्रमण करने तथा नगर पर उनका अधिकार होने का उल्लेख है ।

८. वि० सं० १८६० कार्तिक सुदि ७ को महाराजा का अदीठ की बीमारी में देवर्गात प्राप्त होने, उसके पीछे रानियो इत्यादि सती हुई उनके नाम दिये हैं ।



अन्तिम भाग—

“अजीतसिंह रा राणीयों नै पीपालाया पाप ज्यां री सराप हवौ परंत रईत मुलक में आवाद रही मोकली सुप पायी ईतीसी भीर्वसिध री ख्यात संपूरण।”

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ की गई ई। रजिस्टर पर गत्ता चढ़ा हुआ है, कागज सफेद रंग के तथा कुछ मोटे हैं। इसमें अंकित संवत घटनायें आदि जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती है। भीमसिंह विजयसिंह के राज्य इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

### ३६. महाराजा तखतसिंह री ख्यात<sup>१</sup>

१. महाराजा तखतसिंहजी री ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६२६, ४. ३३.५ × २४.५ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. २५५, ६. २०-२२, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. देवनागरी, राजस्थानी, १०. प्रस्तुत ख्यात में जोधपुर के महाराजा तखतसिंह के राज्यकाल (सं० १६०० से १६२६) की घटनायें वर्णित हैं, ख्यात का प्रारम्भ महाराजा मानसिंह की मृत्यु, उनके पीछे हुई सतियों आदि से हुआ है।

प्रारम्भ—

॥ श्री गणेशाय नम ॥ श्री नाथजी सत्य छै

माराज श्री मानसिधजी वैकुंठ कीयी समत १६०० रा भादवा सुद ११ पाछली रात रा जिण दिन सुं लगाय माराज श्री तखतसिधजी संमत १६२६ रा भादवा मा सुद १५ ताई राज कीयी जठा ताई री प्यात ।

भादवा सुद १२ नै सुरज अंगां नाजर साळगरांम जनांना में जाय अरज करी श्री हजूर साहव वैकुंठ पघारीया जद रांणीजी धी चौथा देवड़ीजी नाव अजकंवर देवड़ा अपेसिधजी री बेटी गाव निमज रा जिकां पिडा नै उणां री डावडी राधा नै पड़दायतीयां च्यार..... ।”

ख्यात में अंकित महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. महाराजा मानसिंह के दाह संस्कार के पश्चात् शोक प्रकट करने, राज-घराने की ओर से अंग्रेजी सरकार महाराजा तखतसिंह (अहमदनगर) के गोद लेने का आग्रह, फिर आश्विन सुदि १ को अहमदनगर जाने वाले सरदारों, मुत्सदियों, खवास, पासवानों आदि की सूची दी है। रानियां, उमरावों और लडलो द्वारा मा० तखतसिंह

१. डॉ० नारायणसिंह भाटी द्वारा सम्पादित।

को दिये गये रुक्के, पत्रों इत्यादि की प्रतिलिपि भ्रंजित है तथा इसके पश्चात् महाराजा के जोधपुर आने उत्सव इत्यादि मनाने का वृत्तांत है ।

२. विद्रोह करने वाले व्यक्तियों को पकड़ने (कार्तिक सुदि १४), महाराजा की रानियों के लेने अहमदनगर राजकीय व्यक्तियों के भेजने (मार्गशीर्ष वदि ३) कुरव वगैरा इनायत किये उसकी विगत—

“भीगसर वद ५ राव राजा रिधमलजी नै बैठण री कुरव हुवी नै छोटा बेटा राजमल नै पालपी कड़ा मोती मोतीयों री कंठी सीरपेच नै राव पदवी ईनायत हुई ... ।”

३. राज्यभियेक होने का वृत्तांत इस प्रकार है—

“भीगसर सुद १० सुकर श्री हजूर साहब राजतिलक विराजीया दीन घड़ी १४ चढ़तां री मोरथ थो कुंभ लगन में अर इण रीत सुं हुवी जिण री विगत पेले दिन सुद ६ री तो श्री हजूर साहब रै बूत हुवी नै सभा मंडप में काठ री बंगलौ हुवी नै च्यारों कानी तौरण लागे मंडप हुव नै.....तिनै आदळे विधि पुरवक सारो होम हुवी नै सिणगार चीकी उपर विद्यामत होय .....पछै व्यास हरपचंदजी तिलक कीपी नै मोतीयों रा आषा चेपीया, पोसाव केसरिया पाग वगैरे पधरावण नै जवार सिरपेच मोतीयां री फुलमाळा वगैरे सारो जवार तथा मेणी पधराव नै हो .....पछै बगड़ी ठाकुरां तरवार वधाई .....पछै पेली तो उमरावां री.....पछै दिवाण मुतसदी पवास पासवान जनांना ..... सारां री निजर निधरावळ हुई नै तोपां री सिलकां १२० हुई..... । उणाहीज दिन दिवाण मु० लिपमीवंदजी रा बेटा सुकनचंदजी नै किलादार (नियुक्त)..... ।”

४. आगे वर्णित है कि महाराजा अजेन्ट साहब से मिल कर राज्यकार्य के लिये विभिन्न सरदारों को गांव इत्यादि के पट्टे देने, राज्य-कार्य के लिये नियुक्तियों, महाराजा के अजेन्ट साहब से परामर्श करने, होली का उत्सव मनाने, महाराजा का सूरसागर जाने, कीलेदारी के पद पर देवकरण को नियुक्त करने, फिर उसे हटा कर अहमदनगर के पंवार अनाईसिंह को नियुक्त करने इत्यादि घटनाओं का विवरण तिथियों सहित है ।

५. महाराजा की ओर से भावा राजसिंह, सोहनसिंह और सजनसिंह को गांव पट्टे में मिले उसका विवरण, भावा भभुर्तसिंह, लालसिंह, शिवनाथसिंह, सरूपसिंह का अजमेर जाना, महाराजा के कंटालिया ठाकुर संभुसिंह की मातमपोसी कराने जाना (आश्विन सुदि ६), फिर महाराजा और अजेन्ट के रावण के भेले में जाने (आश्विन सुदि ६) इत्यादि घटनाएँ वर्णित है ।

६. पौष वदि १४ को बड़े साहब और अजेन्ट के अजमेर से जोधपुर आने, उसका स्वागत करने, माजी साहिबा से उनकी वार्ता, चारों ही भावों को पट्टे इनायत हुए उसकी सूची जनानों को पट्टे प्राप्त हुए उसकी विगत (वैसाप वद १४ लगाय ५ ताई) घटनाओं का वृत्तांत दिया गया है।

७. माघ सुदि १४ के एजेन्ट के फिर जोधपुर आने का विवरण इस प्रकार दिया है—

“मा सुद १४ अजंट गीरांट साहब किला पर आय अरज करी कै लाहोर बाळां सुं हमारे लड़ाई बड़ी हुई जबर हुई जिसमे हमारी सिरकार की फतै हुई” ।”

८. महाराजा के विवाह का वृत्तांत—

“फागण वद २ श्री हज़ूर साहबा री व्याव गांव भालामंड राणावत गभीरसिंघजी रै काका री बेटी बेन सुं हुवी श्री हज़ूर हाथी रै होद विराजीया नै पवासी मे पोकरण ठाकुर बैठा ..... । वद ३ ने अजंट गीरांट साहब नै भालामंड बुलाया ..... ।”

कुछ ज्येष्ठ महिने की घटनायें इस प्रकार लिपिबद्ध हैं—

(अ) जेठ सुद ३ कुचामण रा ठाकुरां नै मौसर हुवी बतलावण हुई ..... ।

(ब) सुद ८ श्रीजी साहब री वरसगांठ री समोरयो हुवी ..... ।

(स) सुद १० कुचामण ठाकुरां नै मौसर हुवी नै बतलावण हुई ..... ।

(द) सुद १२ मेडतीया दरवाजा बारे सेपावतजी रा तालाब ने राईकावण विचै पलटण रा लोक रै रेण सारू छावणी करावणी जिणरी कमठी सरू हुवी ..... ।

९. बडा साहब के जोधपुर आने, उमरावों तथा माजियों की नाराजी की जाच इत्यादि कराने का हाल इस प्रकार दिया है—

“पौस सुद १२ बडा साहब री.....गढ उपर हुई, पांणो साहब गढ उपर हीज पायो रंग राग नाच कूद हुवी पछै श्री हज़ूर सु ईकंत हुवा । तरै साहब कयो कै श्री माजीसा अर उमराव नाराज है सो आप नाराज मत रापो इस बात मे आपके हक में अछा नही है जिण पर श्री हज़ूर फुरमायो—माजी साहबा तो नाराज है नहीं, दोय च्यार बांमण है सो बेकाते हैं अर उमरावा कीसी का हम कुछ लिया है नही, जिण उपर साहब पाछौ कयो—माजी साहब कुं बेकाणे बाळां कुं कंद करी ..... ।”

आगे आसोप, रास, बगड़ी, वासणी के ठाकुरों को गांव इत्यादि मिले उसका व्योरा दिया गया है ।

१०. सीकर रावराजा लक्ष्मणसिंह के (पड़दायतों का) पुत्र मुकनसिंह को पकड़वाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“(१६०४ कार्तिक) वद ३ सीकर रावराजा लिछमणसिंह रा बेटा पड़दायत रा मुकनसिंह हुकर्मसिंह सो सीकर सुं डूंगरसिंह जवारसिंह सांमल था जिणां नै पकड़ण रै वासते जैपुर रा अजंट री पिण लिपावट अठा रा अजेन्ट रै नावै आई …… जिण सुं पंवार अनाड़सिंह फौज लीया डीडवाणा कानी थो नै …… हेरा लगाय जैसलमेर रा गांव मुजे में था जठै अनाड़सिंह जाय नै भादवा में ही पकड़ लीया था सो आज अठै जाबता सुं मेलीया तिणा नै गढ़ उपर बाभा भमुतसिंहजी रै डेरा हवेली में रापीया …… ।”

११. मेसन द्वारा सेखावतों (डूंगजी, जवाहरजी) को पकड़ने के लिए जाने, एजेन्ट गीरांट के स्थानान्तर होने का वृत्तान्त—

“(१६०४ मार्गशीर्ष) सुद १३ तथा १४ सिकतर मेसन साहब सेपावता नै पकड़ण नै मुदे फौज में गयी थो सो पाछी आय सु आज अजंट साहब साथे गढ़ उपर आयी …… पीस वद ७ अजंट गीरांट साहब री बदली री खबर आई, जिण सुं इणां री आज गढ़ उपर मीजमांनी हुई सो गीरांट साहब नै मेसन साहब हाट कासल साहब फौज सेपावतां नै पकड़ण मुदे फौज में गया था सो पकड़ पाछा आया सो आज गढ़ उपर अजंट साथे आय पाव कीयी विछायत हुई …… फतेमैल में साहब पाणी पायी …… पछै पातरिया भगतणियां री फतेमैल रा चौक मे गावणी हवौ … ।”

१२. अदालत में हुई नियुक्तियों इत्यादि का विवरण—

“(१६०४) फागण वद ४ की चीत्र सेवा री अदालत छंगारणी सिवलाल नै जोसी सीवनारायण रै थो सो अरेवज भं० हरनाथ नै हेमचंद रै हुई नै दिवाणी अदालत में मु० प्रतापमल था तिणरी अरेवज छंगारणी सीवलाल नै मेलीयी …… । अजंट साहब री उकीलायत भं० सिवचंद लिपमीचंदोत रै हुई …… ।”

१३. वि० सं० १६०४ ज्येष्ठ वद ७ को भूकंप में हुई क्षति, दान-मुष्य का विवरण—

“जेठ वद ७ आबूजी उपर धरती धूजी आधी रात तिण सुं भीत जाय गांव पाड़ गई नै भीनमाल में जाय गांवां पड़ी नै आदमी दबिया नै धरती कदेई रातरा कदेई दिन रा थोड़ी घणी दोन ३५ ताई आबूजी उपर धूजी जेठ वद ८ रात आधी में घड़ी दोय घटतां धरती जोधपुर में धूजी नै पछै तीन चार बार धूजी सु श्री हजूर रु ५०० संकल्प किया नै आयसजी श्री लिपमीनाथजी उए हीज रात रा रु ५००० पुन कीया …… ।”



१४. हाकिम नियुक्त किये उम्मादा उल्लेख—

“(१६०५) मिंगसर वद ११ परवतसर री हाकमी जोसो सांवतराम नै इनायत हुई नै मेइता रा चीनरा री पोतदारी मा० जोगीदास रै हुई……।”

१५. अदालतों की दरोगाई का ब्योरा—

(अ) फौजदारी पटानवेस पंचोली धनरूप नै ।

(ब) दिवाणी अदालत सा रावराजमल नै पटानवेस पंचोली नवलमल नै ।

(स) उकील री अदालत साला दीलतसिप नै ।

(द) चिदसेवा री मा० गिरपरचंद नै ब्यास जेठमल नै ।

१६. वि० सं० १६०६ श्रावण के महिने में विभिन्न परगनों के हाकिम आदि नियुक्त किये उसका ब्योरा इस प्रकार दिया है—

“सांवण वद गोड़वाड़ री हाकमी आसोपा हिरदेराम उतमराम रा भाई रै हुई । सांवण वद ५ पटोयाल री उकील बेटी री ब्याव री पलीतो लेने भायै तिण नै सीप हुई नै सीरोपाव हुवो । वद ७ पास हवाला रा गांवा रा तपतां री वदली हुई । प्रगने नागौर रा गांव जोसी प्रभुलाल तालके, जोधपुर रा मंडारी सिरीचंद तालके, मेइती परवतसर दीलतपुरी मा० प्रतापमल तालके, फलोधी पो० भीनमाल पटानवेस तानै केईक फुटकर गांव……।”

१७. महाराजा के कई बार ठाकुरजी के दर्शन हेतु चौपासनी मन्दिर जाने का उल्लेख है, यथा—

“(वि०सं० १६०६) भाद्रपद वद ८ श्री हजुर साहब कायलाणा सुं चौपासनी दरसन करण नै छड़ी असवारी पघारी सो आगै श्री ठाकुरजी री जनम उछव हुवा पछै श्री गुंसाइजी माराज जसोदाजी वण नै ठाकुरजी रा मुड़ा आगै निरत करता था जिण रा पगां में रूपारा सांकळ था सो तो श्री हजुर साहब हाथा सुं काठ लीया नै सोना री साटां आपरा हाथ सुं पैराय दीवी……।”

१८. बुधनाथ के मृत्युपरान्त स्त्री के सती होने का उल्लेख—

“(वि०सं० १६०६) भाद्रपद सुद ८ आयसजी श्री सुरतानाथजी रा बेटा बालानाथजी सुं छोटा बुधनाथजी काळ कीयौ तिणां री बहू सत कीयौ निर्जमिदर रा नौरा में समाद दिवी, कोटवाळां वोत सी सती नी हुण री हुजत करी पीण मानी नही नै समाध दे दीवी……।”

१९. महाराजा का जालोर प्रस्थान करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“(वि०सं० १६०६) मु० मुकनचंद नै दिवाणगी री दुपटो हुवो । मीगसर वदी श्री हजुर जाळोर पघरण मुदे डेरा दापल हुवा वद ४ डेरा गांव मोगड़े हुवा ।

वद ५ डेरा गांव रोयठ हुआ । ठाकुर मुरताणसिधजी अचलसिपोत कोस २ ताई  
 मामा आया पछे श्री हजूर कोट में पधारीया सो ठाकुर रु० २००० नै घोड़ा २  
 निजर कीया नै श्री हजुर ठाकरों नै सिरेपाव इनायत कीयी.....। वद १० श्री  
 हजूर पासे विराज पाली रो कचेही में पधारीया....., माहाजन सारा राजी हुआ  
 निजर रो विगत—मोरां १२५ रूपिया ४००० इण मुजब हुई । मिगसर वद १२  
 पाली सुं कूच हुवी सो गांव चाणोद.....डेरा हुआ ठाकुर कोस २ सांभा आया सारी  
 फौज रो सरभरा घाछी तरं हुई.....पछे चांदराया डेरा हुआ वद ७ डेरा गांव  
 आहोर हुआ और अजंठ सर सपसपीर साहब भेरणपुर रो घावणी था सो श्री हजूर  
 साहब रा बुलावा सुं आहोर आया .....।”

आमे महाराजा के साथ चले उमरावों इत्यादि की सूची अंकित है । फिर  
 घोड़ों, हाथियों की संख्या भी दी है—

“और लोग घोड़ा १०००, ऊंट १०००, हाथी ७, रथ १२, पीजस ७,  
 पालपीयां ४, तांगा १००, उंट जापोड़ा २५, जुमले भीड़ भाड़ आदमी पांच हजार  
 तथा छव हजार थी ।”

२०. महाराजा के जालोर, भावू, विलाडा, मेड़ता और नागौर भ्रमण  
 करने का वृत्तांत है । (हाथी व जीमणी मिसल के) सरदारों की नामावली इत्यादि  
 अंकित है ।

२१. तखतसिंह के पुत्री की शादी जयपुर नरेस सवाई रामसिंह के साथ  
 करने का दहेज में दिये गये आभूषण इत्यादि का विवरण दिया है । यथा—

“(वि० सं० १६०६ अफाठ) वद ३ श्री बाईजीसा नै दायजी देण सारू  
 दीलतपांना रो चौक सिएणगारीजियाँ सो उमराव मुसदी वगेरे सारा नै सैर रा ठावा  
 ठावा विरांमण माजना वगेरं नै सारां नै देण रो दवायती हुई सो च्यार पोर दिन  
 ताई सारा देपीयो तिणरी .....विगत—

जवार रो रकमां तीन तरं रो—हीरां रो, पनां रो, मांणक रो,  
   १            १            १

हीरां रो—

१ वीर, १ मांग टीको, १ आठ, १ बीदी, १ टोटी जुमर जिकां सुघा,  
 १ हास, १ तीमणीयो, १ कंठसरी, १ हार सतळ, ६ भुटंक जिलां सुघा, १ कड़ो  
 मोटो, १ वाजु वंद, १ मादळीया वां सुघा, १ कातरीया वां सुघा, १ बंगड़ीयां  
 जुघा सुदी, १ चोटी वंद, १ हय चांकला, १ बीटीयां, १ कंदोरो, १ मुंदडो,  
 १ दावणां, १ कड़ला, १ तोडा १ पुणचीयां, १ पगवान, १ अणवट, १ वीछुड़ीयां,  
 १ चौटुड़ीडा, १ पुणचीयां, १ वदी, १ नय, १ फांटो.....।

उपर मुगाधीन गना री नै इमी मुगाधीन मागज री मारीया री रचना की  
ग्वारी गजरा, ह्य पून, गणपान

१ १ १

उपर मुगाधीन ही गाना रो गनो गारी ।”

प्रागे (दोज) गोने पारी के बानों, कपडों, डावटियों (दागिने) इत्यादि  
की मूर्खिया थी है ।

२२. दीवान मुकनचंद को बंदी बनाने का उल्लेस इस प्रकार है—

“वि० सं० १६१० माग मुद ६ दिवान मुकनचंद ने गड़ उपर घटवार  
दियो ने कोटपान ताम दिवाणी री हवेणी घेर गोणी भर भाई बेटो तारा नै परा  
गड़ उपर सायो………ई बाईन परगना में बागद रिभीर गना नै मु० मुकनचंद से  
बायसता हवे त्रिणा नै तो पकट मिजो … … ।”

२३. महाराज कुमार जगवत्सिंह का विवाह जामनगर होने का वृत्तान्त है ।

२४. आगे वर्णित है कि नागौर पर कब किमवा अभिचार रहा ।

२५. उमरावों, ठाकुरों इत्यादि में मिलने का भी विवरण जगह जगह  
घाया है यथा—

“(१६११) पागण वद ६ पोकरण ठाकुर ने मोमर हुबो घडी दोनेक  
बतलायण हुई, पागण वद १० उमरावों ने मोमर हुबो घाउवो, घामोप, निवाज,  
भादराजन, बाकरी, समदड़ी, लयेरी नै फेर ही दम बार आसांमी घणा सु माना  
तिणा नै मुजरी हुबो ।”

२६. महाराजा का विवाह भाटी नयराज की पुत्री से होने का उल्लेस—

“(१६१३) मिगसर वद ७ दुतीक बुध श्री हजुर साहबा री व्याव पाववा  
माजीरी भतीजी भाटी नयराज री बेटो सुं बालसमंद बाग में हुबो नै गड़ उपर  
तोपां री सिलकां १०५ हुई ।”

२७. वि० सं० १६१३ में हाकिम नियुक्त इस प्रकार हुए—

“मीगसर मुद ६ दरौवाप्रारी हाकमी कुसलचंदोत भंडारी गणेशचंद रै हुई  
नै परबतसररी हाकमी मुं सिभूमल रै हुई । मुद १५ पजांना री दरोगाई सं०  
बादरमल रै हुई………। ………जोधपुर री हाकमी सं० भागचंद रै हुई नै बीला-  
दारी अनाइसिध नै हाथ री कुरव नै दुपटो इनायत हुबो………।”

२८. गुलर ठाकुर विसनसिंह का अग्रजों से विरोध करने का उल्लेस—

“(वि० सं० १६१३) चैत सुद ११ गुलर ठाकुर विसनसिध मंगलसिधोत सिरकार री हुकम माने नहीं नै लागत रकम देवे नहीं तरै फौज जावण री हुकम हुवी नै फौज मुसायब सि० कुशलराज ठैरीयो ।”

२६ आउवा वालों के बागी होने का उल्लेख व अंग्रेजों द्वारा चेतावनी दिये जाने का वृत्तांत इस प्रकार है—

“(वि०सं० १६१४) मिगसर वद ७ डीसा री छावणी सुं गोरां आउवा वालां नै सभा देण मुदे आवै है तिणां री सरभरा करावण सारू रूपीया दे दोढीदार वद्धराज नै मेलीयो……ओ इसत्यार अंगरेजी सिरकार री आयो जिण में लीपीयो कै जो बागी लोग है तितकू कोई मदत देवेगा या सरण रपंगा तो उसकू हमारी सरकार आउवा की बरोबर बागी समजेगा ।”

३०. इसी वर्ष आसोप का पट्टा जब्त करने का उल्लेख है—

“भीगसर सुद ७ आसोप री पट्टी जबत होय मं० भागचंद नै हुवी सुद १० आसोप रै ठाकुर दस पांच गांव उपर रूपीया ठैराया नै लूट पौस कीवी और भा० भागचंद फौज लै बडलू आसोप कान्ती चढ़ीयो ।”

३१. हाकिम फिर से नियुक्त हुए उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

“जोधपुर री हाकमी सि० लिपमीचंद रै हुई, अर डीडवारो री कोटवाली नायावत व्यास उतमराम रा बेटा हरनाथ रै नावै मावारी में हुई……जालोर री हाकमी मु० पुनमचंद रा बेटा रै मावारी रा रू० ५२००० में……और मेड़ता री हाकमी प्रो० रतनलाल रै मावारी रू० २४००० में हुई……। गोड़वाड़ री हाकमी मं० भागचंद रै हुई……।”

३२. वि० सं० १६१५ में नियुक्तियों का विवरण इस प्रकार दिया है—

“बडा साहब री उकीलायत पठाण सेवाजपा रै थी सो मुनसी चुनीलाल र हुई……। कोलीया री हाकमी व्यास गंगाराम रै हुई नै दोलतपुरा री हाकमी भंडारी अचलदास रै हुई, चैत वद १० अजंट साहब री उकीलायत पं० जोरावरमल रै हुई……।”

३३. बागियों द्वारा गांव इत्यादि लूटने, महाराजा और अंग्रेजों द्वारा उनको दबाने आदि का वृत्तांत विस्तार से दिया है ।

३४. भूमि नापने वाले सरकारी अधिकारियों की खातरी महाराजा द्वारा करने का उल्लेख है—

“पोस वद ७ (१६१७) विलायत सुं साहब लोक जणा ३ जमी नापण नै आवै, तिणां री सरभरा करावण नै रैया मुदे मुनसी पं० हीरालाल पं० लालो



हरदेवसिंघ पंडित अज्योपाप्रसाद पौडत मीयनारामगु रो धेनोई नै अठा सुं  
पढ़ाया.....।”

३५. महाराजा की ओर से गती प्रया गोकने के लिये प्रयत्न करने का  
उल्लेख—

“ठाकुर गोरधनसिंह रामसरण ह्यो तिण रे सारै ठाकुरांपी सती हुई तिण  
मुदे गांव तो जयत ह्यो नै सती रा दाग देवण में था तिण में ठावा ठावा घाठ दस  
आदमीयां नै पकड़ लाय घांनरी भागसी में घाल दीया.....।”

३६. कुछ नियुक्तियों आदि का ध्योरा इस प्रकार दिया है—

“भापाठ गुद १४ (१६१६) फौजदारी री मदालत मंडारी पचांगदास नै  
सांदुनाय दोनुं रै हुई.....ओर जोधपुर री कोटवाली कपतांन दुरगाप्रसाद नै.....  
नागौर री हाकमी रसालदार मुनालाल रै.....पाली री हाकमी मेता हरजीवन री,  
गोढ़वाठ री हाकमी सि० सीयराज री।”

आगे फिर कुछ पदों के लिये नियुक्तियों इत्यादि का वृत्तांत दिया गया है।

३७. ख्यात के अंत में तिवरी ग्राम का पट्टा जम्त करने इत्यादि का  
वृत्तांत है।

“गांव तिवरी री प्रोहित अनाइसिंघ रामसरण ह्य गयी तरै तिवरी जब  
हुई तरै तिवरी बाळां कयराज भारथदान री मारफत तिवरी री उठांतरी व जनानी  
डोडी री लवाजमौ सरू हु जाय तिण रा रू० २०००० बीस हजार धामीया पिण  
मंजुर हुई नहीं तरै तिवरी बाळा घरणा रै वासतै गांव में समाचार दीया.....  
सु जीव लेने भाग गया नै कितराक हात आया जिणां नै भापसी में घाल दिया।”

ख्यात में वि० सं० १६१६ तक की घटनाओं की प्रतिलिपि की गई है  
महाराजा के अग्रिम १० वर्षों का हाल इसमें नहीं है। ख्यात में महाराजा के  
अनेक बार कायलाने, मूरसागर, बालसमंद और मेलों इत्यादि में जाने का जिक्र  
आया है, इसके अतिरिक्त महाराजा की वर्षगांठ उत्सव प्रत्येक वर्ष मनाने, उमरावों  
इत्यादि सरदारों के मृत्यु उपरान्त महाराजा द्वारा शोक प्रकट करने का उल्लेख  
यथा स्थान दिया है।

इस प्रकार ख्यात में अनेक छोटी छोटी घटनाओं का वर्णन है वास्तव में  
यह एक रोजनामचा है जिसकी अधिकांश घटनाएं सामाजिक मान्यताओं के अग्र्ययन  
हेतु उपयोगी है।

ख्यात की प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है। लिखावट  
घसीट में है।

## ४०. तखतसिंह की ख्यात

१. तखतसिंह की ख्यात, अवतार चरित्र, नरहरिदास आदि, २. पु० प्र० ३. २२, ४. ३३.५ × २२ सेमी०, ५. ३८५, ६. ३०-३२, १७-२०, ७. वि० सं० १८३३, ई० सन् १७७६ आदि, ८. अज्ञात, ९. ब्रज, राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारंभ में अवतार चरित्र (नरहरदास कृत) कृति-लिपिवद्ध ।

प्रारंभ—

छंद साटक

मुंडा डंड प्रचंड मेक डसणां मदगंध गंडस्वलं

..... ॥११॥

पुष्पिका :-

इति श्री अवतार चरित्र वारट नरहरिदासेन विर चित संपूरण संवत १८३३ असाढ वद ५ गुर लिपणी सरू कीमी थो सु फागण सुद ८ रव संपूरण लीपीमौ.....<sup>१</sup>

तखतसिंहजी की ख्यात :

यह किसी मूल ख्यात की प्रतिलिपि है जो प्रपूर्ण है । प्रतिलिपि किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से ग्रंथ निर्माण के बाद की गई है । इसमें महाराजा के दिनचर्या इत्यादि घटनाओं का वृत्तांत है ।

प्रारंभ—

“समत १६२५ रा मिति आसोज सुद ८ रै दिन आवूजी सुं पाछा पघार नै सैर रै वारै रात आपी वजीयां दाफल हुवा, नै नम रै दिन तीसरै पहर पछै असवारी हुई हाथी रै होदे वीराजीया, खवासी में राणावत जोरावरसिंघ गंभीरसंधोत मोरछल कीमी नै बहुत जलुसात सुं.....”

(पत्र-३१)

इसके अतिरिक्त महाराजा तखतसिंह जी के कुछ फुटकर कवित—

(दलद हूवौ दूर कूच हूवौ आणंद मन भायो.....)

आदि भी अंकित है ।

ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । लिपि सुवाच्य है । ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंदा हुआ है । अन्त में कुछ पत्र रिक्त पड़े हैं । पत्र हाथ के बने हुए हैं । लिखावट पत्रों के एक ओर ही है ।

१. लिपिवर्त का नाम भिदा दिया गया है ।

### ४१. मुरारदानजी की ख्यात

१. मुरारदानजी की ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा०प्रा०वि०प्र०, ३. १५६५८  
 ४. ३३.५ X २६ सेमी०, ५. ३३०, ६. १२-१४, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारंभ,  
 ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में मारवाड़ के संस्थापक  
 राव सीहा से महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) तक का हाल दिया गया है। घटनाएँ  
 प्रायः जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती हैं, पर अनेक बातें विशेष हैं। घटनाओं  
 के संवत् राव जोधा के वृत्तान्त से लिये गये हैं।  
 ख्यात की विशेषताएँ—

१. विभिन्न युद्धों में मारे गये योद्धाओं की सूचियों विस्तार से दी गई हैं,  
 जैसे धरमाट के युद्ध में काम आने वाले वीरों की सूची आदि।  
 २. मल्लिनाथ के पुत्र जगमाल के वंशजों (महेचों) का हाल कुछ विस्तार  
 से दिया है।

३. इसमें विविध राठोड़ राजाओं से निकलने वाली शाखाओं, प्रशाखाओं  
 के विशिष्ट व्यक्तियों संबंधी अच्छी जानकारी दी है।

४. इस ख्यात में न केवल विभिन्न युद्धों में मारे जाने वाले योद्धाओं की  
 विस्तृत सूची व उनका परिचय मिलता है अपितु प्रत्येक सरदार के अधीनस्थ योद्धाओं  
 में से वीर गति प्राप्त होने वाले वीरों की संख्या भी अंकित की गई है।

५. सरदारों को कब कौनसी जागीर के गांव आदि प्राप्त हुए उसका व्योम  
 भी मिलता है।

६. मूलतः प्रमुख बड़ी घटनाएँ अन्य ख्यातों से मिलती जुलती हैं पर इसमें  
 स्थान स्थान पर अतिरिक्त सूचनाएँ भी दी गई हैं जो शोधकर्ता के लिये बड़ी  
 उपयोगी हैं।

मारवाड़ के शासक राव सीहा की स्त्री को स्वप्न आने की घटना से ख्यात  
 का प्रारंभ होता है।

प्रारंभ—

“पाली रा डेरा सीहोजी वन में सिकार गया सिहाजी रो वर सुती थी  
 तिण नुं सुहणी लाधी जाएँ म्हारी पेट पाटा छै बेली जायी छै तिण नुं नाहर  
 जावँ छै तरै आप उठ नै वासै हुई छोडावण नुं सो बेटारा पेट फाड़िया छै” आदि।

प्रमुख महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है :—

१. सीहा का वृत्तान्त :—

सीहा की मृत्यु आदि के बारे में लिखा है—

“पछे बनोज गया कितराक बरस राज कीयी राय कुंतसेन रै वंश री राय जंचद दले पांगुळी छै जंचंद घाप बेद कीवी घणी साथ काम आयी……पार्वे पड़िया सो ब्राह्मण उपाड़ नै ले गया गोइंदाणो गढ़ जा'र रह्या कितराक दिन सीहोजी गोइंदाणो राज कर घाम पधारिया । तरै बेटा नुं कह्यो—ये पाली जाय रह्यो, उठा रो राज घांहरै भावसो……।”

#### २. राय आस्थान का वृत्तांत :-

आस्थान द्वारा गोहिलों से युद्ध कर सेइ हस्तगत करने का वृत्तांत है ।

(दोहा—भरणभंग आसहयान, सेइ धरा……)

फिर भीलों मे ईंहर का राज्य छीन कर अपने आता सोनग को देने की घटना का विवरण दिया गया है ।

(दोहा—वाछा छळ रखयाळ, आसयान सोनग भज

कवित्त—कन्नोज उठिया, केण धारंभ महावळ……)

#### ३. राय घूहड़ का वृत्तांत :-

राय घूहड़ के वृत्तांत में कुछ छप्पय कवित गीत आदि देकर वार्ता दी है ।

छप्पय—पर सीमां पेसार, धेर रावतां जूभाणां

गीत—असि अटकियां भइ कियां असंकित……)

इसमें अंकित है कि घूहड़ चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति को कर्नाटक से किस प्रकार लेकर आया जो राठीड़ों की कुल देवी नागएंचियां कहलाई ।

“पछे चक्रेश्वरी पत्थर री होय नागएणे विराजी सो अजै नागएणे हीज है…… जा पछे चक्रेश्वरी नागएणेची बाजी……।”

#### ४. रायपाल का वृत्तांत :-

रायपाल की वार्ता में वर्णित है कि उसने राजपूत मांगा को अपना मिशुक बनाया व उसके पुत्र चंद हुआ, जिसके वंशज रोहड़िया बारहट कहलाये । यथा—

“राय रायपाल जादमवंशी राजपूत मांगा नुं सर्वस्व घन है आपरो मिशुक कियो, मांगा रो बेटो चंद हूवी चंद रै वंश रा रोहड़िया बारहट हुवा । रोइ नै बुघ भाटी नुं चारण कियो इण वास्ते रोहड़िया बारट कहीजै ।”

कवित्त—

“मही रेलण रायपाल, चंद भाटी किय चारण”

#### ५. राय जालणसी का वृत्तांत :-

राय जालणसी की वार्ता में चांदाणी ग्राम के एक अमर वृक्ष के फल को

सोढ़ा राजपूतों द्वारा तोड़ने पर राव द्वारा उनके डेरे सूटने व उनसे दंड वसूल करने की घटना का उल्लेख है।

६. राव छाडा का वृत्तांत :-

राव छाडा की वार्ता में लिखा है कि उसने अपने पिता जालणसी की इच्छानुसार सोढ़ों को दण्ड इत्यादि दिया। जैसलमेर पर चढ़ाई करने के संबंध में गीत दिया है।

(गीत—तलवाड़ा हूंत महादळ ताणो, उतरियो ईसावली आप)

७. राव तीडा का वृत्तांत :-

राव तीडा के सिरोही के शासक से संघर्ष हुआ उसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

“तीये अरसी सीरोही रा घणी कनं डंड लीघी अर जोरावरी सूं परणिया, सोनगरा कना सूं भीनमाल ली, वालीसां कनासूं चाकरी कराई, लीड्रवा रा घणी भाटियां कना सू डंड लियो, सोलकियो कनं पेसकसी लीवी……जठं साय पडती तठं जाणो तीड इण वासे तीडी नांव दिराणी ……तीडोजी सिवाणं चहूवाण सातल सोम रे बदले अलाउद्दीन सूं लड़ काम आया।”

८. राव माला का वृत्तांत :-

राव माला की वार्ता में एक स्थान पर लिखा है—

“राव माला री बहन विमली भाटी घड़सी नुं घारेचे दीधी पहला विमली देवड़ा नुं परणाई थी सो देवड़ा रै पेट री बेटो हुती सो विमली रै साथे गयो तिण नै घड़सी खाडाल रा गांव दिया। खाडाल रै गांव कणै इण विमली रै बेटे राजस्थान बांधियो, तिण सूं इण रै वंश रा कणाबंध देवड़ा कहावै छै।

रावस माले गांम भाद्रेश्वर काछैला नै सांसण दीयो……।”

९. राव वीरम का वृत्तांत :-

राव वीरम के बारे में लिखा है—

“पछै जगमाल रै नै वीरम रै अण वण हुई तरै वीरमजी नै महेबा वारं नाड दिया तरै तीना कोसां उपर भाखर वरिया कनै गाम वीरम नगर वसायो ……पछै वीरमनगर सूं वीरमजी नै जगमाल काढ दीयो……वीरम नगर सूं सांयल माहे आया तरै बळद थाक गया गाड़ा, आषा चाले नही, जद वीरमजी आपरा बड़ा बेटा

१. थोत्ताजी के अनुसार (जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृ० १७८-१७९) यह घटना निराधार है।

देवराज नै उठै हीज रैत कने राखिया अर रैत पण उठै बस गई तिण गाम री नाम सेचावौ दियो सेचावे देवराज नै राख वीरमजी जोयां रै बीबूडे गया.....जोयां वीरम री घणौ आदर कियो, बीबूडे मांडी वीरम मांहे जघात लाख रूपियां री उपजती थी सो जोयां वीरमजी नै दीवी । वीरमजी रै बेटा गोगादे घणौ अनीती तिण जोयां रै कवरों उपर पूजनीक फरास थो बाढ़ डोल घड़ायो..... तरै जोयां वीरम री गाया लीवी ..... वेठ हुई, वीरम मारोणी ।

दोहा—फिर बाड़े फरहास, धिर जोयां री थापना.....।”

### १०. राव चूंडा का वृत्तांत :-

राव चूंडा की वार्ता में उन्हीं घटनाओं का जिक्र है जो जोधपुर की ख्यात में वर्णित है । एक जगह सरदारों को मिलने वाली खुराक का वृत्तांत इस प्रकार दिया है ।

‘चूंडा रै भुजाई री बाकी—रोटी दोढ़ सेर री नै दोढ़ पाव घृत, दोढ़ कूड़्यो मास, दोढ़ सेर रावड़ियो दूध, दोढ पाव मिसरी दोनुं बखत आदमी दीठ पुर्साज.....राव चूंडी चांवडवाय आयी तरै ऊठै तोल नहीं जद घृत माप सूं मापने दियो, चांवडा चामुडा री थान..... ।’

चूंडा की मोहिलाणी रानी द्वारा खुराक में कटोती करने पर सरदारों के रूपट होकर चले जाने का उल्लेख है । वार्ता के बीच बीच में अनेक दोहे भी अंकित है ।

### ११. चूंडा के पुत्रों का हाल :-

इसके आगे चूंडा के पुत्रों व नरबद सतावत संबंधी बातें दी हैं, जो मुहता नैणसी की ख्यात से मिलती जुलती हैं ।

### १२. राव रिड़मल तथा जोधा का वृत्तांत :-

राव रिड़मल व जोधा के जीवन की घटनायें प्रायः वे ही है जो अन्य ख्यातों में मिलती है ।

१३. इसी प्रकार जोधा के पुत्र सातल व सूजा का वृत्तांत दिया है । सूजा के कुंवर बाधा के प्रधान अमरा संबंधी कुछ घटनाएं दी है जो अन्य ख्यातों में नहीं मिलती यथा—‘खड़िया घरमा री बेटौ अमरी, बाधा राव री प्रधान हुती । भाटियां री राज मतोड़ी हुती .....बाधे कंवर गांमा २४ सूं मतोड़ी खड़िया, अमराने पट्टो लिख दियो तरै भाटियां नुं मार मतोड़ा बारै काड दिया । अमरे मतोड़े राज कीयो.....अमरसी रै संतान नहीं घापरी कांवलियां री तीजी पांती अमरे गूजर गौड़ ब्राह्मणों नै दीवी सो गूजर गौड़ ब्राह्मण खावै है .....घादि ।’

१४. राव गांगा का वृत्तांत :-

राव गांगा द्वारा सांसण में दिये गये गांवों का उल्लेख इस प्रकार है—

(क) शिवराज नूँ दिया त्यांरी विगत गांम खारो बेरी तफे हवेली सहर सूँ कोस ७ रेख ३०० री प्रोयत खीवावत खेता नुँ दियो तिए रा हमे भोपत गुणेश भारमलोत है नै जीवणदास दलपतोत है ।

(ख) गांम खारो बेरी पांचलो तफे हवेली सहर सूँ कोस ७ रेख १०० री प्रोयत सेवजी खीदावत नै दियो हमे डूंगरसी जसा री संहसो मेहाजल री वीरमदास अमरा री छै ।

(ग) गांम घेविडो तफे ओयसी प्रोयत जूजणसल बीजावत नु दीयो हमे सातल रा मदा सरी वीठल राघा री है, सहर सूँ कोस ११ रेख रु २०० घेवड़ा री

(घ) गाम घटियालो तफे वैहलवा रेख रु २०० री, सो प्रोयत केसा कूंपावत नूँ दियो, हमे प्रोयत ठाकरसी माधव री जगनाथ किसना री गोपीनाथ जगमाल री है ।

(ङ) गाम सूरानी खुरद तफे कोडणा सहर सुँ कोस १२ डूंगर कर्न रेख १०० प्रोयत सोभा मदन राजावत सोभदा राजगुरु नूँ दियो हमे कानों अखावत लोकम भानावत है ।

(च) गाम खोडेचौ तफे पीपाड़ सहर सूँ कोस १७ नांदण पीपाड़ कर्न रेख १५० री, सो श्रीमाली रामा मुरारी रा नूँ दियो हमे रिणछोड़ चितांमणी रा नै नरसिध चंडीदास री है ।

इसी प्रकार गांव चंगावड़ा (१० कोस रेख १००) घेहड़ चकोर अमरावत को, गांव घडियासणी (सोजत से ६ कोस, रेख ४००) मूला कूंपावत को, गांव चाहडवास (सोजत से ७ कोस रेख ४००) प्रोहित मूला कूंपावत के, गांव मालपदियो (सोजत से ५ कोस रेख ४००) मूला कूंपावत को ही, गांव धरमा वसणी (रेख ४००) श्रीमाली व्यास अनंत दीक्षित को, गांव पलावलो (सोजत से ७ कोस रेख २००) व्यास सादा उद्धतावत को गांव तालकियो (सोजत से ५ कोस रेख ५००) ब्राह्मण डूंगर नाथावत को, गांव मूलियावस (सोजत से ७ कोस रेख २००) वारट तेजसी बीसलोत को, गांव रेपड़ावस खुरद (सोजत से कोस ५ रेख १५०) वारट मंरु नीवावत को, गांव कोसु (फलीधो से कोस ७ रेख ५००) भोपा घांघल भातर सोहड़ तथा कला द्याछावत को देने का उल्लेख है ।

१५. महाराजा गर्जासिंह का वृत्तांत :-

राव गांगा के पश्चात् महाराजा गर्जासिंह का वृत्तांत दिया गया है उनके द्वारा दिये गये सांसण के गांवों की सूची इस प्रकार है :-

गांध

रूपावस—बारट राजसी भखावत

जासीवाड़ो मुरद—बारट राजसी प्रतापमल्लोत

पीयावास

धमी—प्रासीया डाभी रामावत

हिगोलो मुरद—भाड़ा किसना दुरसावत

भाटलाई—साळस सेतसी

पांचोटियो—भाड़ा दुरसा मेहावत नै किसना दुरसावत नै (संवत १६७७)

धधवाड़िया—सीभराज नैतमालोत (संवत १६६४)

सोमड़ावास—गाडण केसोदास (संवत १६८३)

१६. महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा जसवंतसिंह के सैनिक अभियानों का विवरण दिया है। सैनिकों को रोकड़ वेतन इत्यादि दिये जाने का उल्लेख इस प्रकार है :-

“पटा वाळां नुं पटौ दियो, इणां नुं रोकड़ देणी सरु कीवी, रोज रुपिया २ सिरदारों नै भर भाठ भाना रोज घोड़ा सवारों नै अर च्यार भाना पाळा नै देण लागे साथ ५०००० भेळो कियो भेड़त घाणै राखिया देन में ठोड़ ठोड़ घांणा राखिया (बि० सं० १७१५)”

कुंवर जगतसिंह के बारे में लिखा है—

“कुंवर जगतसिंहजी संवत १७२३ माहवद ४ री जन्म जोधपुर तलहटी रा महलों में, पछे वरस ११ मास २ रा होय काळ कियो जठा ताई रुपिया दस हजार खरचिया, हाथी, गाय १२०, तोला २० रोकड़ निछरावळ रुपिया १००० राठोड़ संग्रामसिंह जूंभारसिंहोत दिया……”

१७. भाटी सबलसिंह पृथ्वीराजोत का वृत्तांत :-

एक स्थान पर भाटी पृथ्वीराज के पुत्र सबलसिंह का विवरण इस प्रकार उद्धृत है :-

“भाटी सबलसिंह प्रथीराजोत गोयंदास मानावत रै वंश में है। …… सबलसिंह……भाथी रात रा रावड़िया दूध रा बाटका प्रभात रा विदामां री सीरी, सगळा आदमियां नै खवाड़तो और दोनूं वगत आपरै थाळ जेड़ा सगळा आदमियों…… रै थाळ……आप पैरती जेड़ा सगळा आदमियां नै कपड़ा पहरावती……”

१८. अमरसिंह के पुत्र रामसिंह व पौत्र इंद्रसिंह का वृत्तांत विस्तारपूर्वक दिया है।



१६. मालदेव का वृत्तांत :-

राव मालदेव के वृत्तांत में मूल रूप से उसके द्वारा लड़े गये युद्धों व सांसण में दान दिये गये गांवों आदि का उल्लेख है।

२०. चंद्रसेन का वृत्तांत :-

मालदेव के पदचात् उसका लड़का चंद्रसेन उत्तराधिकारी हुआ। इसके राज्यकाल का संक्षेप में वर्णन देकर उसके पुत्रों का हाल दिया है। फिर राव राम उसके वंशजों का भी उल्लेख किया गया है। चंद्रसेन द्वारा सांसण में दिये गये गांवों के बारे में लिखा है—

“राव चद्रसेण सांसण दिया जिके मोटे राजा जवत किया, माम दोग तो सांद्र रामा धरमावत नै चद्रसेन रा दियोड़ा जवत किया, गुजरावस १ पालासली २  
... ..।”

२१. मोटा राजा उदर्यासिंह का वृत्तांत :-

मोटा राजा उदर्यासिंह व भाटियों के बीच हुए विग्रह का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

“सिंघ री नै घटा री मारग बीकूपुर होयनै बहै सो मोटा राजा कहै फलोधी मांहे होय नै बहावसां अर केईक गांव बीकूपुर रा फलोधी लारै घालिया चाहे इण वासी भाटियां आप भाप भाटी राव चन्द्र जोधावत फलोधी सूं गायं लीधी केलण भाटी री, तरै लारे बाहर हुई अर भगड़ो हुवो, तरै इतरा काम आया। .....भाटी सूरजमल किसनावत .. ..। पछै सिंघ री साथ कतार परा थी अवती थी आनो सांमो मोटो राजा चड़ियो परा था भाटी आया, भाटी भानीदास दुर्जणसलोत मांणस १००० सूं आयो नै राजाजी कनै असवरा २५ था सूं जाय वेढ़ कीवी.....तठा पछै भाटी डूंगरसी दुर्जणसलोत साथ भेलो कर भगड़ो करणो विचारियो तरै मोटे राजा री बेटी घन बाई नागौर रा चिरमीखां नूं देने तुरक मदत आविया, उठी सूं भाटी ही आया। ..... अर तुरक आवै नहीं कहै आज म्हे थां का छां .....आप (मोटा राजा) तुरकां नूं लावण गया पण तुरक आया नहीं अर सोह भिळियो.....ठाकुर ७ मरांणा.....।”

सूरसिंह का जन्म फलोदी में होना लिखा है—

“संवत १६२७ वैशाख वद १ फलोधी महाराज सूरसिंघजी री जन्म हुवी।”

मोटे राजा द्वारा चारणों प्रोहितों के गांव जप्त किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"वि० सं० १६४२) ..... झाड़ी दुरसो साँदू मालो वारठ अखो ऐं भेळा हुवा अर भारीगरी धरणी भेळी कर मोटा राजा रा डेरा आववे धो जठे आपे धरणी दियो, बारहठ अखो नव धणी (अणी) कर काम आयी, आठो दुरसो गळे घाली पछे दुरसो सीरोही गयी। घुंगलो १, रीसाणियो २, जोगडावास ३, पलासली ४, गूजरवांस ५, बीठोरो खुरद ६, बूटेलाव ७, हापत ८, जाइत्रो ९, नै फोटडी ऐ दस गांम चारणां रा लिया। बाहड़सा १, गोघवास २, आकडावास ३, रहनडी ४, भवलीड ५, वासणी ६, कोरनडी ७, खारिया दोय ९, गोडांगडी १०, सुगाळियो ११, गिरवरियो १२ चिणवाडो ऐ १३ गांव प्रोयतां रा जबत किया मोटे राजा।"

सिवाने में रहते हुए कल्ला रायमलोत (मालदेव का पौत्र) को बादशाह के हुकम के अनुसार मोटे राजा उदयसिंह द्वारा सताने का उल्लेख भी है। अन्त में उनके रानियों कुंवर कुंवरियों का हाल देकर चारण प्रोहितों को सांसण में दिये जाने वाले गांवों का उल्लेख है।

२२. महाराजा सूरसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा सूरसिंह से सम्बन्धित उन्ही घटनाओं का वृत्तांत है जो कि अन्य ख्यातों में मिलता है। अन्य ख्यातों से मिलती जुलती घटनाओं के अतिरिक्त कुछ नवीन बातें इस प्रकार अंकित है—

"संवत १६४८ माह सुद ३ कुंवरजी सूरसिंघजी दाढी संवराई तरै मंडोवर गोठ सबळी हुई। तठे इतरी दियो—वागा ७४, घोड़ा २०, तरवारां ३७, रुपिया ३३२, दिया, टका ४० उमरावां रा खवासां नुं हजूरियां नुं हुजदारां नुं दीया।

सूरसिंघजी दिखण में महकर रै थाणो नै सायजादो नै नवाब खानखाना ही महकर रै थाणो था सो इणाने आय धेरिया दिखणियां। रुपिया री तीन पाव धान मिळै छव महीना धेरी रहयो। पातसाही समान गढ़ मांयलो खूटो तरै राठीड़ कूंभकरण पायोत आय राजाजी नै केयो—आठमो लांधण माने सगळा रजपूतां नै छे सो कै तो आप चढ़ी के म्हे चढ़ां छां। तरै राजाजी आपरै अरोगण रा सोना रा वासण वाढ़ नै रजपूतां नै दिया, पण धान मिळै नही। तरै बाकरा मार नै गोठ कीवी। बीजै दिन कूंभकरण वळै दरबार में आयी, केयो—भूखां मरां छां। राजाजी रीसाय नै केयो—भू चढ़ नै जा, तरै असवार ५ साथे था आपरा घरू त्यांसूं जाय दिखणियां उपर पड़ियो, तरै पचास दिखणी मारीया नै बाकी रा भाया..... कूंभकरण पूरै लोहडै पड़ियो..... संवत १६५२ रा चैत वदि २ दिखणियों री धेरी उठाय अमरचंपु दिखणी भाग गयी, हजूर रै..... फतै हुई।

नवाब खानखाना नासक अकबर री मुहम गढ़ भिडारो, तटं मूरती १ चतुर्भुज री आणी तिका कोठार मांहे राखी पछे एक दिन श्री राजाजी नूँ कही—म्हारें कोठार मांहे श्री चतुर्भुज री मूरती छै । .....सो तुमकूँ दी तरै सिलाम करने राजाजी लीवी नै संवत १६६२ चैत वद ५ की श्री चतुर्भुजजी नुं लीया सो केई दिन तो ले साथे रहिया नै पछे जोधपुर रा गढ़ उपर पधराया सेवग लोहण सेवा करती ।”

महाराजा द्वारा सांसण में दिये गये गांवों का ब्यौरा देकर लाख पसाव, हाथी इत्यादि दिये उसकी विगत इस प्रकार दी है—

“१ लाख पसाव १ हाथी साद्रू माला उदावत नूँ दियो

१ लाख पसाव १ हाथी बारट लखा नूँ दियो

१ लाख पसाव १ हाथी भाट गोयं नूँ दियो

१ लाख पसाव १ हाथी कविया भानीदास नूँ दियो

श्री पाद दमोदराश्रम जोधपुर आयी तरै लखा होम करायी, लाख ब्राह्मण जीमाया नै लक्ष्य ब्रह्मभोज करायी । संवत १६६० रा माहा वद ५ खजाने ६६०००० नीनांणू लाख गढ़ उपर चढ़ाया..... ।”

२३. गर्जासिंह वा वृत्तांत :-

महाराजा द्वारा शाही दरवार की ओर मे लड़े मुद्धों इत्यादि का वृत्तांत है फिर जसवन्तसिंह व अमरसिंह का भी वृत्तांत संक्षेप में वर्णित है ।

राव बीका के वंशजों का हाल :-

बीकानेर के संस्थापक राव बीका एवं उसके वंशजों का हाल दिया है जो उपयोगी है क्योंकि दयालदास की रूपात के अलावा इसमें कुछ अतिरिक्त सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं ।

(पत्र-११३)

राव मालदेव के वंशजों का हाल :-

फिर आगे राव मालदेव के २१ पुत्रों का विवरण दिया है जो इस प्रकार है—

(१) मोटा राजा उदर्यासिंह—इसके पुत्र जैतसिंह, किशनसिंह, जमुंत और केशवदास का वृत्तांत दिया है ।

(पत्र-२३)

(२) राव राम—इसके पुत्र करन, कला, केशवदास, पूरणमल, नरहरदास, राघोदास और किसनदास एवं उसके वंशजों के बारे में जानकारी दी है ।

(पत्र-४)

(३) राव चंद्रसेन—इसके पुत्र रायसिंह, उदरसेन एवं आसकरण का वृत्तांत दिया है ।

(पत्र-३)

(४) रायमल—इसके पुत्र कल्याणदास, प्रतापसिंह, बलभद्र, कान्ह एवं सांबलदास का विवरण दिया है। (पत्र-४)

(५) रतनसो—रतनसो के पुत्रों में जैसिह, पंचायण, माडुल, जैतसो और फिर उनके साथ उनके वंशजों का भी विवरण दिया है। (पत्र-१३)

(६) मांण—इसके पुत्र सीध का उल्लेख है।

(७) भोजराज—इसके पुत्र सांबलदास, करमसो, काना, कल्याणदास, ईसरदास व उनकी संतति का विवरण दिया है। (पत्र-२)

(८) विक्रमादित्य—इसके पुत्र अचलदास एवं केशवदाम का उल्लेख है। (पत्र-३)

(९) महेस—इसके पुत्र रामदास, दूदा, कला, केशवदास एवं उसके वंशजों की विगत दी है।

(१०) तीलोकसो—इसके पुत्र कल्याणदास, राधबदास, गोपालदास एवं रामसिंह का विवरण दिया है।

(११) पृथ्वीराज—यह सोनगरो का भानजा था।

(१२) आसकरण—यह रानी जादमजी की कोख से हुआ।

(१३) गोपालदास—यह सोनगरों का भानजा था जो इडर में मारा गया।

(१४) डूंगरसो—यह टीपू नाम की बंश्या का पुत्र था।

(१५) लिखमोदास—इसे भोटाराजा ने सोभड़ावास ग्राम १६४१ में दिया।

(१६) रूपसो—यह धावा उलगण का पुत्र था।

(१७) तेजसो—यह पावा उलगण की कोख से हुआ।

(१८) ठाकुरसो—यह पावा उलगण से हुआ।

(१९) इसरदास—यह भी पावा उलगण की कोख से हुआ।

(२०) जंतसो—यह भी इसरदास का भाई था।

(२१) जंतमाल—यह प्रयाग मांडसोत का भाई था।

राव गांगा के वंशजों का हाल :-

गांगा के पुत्रों का विवरण इस प्रकार दिया है—

(१) मानसिंह—इसके पुत्र नरहरदास का विवरण है। (पत्र-१३)

(२) किशनदास—इसके पुत्र गोपालदास, राधोदास, सांबलदास, भगवान-दास का वृत्तांत है। (पत्र-२३)

(३) बंसल—इसके पुत्र वीरमदे और रूपसो का वृत्तांत है। (पत्र-१)

(४) कान्ह—इसके पुत्र गोपालदास, जैमल का उल्लेख है।

(५) सादुल—यह देवड़ों का भागजा था ।

चापा के वंशजों का हाल :-

इसमें चापा के पुत्र वीरमदेव और जंतमी एवं उनके वंशजों का विवरण दिया है । (पत्र-३)

इसके बाद फिर मालदेव के पुत्र रतनसी एवं उसके वंशजों तथा भांग व उसके वंशजों का विस्तार से वृत्तांत दिया है । (पत्र-४)

चांपावत राठीड़—चांपावत राठीड़ों के गांवों की वंशावली दी है—

पोकरण—रिड़मल से भभूतसिंह तक

आहोर—गोपालदास से लालसिंह

खीवाड़ा—गोपालदास से गुमानसिंह

आउवा—गोपालदास से देवीसिंह

रोयट—आईदान से सुरताणसिंह

उदावत राठीड़—उदावतों के ठिकानों की वंशावलियां दी हैं ।

रायपुर—सूजा से लक्ष्मणसिंह तक

नीवाज—कल्याणदास से गुलाबसिंह तक

रास—जगराम से प्रतापसिंह तक

मेड़तिया राठीड़—इसमें केवल कुचामन के रघुनाथसिंहोत मेड़तियों की वंशावली राव जोधा से केशरीसिंह तक दी है ।

ग्रंथ के अन्त में फिर चापा, महेशदास एवं जैसा चांपावत राठीड़ों का विवरण दिया है, अन्त के दो पत्र फटे हुए हैं ।

इसकी प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है । इसकी प्रतिलिपि मुरारीदान के संग्रहालय से की गई है ।

## ४२. मुरारदान की ख्यात

१. मुरारदान की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), हिन्दी रूपान्तरकर्ता श्यामकरण आसोपा, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६७२, ४. ३३.५ × २६.५ सेमी०, ५. ३४२, ६. १८-२०, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. यह मुरारदान की मूल ख्यात का हिन्दी रूपान्तर है । प्रारम्भ में ब्रह्मा से वंशावली दी है फिर महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम तक के विभिन्न शासकों का वृत्तांत दिया गया है । प्रस्तुत ख्यात में राजाओं के रानियों, पड़दायतों, कुंवर-

कुंवरियों का हाल विस्तारपूर्वक दिया है। प्रशस्ति गीत, कवित्त व दोहे यथा स्थान राजस्थानी भाषा में दिये गये गये हैं। प्रतिलिपि के बारे में लिखा है—

“राठीड़ों की ख्यात कविराजजी श्री मुरारदानजी के यहाँ से लिखी गई यह ख्यात कविराजजी साहिब के पिता को कोटवाल शेरकरणजी के समय में एक दोवाल में मिली थी…… मारवाड़ी से हिन्दी किया पंडित श्याकरण दाधीच ने……”

म्यान में आये कुछ फुटफार दोहे, कवित्त प्रारम्भ में इस प्रकार दिये हैं, प्रथा—

ग्यारँ सौ एकावने चैत तीज रविवार

कनकज देखण कारसँ चल्पी तु संमरवार ॥१॥

राठीड़ों की उत्पत्ति के बारे में लिखा है—“बृहदल (वंशावली के अनुसार ८६वा राजा) काकण देन से फुल्दोत्र को आया सो बीच में इसे गोमती मिली उसने जल मंत्र कर इसे दिया सो यह आप पी गया जिससे इसके गर्भ रह गया फिर उदर चीर कर निकाला गया सो बृहदल तो भारय युद्ध में अभिमन्यु के साथ मारा गया और उसके उदर में लड़का निकाला गया वह बृहदल राजा का पुत्र विश्वभर कमधज नाम से प्रसिद्ध हुआ ८७(वां) और इसी दिन से राठीड़ कहलाये। दोहा—

कमधज्जं धीरा कलह, राठीड़ों रिण वह

सांचह सूँ तन ओडवे थोड़े भांजे यह ॥१॥

इनके वंशज गोपगोविन्द से रांणा ननपाल ६ पीढ़ी तक के राजा राणा कहलाये और रांणा ननपाल कर्णाटक का राजा हुआ तथा उसके वंशज राजा भरत जब गया यात्रा को चले तब कन्नौज को देखा और पंवारों से छीनकर अपना आधिपत्य जमा लिया। भरत के पुत्र पुंज ने पंवारों की कन्या से विवाह किया उससे १३ पुत्र हुए जिससे राठीड़ों की १३ शाखाओं का निर्माण हुआ (कवित्त—अनंपुरा, जैवत, सूर वाडेल, नरेसुर, अहर राय राठीड़, कृत्र कुरहा दानेसुर……।)

पुंज के आगे वंशावली इस प्रकार दी है—

यंभ - अभयचंद - विजयचंद - जयचंद (जो दलेपांगुले के नाम से प्रसिद्ध है) वरदाईसेन - सेतराम - सीहा ।

इससे आगे सीहा से महाराजा जसवन्तसिंह तक का विवरण दिया है जो अन्य ख्यातों से मिलता जुलता है। राठीड़ शासकों के पश्चात भेड़तिया राठीड़ों चरसिंहोत, जोधा, करमसोत राठीड़ों आदि का विवरण काफी विस्तार से दिया है। जो प्रामाणिक ह। इनका इतना विस्तार से विवरण अन्यत्र नहीं है।

अन्तिम भाग—

१६. जसवंत मानसिंघ का पुत्र वीकानेर में नौकर था पीछे संवत् १६६१ में परगने मड़ता का गाव खारिया इनायत हुवा सो संवत् १६८६ में छोड़ कर पीछा वीकानेर गया ।

२०. जगतसिंह जसवंत का पुत्र .....पता राव गोयंद का पुत्र १८- काह पता का पुत्र..... ।

कुछ बीच के व अन्तिम के पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है । प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है । ग्रंथ के अन्त में दी गई सामग्री जो राठौड़ सामन्तों से सम्बन्धित है राज्य-व्यवस्था के अध्ययन हेतु बड़ी उपयोगी है ।

### ४३. राठौड़ों की ख्यात

१. राठौड़ों की ख्यात (प्रतिलिपि), राव सीहा सूं विजयसिंह तारी, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३५, ४. ३४ × २१ सेमी०, ५. १८६, ६. ३१, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. राव सीहा से महाराजा विजयसिंह तक के राजाओं का वृत्तांत अंकित है ।

प्रारम्भ में कुछ पीढियों सम्बन्धी आकड़े दिये है, फिर राव सीहा की द्वारा यात्रा से ख्यात प्रारम्भ हुई है ।

प्रारम्भ—

“माहिनायकाय नमः

राजा पुंज रै धरमबिब पीढी १२६

अभैचंद धरमबिब रै पीढी १२ .....

विजैचंद अभैचंद रै दीढी १२८

सीहो सेतराम री समत १२१२ रा आसोज सुदि ७ थी दवारकानायकी पधारिया अर यात्रा कीवी अर पाछा पाटण पधार गुजरात रा घणी मूलराज सोलंकी री मदत कर भाटी लाखा फूलाणी उपर गया काती बद ६ लाखा फूलाणी नै आदमी पांच सो सूं मारियौ.....

कवित्त—

नवमी सुद चानकी मास काती निरंतर

पिता बैर रच माय सुर राखायच समहर..... ।”

सीहा से सम्बन्धित कुछ काल्पनिक बातों से उसके वंशजों का हाल बता है जिसमें प्रत्येक शासक की संतति इत्यादि का विवरण दिया है तथा उनसे सम्बन्धित

कुछ घटनाओं का विवरण संक्षेप में दिया है जो प्रायः अन्य ख्यातों वंशावलियों में मिलता है। चूँडा और उसके अनंतर विभिन्न राठौड राजाओं का वृत्तांत कुछ विस्तार से दिया है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

राव रिड़मल के राज्यकाल व पूर्व की सभी घटनायें अंकित है।

१ राव रिड़मल का वृत्तांत :-

राव रिड़मल के २४ पुत्रों का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

“राव रिड़मल रँ बेटा २४ हुवा ‘.....बडा कंबर भखैराजजी बडा बेटा जिणां रँ टावर हुवा नही तरँ महादेवजी सोभत री गांव घनेरिया है जठै जाय धरणी दीयी तरँ श्री महादेवजी री आग्या सुं पुत्र अक हुवा तिणरी नांव कूपली दिरायो। तिणरा पेट रा कूपनावत बाजै छै। दूजी बेटो पंचायण तिणरँ बेटो जैतो तिणरा जैतावन कहीजै छै.....। दूजी कंबर चांपोजी....., तीजा बेटा करणोजी .....चोयो सांडोजी जिणां रँ बेटो अक तिणां रा साडावत, पांचमा सायरजी सो गाव धणले रा तालाव में डूवनै मूवा तिण री थान जोधपुर रा किला में गोपाल पोळ रा भूँडा आगै है। चठा अडवालजी.....। सातवाँ पातो, आठवो रूपो रूपावत कहीजै .....। नवाँ जगमाल जिण रँ बेटो अक खेतसी तिणां रा जगमालोत कहीजै। १० कांघल रा कांघलोत, ११ मांडण रा मांडणोत, १२ वागवीर, १३ नाथो, १४ वणवीर, १५ लाखो, १६ सीधो, १७ मंडलो, तिणरा मंडला राठौड, १८ बरो, १९ बालो, २० जैतमाल, २१ कर्मचंद, २२ भाखर, २३ जैतसी, २४ डुंगरसी।”

२. राव जोधा सूं गांगा तक हाल :-

जोध्या ने मेवाड़ पर चढ़ाई की और उसकी विजय हुई उससे सम्बन्धित एक नीसांणी अंकित है—

प्रारम्भ—

जिण दिन जोध जनमिया जस थाळ बजाया

जै सिर छत्र न भमिया तै छत्र नमाया

बुंदी नाल बंधी दिये राव रिड़मल जाया.....।”

राव जोधा द्वारा जोधपुर सहर बसाये जाने (संवत् १५१५ जेठ सुद ११), सातल द्वारा मीर घडूले को मारने, सूजा के पुत्र उदा द्वारा सीधलों से जैतारण हस्तगत करने, सूजा के पश्चात् गांगा को सरदारों की इच्छानुसार उत्तराधिकारी बनाने तथा गांगा द्वारा लड़े गये युद्धों का वृत्तांत दिया गया है। गांगा की मृत्यु का हाल इस प्रकार दिया है—



“समत १५८८में घांम प्राप्त हुवा, भरोखा में विराजीया था नै भ्रमल रो भेर थी सु उपरले भरोखा सुं पड़ मर गया । पछै तिवरो रो धरणी मूलो धो तिए नूं ही मार नांखियो अर जोगी सोमनाथ नास नै छूटी । इणां माथे मालदेव बैराजी हा सो उणा नै पाट बैठतां ही भराय नांखिया ।”

### ३. मालदेव का वृत्तांत :-

मालदेव के वृत्तांत में उनकी रानियों व कुंवरो कुंवरियों का विवरण दिया है, फिर मालदेव द्वारा लड़े गये युद्धों, शेरशाह की जोधपुर पर चढ़ाई इत्यादि का वृत्तांत है जो प्रायः अन्य रूयातों से मिलता जुलता ही है । रूयात में वर्णित है कि जब मालदेव पुंगलगढ़ के भाटियों के यहाँ शादी करने जाता है तब किस प्रकार भाटी छल से उन्हें मारने का प्रयत्न करते हैं—

“राव मालदेवजी पूंगल रा भाटी राव फलाणसिध रो वेटी परणीजण नुं गया था……सो भाटियों दगो विचारियो……प्रोहित राधे बात समज लीवी ‘‘ प्रोहित राधो जानीवासा डेरा में गयो अर राव मालदेजी सुं इकंत हुया, सारी भैवाळ मालम कीयो…… आप पूंगल रा गढ़ उपर पघागी तो सावचेत हुय पघारजी ………जद रावजी प्रोहित सूं राजी हुवा ………पछै जनांना सूं सीख हुई …… भटीयांणी आपरा वाप नूं … (केयो)—आपणा गुर छै जिण नूं दिरावी……जद प्रोहितजी घर रा नुं ले जान साथे जोधपुर आय वास बसायो सो पुंगलिया प्रोहित वाजै…… ।”

### ४. चंद्रसेन का वृत्तांत :-

राव चंद्रसेन के वृत्तांत में उसके बड़े भाई राव राम तथा उदयसिंह के चले संघर्ष का विवरण दिया है । शाही सेना की जोधपुर चढ़ाई और वहाँ कब्जा करने, बादशाह अकबर से मिलने फिर सूट-खसोट करने का विवरण इस प्रकार दिया है—

“पछै समत १६२७ रा मीगसर सुद २ पातसाह अकबर अजमेर हवाजाजी रो जात्रा करण आयो पछै चैत में नागौर आयो…… पछै राव चंद्रसेण भादराजण सुं घोड़ा पांच सौ सूं अकबर पातसाह कर्न आया, वैशाख वद १ नुं नागौर आया, पातसाह सुं मुलाजमत कीयी पातसाह मूरत देख वहोत राजी हुवी अर फळीधी सुं उदयसिधजी पिण घोड़ा तीन सौ सुं नागौर पातसाह कर्न आया मुलाजमत हुई पातसा कही—तंम हाल यहां ही रहौ अर चंद्रसेण पातसाह सूं सीख कर दाण भाद्राजण आया ‘ …अर पीपसूण रा भापरां में गया अर धाड़ा घुकों सूट खोम घणी करणी मांडी । गांव म्हैली मुगलां रो पांणी धो मु मारियो ।”

फिर बादशाह द्वारा बीकानेर रायसिंह को जोधपुर का शासक नियुक्त करने, (१६३१ रा बीकानेर रा राव रायसिंघजी नुं पातसा जोधपुर लिख दीयी सो डोड वरस (१३) ताई रायसिंहजी सालुकै रह्यो भ्रर तुरकाणी साबत रही) राव राम श्रीर चंद्रसेन के पुत्रों का हाल इत्यादि दिया है।

#### ५. उदयसिंह का वृत्तांत :-

मोटा राजा उदयसिंह के वृत्तांत में मुख्य रूप से शाही दरबार की ओर से उसे सिरौही सिवाने पर अधिकार करने ..... तथा मालदेव के पुत्र रायमल को बादशाह ने सिवाणा दिया था उसके बाद उसका पुत्र कल्याणदास उत्तराधिकारी बना उसने एक बार बादशाह के एक छोटे मनसबदार को मार डाला था तिस पर उदयसिंह को सिवाणा पर भेजा गया उस समय की घटना ख्यात में इस प्रकार भ्रंकित है—

“कलेजी भ्रापरी ठाकुरानियां रा माया हायां सुं वाडिया, कोई कहै मडी में घाल बाळ दीवी सितांणा री गढ़ कंवर भोपत भ्रादमी पांच सी सुं नाळेर मारण जाय गढ़ मेलियौ कलो रायमलोत भलो लड़ियो नै मोटा राजा उदयसिंघजी री फर्त हुई .....।”

उदयसिंह की रानियों श्रीर संतति का विवरण भी दिया है।

#### ६. सूरसिंह का वृत्तांत :-

सूरसिंह द्वारा शाही दरबार की ओर से लड़े गये युद्धों इत्यादि का वृत्तांत है। गुजरात में विद्रोह होने वहाँ उनकी नियुक्ति होने, कोलियों से लड़ाई करने का विवरण इस प्रकार दिया है—

“संवत १६६२ में फेर महाराजा सूरसिंघजी नुं गुजरात री सोबी हवी गुजरात रै पातसाह वादर मांडवी में कोलीयां री मेवासों बांध राखीयी थो सो मा० फौज ले पधारीया..... राठीड़ गोपालदास इडरीमी बरजीया कै भ्रांपणी फर्त हुय गई हमें इणां री लारी मत करो जगा भ्रडवी है परा इणां री बात मांनी नहीं सो .....ठावा भ्रादमी हकनाक पचीस कांम घाया नै कोली एक ही मुवी नहीं ...।”

२५ में से ६ वीरगति पाने वाले राठीड़ सरदारों की सूची दी है। महाराजा की मृत्यु सम्बन्धित एक कवित्त दिया है—

प्रारम्भ—

सूरसिंघ सिरताज हवी जोधाण हंगांमी  
किसनांणे किसनेस भर देह धरा हंगांमी..... ॥१॥

### ७. गजसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा गजसिंह के राज्यभिषेक से सम्बन्धित दो दूहे एक कवित्त दिया है। प्रारम्भ दूहा—

सोले सो छियतरं महीनो आसू मास

टीकायत बैठो तखत सुरतांगै गजसाह

गजसिंह की रानियों संतति आदि के विवरण के पश्चात् बादशाह से जागीर के परगने आदि प्राप्त हुए उसकी सूची दी है। महाराजा द्वारा शाही दरवार में की गई सेवाओं इत्यादि का वृत्तांत दिया गया है जो कि ग्रंथांक १३५०७, रा० शो० सं० से मिलता जुलता है। इसमें भी राव अमरसिंह की अलग से हकीकत दी है।

### ८. जसवंतसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा जसवन्तसिंह के वृत्तांत में उज्जैन की लड़ाई का विवरण दिया है। अन्य ख्यातों की तरह इसमें भी वीर गति पाने वाले योद्धाओं की विस्तृत सूची अंकित है। जसवन्तसिंह द्वारा शाही दरवार की ओर से लड़े गये युद्धों इत्यादि उन्हीं घटनाओं का वृत्तांत है जो ग्रंथांक २०१३०, रा० प्रा० वि० प्र० में दिया है। नैरासी को दण्ड इत्यादि देने का उल्लेख इस प्रकार है—

“पछै कठैइ ती ख्यातों में लिखावट है कै आंगल्यां रै मेणवतियां लगाय वासदै उपर राख आंगळियां बाळ दीवी कै म्हारै हात सुं पईसो अक ही भरा नही....”

### ९. महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत और दुर्गादास :-

दुर्गादास द्वारा मेवाड़ के राणा और उनके पुत्र अमरसिंह के बीच मुलह कराने का उल्लेख इस प्रकार है—

“दुर्गादासजी आदमी ५०० सुं चढ़ीया ... दुर्गादासजी राणांजी सूं अरज करी—महाराज घर री कळेस आछी नहीं घर रा कळेस सूं दुसमणां रा पंच पढ़ै छै इण वखत तुरक तो आहीज चावै है सु कंवर सूं भगडौ कर सभा देसां जद कंवर छाढाणो कर पातसाह कनै जाय पुकारसी तो वात आछी नहीं है..... दुर्गादासजी कंवर अमरसिंह नै आपरा भला आदमी मेल केवायो कै थे लोकां रा बेकामा बेकी मती राणेजी विराजीयां थां नुं धरती आवे नहीं अर राइ करसी तो राठोइ सारा म्हें दिवांणजी सांमल छां थे म्हंमु पड़पसो नहीं सो म्हारो कह्यो मांनो ..... कंवर री हाय रुमाल सूं बांध दिवांण रै पने लगाया, राणेजी उठ कंवर रा हाय सोनीया तखसीर माफ कौनी..... महाराज अजीतसिंहजी री घणी गुण मानियो ।”

महाराजा अजीतसिंह के विषे में जिन सरदारों ने सेवा चाकरी की उससे सम्बन्धित महाराजा के मुख से कहे २३८ दूहे लिपिवद्ध है। इसके वारे में लिखा है—

“भाप फुरमायो के विषे में उमराव वगैरे हाजर था तिणां री हाजरी जेड़ी चाकरी कीची जिणरी विगत देख थी हजूर रा थी मुख सूं फुरमावणा मुजब दूहा वणिया तिणरी विगत—

दोहा प्रारम्भ—

करी विखा में चाकरी, सामधरम सिरदार  
कहिये लागा कुवधियां, हुवा पछे हुजदार

अन्तिम—

तिण बेला री तेजसी, आभे सीस लगाय  
जगो भिड़ साथे लीयां, खगां उयेला खाय ॥२३८॥

इसके आगे वारठ शक्तिदान कृत १६ दोहे अंकित है।

प्रारम्भ—

अचला नै परताप रे, हुती नरहवा ठाव  
तोनु म्हााराजा दीयो, रीया सरीपो गांव ॥१॥

महाराजा द्वारा की गई नियुक्तियों (जोधपुर रा मुतसदियां नुं राज री काम ओहदा सूंपीया तिणरी विगत) का ब्योरा दिया गया है। विषे में जिन सरदारों ने महाराजा का साथ दिया उनको जागीरीयां आदि इनायत की तथा विरोध करने वालों के पट्टे जळ करने व दण्ड इत्यादि का वृत्तांत दिया गया है। फिर उनके रानियों कुंवरों का विवरण अंकित है—

फरुकशियर को कैद किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“पछे सर्यदां रा आदमी मांह जनांना में जाम पातसा फरकसेर नुं हाथ पकड़ ले आया अर कैद कर दीयो अर……महाराज तीन दिन ताई लाल कोट में सईदां री सला मुजब विराजीया रहमा नै सिनांन सेवा पिण उठै हीज कीची अर उठै हीज रसोड़ी करायो……।”

इसमें अजीतसिंह के राज्यकाल की सभी घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया है। घटनाएँ प्रायः ख्यातों से मिलती जुलती हैं। सैयदों के राजनैतिक पड्यंत्र पर इससे विशेष प्रकाश पड़ता है।

१०. महाराजा अभयसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा अभयसिंह का वृत्तांत अंशक १५६३२ (रा० प्रा० वि० प्र०) से मिलता जुलता है। अमैसिंह की आबेर शादी करने हेतु जाना, राजकीय नियुक्तियों

१३० : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

सरबुसुन्दखा से युद्ध, बीकानेर पर महाराजा की शोर से की गई चढ़ाइयों, दक्षिणियों के विरुद्ध महाराजा द्वारा शाही सेना में जाने, अहमदाबाद में लूटमार करने, अमेर नरेश सवाई जयसिंह से युद्ध करने, इन युद्धों में काम आये सरदारों की नामावली आदि भी अंकित की गई है।

११. महाराजा रामसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा रामसिंह के राज्यकाल के वृत्तांत में राजकीय नियुक्तियों का विवरण दिया गया है, सिरोपाव मुत्सदियों को दिये उसकी विगत. विभिन्न सरदारों का महाराजा से रूठना, सवाई ईश्वरसिंह (अमेर नरेश) को सहायतायें बुलाना, राजा गर्जसिंह (बीकानेर) द्वारा बखतसिंह की मदद करने, रामसिंह तथा बखतसिंह के बीच युद्ध होने, युद्ध में मारे गये योद्धानों की नामावली इत्यादि अंकित है। बखतसिंह का जोधपुर पर अधिकार होने का वृत्तांत इस प्रकार है—

“घाय भाई देवकरण भंडारी सुरतराम व्यास उदैचंद वगेरें गढ़ उपर गया सो दिन आठ ताई गढ़ में लड़ीया नै पछै भाटी सुजाणसिंह अर फेर राव मोहकमसिंह चवांण थो…… सो महाराजा बखतसिंह सूँ मिल्लिया ………गांव समाड़ीया से चांपावत सुरजमल रामसिंघोत नै देवाण रो जोधो उदेसिग हिन्दूसिंघोत कयो— सुजाणसिंघ मोहकमसिंह मिल्ल गया है सो इणां नुं मार नाखसा नै गढ़ बखतसिंघ नै देवा नही तरै आ वात चवड़े हुय गर्दै तरै सुजाणसिंघजी मोहकमसिंघजी गढ़ बखतसिंघजी नुं सूँप दीयो महाराज रामसिंघजी रो वात सारी विगड़ गई, भरोमो जाल गढ़ में राखीया सो हरामखोर हुय निवड़ीया।

दोहो—

बिलो कहै किरतार नूँ हूँ बणीयो वज्जर ।  
माह राखीया वोर चुगतां कै नाजर के गुज्जर ।  
मो मत हीणो मूजडो लापर गयो लतर……।”

१२. महाराजा बखतसिंह का वृत्तांत :-

बखतसिंह द्वारा ओहदे इत्यादि सौंपे गये उसकी विगत दी है। उनके द्वारा भवन निर्माण कार्य तथा मरम्मत आदि कराने का विवरण दिया है।

विरोधी व्यक्तियों को दण्ड देने, मरवाने इत्यादि घटनाओं के बाद महाराजा के सोनोली ग्राम में (वि० सं० १८०६ भाद्रपद १३) मृत्यु होना लिखा है।

### १३. महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत :-

प्रारम्भ में राजलोक की विगत दी है। इसमें मूल रूप से महाराजा विजयसिंह और दक्षिणियों तथा रामसिंह के बीच हुए संपर्प का वृत्तांत दिया गया है। अन्त में लिखा है कि सांभर दक्षिणियों से हस्तगत कर सवाई रामसिंह को सौंप दिया।

अन्तिम भाग—

“पछे सांभर दिखणिया नीचे धो सो छुडाय नै जंपुर बाळा रामसिंघजी नै मूंप दीनी सो सांभर रो ……।”

यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि एक में अधिक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। प्रतिलिपि अपूर्ण है। कागज सफेद है। उन पर लाइनें खींची हुई हैं। लिखावट सुन्दर है। गत्ता कागज का चढ़ा हुआ है। पत्र इतने जीर्ण नहीं हैं फिर भी क्षणित हो रहे हैं। ग्रंथ मारवाड़ की राजनैतिक स्थिति के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

### ४४. राव सीहा सूं वीरमजी तक ख्यात

१. राव सीहा सूं वीरमजी तक की ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४०, ४. ३४ × ३५ सेमी०, ५. १७, ६. १८-२०, ७. २०वें शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें राव सीहा से वीरम तक राठौड़ों के इतिहास की संक्षिप्त रूपरेखा है।

प्रारम्भ—

“राव सीहोजी वडो ठाकुर हुवो, वडो साथ रो घणी हुवो, मास ६ सीकार रमतो नै भाई अलह कनोज रहतौ, सो सीहोजी अेक समै पुसकरजी जात्रा करण आया था। तरं भीनमाल रा विरामण आय पुवारीया कहौ—माहारी गांव मुलतान रं पातसा लूटीयो ……।”

१. भीनमाल के ब्राह्मणों के आग्रह से राव सीहा के बादशाह से लड़ने तथा दोनों ओर से मारे गये व्यक्तियों के प्रांकड़े दिये हैं। फिर सीहा द्वारा लाखा फूलाणी को मारने इत्यादि घटनाएँ वर्णित हैं जो जोधपुर की ख्यात से मिलती हैं।

२. आस्थान के वृत्तांत में दिया है कि भोमियो पाली से कुछ पशु धुरा ले जाते हैं और आस्थानजी उसे छुड़ा लाते हैं इससे पाली के ब्राह्मण खुश होकर रावजी के वहाँ रहने का प्रवन्ध कर देते हैं। गोहिलों से खेड़ हस्तगत करते हैं, ईडर पर अधिकार कर अपने भाई मोतग को देते हैं। अन्त में आस्थान के राजलोक की विगत दी है।

### ४५. राठौड़ों की ख्यात फुटकर

१. राठौड़ों की ख्यात फुटकर गीत कवित्त वंशावलियां आदि, खिड़िया हुकमीचंद, चारण दाना, किसनो आसावत, चारण सिमुदान, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४४, ४. ३४.४ × २०.५ सेमी०, ५. ३१०, ६. ३६, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें राव मल्लीनाथ से जोधपुर के शासक भीरुसिंह तक का इतिवृत्त अंकित है।

#### (१) राठौड़ों की ख्यात :-

इसके प्रारम्भ में लिखा है कि मंडारी फौजचंद की बही से यह नकल उतारी गई जिसमें सलखा के पुत्र मल्लीनाथ से वृत्तांत प्रारम्भ हुआ है।  
प्रारम्भ—

“रा० मालो सलखाजी रं बेटी पेड़ मांय पाट वैठा .....टीकै.....सुरा मालोजी जोरावर देव वंसी पुरप ताखतीर भोमीया था तीयां सारा ही नै मार्ले धरती लीवी मेहवे परं कोस ८० उपर कोट छै तठा सूं.....।”

इसमें जोधपुर के शासक महाराजा विजयसिंह और उनके पौत्र भीरुसिंह तक का इतिहास की प्रतिलिपि की गई। जगह-जगह खाली स्थान छोड़ दिये गये हैं। इसमें विशेष रूप से विजयसिंह के राज्यकाल का वृत्तांत सविस्तार दिया है। इसमें उन्हीं घटनाओं का विवरण देखने में आया है जो प्रायः अन्य रयातो बातों में मिलता है।  
(पृ-१६६)

#### (२) कवित्त गीत संग्रह :-

ओसवालों, जोधपुर के महाराजाओं से सम्बन्धित कुछ काव्य कृतियां इस प्रकार संग्रहित हैं—

#### (क) ओसवालों का कवित्त :-

प्रारम्भ—

थी बाधमान पछोसेवसे, बावन पटलीघों थी रतन  
प्रभू सुरनावताय सदगुरु दीधी सांवत आठ दस बरसा..... ॥१॥

#### (ख) महाराजा जसवन्तसिंघजी का छप्पय :-

प्रारम्भ—

इसो राज जसराज, तासे सम और न कोय  
पांवां लागा आय, गुमरे के करता गाई..... ॥१॥

(२ छप्पय १ कवित्त)

(ग) गीत राव रीड़मलजी नै चीतीड़ चूक हुवौ ती समा री—

प्रारम्भ—

दोहा— चूक करे सीसोदीया सबलो सताव जाणै सारै  
वीरमहरै हेकलै विद्धतै..... ॥१॥

(घ) गीत महाराजा अजीतसिंघ री :-

प्रारम्भ—

प्रसिध दुनियां नमै जसराज रा पाटेपत,  
प्रगटै साहा लगै समद पाजा  
माहरा विष तेहुत तै भीटीयो ..... ॥१॥

(ङ) गीत अमैसिंघजी री गुजरात में कहौ—

प्रारम्भ—

तीजे तीजणी पहरै तन अंतरं नगर नरै उद्यव नारी नैर  
सोबौ राख कमध भे खवरै ..... ॥१॥

(च) गीत (कवित) विजैसिंघजी री पटेल आया सूं राड़ कीनी (खिड़ीया हुकमी-  
चन्द कृत)

प्रारम्भ—

पबं उठी है हणू चाहे मुनी बँण सीध पर्यै,  
विजै के समायी मही डाड जुहारौ है..... ॥१॥

(१५ ढालों का गीत)

(छ) गीत खीची गोरधन री—

प्रारम्भ—

साहू जका बेरी लपेटा मांहे सालणै सकौ,  
बहर ईक पेच चवतार बांधै,  
माला दोहु बळां खसोले मागरै ..... ॥१॥

(३) वंशावलिर्था :-

इसमे निम्नलिखित विविध स्थानों की पीढ़ियां अंकित है—

जोधपुर	सेतराम से सरदारसिंह तक
बूंदी	गोपीनाथोत से रामसिंघोत तक
जैसलमेर	सबलसिंह से मूलराज तक
बीकानेर	जोध्या से गंगासिंह तक
पोकरण	रिड़मल के पुत्र चांपा से गुमानसिंह तक



घाउया	रिड़मलजी से मुसालसिंह तक
रोइठ	रिड़मल से इन्द्रसिंघ तक
रायपुर	किलाणदास से दौलतसिंह तक
खैरवा	गोमदराम से दौलतसिंह तक
वालरवा	रीणछोइदास से रतनसिंह तक
सवेरा	साहबखान से उर्दसिंह तक
खेजड़ला	किसनसिंह से सादूलसिंह तक
रामपुरा	मुरतसिंह से भाटी भवानीसिंह
संखवास	चतुरभुज से चौहान सरजी तक
आसोप	रिड़मल से चैनसिंह तक
बलूँदा	राव जोधा से जीवणसिंह तक
किसनगढ़	किशनसिंह से कल्याणसिंह तक
रतलाम	महाराजा उदयसिंह से पदमसिंह तक
ईडर	अजीतसिंह से गंभीरसिंह तक
खीवसर	जोध्या से जोरावरसिंह तक
चंदावाल (कूंपावत)	फतेसिंह से धीसनसिंह तक
नींबाज (उदावत)	कीलाणसिंह से सांवतसिंह तक
पाटोदी	राव मालदेव से जवारसिंह तक
गूदोच (उदावत)	राव जोधा से इंद्रसिंह तक
ग्राम सनांणा (मेड़तीया)	दूदोजी से वेलवेसिंह तक
ग्राम बोड़ावड़ (मेड़तीया)	दूदोजी से मंगलसिंह तक
गांव बडू (मेड़तीया)	दूदोजी से मुरतानसिंह तक
रीयां (मेड़तीया)	राव जोधा से शिवनार्थसिंह तक
बगड़ी (जैतावत)	राव रिड़मल से शिवनार्थसिंह तक
पाली (चांपावत)	रिड़मल से गर्जसिंह तक
रास	किल्याणदात से जवानसिंघ तक
खारडा पाली रा घणी	आईदान से रायसिंह तक
फोरणा रो घणी करनोत	रिड़मल से श्यामकरणजी तक
भाद्राजण	रिड़मल से बखतसिंह तक
बाघावस (करनोत)	रिड़मल से जसकरणजी तक
गांव मंबरी रा घणी (जोध्या)	मालदेव से देवीसिंह तक

(४) फुटकर गीत कवित्त :-

कुछ फुटकर गीत कवित्त बिना शीरंक के इस प्रकार दिये हैं—

(क) गीत धारण दाना रौ कही—

प्रारम्भ—

मीसन पवास कीध जीण मघो, हठीवी मनावचँ हारै,  
हुवो न को मंढोवर हूसी, धोंगोहरा सारसी बजीरै ॥१॥

(ख) गीत सेवग श्रीसनों आमावत रौ कही—

प्रारम्भ—

नख कोटा गु छन सुपह नाइलो, भारत करै नीती कायम,  
दोली मान कीपा दहवाय, भारतै सो उडाया भीम ॥१॥

(ग) कवित्त मनहर (मुरारदान कृत)—

प्रारम्भ—

साज ओ लिहाज भिष्ट भापन उदारदि,  
घारँ है पिता के गुन कोन मन भावे ना  
भनत मुरार सनमान जै पिता के नर? ..... ॥१॥

(६) महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत :-

इसके बाद महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत ध्रा जाता है जिसमें उनके द्वारा दक्षिणियों से को गई लड़ाइयों, युद्ध में काम प्राये सरदारों की सूची (जिसमें कही उनके पिता, गांव का नाम संकित है) महाराजा के जाटनी पासवान गुलाबराय का वृत्तांत दिया गया है। इसकी इच्छानुसार सेरसिंहजी को युवराज घोषित किया गया।

“पछे पासवानजी कंवर सेरसिंहजी नै १८४८ रा टीकी दीयो जोवरज (युवराज) पदवी रौ पासवानजी रा वाग रा चौक में भारी बीछायत हुई थी महाराज पुरसी विराजीया नै पुरसी कर्न नीचँ गादी उपर सेरसिंहजी बँठा, नै मुँठा प्रायँ भतीज मानसिंहजी बँठा .....।

पासवान की मृत्यु का वृत्तांत :-

पासवान के सोना इत्यादि दान किये जाने के पश्चात् वह चूक से मरवा दी गई इसका विवरण इस प्रकार है—

“उण दीन पासवानजी मोहरां री धँलीयां घणी पुन कीवी घणी बेदा में जाती रेई श्रेक दोय जीणां नै दीपी जीके जाहर हुई तरै श्री भोंबसिंहजी मंगाय

१३६ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

तीसरे उषण दिन लापों से माल ईसद हूवी पछे आयण रा पासवानजी ने चूक हूवी ।”

(६) महाराजा विजयसिंह से कमठों से विगत आदि :-

महाराजा विजयसिंह द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य इत्यादि का ब्यौरा दिया गया है । फिर अन्त में राजलोक की विगत दी है ।

(७) महाराजा भीमसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा भीमसिंह के राज्यकाल का संक्षेप में वृत्तांत दिया है ।

(८) बाड़मेर बस्ती से विगत सं० १७२० में :-

बाड़मेर नगर में (वि० सं० १७२०) विभिन्न जाति के लोगों के घर से उसके आंकड़ें दिये हैं । यथा—

“५५१ माहजन घोसवाल

४० वीरामण पोपरणा

१०० रजपूतों से …… ।”

इसके अतिरिक्त बाड़मेर के पास स्थित विभिन्न गांवों की हकीकत भी दी है ।

(९) हकीकत आंबेर राजा जयसिंहजी से बडौ कंवर रामसिंहजी से :-

इसमें जयपुर के नरेश सवाई रामसिंह ने वि० सं० १७२२ भाद्र वदि ५ को परगने इत्यादि जागीर में प्राप्त किये उसका ब्यौरा दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“परगना १६ सोबो १ का मासिघ उगरसेन नरसिंहदास लुणकरणोत्त सेपावत रा नु फोजदारी छे ।

६ देस तालके रा

१ परगनौ अत्रली मारी वामरी गांव १४ दाम १२००००० माहे आमेर सुं  
(पत्र-३)  
कोस २० ।”

(१०) बात सेखावतों से :-

इस वार्ता में अंकित है कि मोकल के १०० घोड़ियां थीं इनसे जो बछेरे उत्पन्न होते थे आमेर के राजा पृथ्वीराज को दे दिये जाते थे परन्तु मोकल के पुत्र शेखा ने इस प्रकार बछेरे आदि आमेर नरेश को प्रदान करने बन्द कर दिये और बड़ा पराक्रमी सिद्ध हुआ ।

फिर उसके पुत्र दुरगा का वृत्तांत दिया है ।

प्रारम्भ—

“कछवाहो वालो मोकल बालावंत सु थो ठाकुर हुवो । गाव री घणी हुवो । गांव ८ तथा १० भाई बंदां रा था, भोमीया थका घरती में रहै, घरं घोड़ियों १०० थी ” (पत्र-२)

(११) परगनों की विगत :-

इसमें परगना अमरसर, मानगढ़, अजबगढ़ तथा मनोहर की हकीकत दी गई है जिसमें मुख्य रूप से इनकी भौगोलिक स्थिति, इन परगनों के अन्तर्गत पड़ने वाले गांवों की सूची इत्यादि भी अंकित है ।

प्रारम्भ—

“परगना अमरसर सुं वतीसी री परगनी तुरावटी, मुदे तुरावटी मांहे गांवड़ी गुणोसर पठाण छै, बडी भेवासा री ठोड़ छै …… ।” (पत्र-५)

(१२) हुमायुँ का शेरशाहों से युद्ध का वृत्तान्त :-

इसके आगे बादशाह हुमायुँ और शेरशाहों के बीच हुए युद्ध का वृत्तान्त है, अंकित है कि पहले तो मुगल सेना भाग खड़ी हुई परन्तु पुनः हमला करने पर शेरशाह हार कर भाग गये ।

यथा—

“हीदाल कछवाहां री फौज भाजी पातसाह री फर्त कीवी मुलक री सारी लोक भागी …… ।”

(१३) हाकम आदि के रिजक में बढ़ोतरी का हाल :-

महाराजा जसवन्तसिंह ने वि० सं० १७२२ में कामदारों आदि के ‘रिजक’ में बढ़ोतरी की उसका ध्यौरा दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“३५०० मु० करमसिंह सारै परगनों री हाकम आगे रू० ३५०० पावतो रू० १००० ईजाफे कीया ।

२५०० मं० ताराचंद नारणोत जोधपुर री हाकम आगे रू० १५०० पावतो रू० १००० वधारीया …… ।”

(१४) महाराजा विजयसिंह के मुत्सदियों की विगत :-

महाराजा विजयसिंह के मुत्सदियों, हाकमों, कारकून इत्यादि की नामावली दी है । फिर खीवसर ठिकाने की वंशावली (करणसिंह तक) तथा सांभर की विगत इत्यादि संक्षेप में दी है ।

१३८ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

(१५) सहर बसियां रो विगत :-

विभिन्न शहर दुर्ग इत्यादि कब किसने बर्माये अथवा बनवाये उसका ब्यौरा दिया है। फिर मुहणोत की विगत बहुत संक्षेप में देकर राठौड़ों की १३ शाखाओं के नाम दिये हैं।

(१६) वीर गीत :-

अन्त मे कुद्ध वीर गीत, कवित्त इस प्रकार अंकित है—

(क) गीत—

प्रारम्भ—

जूनी राव घर लेगु आबीयो ..... ॥१॥

(ख) कवत राव वीरम रा—

प्रारम्भ—

दस वेद बीस दूणी, मास काती रविवार  
पप कृष्ण पंचमी, सबल संगराम सकारह ॥१॥

(ग) कवित चूंडाजी री :-

प्रारम्भ—

प्रथम हुवी प्रताप, देव चावड बर दीयो  
भे सह सोहत अराक, खोस सह लीघ खजानी.... ॥१॥

(घ) राजाओं रा दूहा—

इसमे राजाओं (रिडमल, जोधा, सूजा, मालदेव आदि) के दोहे अंकित हैं।

प्रारम्भ—

रिडमल मेहमद मार नै, खसं सह खुरसाण  
रिधू मंडोवर राजवी, भळहळती कुळ भाण ॥१॥

(ङ) गीत महाराजा बखतसिंह री (चारण सिंभूदान कृत)—

प्रारम्भ—

भला बोलती अकारा बोल आकारीठ तील भाली  
जरदा मरदां कसे रूप में जोमेस  
पड़ीया अनेक भीच छाती चाड़ भुजां पांण ॥१॥

(च) राजा मानघाता री कवित-छप्पय—

प्रारम्भ—

असी लाल गर्य गुई पदम देस हैवर संज  
पाचा लल जाचवा गेहर सुर अंवर गर्जे.... ॥१॥

(छ) धीर विक्रमादित्य की कविता—

छनीत सहस्र मंडली, मुभट एक फोड़ धनू धारै  
मंडलीक चौबीस लाख सेवै धारी तर ..... ॥१॥ (१ कविता)

(ज) रावण की कविता—

प्रारम्भ—

घसी नाख सामंत, नवल गढ़ दुवाई रा गंजै  
नेउ महस निमाण, ताम दरतर वज्रै ..... ॥१॥

(झ) महाराजा विजयसिंह की कविता—

प्रारम्भ—

तीजी सिव कोक, चंटी को प्रसूल क्रिया  
चक्र रहर कर कोकदंड जमराज कचो ॥१॥

(ञ) राजा सालियाहन की कविता—

प्रारम्भ—

यूकण दमण फनीज, कछ पंचाल नीरतर  
सेतवंद रामेसर गुजर खंड वैरागर..... ॥१॥

इसके अतिरिक्त 'गढ कोटा की कविता', 'राठोड़ों की तेरे साखां की कविता' तथा 'चहुवाणों की पीड़ियों की कविता' भी संकित है।

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। कागज पर लाइनें खींची हुई हैं। कागज का गत्ता चढा हुआ है। मारवाड़ सम्बन्धी विविध जानकारी हेतु ग्रंथ उपयोगी है।

#### ४६. स्यात ठिकाणा भीयड़ा

१. स्यात ठिकाणा भीयड़ा (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४३, ४. २६.५ × १७.४ सेमी० (पुस्तकनुमा), ५. ११७, ६. १८-१९, ७, २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी मिश्रित राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें भीयड़ा ग्राम के नामकरण व उससे सम्बन्धित कुछ घटनाओं का विवेचन दिया गया है।

प्रारम्भ—

“॥ श्री रामायनमः ॥

॥ स्यात ठिकाणा भीयड़ा ॥ परगने सोम्लत ॥ सम्प्रदाय रामानन्द ॥

भूमिका—जो कि श्री दरबार के हुकम से मारवाड़ की स्यात घणान का



हुकम हुवा जब और ठीकाणी की ख्यात पेस हुई जिससे हमारे ठीकाणै की भी ख्यात पेस होना सुनासिव समझ कर गहकमे तवारीख से हुकम आया ..... तब अबी वर्तमान समय में विद्यमान जो मंहतजी महाराज श्री स्वामी भागवतदासजी .... ” (पत्र खंडित है) ।

इस प्रकार प्रारम्भ में यह बतलाया गया है कि ख्यात किस आशय से लिखी गई है, फिर भीथड़ा ग्राम की भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए गांव का नाम भीथड़ा कैसे पड़ा बताया है कि जालोर का शासक कान्हड़दे सोनगरा राज्य करता था, उसके लड़के वीरमदेव और दिल्ली बादशाह के यहाँ एक व्यक्ति पंजुपेक के बीच कुश्ती हुई जिसमें पंजुपेक हार गया । बादशाह की लड़की पराक्रमी वीरमदेव पर मोहित हो गई और उसने उससे शादी करनी चाही । बादशाह ने यह शादी का प्रस्ताव वीरमदे के समक्ष रखा, वीरमदेव ने ६ महीने की मोहलत और कुछ धन मागा और वह वहाँ से चल कर पुनः जालोर चला गया तथा जालोर के किले का निर्माण किया गया, कान्हड़दे उस समय दिल्ली में ही था । जब ३ महीने से ऊपर समय निकल गया और वीरमदे नहीं लौटा तो कान्हड़दे दरबार से एक घोड़े भीथा पर सवार होकर निकला और इस ग्राम (जीथडा) में पहुँचा । लोगो को इसके भागने का रहस्य साखूम हो गया था तो कान्हड़दे ने घोड़े को फटकारा कि तेरे पहले यह बात यहाँ आ पहुँची, इस पर घोड़ा मर गया । इस घोड़े के नाम पर इस गांव का नाम भीथड़ा पडा ।

इसके बाद भीथड़ा ग्राम में जो भक्त महन्त और पूर्वाचार्य हुए उनका विवरण दिया गया है और भक्ति का महत्व बताया है ।

विविध भक्तों द्वारा अपने शिष्यों को शिक्षा प्रदान करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“साक्षात् श्रीमन्नारायण है सो जीव लोको पर कृपा करके गुह्य अंधेरा दूर करने वाला राम तारक मंत्र है, उसका श्री लक्ष्मीजी महाराज को उपदेश वीया और लक्ष्मीजी ने विघकसेनजी को रामतारक मंत्र का उपदेश किया और विघकसेनजी ने शठकोप मुनि को उपदेश दिया तथा शठकोप मुनी ने नाथ मुनी को उपदेश दिया, और नाथ मुनी ने पूंडारीकाक्ष मुनी को, पूंडारीकाक्ष ने राममिश्राचार्य को राममिश्र ने पूर्णाचार्य को, पूर्णाचार्य ने रामानुज स्वामी को, सो यह रामानुज स्वामी बड़े महात्मा और जानी..... ।”

इसके बाद चार सम्प्रदायों (रामानुज सम्प्रदाय, ब्रह्म सम्प्रदाय, निवाकं सम्प्रदाय) का उल्लेख किया है। रामानुज स्वामी ने कुरेश स्वामी और कुरेश स्वामी ने पराशर स्वामी को उपदेश दिया इसका विवरण इस प्रकार दिया है—

(१) श्री स्वामी रामानुजाचार्य (२) कुरेश स्वामी (३) पराशर स्वामी (४) लोकाचार्य (५) देवाधिपाचार्य (६) शैलेश स्वामी (७) वरवर मुनि (८) गुरुपोतम स्वामी (९) गंगाधराचार्य (१०) सदाचार्य (११) रामेश्वराचार्य (१२) द्वारानंद स्वामी (१३) देवानंद स्वामी (१४) श्यामानंद स्वामी (१५) श्रुतानंद स्वामी (१६) नित्यानंद स्वामी (१७) पूर्णानंद स्वामी (१८) हरीयानंद स्वामी (२०) रामानंद स्वामी

फिर रामानन्द स्वामी का वृत्तांत दिया है तथा इसके अतिरिक्त भक्त कूवाजी का जीवन परिचय दिया है। कूवाजी ने भीथड़ा ग्राम में स्थान बांधा तथा वृंदावन से कृष्ण जीयड़ा में विराजमान हुए उसका वृत्तांत और कुछ महत्वपूर्ण इसी ग्राम से सम्बन्धित अंकित है। स्वामी हरभक्तदासजी, स्वामी प्रह्लाददास, स्वामी कनीराम, स्वामी तांबरदासजी, स्वामी भगवतदासजी इत्यादि का भी संक्षिप्त वृत्तांत है।

इन साधुओं के १० लक्षण इस प्रकार अंकित हैं—

(१) भद्ररूप रहणा, (२) गोपीचंद्र का तिलक करणा, (३) यज्ञोपवीत रपणा, (४) गुरु के वाक्य का पालन करना, (५) सप्त मुद्रा धारण करना, (६) राम मंत्र का जप करना, (७) कमंडल का जलपात्र रखणा, (८) तुलसी की माला पहरणी, (९) चोटी रखणी, (१०) धोये हुवे सफेद वस्त्र पहरणा।

महाराजा विजयसिंह और उनके कुंवर फतेसिंह द्वारा भीथड़ा ग्राम भेंट किया गया उसके तांबा पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार दी है—

नकल कीवी तांबा पत्र री

श्री परमेश्वर जी सत्यं छै

॥ श्री कृष्ण जी ॥

॥ सही ॥

स्वरूप श्री ठाकुरजी श्री जाणारायजी री परगने सोभत री गांव जीतंडी रेप २०००) दोय हजार री बाबाजी श्री आतमारामजी री -बरसी री दिन राजा विजयसिंह कंवर फतेसिंह चडायौ छै। सो किणी पीडी तफाबत न करै नै ठाकुरद्वारे



टेहले भगत हर भगत कूवावत करै । तांवा पत्र राठीइ भगवतसिघ सागतसिघोत खांप चांपावत री अरज सुं । संवत १८१७ रा माह वद १

मुकाम पायतखत गढ़ जोघपुर १ लिखतु सिघवी फतैवंद सं० १८१७ ।”

एक और पत्र की प्रतिलिपि दी है जिसमें जोघपुर दरबार की ओर से म्हीरुड़ा के स्वामी को आदेश दिया गया कि अगले जागीरदारों का अधिकार समाप्त किया जाता है क्योंकि यह ग्राम पुनरथ (पुण्याथं) इनायत कर दिया है ।

अन्त में भूल ग्रंथ के लिपिकार का नाम नरसिघदास दिया है ।

इसकी प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है । लिपि साफ है ।

#### ४७. महाराजा गजसिंह, जसवंतसिंह, अमरसिंह, सूरसिंह री ह्यात

१. महाराजा गजसिंह, जसवंतसिंह, अमरसिंह, सूरसिंह री ह्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३३, ४. ३३ × २५ सेमी०, ५. ७६, ६. १६-२१, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ह्यात में विवरण निम्न प्रकार है—

(क) महाराजा गजसिंह री ह्यात :-

ह्यात के प्रारम्भ में जोघपुर के शासक महाराजा गजसिंह (सूरसिंह के पुत्र) के जन्म, गद्दीनशीनी के संवत आदि दिये हैं, फिर सूरसिंह की मृत्यु के पश्चात् शाही फरमान के अनुसार दक्षिण में जाना लिखा है ।

प्रारम्भ—

“महाराजा श्री गजसिघजी समत १६५२ रा काती सुद ८ री जन्म, समत १६७६ छौयतरा रा आसोज सुद ८ पाट बैठा बुरहानपुर में ..... ।

माराज सूरसिघजी देवलोक हुवा तरै जांहगीर री फरमान आयी धो दिषण जावजो तरै गया । आगरा सुं पातसाहजी सीरपाव हायी धोड़ा सोना री साकळ सुधा मेलीया..... ।”

प्रस्तुत ह्यात में लिपिवद्ध घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) महाराजा के राज्याभिषेक के समय परगने जागीर में मिले हुए थे और शाही दरबार से जो परगने इनको मिले उसकी सूची तथा रेख इत्यादि का ब्यौरा दिया गया है ।

(२) महाराजा के दक्षिणियों की सेना से लड़ने उसमें विजयी होने, बादशाह द्वारा ‘दलथंभण’ का खिताब देने का उल्लेख तथा एक दोहा इस प्रकार उद्धृत है—

दुहा—

गज बंधी आलोचीयो, कर भेळा वरीयांम ।

पतसाही रापुं पगां, ती दळथंभण नाम ॥१॥

(३) महाराजा के वि० सं० १६७६ में जोधपुर आने, रानी सीसोदणी परतापदेजी को राणीपदा आदि देने का उल्लेख इस प्रकार है—

‘सीसोदणी परतापदेजी नुं राणीपदा री  
पाट दीयो पटी १८००१) री दीयो, बीजा  
राजलोक सुं बीवणी पटी …… ।

(४) गजसिंह का बागी खुरम पर भेजे जाने, युद्ध क्षेत्र से खुरम के भागने, शाही सेना की विजय होने का उल्लेख इस प्रकार दिया है—

“दिघणी सोबी सायजादो खुरम थो सु पातसाह सुं फिर गयो नै तपत लेण री मनसोबी कर पुरव में गयो नै उठै सुं साथ भेळो कर आगरा नूं आवण लागी । उदैपुर राणा हरसिंह (कर्णसिंह होना चाहिए) आपरा कंवर भीव नूं पुरम री साथ कीयो, पातसाह जाहांगीर अजमेर था, सु साहजादा परवेज नुं पुरम सांमो मेलण नै त्यार कर आगरा नूं कूच कीयो, मा० गजसिंघजी नुं बुलाया सुं…… समत १६८१ रा काती सुद १५ हाजोपुर पटणै गंगाजी री तीर उपर सायजादो पुरम परवेज वेढ हुई । पुरम री फौज में सीसोदीयो भीव हजार पचास लोक सुं हरोळ थो । गौड़ गोपालदास नै केई नवाब पुरम रै सांमल था नै परवेज री फौज मे आमेर रो राजा बडा जैसिंघ कनै लोक सांवठो देपीयो तरै हरोल ईणां नै (रा) कीया ……नै महाराज गजसिंघजी ठावी बाजु नदी रै कांठै आंतरै थका उभा था । इमें वेढ हुई …… नै पुरम रा नै राण भीव रा साथ री जागां उपड़ी तरै परवेज री फौज रा पग छटा नै पुरम नै भीव कही—और तो फतै हुई, गजसिंघजी उभा छै सो इणां नै बतळावो सो उण वषत नदी रै कांठै गजसिंघजी नाड़ी पोलता हा सो जेज लागी तरै कूपावत गोरघन……कही—हमार आपनै नाड़ी पोलण री बपत लादी छै ? तरै माराज केयो—मै तो आहीज वाट जोबती थो कै कोई राजपूत कैण वाळी है कै नहीं है । पछै असवार होय वागां उठाई, तरवार बजाई सीसोदीयो भीव हाथी चढ़ियो उभौ थो सो माराज नै गोरघन दोनों भीव रै हाथी गया सो बरछी री दे नै भीव नै मार लीयो । पुरम भागी…… ।”

१. थोझा ने (जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ३६५) इस वृत्तान्त को एकान्ती तथा पक्षतापूर्ण बतलाया है क्योंकि इसमें भीम की वीरता का विस्तृत वर्णन नहीं दिया है ।

खुरंम की ओर से योद्धा काम आये व घायल हुए उनके नाम दिये हैं।

(५) परवेज के देहांत होने, गजसिंह के कुंवर अमरसिंह को नागौर जागीर में देने का हाल इस प्रकार है—

“समत १६८३ रा काती में साहजादो परवेज फोट हुवो नै मोवतपां नीसरीयो... उकील भगवान साह जसकरण कंवर अमरसिंघजी रै नांवे नागौर लिपीयो, पछै अमरसिंघजी नै राठोड़ राजसिंघ कूपावत इणां फौज साथ अस्वार पनरै सोळे नै हुवा मुता राम हाकम मेलीयो सु नागौर नवाब पांनपांना री सुं उतार नै अमरसिंघ नुं दी.....।”

(६) जहागीर की मृत्यु और शाहजहाँ का उत्तराधिकारी होने, १८ व्यक्तियों को मारने का उल्लेख इस प्रकार है—

“समत १६८४ रा आसाढ़ वद ४ आगरा में शाहजहाँ तपत बंठी तरै छठारै जणा नु मारीया, दूहो—

सबळ सगाई नी गीरौ, ना सबळां सुं सीर,

पुरम अठारै मारीया, ककौ ककि वीर ॥१॥”

(७) गजसिंह का बादशाह की सेवा में उपस्थित होने, आगरे के आस-पास के लुटेरे भूमियों पर शाही सेना के साथ गजसिंह के सैनिकों को भेजने तथा बुद्ध में महाराजा की ओर से काम आये योद्धाओं की सूची अंकित है।

(८) बादशाह द्वारा खानजहाँ पठान के विरुद्ध गजसिंह आदि बड़े-बड़े सरदारों को भेजने का उल्लेख, फिर साथ चले उमरावों की विस्तृत सूची दी है तथा गजसिंह की ओर से मारे गये योद्धाओं की नामावली भी अंकित है। बुद्ध में व्यक्ति काम आये उसके आकड़े इस प्रकार दिये हैं—

“पातसाजी रा लोक जणा ३०० काम आया नै हजार १००० अके घायल हुवा, पठाण पांनज्यां रा जणा २०० मुवा नै घायल घण हुआ।

समत १६८७ रा पातसाही फौजां सूं लड़नै जणा ५० सु मीरादेसर रै हाय पांनजीहां मारीयो गयो।”

(९) वि० सं० १६८६ में विलायत के बादशाह की दिल्ली पर चढ़ाई और गजसिंह व उनके सैनिकों के वीरता से लड़ने के उपरान्त शत्रुओं के पैर उखड़ने आदि का वृत्तान्त दिया है।

१. जोमा ने (जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ४०१), मुंशी देवीप्रसाद (शाहजहाँ-नामा, पहला भाग २३-३३) के अनुसार माघोनिह के हाथ से खानजहाँ मरा गया निवा है।

प्रारम्भ—

“समत् १६८६ रा दीली उपर वीलायत री पातसा’ च्यार लाख फौज ले आयी सु तीन लाख तो सीय (सिक्ख) था नै एक लाख घोड़ी हुतो……” ।”

(१०) महाराजा का शाही सेना के साथ बीजापुर पर चढ़ाई करने का विवरण दिया है। फिर गजसिंह के अनारा नाम की पासवान की हकीकत दी है। इसमें बर्णित है कि जसवंतसिंह किस प्रकार अनारा को खुदा कर अपने पिता का उत्तराधिकारी बना।

“पछे एक दिन माराज अनारा रै मेल पधारीया नै छोटा कंवर जसवंत-सिधजी हजूर आया सु माराज अनारा उठीया सु……आगे पगरपीयां रा जोड़ा कंवरजी धरिया……तरै अनारा पमा पमा कहौ—तरै कंवरजी जसवंतसिधजी कहौ—मारै तो आप मा बरोबर हो, तरै इणा सुं अनारा बोत राजी हुई नै माराज सुं अरज कीवी के अमरसिधजी तो बडा हैं सो कमाय सवाय जमी पावसी…… जोधपुर री राज जसवंतसिधजी नै दीरावो तरै महाराजा वचन दियौ ।”

(११) मेरो द्वारा वि० सं० १६७६ में मेड़ता से पशु इत्यादि ले जाने पर हुए भगड़े का विवरण दिया है। इसी वर्ष फलोदी पर बलोचों की चढ़ाई होने पर गजसिंह की सेना द्वारा किये गये मुकाबले आदि का वृत्तान्त है।

(१२) महाराजा की ओर से चारणों, उमरावों, चाकरों को पसाव हाथी आदि दिये उसकी सूची दी है।

(१३) महाराजा गजसिंह के वि० सं० १६६४ ज्येष्ठ मुदि ३ का देहावसान होने का उल्लेख है तथा एक सूची में बतलाया है कि उन्होंने कुछ हथिनियाँ अमुक जगह से प्राप्त की।

(१४) महाराजा द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य तथा तुलादान इत्यादि किया उसकी विगत दी है, फिर महाराजा के रानियों व संतति के हाल, आदि का बर्णन है।

(१५) मृत्युपरान्त अनारा का गहना दरबार में लाया गया उसकी सूची, महाराजा द्वारा चारणों को गांव सांसण दिये उसकी विगत है और अन्त में महाराजा जसवंतसिंह को शाही दरवार से जागीर में परगने इत्यादि मिले उसका ब्यौरा दिया गया है। इसके साथ ही गजसिंह की ख्यात समाप्त हो जाती है। (पत्र-२५)

१. विलायत का बादशाह बीन था और विलायत से किस देश का आगम है, यह ख्यात में अंकित नहीं है अत. ओझा ने (वही, पृ० ४०२) यह घटना बलिपत ही मानी है।

(ख) जसवंतसिंह की ख्यात :-

ख्यात का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

“महाराज जसवंतसिंहजी समत १६८३ में माघ वद ४ मंगलवार री बुरानपुर हवेली में जनम समत १६९१ रा सावण सुद ६ कासमोर में राजा गजसिंहजी पातसाह सुं अरज कर बडो बेटी अमरसिंह……।”

महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) के राज्यकाल की घटनाओं का विवरण-कम इस प्रकार है ।

(१) प्रारम्भ मे बादशाह द्वारा महाराजा जसवंतसिंह और उनके उमरावों को सिरोपाव आदि दिये उसकी विगत दी है, फिर बादशाह की और से टीके पर परगने इत्यादि मिले उसकी विस्तृत सूची अंकित है ।

(२) महाराजा का पोकरण पर अधिकार करने का वृत्तांत दिया है, भाटियो और महाराजा की ओर से मारे गये योद्धाओं की सूची दी है । एक गीत दिया है—प्रारम्भ—

‘गढ कलीपो लीयो जसा पत्री गुरू ।’

(३) वि०सं० १६९८ आश्विन सुदि १० को लाहौर जाने और वहां चारणो उमरावों को छोड़े हाथी इत्यादि बख्शीश मे दिये उसकी सूची दी है ।

(४) वि० सं० १७१४ में शाहजहां के रोग-ग्रस्त होने, बादशाह के पुत्रो द्वारा बगावत इत्यादि करने तथा महाराजा का औरंगजेब के विरुद्ध लडने (धरमाद का युद्ध ) युद्ध मे काम आये योद्धाओं की सूची भी अंकित की गई है ।

(५) शिवाजी का उत्कर्ष रोकने के लिये वि० सं० १७२० मे महाराजा द्वारा की गई चढ़ाई का वृत्तांत है ।

(६) वि० सं० १७२१ श्रावण सुदि में पूना मे महाराजा के यहा शाही मनसबदार उपस्थित थे उनके नाम दिये है ।

(७) कुंवर पृथ्वीसिंह का बादशाह की सेवा में उपस्थित होने, वि० सं० १७२२ में शाहजहां का देहान्त होने का उल्लेख है ।

(८) महाराजा के प्रयत्नों से मराठों और मुगलों में मेल स्थापित करने का उल्लेख है ।

(९) वि० सं० १७३० में शाही फरमान के अनुसार महाराज के काबुल जाने का उल्लेख है । वहां पठानों से युद्ध करने, युद्ध में काम आये योद्धाओं की नामावली अंकित है ।

(१०) श्रीरंगजेव द्वारा गोरधननाथजी का देवल तुड़वाने का उल्लेख है—

“समत १७२५ में गोकलजी में श्री गोरधननाथजी की देउरी को सो पाइणी पातसाह श्रीरंगजेव हुकम दीयी तरै श्री नाथजी की मूरत लेने गुसाईजी जोधपुर आया, केई दिन जोधपुर में नजीक भाकर मे कदमपंडी छै……”

(११) वि० सं० १७२३ में मुहणांत नैणसी व मुन्दरदास को कैद किये जानें, उनके द्वारा आत्महत्या करने का वृत्तांत है।

(१२) नैणसी के पुत्र करमसी को मरवाने का वृत्तांत रूमात में इस प्रकार दिया है—

“पछै राव रायसिधजी (नागौर) दीपण में था उठै घडी २ तथा ४ बेकार रहै नै धजाणचक रा मर गया तरै सिरदारा रा मुसदीयां चाकरां सारां कही— श्री काही हुवो ? उणीं रै गुजरात की वेद नौकर को तिण नुं पूछियो औ कांही कारण हुवो ? तरै वेद कही—“करमो नो दोस छै (भाग्य का दोष) इया गुजराती बोली की अरथ ओ छै कं प्रातब्ध की चूक छै नै रायसिधजी रा चाकर समजीमा कं करमसी मुणोयत की दोस छै … तिण सु मुहणोत करमसी नै भीत में चुणाय दीया नै मारीया नै नागौर लिपीयो—घाणी में पीलाय नाथजी सो करमसी की बडारणीयां २ थी जीका करमसी रा बेटा सावंतसिध सागरमलसिध नै लेनै नीसरी सो कीसनगढ़ ले गई सो कोई दिन उठै हीज मोटा हुवा।”

(१३) महाराजा जसवंतसिंह द्वारा वि० सं० १७१७ में गुजरात के बादशाह श्रीरंगजेव को धोड़े, सोना चांदी, कपड़े इत्यादि पेशकसी में भेजे गये उसकी सूची अंकित है।

(१४) महाराजा जसवंतसिंह के परधान कामदारों की नामावली दी है तथा उनके बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी भी अंकित की गई है यथा—

“राठीड़ राजसिध पीवा मांडल कूपावत की समत १६६७ रा राजा सूरसिधजी चाकर राय नै कंवर गजसिधजी रै चाकर थापीया सु राजा गजसिधजी जीवीया जठा ताई प्रधानगी कीवी पछै महाराज जसवंतसिंहजी मुंडा आगै प्रधानगी कीवी…… मा० जसवंतसिधजी जोधपुर पघारिया तरै राजसिधजी साथे आयी, समत १६६७ रा पौस वद ५ राठीड़ राजसिध आसोप की धणी राम सरण हुवो कागे दाग हुवो तरै नारपान राजसिधोत कागे छत्री कराई।”

१५ विशिष्ट व्यक्तियों का विवरण दिया गया है जो प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

(१५) महाराजा के देहावसान का विवरण इस प्रकार दिया है—

“महाराजा श्री जयवंतगिषजी समत १७३५ रा पोस वद १० वार बीसपत वार श्रेक पीर चार घड़ी दीन चडिया पोसोर में देवलोक हुवा, बुंदेला पूरणमल ग घाग मे दाग हुवी ।”

(१६) अन्त में महाराजा की रानियों व कुंवरो का वृत्तांत दिया गया है ।  
(पत्र-३८)

यह विस्तृत ख्यात मारवाड़ के इतिहास के लिये उपयोगी है ।

(ग) अमरसिंह की ख्यात :-

इसमें महाराजा गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह का वृत्तांत दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“माराज गजसिघजी रै पाटवी कंवर थो सु माराज इणां सुं नाराज था तीण सुं अमरसिघजी नुं टीका सुं दूर कीया, सं० १६६१ में लाहौर बुलाय पातमाह जी रै जूदा चाकर रापीया……।”

अंकित घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है :-

(१) प्रारम्भ में अमरसिंह के वादशाह की हाजरी में उपस्थित होने आदि का विवरण संवत् सहित दिया गया है ।

(२) वि० सं० १७०१ में बीकानेर के गांव सीलवा और नागीर के गांव जाखणिया के संबंध में भगड़ा होने पर बीकानेर वालों के साथ अमरसिंह की सेना से हुई लड़ाई का वृत्तांत दिया है । युद्ध में अमरसिंह के योद्धा काम आये अथवा घायल हुए उनकी नामावली अंकित है ।

(३) अमरसिंह द्वारा वादशाह के प्रमुख दरबारी सलावतखां को मारने फिर स्वयं के मारे जाने का उल्लेख है ।

(४) अमरसिंह के दाह संस्कार आदि का विवरण है ।

(५) शाही दरबार व डेरे में लडते हुए अमरसिंह के साथ सरदार काम आये उनकी सूची दी है । फिर वादशाह के व्यक्ति मारे गये उनके कुछ नाम दिये हैं ।

(६) अमरसिंह के राजलोक की विगत में उसकी रानियों और कुंवरो का हाल दिया है । जिसमें उनके पुत्र रायसिंह के शाही दरबार की ओर से अनेक युद्धों में लडने का वृत्तांत है । फिर अन्त में रायसिंह के पुत्र इन्द्रसिंह के वृत्तांत में उसे नागीर मिलने, दक्षिण में भेजे जाने, अजीतसिंह द्वारा उसके पुत्रों को चूक से मरवाने इत्यादि के उल्लेख के साथ ख्यात का यह भाग समाप्त हो जाता है ।

(पत्र-६)

(घ) महाराजा सूरसिंह की ख्यात :-

जोधपुर के शासक मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र सूरसिंह की ख्यात का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

“सवाई राजा सूरसिंघजी समत १६२६ रा बैसाप वद घडी १७ रात गयां री जन्म, समत १६५१ रा सावण वद १२<sup>१</sup> अकबर पातसाह लाहौर में टीकी दीयो, दोय हजारी जात सवा हजारी असवार मनसब दीयो ………।

घटनाओं का क्रम इस प्रकार है—

(१) शाही दरवार से मिले परगनों के नाम, गांवों की संख्या इत्यादि का ब्योरा दिया है।

(२) अकबर द्वारा महाराजा को गुजरात के प्रबन्ध के लिये भेजे जाने का उल्लेख है।

(३) अकबर की मृत्यु के पश्चात् जहागीर द्वारा महाराजा को पुनः गुजरात में नियुक्त करने, वहां विद्रोहियों का दमन करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“जहागीर माराज सूरसिंघजी नै अहमदावाद री सोबो इनायत कर गुजरात में भेलीया सो लालमीयां उपर माडवे गया। राजाजी घाटी उपर चढ़िया ऊभा रहा, फौजा आधी गई सो मांडवो ले लियो। मांडवो लेने पाछा फिरिया तरै घाटी मांहि लालामीयां आप वेढ कीवी ………।”

आगे महाराजा की ओर से मारे गये योद्धाओं की सूची दी है।

(४) वि० सं० १६६६ में बादशाह द्वारा महावतखानों को राणा अमरसिंह के दमन करने हेतु भेजने का उल्लेख है।

(५) अन्त में वि० सं० १६६८ में सीसोदीया भीम द्वारा ईसाली लुटने इत्यादि घटनाओं के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है।

“समत १६६८ रा पौस सीसोदीया भींवजी गांव ईसाली मार नै निकळीया तरै राठीड लीपमण नारायणोत रा अमरो ………।”

इसमें महाराजा सूरसिंह की ख्यात की प्रतिलिपि पूर्ण नहीं है। प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है।

१. यह संकल ठीक नहीं है, देखें धोसा—जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड पृ० ३६४



### ४८. कछवाहों की ख्यात अथवा वंशावली

१. कछवाहों की ख्यात, २. रा० शो० सं०, ३. १३४६८, ४, ३४.५ × २५.५ सेमी०, ५. ६३, ६. ३०-३२, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में घटनाओं आदि का विवरण-त्रय इस प्रकार है—

#### (१) वंशावली :-

प्रारम्भ में एक दोहा दिया है फिर कछवाहों की वंशावली में आदि नारायण से सवाई राम तक ३०४ नाम अंकित हैं।  
दोहा—

रोहीतास मुं कालपी, नरवर मुं गवालेर ।

चौसे सैं कूरम विभू, आया फिर आवेर ॥१॥

(२) प्रस्तुत ख्यात की वंशावली के अनुसार २७१ वें राजा ईसरसिंह से सवाई रामसिंह तक के राजाओं और उनकी विभिन्न शाखाओं आदि का विवरण दिया गया है। ईसरसिंह से नरवर छूटने और सोढदेव का डूढ़ाड़ में अधिकार होने का उल्लेख इस प्रकार है—

“ईसरसिंघजी वृध पणौ जाण आपका वंश में राज सदा धिर रहै इसी सला वांमणां नै पूछी जद पिढतां अरज करी राज पुन्य कीयां आप तो स्वर्ग का भोग भोगवस्यौ और आपके पुत्र पोतां के राज पदवी निश्चल रहसी। जद आप फुरमायौ इसी दान पात्र कुण छै.....वांमणां नै तो परसराम को श्राप छै सो यां को राज रहै नही सु भांणजां नै दीजै, सो सास्त्र को लेख छै.....सो राज तो जयसिंघजी कंवर भाणोज नै संकलप कीयौ.....काती वद ६ संवत १०१३ के वरस पछै राज तिलक सोढदेजी नै हुवौ .....पछै सोढदेवजी के कंवर दूलेरायजी सो वानै समयवान जाण जयसिंघजी सोची विचारी जो अक राज में दो राजा पटे नही ..... सोढदेवजी मूं अरज करो— यो मामाजी साहिब माने राज पुन्य दीयौ.....राज माके राखवा की मरजी होय जद तो आप ई हद में मूं कूच कीजै .....पछै आप उठा मूं सांतर सरजाम कर बरेली की तरफ गाव निदरावली जा बैठा.....म्हाराज कंवर (दूलेराय) के बडगूजरां के भगड़ी हुवौ तीमे बडगूजर मारया गया .....पछै देवती को राज.....गूजरां को छो या पवर सुणो, उठा सुं फौज भेजी सो फेर चौसे भगड़ी हुवौ भीव कंवरजी की फत हुई.....राणा सोढदेजी नै लिपी..... अमल हो गयो छै.....पछै सुभ मुहरत दिखाया कंवरजी नै युवराज की पदवी दीवी .....गांव में मीणा को फितूर घणौ .....कंवरजी मूरछत हुवा तठै देवीजी

आय दर्शन दिया .....कंवरजी रं घाव आघा हो गया.....बोल्या कि कुलदेवी सुं  
 .... कंवरजी प्रसस्तुती करी देवीजी फुरमायो.....रण विजय होसी.... अठे  
 पारो राज होसी .... ई नाका में मारो मिदर बणायो.....कंवरजी चढ़ आया  
 मुणिया मीणां बडो आचरज मान्यो..... नाका पर देवीजी को मन्दिर बणाय पूजा  
 कराय अर मांची के डूंगर पर गढ़ बणवायो गांव को नाम रामगढ़ दीयो.....  
 रोढदेवजी काळवस हुवा, मीती महा मुद ६ संवत १०६३, राज कीयो वरस ४०  
 मास ३ दिन ११ .....पछे तिलक दूलेरायजी के हुवो.....।”

(३) राजा काकिल और हणुराय :-

दूलेराय के पुत्र काकिल का उत्तराधिकारी होने आदि घटनाओं का विवरण इस प्रकार है—

“काकिलजी राज पायो सो उमराव सिरदार कितराक तो गुवालेर भगड़ा में काम आया और कितराक जपमी छा सो भठे मुवा .....मीणा भाई सगां नै श्रेकठा कर जमी दाववा पर मन बघायो.....पछे भगड़ी करवो विचारियो (काकिलने) या बात मीणा मुणी भगड़ी हुवो .....हजूर के साथ लोग थोड़ा छा महाराज घायल होय मूरछा पाय पेत में पड़िया अर मीणां फतै समझ आप आपका घरां गया ..... माता.....दूध की बरपा करी सो हजूर चेतन हुवा .....आकास बाणी हुई.....घारी विजय होसी.....माता की आज्ञा भाफक जगां खुदाई सो महादेव की पिड निसरी तिकी शास्त्रों की पूजन प्रतिष्ठा कराय मन्दिर की नीव दिराई। आमेर की धूणी थापी। पछे उठे थाणा..... राय पोह पघारिया..... पछे मोरां सूं चहवाणां को टीकी आयी सो लैर उठे जाय ब्याह कियो.....भगड़ी हुवो (मीणां से वापस भगड़ा हुआ) मीणां बडगूजरां को मुंह फिरयो अर गढ़ की तरफ भागा.....कितनां ही दिनां पछे देवलोक हुवा मिति वँसाय बद १० संवत १०६६ में। राज कीयो वरस ३ महीना २ दिन १८। कंवर च्यार—हणुजी राजा हुवा, अलंधरायजी, देलणजी, रायपालजी। हणुतरायजी सो यां का राज में अमन चैन बडो रहयो। नई जमी दाबी नही। पछे काळवस हुवा मिति काति मुद १३ संवत १११० में। राज कीयो वरस १४ महीना ५ दिन ७, यां के बेटो एक जानड़देजी सो राज बँठो.....।”

(४) जानड़दे, पनवनजी और मलेसीजी :-

जानड़दे का उत्तराधिकारी होने राज्य में शांति रहने और वि० सं० ११२७ चैत्र सुदि ६ को देहान्त होने का उल्लेख है। उनके पुत्र पनवनजी संबंधी घटनायें इस प्रकार वर्णित हैं—

“पृथ्वीराज के काके कन्ह प्रथीराज नै पूछी जो वाई ब्याह लायक हुई सो कुण नै परणावणी…… डूढाड का राजा पनवनजी की रजपूती……घणी आछी छै अर आंपोरा सनमंदी छै सो या वाई वां जोग्य छै सो टीकी भेजी……विवाह कीयो । (आग्रह करने पर) चहुवाणां के सामिल रहया……।”

सोलंकीयों से युद्ध कर गुजरात पर अधिकार करने का उल्लेख है—

“काई वार भगड़ीं कीया पर घोड़ा उठाय सोलंकी नै मारयो और साथ का मार गया…… सोलंकी का सहर में जाय उठै साबित गुजरात मे अमल कीयो उठै थाणो वैठा आप दिली दापल हुवा सो प्रथीराजजी सामा आर ले गया……।”

पृथ्वीराज और मोहम्मद गौरी के बीच हुए युद्ध का वृत्तांत है। अनेक छप्पय दोहे उद्धृत हैं। राठीड़ों की फौज से लड़ते हुए मारे (पनवनजी) जाने का उल्लेख है—

“राठीड़ों का आदमी असी लाप दळ सूं भगड़ीं कान्ह करती हुवी घाव साठ लागा मूरछत हुवा … अर यानें साथ का लोग उठा लाया । पछै महाराज की स्वरग जावा की पन्नर सुण प्रथीराज केयो, छप्पय—

आज विधाता डिल्लड़ी, आज डुडाड़ अनत्थै ।

आज दिन प्रथीराज, आज सांवत बिन मत्थै……।”

उनके पुत्र मलेसी के उत्तराधिकारी होने और गागरोन के शासक की पुत्री के साथ विवाह करने और वि० सं० १२०३ फाल्गुन सुदि ३ को देहान्त होने का उल्लेख है ।

#### (५) बीजलजी छोटा माई सिधणजी और राजदेवजी :-

बीजलजी के भाई सोधणजी के वारे में (शादी) इत्यादि का वृत्तांत है फिर इसके निःसन्तान मरने पर मलेसी का पुत्र राजदेव उत्तराधिकारी बना इसके द्वारा आमेर में महल बनाने तथा वि० सं० १२७३ पौष वद ६ में देहान्त होना लिखा है ।

#### (६) केलणजी, कुंतलदेव और जोणसी :-

राजदेव के बाद उसका पुत्र केलण के उत्तराधिकारी होने, केलण पर बनवाने, वि० सं० १३३३ काती वद ६ में देहान्त होने, उसके पुत्र कुंतलदेव के उत्तराधिकारी होने और माघ वदि ६ संवत् १३७४ में देहान्त होने, उसके पुत्र जोणसी के उत्तराधिकारी होने और धाबू के राजा की पुत्री (देवड़ी) के माघ शादी करने और माघ वदि ३ सं० १४१३ मे देवलोक होना लिखा है ।

(७) उदैकरण, नरसिंह, वणवीर और उधरणजी :-

जैगसी के बाद उदैकरण के उत्तराधिकारी होने और फाल्गुन वदि ३ संवत् १४४५ को देहान्त होना लिखा है। फिर उसके पुत्र नरसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसकी मृत्यु पश्चात् (वि० सं० १४८४ भाद्रपद ५) वणवीर का उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है। इसके देहान्त (वि० सं० १४९६) आश्विन वद ११ बाद उस के पुत्र महाराज उधरणजी का राज्यारोहण होना लिखा है।

(८) चन्द्रसेन, पृथ्वीराज और भारमल और भगवंतदास :-

चन्द्रसेन के समय की कोई घटना का वृत्तांत नहीं दिया है, संवत् १५५९ फाल्गुन वद ५ देहान्त होना लिखा है। फिर उसके उत्तराधिकारी पृथ्वीराज के कृष्ण का भक्त होना लिखा है और उसके बाद क्रमशः भारमल, भगवंतदास का उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है।

(९) मानसिंह और भावसिंह :-

भगवंतदास के पुत्र मानसिंह के महाराणा प्रताप के साथ एक धाली में भोजन नहीं करने और रामप्रसाद हाथी नहीं देने पर दोनों के बीच युद्ध होने का उल्लेख है। प्रताप ने प्रतिज्ञा की—

“राणा नेम कियो जो 'आमेर भगड़ी कर नहीं जीतूँ जितने पाध बाधू' नहीं, अर धाल में जीमूँ नहीं अर पिलंग पर सोऊँ नहीं……।”

मानसिंह का अकबर की ओर से अनेक युद्धों में भाग लेने और कुछ काल्पनिक बातें आदि वर्णित है। मानसिंह के दक्षिण में रहते हुए वहा वि० सं० १६७१ आश्विन सुदि १० को देहान्त होना लिखा है।

मानसिंह के पश्चात् उसके पुत्र भावसिंह का उत्तराधिकारी होने व उसके कुंवर बद्रीसिंह का कुंवरपदे में देहान्त होना लिखा है।

(१०) जयसिंह रामसिंह :-

भावसिंह के निःसन्तान मरने पर महासिंह के पुत्र जयसिंह का आमेर राज गद्दी पर बैठने का उल्लेख है। शाहजहां के पुत्रों द्वारा विद्रोह करने पर जयसिंह को शाहजादा मुजा को दवाने हेतु भेजना, उसके जम्मू से भगाकर वहां धाना स्थापित कर दिल्ली लौटने, महाराजा का धीजापुर, धवाचोल आदि स्थलों पर अधिकार होने का उल्लेख है।

रामसिंह द्वारा आक्षाम में तथा काबुल में विद्रोहियों को दबाकर वहां बादशाह का अधिकार करने का उल्लेख है।

(११) विशनसिंह सवाई जयसिंह :-

रामसिंह के पौत्र विशनसिंह के उत्तराधिकारी होने, जाटों का दमन बादशाह के आदेशानुसार करने व दि० सं० १७४६ माघ सुदि ५ को देहान्त होने का उल्लेख है।

जयसिंह को 'सवाई' का खिताब देने का उल्लेख इस प्रकार वर्णित है—

“हजूर पातसाह सूं मिळिया, जद हजूर ने बालक जाण पातसाह हजूर का दोनूं हाथ पकड़ कही अब थाकी वळ कांइ जद हजूर बोलिया ओरत का पांवद एक हाथ पकड़ता है तींकी निरवाह करै छै सो म्हारा तो पांवद दोनूं हाथ पकड़या सो वळ को कांई प्रमाण। जद बादशाह बहोत राजी हुवी अर कहो उमर तो आ अर वात ईसी आछी करै छै, जद महरवान होय सवाई पणा रो खिताब दियो।

हजूर सूं अजीतसिंहजी आप री बंटी की सगाई करी, पछै दोनूं राजा के सला हुई पातसाह का पालसे किया भकान तो आपां लिया ही अब अजमेर व सांभर क्यूं छोडो छो सु जोघपुर सूं कूच कर अजमेर गया, उठै पातसाह को फौजदार छी तीसूं घड़ी च्यार भगडो हुवी पछै हजूर सूं आ मिळियो, सो हजूर सूं पांच रूपीया ले'र सांभर आय अमल कियो। पातसाह..... नारनोल का सायदां नै लियां आयी .....अर अठी सूं दोनूं राजा का घोड़ा .....सैयदां नै मार फतै करी .....।

पछै संवत १७६६ काती में आमेर सुं कूच कर अमरसरवाटी में होय त्रिवेणी संनान करीयो.....पछै संवत १७६६ काती में कुरूक्षेत्र जाय संनान करियो अर सोनो की भूमि वगैरह बहोत पुन्य कियो.....हजूर तालावन होय नरांणपुर को गड़ तोड़ आमेर दापल हुवा.....।

फौज भेळी कर कूच कीयो सो आगरा के नजदीक भगडो हुवी तामे फरक-सियर की फतै हुई सो दिल्ली आय तखत बंठो अर हजूर ने मिरजाई को खिताब दियो..... अर मालवा को सूबी लिप भैज्यो .....।

(जयसिंह) दिल्ली नै कूच कीयो सो रसता में तरांणपुर व्याह कर दिल्ली गया। हजूर पातसाह कनै जाय नजर करी.....पातसाह हजूर नै कही जाटों नै सर करी सो हजूर कूच कर कामां डेरा किया सो जाट पबराय .....।

संवत् १७८४ का माघमास के महीने सवाई जयपुर की नींव दियाई, सहर वगायो, महल बनायो.....पर महल तीन बड़ा जयसिंह का, बनाया बादल महल १, नगाव ताल कटोरो २, गोविन्दजी को महल चन्द्रमहल ३, बागजै निवास ५.....।”

अभयसिंह का जयपुर पर चढ़ाई करने का एक कारण इस प्रकार दिया है—

“जद नागौर में अभयसिंहजी मूँ छोटी भाई बसंतसिंहजी राज करै छौ सो दरवार कर फूलों की माळा तुरी याटी, जद ओरा तो सारा सुंगी, एक चारण छी जी भुंगी नही, जद बसंतसिंहजी पूछी वारटजी तुरी सुंगी क्यों नही ? जद वारट अरज करी महाराज नाक बिना की सुगु, नाक तो जयसिंहजी ले गया, जद आ बात मारां नै दूषी, जद बसंतसिंहजी जोधपुर ने लीपी—नाक तो जयसिंहजी लैर जाय छै सो आप जरूर चढ़ी.....।”

(१२) ईश्वरसिंह और माधोसिंह :-

जयसिंह के बाद उसके पुत्र ईश्वरसिंह के उत्तराधिकारी होने, उदयपुर राणा द्वारा माधोसिंह को जयपुर की राजगद्दी दिलवाने हेतु किये गये प्रयत्नों आदि का वृत्तांत दिया है। माधोसिंह के मराठों से और जाटों से युद्ध करने का वृत्तांत है। उसके बनाये भवन आदि का भी विवरण दिया है।

माधोसिंह के पश्चात् पृथ्वीसिंह और प्रतापसिंह क्रमशः जयपुर राजगद्दी पर बैठने फिर जगतसिंह का उत्तराधिकारी होने, महाराजा मानसिंह द्वारा जोधपुर पर चढ़ाई करने, फिर जगतसिंह की मृत्यु के बाद उनकी भतीयानी राणी द्वारा राज्य करने, फिर अन्त में सवाई रामसिंह के राज्य-काल का वृत्तांत दिया गया है। मृत्यु के वारे में लिखा है—“संवत् १८३७ भादवा सुद १४ आधी रात पछे दोय वज्यों आसरै महाराज रामसिंहजी देवलोक हुवा।”

ग्रंथ के अन्तिम भाग में सवाई जयसिंह का वृत्तांत विस्तार से किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। घोड़ों की चिकित्सा संबंधी कृति भी ग्रंथ के अन्त में दी गई है। कछवाह राजाओं के वृत्तांत के अतिरिक्त कुछ विभिन्न गांधों के ठाकुरों की वंशावलिषां भी दी गई है। यह ग्रंथ कछवाहों के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंदा हुआ है।

### ४६. उम्मेदसिंह हाडा की ख्यात

१. उम्मेदसिंह हाडा की ख्यात, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १८८४०, ४. ४३.६ × १५.३ सेमी०, ५. १३२, ६. ३२-३६, ७. वि० सं० १६३०, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इस बहीनुमा ख्यात में बूंदी के महाराज उम्मेदसिंह हाडा के शासन-काल (वि० सं० १७८६-१८३३) का विस्तार पूर्वक वर्णन दिया है जिसमें मूलतः अपने पौरिक राज्य बूंदी को प्राप्त करने हेतु किये गये प्रयत्नों का वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः महाराजधिराज महाराज राजा श्री उम्मेदसिंहजी की चरित्र राजा वष्या जद सूं लैर संवत १८३३ ताई की अहवाल ई रीत जाणियो सो लप्यो छै, संवत १६३०।

महाराजधिराज महाराजा श्री बुधसिंहजी की महाराजाजी श्री चोंडावतजी बेघूँ का ज्याका महाराज कुमार श्री उम्मेदसिंहजी की जन्म संवत १७८६ का असाढ़ सुद १४ उपरांत सनीसरवार मुकाम जैपुर के नजीक गांव पोहोरी भट राजाजी के जठे मुकाम छी उठे जन्म होयो ...”

प्रस्तुत ग्रंथ में अंकित महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) महाराज बुधसिंह की मृत्यु के पश्चात् बालक उम्मेदसिंह का बेगूँ में राज्यभियेक तथा उस समय कोटा बूंदी की राजनैतिक स्थिति का विवरण।

(२) वर्णित है कि उस समय बूंदी पर दलेलसिंह का अधिकार था (तारागढ़ का किलेदार सालमसिंह का पुत्र) सवाई जयसिंह ने बुधसिंह को हटा कर इसको (दलेलसिंह) गद्दी पर बैठाया था।

(३) जयपुर नरेश सवाई जयसिंह की मृत्यु के पश्चात् उम्मेदसिंह द्वारा बूंदी पर अधिकार करने हेतु किये गये प्रयत्नों का उल्लेख है।

(४) सवाई जयसिंह द्वारा जोधपुर पर और अभयसिंह द्वारा बीकानेर पर की गई चढ़ाईयो का विवरण दिया है। फिर लिखा है कि जयसिंह और अभयसिंह के बीच मनमुटाव हो गया था अतः उम्मेदसिंह ने अमैसिंह से सहायता मागी पर उसे मदद नहीं मिली।

(५) वर्णित है कि गुजरात के सूबेदार फकरदौला (फखरुद्दीन) की मदद से उम्मेदसिंह ने बूंदी पर चढ़ाई की, दलेलसिंह हार कर भाग गया।

“दलेलसिंह सू आपर बूंदी छूटी”

(६) उदयपुर के महाराणा द्वारा अपने भानजे माधोसिंह को जयपुर की राजगद्दी दिलाने हेतु मराठों से सहायता लेने व जयपुर पर चढ़ाई करने का वृत्तांत ।

(७) बूंदी पर मराठों का आक्रमण व ईश्वरसिंह के विष पान कर मर जाने तथा माधोसिंह के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख ।

“राजा ईसरीसिंहजी नै जहर केसीदास पत्री बरस संवत १८०६ में दे मारयो जी घाटे सूवेदार जैपुर चड़ि आयी संवत १८०७ का पौस में राजा ईसरी सिंहजी नै भी जैहर ही पायो सो मुवा ।”

(८) बूंदी पर पुनः दलेलसिंह का अधिकार होने पर उम्मेदसिंह द्वारा मराठों आदि से सहायता लेने और उसका बूंदी पर फिर से अधिकार होने पर ब्राह्मणों को भोज आदि देने का उल्लेख है—

“संवत १८०५ का काती सुद १३ सनीसरवार रावराज उम्मेदसिंहजी महाधीराज बीर तपबळी अवतार म्हा प्रतापीक बूंदी का राज के तपत राज महेल……  
…… विराजीया……राजा बुधसिंहजी का तप को फळ सत्य संकळप हुवा ।”

(९) उम्मेदसिंह द्वारा बनाये गये भवन निर्माण कार्यो इत्यादि का वृत्तांत है ।

(१०) प्रधानों को हाथी पालकी आदि देने का वृत्तांत है ।

(११) राज्य का कार्यभार अपने पुत्र अजीतसिंह को सौंपने का उल्लेख है । आगे अजीतसिंह के राज्यकाल की कुछ घटनाओं का विवरण अंकित है ।

अन्त में लिखा है कि उम्मेदसिंह नै चार विवाह किये जिनमें से दो रानियों के नाम दिये है ।

अन्तिम भाग—

“राणीजी श्री उदावतजी राणेश का ठाकुर बपतसिंहजी की बेटी पोती संभुसिंहजी की पड़पोती जगरामजी पड़पोती जगरामजी की नांव कुंनणकंवर व्याव समत १८२१ वैसाप सुदि १ दिन पर……।”

अन्त का संभवतः एक पत्र लुप्त होने से ख्यात अपूर्ण हैं । ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है । लिखावट अशुद्ध है व काट छांट भी काफी है । अन्त के पत्र एक और से खण्डित है । ग्रंथ पर गत्ता नहीं है ।

महाराव उम्मेदसिंह कालीन बूंदी और मराठों के राजस्थान की राजनीति में दखल के अध्ययन हेतु यह ग्रंथ उपयोगी है ।



### ५०. कवित्त, वात संग्रह आदि

१. वात, कवित्त संग्रह आदि, दुरसा आढा, वारट आसा आदि, २. रा० शो० सं०, ३. २३१, ४. ३० × १६.५ सेमी०, ५. ६६, ६. २१, ७. वि० सं० १७६४ (ई० सन् १७३७), ८. भैरू दास, ९. राजस्थानी देवनागरी, १०. इसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृतियों का संग्रह है। प्रारम्भ में कुछ कवित्त गीत आदि इस प्रकार अंकित हैं :—

(१) कवित्त राठौड़ भोपत गोपालदासोत रो :—

प्रारम्भ—

रिण हजाद गज रूप बांध पैडी घट वैहड.....।

(२) गीत सुरजमल जंतमालोत रो (आढा दुरसा कृत)

(मान चहुवाण मारियो तिण साप रो)

प्रारम्भ—

आफळी अप्रम सुवार अठारं कंस मार वाका करे ।

सबळा भीच भीम सुरजमल मानं जुरासिध नै हैजम रे ॥१॥

आगे पारसी के १२ महिनों का उल्लेख है ।

(३) अशोइणी मानं फौज :—

अशोहिणी सेना का विवरण इस प्रकार अंकित है :—

१ पत रो मानं	२ सेना रो मानं	३ सेना मुख	४ गुल्म रो मानं	५ व्याइनी रा भात
हाथी १ रथ १ घोड़ा ३ पाळा ४	हाथी ३ रथ ३ घोड़ा ६ पाळा १५	हाथी ३ रथ ६ घोड़ा २७ पाळा ४५	हाथी २७ रथ २७ घोड़ा ६१ पाळा १३५	हाथी ८१ रथ ८१ घोड़ा २४३ पाळा ४०५

६ पतना मानं	७ चमु मानं	८ मनी कना	९ अशोणी	
हाथी २४३ रथ २४३ घोड़ा ७२६ पाळा १२१५	हाथी ७२६ रथ ७२६ घोड़ा २१८७ पाळा ३६४५	हाथी २१८७ रथ २१८७ घोड़ा ६५६१ पाळा १६३५	हाथी २१८७० रथ २१८७० घोड़ा ६५६१० पाळा १०६३५०	सब संख्या २१८७००

१८ अक्षोणी महाभारत आवटीयो—

हाथी ६३६६०

रथ ६३६६०

घोडा ११८०६८०

पाळा १६६८३००

कुल — ३६३६६००

10977

914192

(४) राव जोधाजी रो बात :-

यह वार्ता जोधा के गया यात्रा से प्रारम्भ होती है ।

प्रारम्भ—

“राव जोधाजी गमाजी रो जात पधारिया उठै आगरा रो पापती नीसरीया तरै राज करन राठोड़ कनवज रा घणी नुं राव जोधी मिळीयो तरै राजा करन पातसाह जी सूं गुंदरायो .. आदि ।”

एक प्रशस्ति गीत दिया है फिर जोधपुर दुर्ग बनवाने का उल्लेख है आगे सातल सूजा और गांगे का विवरण है । फिर मालदेव का वृत्तांत आ जाता है पहले उसके द्वारा बनाये विभिन्न किले कोटडियां इत्यादि (भवन निर्माण कार्य) का वृत्तांत है कुछ गढ़ों का उल्लेख भी है । यथा—

“श्रीवांगो राज बीरनारायण पंवार रो करायो सं० १०७७ गढ़ मांडीयो, पछै गढ़ चहुआणों रै आयो सं० १३६४ सातल सोम नु मारनै अलावदीन पातसा लियो पछै राव माला रै हुआँ .. आदि ।”

७ कवित्त राव मालदे (वारट आसा कृत) के लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

कवण किसन पति सबळ काळ प्रति कवण अगंजित

पृथीपति कुण बाण पत सुरपति कवण .. आदि

राव मालदेव ने जैसलमेर पर आक्रमण किया उसका हाल पत्र लुप्त हो जाने से अपूर्ण है ।

(५) लोद्वे जैसलमेर की वार्ता :-

जैसलमेर की संक्षिप्त रूपरेखा अंकित है ।

प्रारम्भ—

“लुद्वो जैसलमेर कन्है सून्ही छै पंवार भाण रो बैसणो । जैसलमेर जैसल तथा पछै वसायो छै .. लुद्वो पंवार लोद्वा रहता पछै भाटी देवराज देरावर यकै

१६० : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

पंचारां नुं मारनै लुद्रवी लियो, कितरायक पाट भाटीया रै राज रियो । रावल भोजदे उपर तुरकां री फीज भाई तरै भोजदे साको कर भूओ .....  
माहि महेसर भोजदे लुद्रवी कैलास ।  
अए वढीयो अप्रपं नही बाप तणौ अ्रवास ॥

पछै रावल जैसल लौद्रवी पाड़ नै जैसलमेर वसायो संवत १२१२ सांवण वद १२ ।”

इसी प्रकार अजनेर और मंडोर स्थलों का विवरण दिया है । (पत्र-३)

(६) बात सातलमेर री :-

इसमें सातलमेर के कुछ शासकों का वृत्तांत है फिर मानदे का यहां अधिकार होने का उल्लेख है ।  
प्रारम्भ—

“सं० १५३० राव गोयंद रै टीकै बँठी सुं वरस ५२ राज कीयो, बड़ ठाकुर हुवौ । १५८२ गोयंद काळ कीयो राव जैतमाल टीकै बँठी सुं रावल री वेटीं परणीयो..... मालदे १६०७ काती माहे.....गड़ धेरीयो .....जैतमाल जैसलमेर गयो, राव मालदे सातलमेर पाड़ नै सं० १६०८ पोरकरण री कोट करायो .....आदि ।”

(७) ऐतिहासिक बातें :-

इसमें से कुछ बातें प्रकाशित हो चुकी है । बातों का केवल यहाँ नापोल्लेख किया जा रहा है ।

राव रिड़मल री बात, अखैराज रिड़मलोत री बात, राव बूंडा री बात बात एक सोजत रै प्रबंध री, बात रांणा सांगा री, बात लाखे री. बात राव मान अचला पंचाइणत री बात, बात जसवंत तिलोकसियोत री कूंपावत री, बात जैतसी कूंपावत री, बात मांडण कूंपावत री, बात देईदास जैतावत री, बात राव.वंदतन री, बात रायसिंह री, बात महाराजा उदयसिंह मूरसिंह री, गजसिंह री बात, सिवाणे गड़ री बात, भाटी राव कैलण रै कोट री विगत आदि । इन बातों के विवरण हेतु देखें, ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० ।  
पुष्पिका—

“लिपंत भंरूदास, लिपाई कंवर श्री अप्रसिधजी, लिपी चारण री पोथी मांदि सुं ।”

यह ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ में लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है। पत्र बहुत जीर्ण मटमैले रंग के हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

### ५१. खेजडला माताजी की निसाणी तथा अचलदास खोची की बात

१. खेजडला माताजी की निसाणी तथा अचलदास खोची की बात, २. रा० मा० सं०, ३. ३२८०, ४. १६ × २१ सेमी०, ५. १०६, ६. ६-१७, ७. वि० मं० १८०६-११, ई० सन् १८४६-६०, ८. प० पृथ्वीराज इत्यादि, ९. संस्कृत, राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ के १२ पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है, ग्रन्थ का प्रारम्भ 'नीनीजी के जाने मामिया दूहों' में हुआ है—

बैसापे बन मोरिया मोरया मतकार।

विरह ज रावै कोयली मुझ घर नहीं भरतार ॥१॥ (पत्र-१)

#### १. खेजडला माताजी की निसाणी :-

प्रस्तुत निसाणी में खेजडला ग्राम की देवी का गुणगान किया गया है।

प्रारम्भ—

खेजडले थान भवानी हंदा नगर कोट दीपदा है।

मय देवा वंदन गवरी नंदन मूंडाला सोहंदा है ॥

अन्तिम भाग—

गैही सुमती मी बीनती पांताजाद धरंदा हंड।

नीमाणी गघर माम कवेसर भवानी भणंदा हंड ॥ (पत्र-३)

#### २. अचलदास खोची की बात :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ६०,२८ में वर्णित है। अन्त में लिपिकार ने पुष्पिका दी है पर यह किमी अन्य व्यक्ति द्वारा मिटाई गई है। (पत्र-२१)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में अनेक जैन रचनार्ये इत्यादि संकलित है।

ग्रंथ अपूर्ण है। यह अनेक व्यक्तियों के हाथों से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ के कुछ पत्र नुत्तित हैं और पत्र चिपक जाने से अक्षर पढ़ने में असुविधा होती है। लिपि सुवाच्य नहीं है। इसमें एक रंगीन चित्र सम्भवतः किसी जैन तीर्थंकर का चित्रित है।

ग्रंथ धार्मिक मान्यताओं के अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी है।

### ५३. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५७३, ४. ३० × २१ सेमी०, ५. १७५, ६. ३२-४७, ७. वि० सं० १८१२, ई० सन् १७५५, रोहित

(मारवाड़), ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में बैताल पच्चीसी के दोहे इत्यादि लिपिवद्ध है, इसके अतिरिक्त कुछ बातें, कृतिया आदि वर्णित है जो कि सर्वेक्षित ग्रन्थ ग्रंथों में आ चुकी हैं। इनके अतिरिक्त निम्न कृतियाँ अध्ययन योग्य हैं—

- (१) दाढ़ाझा री वार्ता
- (२) सदैवच्छ री वार्ता
- (३) गुण विवेकवार री निसाणी
- (४) चंद कुंवर री वार्ता
- (५) रिसालु रा दूहा
- (६) उदयपुर री गजल
- (७) राठौड रतन महेशदासीत री वचनिका
- (८) जलाल गहाणी री वार्ता
- (९) राजा भोज री पनरमी विद्या
- (१०) रिसालु कंवर री वार्ता

(क) बैताल पचीसी :-

यह बैताल पंचशक्तिका का राजस्थानी गद्य-पद्य में अनुवाद है। मिलावें ग्रंथांक २१४३, रा० प्रा० वि० प्र०।

(ख) महाराजा अजीतसिंह री कवित्त :-

ग्रन्थ में १०६वें पत्र पर जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह के दाह-संस्कार से सम्बन्धित कुछ कवित्त लिपिवद्ध है।

इन कृतियों के अतिरिक्त अनेक जैन कृतियाँ भी इसके साथ लिपिवद्ध हैं। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है। लिखावट ठीक है पर कापज चिपक जाने से और खण्डित हो जाने से कहीं-कहीं पढ़ना असम्भव है।

ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। पत्र काफी जीर्ण मटमैले रंग के हैं।

### ५४. फुटकर गीत वार्ते इत्यादि

१. फुटकर गीत वार्ते इत्यादि, खड़ीया जगा आदि, २. रा० शो० सं०, ३. ८३७, ४. ३० × २३ सेंमी०, ५. १२८, ६. २८-४२, ७. वि० सं० १८११-१४, ई० सन् १८५४-५७, सांचोर, ८. रामचंद्र, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. गीत जैतसिंह चांपावत रौ :-

प्रस्तुत गीत आजवा ठाकुर कुमालसिंह के पुत्र जैतसिंह चांपावन का है। पिता-पुत्र दोनों ने जोधपुर घराने की अनेक सेवायें की तदुदरान्त महाराजा विजयसिंह द्वारा जैतसिंह चांपावत को मरवाने इत्यादि का वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

“दल्नी मत्ता राखसी मेना फँलसी……आदि। (पत्र-१)

२. राठीड़ रतनसिंह महेशदासोत उजोण खेत काम आया तिएरी वचनिका :-

यह ग्रन्थांक ६३४, रा० शो० सं० के राठीड़ रतनसिंह की वचनिका के समरूप ही है। इसमें न केवल रतनसिंह की वीरता का ही वर्णन है अपितु युद्ध में लड़े हाथियों, घोड़ों, राजपूत वीरों की भी प्रशंसा की गई है। अन्त में रतनसिंह के युद्ध खेत में वीरगति प्राप्त होने का उल्लेख किया है।

प्रारम्भ—

गणपत्त गुणो गहीर गुण मुहग दांन गुण देषण  
सिधि बुधि रिधि सधीर सुंठाळा देव सु प्रसन्न ॥१॥ (पत्र-६)

३. राव श्री रिडमलजी बात :-

प्रस्तुत बात मलिनाथजी के पौत्र व रावल जगमालजी के पुत्र रिडमलजी की है। प्रारम्भ में रिडमलजी एक सौदागर से नवलखे घोड़े को प्राप्त करने, उनके भाई भारमल का एक सोड़ी से विवाह, सोड़ी का रिडमल से लगाने, आगे भारमल रिडमल और नवलखे घोड़े का वृत्तांत चलता है। वार्ता रोचक बनाने के लिए बीच-बीच में दोहों का प्रयोग भी किया गया है। (पत्र-३)

४. जलाल गहांणी री बात :-

यह प्रेम-कथा गजनीपुर के बादशाह कुलनसीब के अत्यन्त सुन्दर एवं बहादुर पुत्र जलाल और थट्टा भखर के शानक मृगतमायची की पत्नी बूवना की है। बात के बीच-बीच में सोरठों, दोहों का भी प्रयोग किया गया है। (पत्र-७)

कपडे की जिल्द में बंधा सुन्दर ग्रन्थ है। ग्रन्थ के बीच में कई पत्र खाली हैं व कई पत्रों पर रेखाचित्र इत्यादि बने हुए हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ में लिपिबद्ध हुआ है।

५५. वार्ता संग्रह इत्यादि

१. वार्ता संग्रह इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. ३३५६, ४. १५ × १३ मेमी०, ५. ८४, ६. १३-१५, ७. संवत् १८२७, ई० सन् १७७०, आणंदपुर,

८. देवीचंद, ९, राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ माताजी की स्तुति से हुआ है ।

प्रारम्भ—

देवी सेवी कोड़ कल्याण करे, देवी दीठां दीठ दोहीग दूर हरे ।  
दीवी पूज्यां पुन्य नंडार भरे, देवी मीमरयां सगळा काज सरं ॥१॥

१. राजा रिसालू री बात :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ३४३ में वर्णित है । वार्ता पूर्ण है । (पत्र-१५)

२. सिंघासण बत्तीसी

इसमें धारानगरी के राजा भोज की ३२ वार्ताओं का संकलन है ।

प्रारम्भ—

“मालदेस धारानगरी राजा भोज करे पांचिस पीडत पा सेर है धनपाल माघपिडत कालीदास प्रमुख..... इत्यादि ।”

३२ पुतलियां राजा भोज को पृथक्-पृथक् वार्तें सुनाती हैं । ३२ पुतलियों के नाम इस प्रकार दिये हैं—(१) विजीयादेवी (२) जयंती (३) अपराजीता (४) जय घोष (५) मांजु घोषा (६) लीलावती (७) जैवती (८) जय सेना (९) मदन सेना (१०) ..... (११) मदन मंजरी (१२) सिंगार कली (१३) रित प्रीयाः (१४) नरमोहनी (१५) भोगनीषा (१६) प्रेमावती (१७) सृप्रेमावती (१८) चंद्र-मुखी (१९) अनंगघजा (१०) कुरंग नयना (२१) लावन बती (२२) सौभाग मंजरी (२३) चंद्रका (२४) हंसगमनी (२५) विद्यातप्रली (२६) आनंद प्रभा (२७) ससिकंता (२८) रूपकता (२९) देव प्रीया (३०) देव नदी (३१) पदमावती (३२) चंद्रावती ।

अन्तिम भाग—

“राजा भोज सिंघासण बैठी, घणै दिन राज भोगव्यो, घणा उपगार कीया, घणो जस हूवो, एहवो राजा भोज हूवो ॥ इति श्री सिंघामण बत्तीसी संपूर्ण । समद १८२७ वर्ष मिति कांता सुद ९ आणंद पूनम मध्य लिपंत चेला देवी चंद स्वयं वचनार्थ । ग्रंथ नीति और राज्य-व्यवस्था हेतु उपयोगी है । (पत्र-६६)

३. जगदेव परमार री बात :-

ग्रंथ के अन्त में जगदे पंवार की वार्ता (मिलावे प्रथाक २३६) है जो अपूर्ण है । (पत्र-५)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पर जिल्द नहीं है। ग्रंथ के प्रारम्भ के ४६ और अन्तिम के कुछ पत्र लुप्त हैं।

### ५६. फुटकर बातें दूहे इत्यादि

१. फुटकर बातें दूहे इत्यादि, २, रा० शो० सं०, ३. २७६, ४. २०.५ × १५.५ सेमी०, ५. १०५, ६. १७, ७. वि० सं० १८२८, ई० मन् १७७१, ८. रिधविजय, राम सागर, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संकलित वार्ताओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

#### १. वीरमदे सोनगरे की बात :-

प्रस्तुत वार्ता जालोर के शासक कान्हड़दे के पुत्र वीरमदे सोनगरे की है जो एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। कान्हड़दे का अप्सरा से विवाह व कुमार वीरमदे का उत्पन्न होना, कुमार के घावदाव विद्या में प्रवीण होना तथा अलाउद्दीन के यहाँ रण चातुरी में प्रसिद्ध होने पर घादशाह की पुत्री द्वारा कुमार से विवाह की इच्छा प्रकट करना, तदुपरान्त वीरमदे द्वारा विवाह खर्च के नाम पर प्रचुर धन लेकर जालोर दुर्ग के निर्माण के साथ मुद्ध की तैयारी करना तथा कुछ घटनाओं के बाद वीरमदे द्वारा आत्मघात तत्पश्चात् शहजादी का सती होने का वृत्तांत है। बात तत्कालीन संस्कृति पर प्रकाश डालती है।

बात के आखिर में संवत् १३०० में जालोर बसाने, सं० १४१६ में गढ़ की नींव देने तथा सं० १४३७ में बादशाह का किले पर अधिकार होने का वृत्तांत है।

(पत्र-३०)

#### २. जलाल गहांगी की बात :-

प्रस्तुत बात ग्रंथांक ८३७, रा० शो० सं० से मिलती जुलती है, कुछ पाठ-भेद अवश्य है तथा उससे सुवाच्य है।

(पत्र-३४)

#### ३. बीजा सोरठ की बात :-

यह सांचोर के राजा जयचंद की मूल नक्षत्र में पैदा हुई पुत्री सोरठ और बीजा की प्रेम-कथा है। सोरठ को चांपा कुम्हार द्वारा पालने व एक बनजारे के साथ शादी करने के पश्चात् सोरठ और बीजा का प्रेम होने, उसके बाद सोरठ के राव खंगार तथा नवाब के वासना का शिकार होने पर भी बीजा के प्रति प्रेम बना रहने का वृत्तांत है।



गुजरात व राजस्थान की संस्कृति पर हममें अच्छा प्रकाश पड़ता है।

(पत्र-२०)

#### ४. ढोला रा ब्रह्म :-

ढोला और मारू की प्रेम-कथा से सम्बन्धित ३५६ दोहे शृंगार, सौन्दर्य तथा विरह के दिये गये हैं।

प्रारम्भ—

बीजळीयां भवकुयां ग्रामं आमं च्यार।

जाय मळैसी मजना लांवी वांह पसार ॥११॥ (पत्र-३१)

ग्रंथ पर गता नहीं है। अन्तिम कुछ पत्र गायब हैं तथा लिपि सुवाच्य है।

#### ५७. फुटकर बातें, गीत, प्रेम-पत्र इत्यादि

१. फुटकर बातें, गीत, प्रेम-पत्र इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २६०,  
४. १८ × २४ सेमी०, ५. ३४, ६. १३, ७. वि० सं० १८२६, ई० मन् १७७२,  
८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ऐतिहासिक बातों का विवरण-क्रम  
इस प्रकार है—

#### १. बीजा सोरठ री बात :-

प्रस्तुत बात ग्रंथांक २७६ के समरूप है। यहाँ केवल प्रारम्भ दिया जा रहा है—

“सांचोर नगर तठै रायेंजा रायचद देवड़ी राज करै।

तिण रै मूळ रै पाबै पैहल पुतरी रोजंम(जन्म) होवी……।” (पत्र-६)

#### २. जलाल गहाराणी री बात :-

प्रस्तुत बात ग्रंथांक ८३७ के समरूप है। प्रारम्भ का भाग नहीं है। बातें अपूर्ण हैं। अन्त में लिपिकर्ताने लिखा है—“स० १८२६ रा आसोज वद ८ लिखणी सरू कीवी मु आसोज वद १४ संपुरण।” (पत्र-६)

#### ३. दिल्ली रा पातसाहां रा नांव :-

तैमुरलंग से आलमगीर तक दिल्ली के वादसाहों का नामोल्लेख है।

(पत्र-१)

#### ४. उदयपुर रै सिसोदियां रा नांव :-

खीबमी से रांणा हमीरमिह तक सिसोदिया राजाओं की केवल नामावली दी है। (पत्र-१)

५. राठौड़ों का नाम :-

बिलाडा, मेडता, कन्नौज, पाली तथा मडोर में शासन करने वाले विभिन्न राठौड़ राजाओं के नाम अंकित हैं। (पत्र-२)

६. आंबेर जंपर का कछवाहां का नांव :-

भीमसिंह से सवाई पृथ्वीसिंह तक के जयपुर के राजाओं की वंशावली दी है। (पत्र-१)

७. बूंदी रं हाडां का नांव :-

प्रारम्भ से उम्मेदसिंह तक के हाडा राजाओं का उल्लेख है। (पत्र-१)

८. भाटी जंसलमेर का नाम :-

महारावल जंसलदेव से महारावल अखंसिंह तक के राजाओं का उल्लेख तत्पश्चात् राजा दशरथ की वंशावली से सम्बन्धित एक कवित्त दिया गया है।

९. गीत महाराजा विजयसिंह री (चारण साहबदांत कृत)

जोधपुर के शासक विजयसिंह का प्रशस्ति-गीत है।

प्रारम्भ—

थाणी हेत मै किलाणकारी हर री देषते ..... थाप  
वीजी बोय चैत में बंवाणो, घणी बँस ..... ॥१॥

१०. गीत महाराजा अजीतसिंह री (अज्ञात कर्तृक) :-

प्रस्तुत गीत जोधपुर के शासक अजीतसिंह की प्रशंसा में है।

प्रारम्भ—

सबळ कीयो आरंभ पारंभ गोकळ सकळ  
गढ़ी आडो गढ़ां लंण गाजै ..... ॥१॥

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में एक प्रेम-पत्र तथा पृथ्वीराज रासो से सम्बन्धित २४ दोहे लिपिबद्ध हैं। ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। कुछ पत्र खण्डित व लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। सांस्कृतिक अध्ययन के लिए ग्रंथ उपयोगी है।

५८. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५५५, ४. २८ × २०.२ सेमी०, ५. १७४, ६. २८-३०, ७. वि० सं० १८२७-३१, ई० सन् १७७०-७४,

कंटालिया, पीपलिया, ८. केदार चंद, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रथम पत्र पर गणेशजी का रंगीन चित्र अंकित है। प्रथम कृति माधवनल चौपाई (कुशल लाभ कृत) लिपिबद्ध है। ऐतिहासिक कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. मोहन कुमार री वार्ता रा दूहा (कवि जान कृत) :-

मोहन कुमार की प्रेम वार्ता से सम्बन्धित १२० दोहे संग्रहीत हैं।

प्रारम्भ—

आदि आगोचर अलप प्रभु निराकर

करतार देनहार जो सकल तन रचन हार संसार ॥१॥

अन्तिम भाग—

जोलुं मोहन मोहन मोहनी जीयै इह संसार

एक अंग संग हीर है स्वकंध पीन प्यार ॥६॥

सोरेह सै सौराणवै होय अग्रहन सुद वार

पँहर तीन में या कथा कीन्ही जान विचार ॥२०॥

पुष्पिका—

“इति थी कवि जान कृत मोहन मोही कथा संपूर्ण।” (पत्र-२१)

२. जैतसी उदावत री वार्ता :-

वार्ता के प्रारम्भ में पीपाड के स्वामी सेखा और नागौर के दौलतीयाखान द्वारा जोधपुर के शासक राव गांगा पर आक्रमण करने और उसमें राव गांगा के विजयी होने का उल्लेख है। चौहान शासक पत्ता द्वारा राजा सूंडा को बलि के रूप में चढ़ा देने पर जैतसी उदावत द्वारा बदला इत्यादि लेने का वृत्तान्त वार्ता में दिया है।

प्रारम्भ—

“संवत १४६६ रा भाद्रवा सुद ४ राव सुजोजी री जन्म संवत १५४८ रा राव सुजोजी पाट बँठा……अथ वारता—राव गांगोजी जोधपुर राज करै सेपोजी पीपाड राज करै, तरै धरती रै वेध राजा असेसे उपरा। नागौर दौलतीयाखान पातसाही करै……।”

अन्तिम भाग—

“इसी भांत जैतसीजी सेपा सुजावत कनै वर ओढ नै वर काडियो, संवत १५७६ रा आसोज सुदि १० वार सोम रै दिन वर काडियो……।” (पत्र-५१)

३. पनरमी विद्या राजा भोज री वात (भवानीदास कृत) :-

प्रस्तुत वार्ता राजा भोज की पन्द्रहवीं विद्या अथवा त्रिया-चरित्र के ज्ञान की कथा गद्य और पद्य में है।

प्रारम्भ—

श्री गणपति सरसती सीव त्रिमुखी गुरुदेव  
व्यास करै दोस प्रभु दीर्ज अक्षर भव ॥१॥

वार्ता प्रारम्भ—

“राजा भोज बडो राजा दांनवंत, सतवंत, साहसी प्याग त्याग निकळंक  
नुपै राज करै छै । एकए दिन राजा नै माड़ा मात वरस की पनोती आई ..... ।”  
(पत्र-११३)

४. अकल री घात :-

मिलावें ग्रंथांक ३५४६, रा० प्रा० वि० प्र० ।

प्रारम्भ—

“गऊवरी नंदन वंद कै धम वंद मग्सति ..... ॥१॥ (पत्र-६३)

५. सदैव वछ सावलिगां री वात :-

मह वही वार्ता है जो २०५(३) ग्रंथांक इ वर्णित है ।

प्रारम्भ—

“पोह पावती नगरी छै राजा सालिवाहन राजा राज करै छै प्याग त्याग  
निकळंक छै ..... ।” (पत्र-१३)

६. गोरा बादल री वारता कवित्त दूहा :-

यह मेवाड़ की सुन्दरी रानी पद्मिनी की प्रसिद्ध वार्ता गद्य-पद्य में है ।

प्रारम्भ—

चरण कमळ चित लाई कै समरां सरसति मांय ।  
कहसुं कथा बणाइ कै प्रणमुं सद गुर पांय ॥१॥

पुष्पिका—

“इति श्री गोरा बादल री वारता संपूर्ण ममास लिपंत चेना केसरचंद  
अणंदपुर मध्ये ।” (पत्र-५३)

७. चंद कुंवर री वार्ता :-

मिलावें ग्रंथांक १०६४(३), रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

समर सरसति मांय, गणपति देव के लागुं पांय  
परतापसिध की आम्मा कीनी कथा रसक कवि राय ॥१॥

(पत्र-२३)

८. लापा फुलांगी की वार्ता :-

इस वार्ता में लाखा फुलानी द्वारा अपनी यहिन पेमकुंवर की शादी पाटण के राजा बीभू से करने, फिर बीभू को मारने पर इसका बदला राव सीहा द्वारा लाखा फुलानी को मार कर लेने का उल्लेख है। वार्ता के बीच में दोहे भी दिये गये हैं। वार्ता का प्रारम्भ एक गीत से किया है जिसका विषय इस प्रकार दिया है—

“प्रथम तो गीत सेतरांमोत की लापाजी नै मारीया तिण समा की—

सुध मन जाति चालियो सीही सेत सुतन ले बहु साज  
मूल राजा नाळेर मेलीयो …… ॥१॥

अथ वात—

पाटण में सोलंपी राज करै राज नै हंस दोग भाई हंस की बेटो बीभू राज की बेटो मूल सो बीभू एक दिन सिकार चढ़ियो …… ।”

पुष्पिका—

“सवत १८२६ वर्षे जेष्ठ वदि १४ दिने पिपलीया ग्रामे लिपंत ऋषि केसरवद लीपी कृत …… ।” (पत्र-३)

९. बीरभदे सोनगरे की वार्ता :-

मिलाने ग्रंथोक २७६(१), रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

“गड जालोर सोनगरौ वणवीर राज करै छै वणवीर रै कंवर २ हुवा बडा कंवर की नाम कानड़दै छोटी राणगदै …… ।” (पत्र-५१)

१०. रामदास की वार्ता :-

यह राव रिङ्गमण के प्रपौत्र रामदास की वार्ता है। इसमें वर्णित है कि उसके ८४ आसड़ी (प्रतिजायें) थी (१. रुपा की चाळी विण जीमण की आपड़ी, २. जेठी मद की दातण करणो बीजा दातण की आपड़ी …… इत्यादि ।) जालोर के सामन भीखा बुढण की स्त्री महेची द्वारा रामदास से आग्रह करने पर उसके द्वारा भीखा बुढण की सांडिया लूट ली जानी है और उन सांडियों को चारणो इत्यादि को दान कर देता है।

प्रारम्भ—

“रावजी श्री रिङ्गमणजी रै पुत्र राठीड वंराजी पुत्र राठीड रामदासजी गांव दूधवड पेडा की थापना कीधी छै, बडी एक आपड सिध रजपूत हुवो जिएनु ८४ आपडी हूती …… ।

भीया बुढण जाळोर राज करे तिए रै सांडीयां हजार ५००० पंच रहे छै, भौक ५ तथा ७ छै । सो बाई महेची भीया बुढण नै परणाई थी तिका एकण दिन रै ममाजोग भीया मुं चीपड़ रमती थी, भीया रौ दाव मरसो दोठी तर-बोली—जे डाव पई तो रामदास बंरावत री आण छै... (भीये नै पूछ्यो—रामदास कौन है?) हमारा भाई छै बडा रजपूत..... । (भीये ने कहा), हम उसको देखेग। हम चाई चार भाट मेलिया ... ।”

अग्निम भाग—

“३०० घर ऊडां रा छै ... हजार दो सांडीयां, दोघो अ-तलविगिचियायो, ... ठाकुर सोई पधारीया सारौ साथ भुंजाइ अरोभीया, पछे ऊडां तलाव पिणीयो, मर भरीयो, मेळी भरीजण लागी मं० १५५५ नै ।” (पत्र-२)

इसके अतिरिक्त अनेक अतऐतिहासिक महत्वहीन कृतियां लिपिवद्ध है । नामिकेत की कथा की पुष्पिका मे लिखा है—“सवत १८२७ वर्ष वंसाप वदि १० दिने लिपंन ऋषि केमरचंद कंटालीया ग्रामे लिपो कृत ठाकुर राज श्री संग्रामसिधजी राजे ।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । लिखावट सुन्दर है । कहीं-कहीं लिखावट मे लाल स्याही का प्रयोग किया गया है । पत्र मटमैले रंग के हैं । ग्रंथ पर कपडे का गत्ता मंडा हुआ है । ग्रंथ साहित्यिक व सास्कृतिक दृष्टि से उपयोगी है ।

## ५६. वात संग्रह इत्यादि

१. वात संग्रह इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २१४, ४. २२.५ × १६ सेमी०, ५. २२, ६. १६, ७. वि० सं० १८३३, ई० सन् १७७६, जालोर ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ मे मंकनित महत्वपूर्ण वाताश्रितों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. गंगेव नीवावत रौ दोपारौ :-

यह एक सुन्दर गद्य काव्य है जिसमें खीची वंशीय नीवा के पुत्र गंगेव की ओर उसके साथियों की एक दिन की दिनचर्या का वृत्तान्त है ।

उत्तर मध्यकालीन राजपूत सामंतों के आमोद-प्रमोद, खान-पान, रहन-सहन तथा वेगभूपा इत्यादि पर अच्छा प्रकाश डाला है । इसका गद्य अलंकारिक व स्यातरमक है । सांस्कृतिक अध्ययन के लिए यह कृति बड़ी उपयोगी है । (पत्र-६)

१७२ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

२. अचलदास खीची की बात :-

गागरेण गढ़ के शासक अचलदास खीची बात ग्रंथांक ६० के समरूप है ।  
(पत्र-१०)

ग्रंथ में प्रारम्भ के ६ पत्र खाली हैं । लिपि सुवाच्य है ।

### ६०. बात संग्रह

१. बात संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १०६४, ४. १२ × १३.५  
सेमी०, ५. १६३, ६. ८, ७. वि० सं० १८३८, ई० सन् १७८१, बघनोर ग्राम,  
८. प० जीवगमल, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. डाढला भूंडण की बात :-

यह इस ग्रंथ की प्रथम वार्ता है, प्रथम पत्र फट जाने के कारण वार्ता कुछ  
अधूरी है । यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक २१६ में वर्णित है । यहाँ वार्ता का कुछ  
अन्तिम भाग दिया जा रहा है—

“.....भूंडण सत कीयो वैकूंट घांम हुई चार चीलरां काम आया । इतरी  
बात संपुरण सं० १८३८ रा लिपतु पं० जीवगराम लीपी ।” यह बात प्रतीकार्थक  
है और मध्यकालीन वीर भावना तथा संस्कारों को प्रकट करने वाली है ।  
(पत्र-५४)

२. अचलदास खीची की बात :-

यह प्रेम वार्ता वही है जो पहले वर्णित है । यहाँ केवल इसका प्रारम्भ और  
अन्तिम भाग दिया जा रहा है ।

प्रारम्भ—

“अचलदास पीची गढ़ गागण राज करै । घणी अचलदास खीची तीणरै  
मेवाड़ी पट राणी छी .....आदि ।”

अन्तिम भाग—

“रामत पुरी करनै पधारी । अचलदासजी बोलिया—थे तो माने हार साटे  
बेचिया छी तरै मालांजी नै रीम आई । था मुं घरवास कोई नहीं..... ।” पत्र  
श्रुति होने से वार्ता अपूर्ण है ।  
(पत्र-३४)

३. चांद कुमार की वार्ता :-

यह चांदकुमार की एक प्रेम वार्ता है जो कुछ पत्र गायब होने के कारण  
अपूर्ण है । वार्ता यहाँ से प्रारम्भ होती है—

प्रारम्भ—

“.....चंद्रायणो । एक दिन चंद कुमार आयडै हालीयो, राजाजी को साथ सब संग चालायो.....आदि ।”

वार्ता गद्य-पद्य में है इसमें प्रेम, शृंगार के अनेक दोहे संकलित हैं, यथा—

प्रीन कीया दुप उपजै, प्रीत करौ जिण कोय ।

ए दिल जिण सुं वाधिया, ते नीरवाउ होय ॥४२॥

फूल फूल भमरौ फीरै, सब ही कुं सुप दे है ।

बहु नायक मधुकर भयो, बाधौ किण सुं नेह ॥४३॥

अन्तिम भाग दूहा है—

जोधवस जुग-जुग जीवौ, घणौ बधौ पीरिवार ।

नांम धरयो प्रताए नै अरथ गुण को सार ॥६६॥

पुष्पिका—

“इ० श्री चंद कंवर री ता० संपूर्णः सं० १८३८ रा भादवा सुद ११ ली० पं० जीवगमल गांव वधनोर ।” (पत्र-२६)

४. चौथ माता री बात :-

यह एक राजस्थानी व्रत-कथा है इसमें वर्णित है कि व्रत कब क्यों करना चाहिए तथा करने से लाभ क्या है ।

प्रारम्भ—

“एक दिन पंडा वास गता साथ सुंदुर वार कीया बैठा था । तरै श्री किसनजी मराज पधारिया तरै राजा जूजसटल उठ नै सामे आयो श्री ठाकुरां रै पगे लागी परकमां दे नै डंडोत कीनी, .....इण वरत सुं कुण उधरियो, किण नै फळ दाता हुई किण विघ वरत करै छै सो कहौ, तरै श्री किसनजी कहै छै..... किसन पप में चौथ आवै छै सो वरत कीजै छै । तिण दिन परभातै उठ नै दांतण सिनांन कीजै । पछै सेवा कीजै.....आदि ।” (पत्र-२०१)

५. महाराजा अजीतसिंह री सिलोको :-

प्रस्तुत सिलोका काव्य महाराजा अजीतसिंह और मुगलों के संघर्ष से सम्बन्धित है ।

प्रारम्भ—

“कहुं सिलोको सुणजी इण काजी

राज अजमल री वपाणु राजी

महाराजा बैठा जाळोर मांहे

पतसा श्रीरंगा रै नला घारू मांनौ.....आदि ।”



१७४ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

प्रथम भाग—

मतरै इक्यामो गांवण मामो  
कीयो धजमन इन्द्र लोक वामो  
छाज अजमन सीलोको छाजै  
वाजा जोधामो इवचल वाजै ।”

६. सनीसर नै बोकमांदिस्त रो घात :-

प्रारम्भ—

“एक दिन रै समोया रै वीर्य

मुरग लोक रै वीर्य

नव ग्रह भेडा हुवा तरै माहो मांहे जगर (भगड़) वा लागो पछै भगरता  
भगरता श्री इंद्र माहाराज कनै गया । श्री इंद्र माहाराज कहां—हुंती जाणु, नहीं।  
ये मोत लोक रै वीर्य उभाणी नगरी छै तठै वीर वीरमादित राज करै छै सो  
महा न्याई ... सो थे उठै जावौ.....आदि ।”

प्रस्तुत वार्ता अपूर्ण है ।

(पत्र-१७<sup>१</sup>)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । ग्रंथ पर कागज  
का गत्ता हुआ है । पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है । लोक मान्यताओं का इसमें अच्छा  
दिग्दर्शन है ।

६१. वात संग्रह आदि

१. वात संग्रह आदि, २. रा० शो० सं०, ३. २५६६, ४. १५.५×  
१४.५ सेमी०, ५. ५६, ६. १३-२२, ७. वि० सं० १८३६-४६, ई० सव  
१७८२-८३, आणंदपुर ग्राम, ८. चेला मलुकचंद, ९. राजस्थानी, देवनागरी,  
१०. प्रारम्भ के ५ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है । ग्रंथ इन निम्नलिखित पंक्तियों  
से प्रारम्भ हुआ है—

“नास एत सवे दुपटानी, कल्याण भवते सदा ।  
कीसनेन भापते पूर्व, देव देव प्रकीर तता ॥”

ग्रंथ में निम्नलिखित ऐतिहासिक वार्तें संकलित हैं—

१. अचलदास खीची रो वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक ६० से समरूप है ।

२. रिडमल खावड़िया रो वात :-

(पत्र-१८)

प्रस्तुत वार्ता ईडर के राव रणमल, उसके भ्राता भारमल और सोडी राणी  
की है । वार्ता के बीच-बीच में प्रेम के दोहे भी दिये गये हैं ।

प्रारम्भ—

“मांडुगढ गोरी पातसाह राज करै ताहरा बिलाघत रै पातमाह नुं मांडु रै पातिसाह री रसाळ जावै, तरा मांडु रै पातसाह मांणस दोय वुलाया' . . . . ।”

अन्तिम भाग—

घर घर रळी बधावणा हूवो महले चाव ।

गावै मंगळ गोरडी आयो रिङ्गमल राव ॥

सोडी उमरकोट री रिणमल पावड राव ।

घास बीढ गावीयी पायो ताप पसाव ॥१०४॥ (पत्र-१५)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में चार युग, गणेश छंद, दस दोप, होम विधि, सप्तवदी, श्राद्ध विधि (क्रिया कर्म), हरियाली (उपदेश) इत्यादि रचनायें संकलित हैं ।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । ग्रंथ पर ऊपरी गत्ता नहीं है । ग्रंथ अपूर्ण है ।

## ६२. वीर गीत, कवित्त तथा बात संग्रह आदि

१. वीर गीत, कवित्त तथा बात संग्रह आदि, दुरसा आढा, पूरा महियारिया, बारट राईपाल, ईसर मालावत, पृथ्वीराज राठीड़, केशवदास गाडण आदि, २. रा० मो० सं०, ३. ८२४०, ४. १८.८ × १३.५ सेमी०, ५. १५७, ६. ३७-४८, ६. १८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ के पत्र कुछ गायब हैं । प्रारम्भ में ही ज्ञान, उपदेश सम्बन्धित कुछ दोहे कवित्त दिये गये हैं । ऐतिहासिक कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. गीत सुरताण देवडै रौ (बारट दुरसा कृत) :-

यह गीत सिरौही के सुरताण देवडे की प्रशंसा मे है ।

प्रारम्भ—

कोली करि मांग तिजारी कमधज

गुड़ धूमाणी गाळवीयी' . . . . . ॥१॥

२. गीत हाथो गोपालदासोत रौ (दुरसां आढा कृत) :-

प्रारम्भ—

कावेज दिली धकिस नची कामणी

पांण गहै पेपतै पाथ' . . . . . ॥१॥

३. गीत वीठलदास चांपायत रौ :-

प्रारम्भ—

वीरा रम मंत कहर मुति ठणीया  
हुवि वन सघण महादळ हीच..... ॥१॥

४. गीत हाडा दुरजनसिघ रौ (पूरा महीपारिया कृत) :-

प्रारम्भ—

गयी माल सोवां तणी राव राजा गहिण  
सिपायां रिजक गां विसाहू सार..... ॥१॥

५. गीत राठौड़ रामसिघ करमसेनोत (गाडण केसवदास कृत) :-

प्रारम्भ—

मंगल राजा हुआ, हुआ मंत्री पिण मंगल  
सुक्र हर सप्राधिपति हुश्री पीड़ण महिमंडलार.... ॥१॥

६. कविस राणे कूर्भे रा (बारट राईपाल कृत) :-

प्रारम्भ—

पंचतत कीयौ पिड मही चक्कवै सुसठी  
लाटी आण फिरत धम्म धय मुघट निघटी ..... ॥१॥

७. गीत सुरतान देवड़े रौ :-

प्रारम्भ—

सुरतान जुतै घमसाण कीया सत्र  
चोळ थई रिण मास चरि ... .. ॥१॥

८. गीत राव अमरसिघ रौ (ईसरदास के पौत्र कृत) :-

प्रारम्भ—

निसह डूबीयो पडंती जूँजू अनडां नड़ण  
जवन दळ सरिस बळ दापि जम रा ..... ॥१॥

९. गीत डूंगरपुर रौ सीसोदियों रौ :-

प्रारम्भ—

अनि किण हीन दीन्हौ थानिक आगै  
जुड़ि जीमणि एह वीजु गति .... ॥१॥

१०. गीत राठौड़ हरीदास रौ (ईसर मालावत कृत) :-

प्रारम्भ—

वरा रंभ आवा परा सोक वांण वहै  
सीह रौ छराद परा सये' .... ॥१॥

११. गीत राठीड़ रांमसिध कल्याणमलोत री (पृथ्वीराज राठीड़ कृत) :-

प्रारम्भ—

सरणाई चरण वपाएँ सुबदोह  
मन जोगी जीहा अमर ..... ॥१॥

१२. गीत राठीड़ महेसदास दलपतोत री :-

प्रारम्भ—

सिधां साधिकां सहै ती अषाई सोहीयी  
राग सीधू वजै पाग रीठी ..... ॥१॥

१३. गीत रा० ईसरदास नींवावत री (दुरसा कृत) :-

प्रारम्भ—

करणहरा पेपे दिनकर  
पल कारण हूंकळीया पलचर.... " ॥१॥

१४. गीत दलपत रायसिधोत री कांम आपी तिरण समै री :-

प्रारम्भ—

जीवी आसाएणंद रतनु कहै—असि पूठ फणाला जीण उतरै  
जरद मरद वप हूंत जूआ ..... ॥१॥

१५. गढ़ मांडियां री विगत नै जोधपुर महाराजाओं की पोटियां :-

इसमें कुछ दुर्गों के निर्माण की तिथियाँ इत्यादि दी गई हैं, आगे जोधपुर के शासक राव जोधा से जसवंतसिंह प्रथम के जन्म, राज्याभिषेक और देहावसान होने की तिथियाँ अंकित हैं, जो अन्य रूपातों से मिलती जुलती हैं।

१६. कवित राव चूंडा रं बेटां री :-

प्रारम्भ—

रिणमल रावां राव, सतो हरचंद पटेतर  
राउत गुर रिणधीर..... " ॥१॥

१७. गीत राव रिणमल रं बेटां री :-

प्रारम्भ—

जोधे कांधिल जिता, लंपा चांपा लीलायति,  
जैतमाल जगमाल, सांडो रूपी हापी सति..... ॥१॥

१८. गीत राव अमरसिध री :-

प्रारम्भ—

मृत अक्सरि चूक हूओ राव मामू  
पोद सरिस वधीयी जुघ वेस..... ॥१॥

१७८ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

१६. गीत राजि भी बलकरनजी रो (ईसर के पुत्र कृत) :-

प्रारम्भ—

अणी रा भमर मोहसर अगर जोरावर  
वारवर अडर करिवर विसेये..... ॥१॥

२०. बात पातिसाही सोबां रो :-

बादशाही विभिन्न परगनों की आय का व्यौरा इस प्रकार दिया गया है—

॥ परगना ४२०६ सिरकार १५२ सोबा २१ तिणरा दांम ८७००००००००

दाम प्रति रु १) २१८०

दांम	परगना	सिरकार	आसामी
१०६०००००००	२६८	१४	सोबो अकबराबाद १
६३६८००००००	३१४	५	सोबो लाहौर २
७८२०००००००	२३०	८	सोबो जहनाबाद ३
२०७५५००००००			वडी सोबो दक्षण ४
६८६१००००००	७६		विरहानपुर ५
६३५००००००००	१६१		बराड ६
४४६००००००००	१०३	३	पांन देस ७
२६५४०००००००	४३		तिलांगाणी ८
२०००००००००		२	बुगलांगो ९
३८८८०००००००	२६०	१६	सोबो इलाबास १०
५३५८०००००००	१६०	७	सोबो अजमेर ११
५३५८०००००००	१६०	६	सोबो अहमदाबाद १२
२८३२०००००००	१६०	५	सोबो अजोध्यापुरव मे १३
६०१००००००००	३४६	२१	सोबो जंडा सोजगनाथ १४
४५५००००००००	११०	२७	सोबो बंगालो १५
३८३२०००००००	२४४	८	सोबो बिहार १६
६२३०००००००	५४	४	सोबो थटो १७
७६८०००००००	१५	०	सोबो पंधार १८
१४०२०००००००	४६	०	सोबो कासमीर १९
१३०६०००००००	३५	०	सोबो काबिल २०
४६८५०००००००	२५१	२१	सोबो उजेणी मालवो २१
२६५६०००००००	४६	४	सोबो मुलताण २२

२१. गीत रावल तेजसी महेयचे त्रुी (केसवदास गाडण कृत) :-

प्रारम्भ—

भिएणीय डगढ़ गुफा ज वद में मेघल

गेडेची पत्र जोग परे ..... ॥१॥

२२. महाराजा जसवंतसिंघ रँ परगनों रँ दांम नँ रूपयों रो विगत :-

इसमें महाराजा जसवंतसिंघजी के विभिन्न परगनों की आय इस प्रकार दी गई है—

दांम प्रति ह० १) रा ४० लेये—

दांम	रूपया	ग्रासांमी
१४७२५०००	३६८१२५	परगना जोधपुर
१४००००००	३५००००	परगनो मेड़तो
८००००००	२०००००	परगनो सोजत
८००००००	२०००००	परगनो जंतरण
३००००००	७५०००	परगनो सिवाणो
२७०००००	६७५००	परगनो फलीधी
८०००००	२००००	परगनो पोकरन
११५०००००	२८७५००	परगनो जालोर
१००००००	२५००००	परगनो रेवाड़ी
५०००००	१२५००	परगनो गजसिंघपुरो
६६६६५६६	२४६६१४	परगनो उर्जण
७३०००००	१८२५००	परगनो देपालपुर
१०००००००	२५००००	परगनो बघनोर
६३७६०००	२३४४००	परगनो नागौर री पटी
१०६६६७५६६	२७४७४३६	इतरौ पाधी
१०२४३४	२५६५	तलम रहै
११०१०००००	२७५०००४	

सांसण रा गांव छै तिलारी विगत—

गांव	रूपीया	आसामी	गांव	रूपीया	आसामी
१२४	२३६७०	जोधपुर	४७	२३७००	मेड़ती
३३	२६१००	सोजत	१८	१०२००	जैतारण
३०	४५५०	सिवाणो	६	२४५०	फलीधी
२३	५३५०	जालोर	५	१५३०	बबलि

२८६ ८७८५०

२३. अकबर बादशाह सं० १६३६ जेठ असाढ़ में जागीरी दीधी रूपईयां मांहे तिलारी नकल :-

अकबर ने विभिन्न परगने जोधपुर शासको को दिये उसका हाल इस प्रकार है—

मोटे राजा नुं रूपयों में	राजा सूरसिध रूपयों में	राजा गजसिध रूपयों में	जसवंतसिध रूपयों में	आसामी
१५३६७५	१६६१२५	२५३५७५	३६८१२५	जोधपुर
—	२०००००	३०००००	३५००००	मेड़ती
—	६८५०७	१२५०००	२०००००	जैतारण
१२५०००	१२५०००	१५००००	२०००००	सोभत
३७५००	३७५००	६२५००	७५०००	सिवाणो
—	६७५०००	६७५०००	६७५०००	फलीधी
—	२८७५००	२८७५००	२८७५००	जालोर
—	१४०००	१४०००	२००००	पोकरण
—	—	—	१२५००	जगसिधपुरो

२४. महाराजा जसवंतसिधजी री जागीरी सं० १७१० रा :-

वि० सं० १७१० में महाराजा जसवंतसिह प्रथम के विभिन्न परगने घोर उसमें गांव थे उसकी आय का झ्योरा इस प्रकार अंकित है—

दाम	रूपया	आसामी	गाव
१३७४१०००	३४३५२५	जोधपुर	११००
१४००००००	३५००००	मेड़ती	३८३
१०००००००	२५००००	जैतारण	१४४
६००००००	१५००००	सोभत	२४६
३००००००	७५०००	सिवाणो	१४६

२७०००००	६७५००	फलीघी	६२
८०००००	२००००	पोकरण	७७
५०००००	१२५००	गजसिधपुरी	५
११७०५०००	२६२५२५	रेवाडी	३८६
६८०००००	१७००००	उदेही	१४०
१०००००००	२५००००	मलारणा	१५५
७६२४६००	१६८११५०	११	२८४७

२५. गीत घंरसी जगमालोत री :-

प्रारम्भ—

घंरागर गंव विपूणा वाली  
पंथ वाली लाणा.....घोरी ॥१॥

२६. गीत राजा सूरसिधजी री (दुरसा कृत) :-

प्रारम्भ—

श्री घली ही हूळं फल हलं सावळा  
उरम द्वै हेमरां वगतरा उजळों ' .... ॥१॥

२७. गीत सुरतांण देवड़ा री (दुरसा कृत) :-

प्रारम्भ—

जोयो राव सह रांण केकांण नित जा कीयो,  
अवर दुनियांन नन कोई एहड़ी..... ॥१॥

२८. बात पातिसाह फिरोजशाह री :-

प्रस्तुत वार्ता दिल्ली के बादशाह फिरोजशाह और एक ब्राह्मण मल्लू की है। इसमें वर्णित है कि मल्लू चोरी किया करता था उसे बादशाह ने तुर्क बना कर उसका नाम मल्लूखां रख दिया और पांच हजार का मनसब देकर उसे अपना दीवान बना दिया। आगे मल्लूखां और फिरोजशाह के पुत्रों का वृत्तांत चलता है।

प्रारम्भ—

“बडो दिल्ली पातसाह हुवो चीतां हिरणां री जिनावरां री हिकमत सिकार री सारी ही पेरोजसाह चलाई। सो फिरोजशाह पातसाही भोगवै, तिए समै री बात छै। दिल्ली पाइतपत मांहे एक बोमण कमला पति गरीब आदमी रहै छै। तिए रै बेटो एक मल्लू हुमो सु माहा उपाधी.....।”



२६. बात पातसाह बहलोल री :-

प्रस्तुत वार्ता लोदी वंश के शासक बहलोल लोदी व उसके वंशज सिकन्दर लोदी तथा इब्राहीम लोदी की है। इसमें बतलाया गया है कि बहलोल ने किस प्रकार दिल्ली पर अधिकार किया।

प्रारम्भ—

“कुतबखास नुं जसरथ पोपर झालियो बीजा घणा पठाण हजार ५००० ती उठै भारीया। बीजा सीनद उपर जाई कचोबचो सको पठाणां री मारियो……।”

आगे लिखा है—

“पातिसाही कसवा खूटण मांडीया…… पातिसाह नुं एवर हुई पठाए आया, पातिसाही फौज सांम्ही मेल्ली वेढ १ सीहनद कन्है हुई तठै पठाणे वेढ जीती महमुंद री फौज भागी……पठाणा री माटीपणी दिन पाघरी देपि घणी लोग बहलोल भेळी हुयो। महमुद वळे बीजी फौज मेली तकौ दिल्ली था कोस ४० सांम्हा आया तठै वेढ हुई, महमुंद री आ ही फौज भागी, तरै तो घणी लोग आय भेळी हुआ……महमुंद भागी सो कठी ही नुं गयो। बहलोल आणि दिल्ली री कोट लीयो……।” (पत्र-१)

३०. दिल्ली रा तपत राजा पृथ्वीराज चहुवांण पछै पातिसाह हुआ तिएणं ज वरस मास दिन पहर घड़ी तपत बैठा तिए री बात :-

प्रस्तुत वार्ता दिल्ली में पृथ्वीराज चौहान के बाद राजा सिंहासनासीन हुए उन राजाओं के नाम, किसने कितने वर्ष मास दिन राज्य किया उसका व्यौरा दिया गया है। यह वार्ता किसने कब लिखवाई इसके बारे में भी लिखा है—

“तपत बैठा तिए री बात उकील मनोहरदास संवत १७२१ रा थांवण वदि १ लिपाई।”

यह घांकड़े रफी उदरजात तक दिये हैं और मुलतान मुहम्मदसाह का केवल नाम ही लिखा हुआ है।

३१. जोधपुर सो कंधार नुं मुलताण रं पंडे री राह :-

इसमें जोधपुर से कंधार और मुलतान कितना दूर है और जाते समय कौनसे बड़े शहर आते हैं वर्णित है।

प्रारम्भ—

“जोधपुर सुं ६० कोस बीकानेर, बीकानेर सुं कोस ४० पूंगल। पूंगल सुं कोस ३० मरोट विचै पांणी नहीं। मरोट सुं २६ किरोहर। किरोहर सुं ३६ कोम मुलताण छै। मुलताण सुं कोस ५०० कंधार छै सु मुलताण सुं कोस ३६

हाजीखान री दरों छै..... "हाजीखान री देश थी कोस ३० चची छै छोटा सो सहर चचा थी कोस ३ तठै पठाणां री घरती ..... ।" (पत्र-३)

३२. बात बलक रा पातिसाह री :-

प्रस्तुत वार्ता प्रदेश बलक व उसके बादशाह की बहुत संक्षेप में है भागे इस देश से विभिन्न आस-पास के शहरों की दूरी दी गई है ।

प्रारम्भ—

"उजव कघणी । चकता बलग माहै रेत छै । कहै छै बलक री ठकुराई घोड़ा हजार २८०००० री छै । तिण माहै बळे बलक बुपारी जुदा हिमे से हुमा ।" (पत्र-३)

३३. बात कुंकण देस री :-

वार्ता इस प्रकार है—

प्रारम्भ—

"त्रांबक परै कुंकण देस छै जिका घरती फरसरामजी समुद्र कहै मांगि लीघी । कोस १२० गोदावरी था समुद्र पाछी गयो तिको कुंकण देस कहीजै छै तठै चावल कोदू .. "उड़द घणा नीपजै छै, बडा पांन नाळेर सोपारी मिरच एलची जायफळ रा हंप घणा छै ।" (पत्र-३)

३४. बात बिजापुर री पातिसाह री :-

यह वार्ता बहुत संक्षेप में है ।

प्रारम्भ—

"घोड़ा हजार ४००००० री तो इणरै मूळगी साहबी हुती नै दौलताबाद साहिजहा लीयो तद भीवरा नदी सीव की । ... " पातिसाह पुरसाणी छै..... ।"

आगे एक जगह लिखा है—

"बिजापुर परै कोस ६० कृष्ण गांगा नदी छै तठै करड कोल्हापुर सहर छै तठै परसराम री श्रवतार हुवो छै..... ।"

३५. बात बूदेलां री घरती री :-

प्रस्तुत वार्ता मुहता नैणसी की ख्यात के समरूप है ।

३६. बात गोलकुंडा साहिबी री :-

प्रस्तुत वार्ता गोलकुंडा शहर की संक्षेप में है ।

प्रारम्भ—

"पातिसाह कुतबीक होवै छै, जात मुगल पुरसाणी छै, घोड़ा ४०००० री साहिबी छै, बुरहानपुर सुं कोस ३०० दौलताबाद सुं कोस २००१ गोलकुंडों देस

१८४ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

भावनगर सहर छै तठै थडो कोट छै दोली पाही .....सं० १७४४ रा पातिसाह औरंगजेव गोलकुंडो लीघी गोलकुंडा रै पातिसाह नूँ अघरात री सूते नुं पकड़यो ।”  
(पत्र-५)

३७. गढ़ मंडियां अर फुटकर घटनाओं री विगत :-

इसमें सबसे पहले अकबर के आगरे में वि० सं० १६६२ देहावसान होने फिर उसके वंशजों के गद्दीनशीनी होने, देहावसान होने के संवत् व कुछ घटनाएँ वर्णित है आगे ही शहर, दुर्ग कब किसने बनाये वर्णित वर्णित है, यह सामग्री अन्य रूपातों में भी मिलती है ।

३८. गांगेव नौबावत री बेपारो :-

प्रस्तुत वार्ता वही है जो ग्रंथांक २१४, रा० शो० सं० में वर्णित है । पर यह उसके समरूप नहीं है, काफी पाठ-भेद है ।

प्रारम्भ—

“श्रावण भाद्रवै री संधि री वरपा रिति मंडी वरिपा अति मंडी । दोही बीजां भड़ लाया । डाली डाली अंवर चमकिया..... ।”

सांस्कृतिक अध्ययन के लिये वह वर्णन उपयोगी है । (पत्र-३)

३९. जलाल गाहाणी री वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता पहले आ चुकी है देखें ग्रंथांक ८३७, रा० शो० सं० । भाषा में अन्तर है ।

प्रारम्भ—

“समंरि पतिसाही थटै रोझां-अगत-माईची पातिसाही लोग बैठे, तिर्य भान री पित्र याई भाई गोह नु भामरी बहिन परणाई ..... ।” (पत्र-८३)

४०. कवित्त उमादे सती रा :-

प्रारम्भ—

“गोर हरे राजि गिरे चिहु दिसि सू उक चाडे ।  
मेदपाट चीतोड़ भली जोषपुर भमाड़े ॥”

४१. दूहा श्री कृष्णजी रा (राठौड़ पृथ्वीराज कृत) :-

प्रारम्भ—

“दंडवत करै दुवारा नरै जुठर घसीया नहीं  
ताय सिरजिया संसार, विसहर वसुदे रावउत ॥१॥”

४२. घात पाटण अणहलवाड री :-

प्रस्तुत घाता इग प्रकार वर्णित है—

“मूल श्री गांव वनराज चाउडें घासीयो । संवत ८०२ वैशाख सुदि ३<sup>१</sup> रोहिणी नक्षत्र घा पाटण री ठोड़ अणहल गोपालीधे वनराज नुं दिपाई । आगे पाटण री पापती आपती कोई सहर वमती, गुजराती लोग तिको दूर करिने आवू री नलहट्टी री लोग वगियो तिण बेळा री लग्न..... ।

पाटण में राजा मिहामनागीन हुए उन राजाओं के नाम, किसने कितने समय राज्य किया संक्षिप्त है—

वरम	मास	दिन	आगांभी
६०	६	—	वनराज
१०	—	—	जोगराज
१३	—	—	रानदीत
१०	—	—	वरमिध
२६	—	—	पंमराज
१३	—	—	चावडराज
२०	—	—	गुंडराज
२८	—	—	भोउवा वाज चावडौ सं० ६४८ मास ६

पाट ८ चावड़ा बैठा तठा पछे सोलकी जंतारण गंगा थी जात्रा आयी थी तिण नुं चावड़ै परणायी तिणरै धेठे मूलदेव राज लीयो—

(चालुक्य वंश)			
५८	६	—	मूलदेव सोलंकी सं० ६८७ राजे बैठी
१३	—	—	चावडराज
६	—	—	श्री वल्लभ
१७	—	—	दुर्लभराज
३७	—	—	भीमदेव निगमुत
३०	—	—	करण देव
४६	—	—	सिधराज जंसीघदे
३	२	—	जयपालदे

१. नैगमी की श्यात्र (भाग ३, पृ० ४६) में पाटण की स्थापना सं० ८५२ श्रावण सुदि २ गुरुवार को होना लिखा है ।



१८६ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

३	—	—	भोली भीमदेव मूलदेव री
३१	—	—	लोहडी भाई
२	१	—	कुमार पाल संवत् ११४८ वाली मूलदेव

पाट ११ सोलंकीए पाटए भोगवी तथा आगे वाघेले धरती लीवी—  
(वाघेला वंश)

२०	—	—	वाघेलो बीसलदेव
२५	—	—	अर्जनदेव
२३	—	—	सारंगदेव
३	७	३	गहिलो करणदेव

वरस ७१ मास ७ दिन ३ वाघेलां री पाट ४-पाटण रही तथा आगे तुरकाणी हुआ

४५	—	—	सुलतान कुतब ततार पान सं० १३०८
३१	—	—	फरेपान
२३	—	—	मुदफर
३४	—	—	अहमद सुलतान जिण अहमदाबाद वसायी सं० १४०७
२०	—	—	सुलतान कुतबी
१०	—	—	दाऊदपान
५८	—	—	महमद
२४	१०	२५	मुदफर
२२	—	१७	सिकंदर
१०	—	—	वहादर
२५	—	—	महमद
१८	—	—	मुदफर सं० १६११
३५	—	—	अकबर पातिसाह
२२	—	—	जहांगीर
२३	—	—	साहजहा औरंगजेब

४२. सद्यवच्छ साबलिगा री वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता पहले आ चुकी है देखे ग्रंथांक २१६, रा० शो० सं० । यहाँ केवल प्रारम्भ दिया जा रहा है—

प्रारम्भ—

“न्याव सुतारा निरवहण सुगण करै सिरजाम ।  
सावलिगा सुदास रिस, तेण भवंत रिताम ॥

वार्ता—

“पूर्व भव सुगण महातमा री जीव मुजाणसिघ 'पंचोली । संदयदवछ री-  
जीव मनोहर सूत्रवी, सावलिग री जीव रूपमती स्त्री छै.....आदि ।” (पत्र-८)  
४४. दूहा रामचंद्रजी रा (राठौड़ पृथ्वीराज कृत) :-

प्रारम्भ—

“पिडं ब्रह्मंड पलोय आसा जुग सीरकरि  
किसव भलो न कोय दाव न दसरथ देवउत ॥१॥”

४५. ओसवालों री जाति री विगत :-

इसमें ओसवालों की ३६४ जातियाँ का व्योरा दिया गया है जो कि ग्रंथांक ५६६ से मिलता जुलता है ।

४६. वात सिघसेन राठौड़ री :-

वार्ता की जानकारी के बारे में लिखा है—

“सोळंकीयां री भीर करि लापे फूलांगी मारीयो । हिमै लापो जाम थटै  
वसै अर आपरै नगर पाई तपत राज करै । सूरजि री वरदान हुतौ । आगे सोलंकी  
सहर तोडे राज करता पछै चाउडां कन्हा सोलंकीये पाटण ली छै तिका वात  
विस्तार सुं कही छै ।

हिमै सोलंकीयां चाउडां सुं चूक कर राज लियो तिण समै री वात कहै जु  
पहली सु पहले सोलंकी तोडे राज करता । सु सोलंकीयां री नाम राजा न बीजै री  
नाम बीज २ वेड भाई धरणी घोरी थका । तोडे रहै सु द्वारिकाजी री जात सु  
हालिया ..... ।” (पत्र-५)

प्रस्तुत ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । लिपि के  
अक्षर छोटे हैं, कहीं-कहीं पढ़ने में असुविधा होती है । ग्रंथ के बहुत से पत्र गायब  
हैं । ग्रंथ जीर्ण होने के कारण पत्र ग्रंथ की जिसद से अलग हो रहे हैं । ग्रंथ पर  
गत्ता नहीं है । उपरोक्त कृतियों के अतिरिक्त मुकनावली, भजन छत्तीसी, हरिरस,

स्फुट वैद्यक नुस्खे, कबीर साखी, कोक वार्ता, स्फुट छंद, श्लोक इत्यादि अनेक कृतियां संकलित हैं ।

### ६३. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. २१४३, ४. ११.५ × २४.२ सेमी०, ५. ३५, ६. १७, ७. वि० सं० १८६०, ई० सन् १८०३, लूणकरणसर (बीकानेर), ८. क्षेमानन्द, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रन्थ में निम्नलिखित बातें संग्रहीत हैं—

#### १. मदन सतक वार्ता :-

प्रस्तुत लघु वार्ता गद्य-पद्य में है ।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः अथ मदन सतक रो वार्ता—विश्व नदी पायनमि भूत वात चित धार मदन कुमार सत मे लिप्यो जो कीनी करतार ॥१॥

वार्ता—

श्री पुरनगर के विपै जिना नदवन ता माहि नै काम देव को प्रासाद तिहा मदन कुमार घोड़ा बाधि……छादि ।” (पत्र-३)

#### २. पीवो विजो रो बात :-

यह दो डाकुओं बीजा (सोभत) और खोया (नाडूल) की वार्ता है ।

वार्ता प्रारम्भ—

“पीवो विजो धाड़वी बडा दोड़ा बडा चोर, विजो सोभत वसै पीवो नाडूल वसै……आदि ।”

चित्तौड़ के विजय साह देवीदास के यहाँ से घोड़ी चुराने का विवरण इस प्रकार दिया है—

“विजो बोलीयो—भाई कही थे सु करा, इण कह्यो—हूँ काई बहूँ चीतौड़ मे घोड़ी २ जय नै विजय साह देवीदास रै छे……घोड़ी आणो तो बडा धाड़वी बीसातो……चलू भरनै कह्यो—जे उठै घोड़ी आणां तो एय आय नै जीमां, नही तो इं कळंक माथै उदक । अबै दोनुं चालीया…… ।” (पत्र-३)

#### ३. चौबोली रो बात :-

यह उज्जैन के राजा विक्रमादित्य और उनकी रानी चौबोली की कथा गद्य-पद्य मे है । मिलावें ग्रंथांक ४८५६, रा० शो० सं० । यहाँ वार्ता एक कवित में प्रारम्भ की गई है—

विक्रम—

“समापूर विक्रम राय वैठी सु विसेसी तिण ब्रवसर आवीयी ।  
एक भागध परदेसी उभो दे आसीस ... ॥१॥”

अन्तिम भाग—

“इति श्री चौबोली वार्ता कथा संपूर्ण समाप्त संवत् १८६० वर्षे मिति पोह  
वदि १ दिने भोम वारै ।”

वार्ता संक्षेप में है ।

(पत्र-२)

४. दाढ़ाला री बात :-

मिलाये ग्रंथाक २१६, रा० शो० स० । यहाँ वार्ता का नाम ‘वीसलदे सिरोही  
रै धणो री सूवर रै सिंकार री बात’ लिखा है और वार्ता एक दूहे से प्रारम्भ की  
गई है—

प्रारम्भ—

“गहै घूं बसूंवी घटा वणीया टूक विहवल्ल  
अरबद मुं अलगा रहै जांका कोण हवल्ल ॥१॥”

बात—

“आबू रा पहड़ा ऊपर नव नाथ चौरासि सिध चौसठ जोगणी वावन वीर  
तेतीस कोड़ देवता तपस्या करै ... आदि ।”

(पत्र-४)

५. वैताल पचीसी :-

यह वैताल पंचशतिका का राजस्थानी भाषा में अनुवाद है । कृति गद्य-पद्य  
में है ।

प्रारम्भ—

“प्रणमुं सरसत पाय बळे विनायक वीनवुं  
बुधि दे सिद्ध दिवाय सनमुप थाय सरस्वती ॥१॥” (पत्र-२३)

पुष्पिका—

“सं० १८६० वर्षे मिति माह वदि ५ दिते ससिवारे लुणकरणसर मध्ये  
पं० क्षेमानंद लिपंत श्री रस्तुः । कल्याणस्तु ।”

प्रस्तुत ग्रन्थ एक ही हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । कृतियाँ सब पूर्ण हैं ।  
पत्र खुले हैं । लिपि सुवाच्य है ।

१. प्रकाशित (क) सं० अचलसिंह भाटी, राजस्थानी प्रकाशन, जंघपुर

(ख) पुण्योत्तम लाल मेनारिया, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर



### ६४. फुटकर बातें

१. फुटकर बातें, २. रा० शो० सं०, ३. २०४, ४. १४ × २१ सेमी०, ५. ११२, ६. १६, ७. वि० मं० १८६२, ई० सन् १८०५, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ऐतिहासिक बातों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

#### १. पलक दरियाव री बात :-

यह पलक दरियाव की बात पौराणिक है। इसमें भगवान विष्णु के अलौकिक कार्यों की प्रशस्ति है। (पत्र-४६)

#### २. गौदोली गणगौर में गईजं तीण री बात :-

अहमदाबाद के बादशाह द्वारा महवे की कुछ लड़कियों को भगा कर ले जाने पर महवे के शासक मल्लिनाथ के पुत्र जगमाल द्वारा बादशाह की पुत्री गौदोली को (संवत् १३२५ चैत्र सुद ५) लाने के उपरान्त बादशाह द्वारा आक्रमण तथा उसके जगमाल से हार कर भागने का वर्णन है। (पत्र-४)

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है। प्रारम्भ के ७ पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है।

### ६५. फुटकर बात संग्रह

१. फुटकर बात संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. ३४३, ४. ७ × ८ सेमी० (गुटकानुमा), ५. १६२, ६. ७, ७. वि० सं० १८६३, ई० सन् १८०६, ८. मानग, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

#### १. अचलदास उमा सांखली नै लालां मेवाड़ी री बात :-

प्रस्तुत वार्ता ग्रन्थाक ६०, रा० शो० सं० के समरूप है।

प्रारम्भ—

“अचलदासजी गढ़ गागरण री घणी। गढ़ गागरण राज करे। तिण रै लालां मेवाड़ी पटरांणी छै। मेवाड़ री घणी राणी मोकलसी तणरी बेटी छै। निदाठीयी पुरप अपसरा री अवतार सगळीइ राज लाला मेवाड़ी रै हाय छै……” आदि।” (पत्र-५६)

#### २. राजा रसानु री बात :-

यह पौराणिक कथा श्री पुरनगर के राजा सिमसतपाल के पुत्र रसानु की है जो गद्य-पद्य में है। (पत्र-६५)

प्रारम्भ—

“श्री पुरनगर के विषे राजा श्री मालवाहन राज करे छै । तिहने पाटे राजा सिमरतपाल राज करे तिण राजा रँ असत्री सात छै, तर्क असत्री महारूपवन्त छै ... आदि ।”

अन्तिम भाग—

वार्ता इस दहे के साथ समाप्त हो जाती है—

“रीसालु हंदी वातड़ी, राज समापण भार छै,

गावँ चारण नीबलो, हस्तीयायो मोजबे ॥२२॥

इति राजा रसालु री वात मंपूर्ण संवत १८६३ रा भादवा सुद १२ लिपतुं मानग ।” तत्कालीन मान्यताओं और नारी की दशा पर इससे प्रकाश पड़ता है ।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । लिपि सुवाच्य है । बहुत से पत्र चिपके हुए हैं । प्रारम्भ में ‘हियाली’ और ‘वारेमासिया’ के कुछ दोहे दिये हुए हैं । ग्रन्थ में अनेक पत्र खाली पड़े हैं ।

### ६६. पनां री वात कवित्त आदि

१. पनां री वात, कवित्त आदि, खिड़िया छत्रा आदि, २. रा० शो० सं०, ३. ६३, ४. १८.५ × १३.५ सेमी०, ५. १२३, ६. १७-२३, ७. वि० सं० १८६५, ई० सन् १८०८, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. राव रतनचंद साहुकार की बेटो पनां री :-

यह ईंहर के राव रायमाण के पुत्र वीरम तथा पूंगल के शाह रतन की पुत्री पनां की प्रेम-कथा गद्य-पद्य मे है । प्रारम्भ के पत्र सुप्त होने से वार्ता अपूर्ण है, मिलावें ग्रन्थांक ७७, रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

“सो पनां कीणै हक भातरी जाणै गाहेली कवाण

किनां दरीयाई को नीसाण, पनां आभा की

बीजळी नां सांवरण की तीज जोवन मे उन्मद... आदि ।”

(पत्र-५३)

२. गीत रतनसिध री (खिड़िया छत्रा छूत) :-

प्रारम्भ—:

“धिन तुभ रतनेस राठीड़ चित धारण

किध हद ऋछट आसमे कमर्प... ॥१॥”

१६२ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

३. गीत बादरसिंघ चांपावत री :-

प्रारम्भ—

“अर मैहलां सोच करे नीत ऊभी सांमन ही मोसारै  
आख्यां नीद कीसी विध आवै लागै दुसमण लारै ॥१॥”

४. नव कोटां री कवित्त :-

प्रारम्भ—

“मंडोवर सांवत१ हुवौ, अजमेर सिंघ२ सुव  
गढ़ पुंगल गजमल३ हुवौ लोद्वे भाण४ भुव  
जोगराज धर५ घाट हुवौ, हसु६ पारकर  
अल्लपल्ल७ अरबद, भोजराजा जालंधर८  
नव कोट९ कीराडु सुं जुगत धिर पंवारि थपीया  
धरणी वाराह धर भाइयां, कोट बांट जुजु कीयी ॥१॥”

पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

“पोयी पं० सीरदारमलजी री सु लीपी छै  
संवत् १८६५ मी० सु० ८”

उपरोक्त कृतियों के अतिरिक्त चित्रगुप्त की कथा, माताजी री अष्टक, स्नेह  
सीला हणुवत चरित्र, हरजस, कश्ण यत्तीसी, फुटकर छंद प्रेम-पत्र इत्यादि  
संकलित है ।

ग्रंथ अपूर्ण है यह अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है ।

### ६६. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १५६०८, ४. २४×१६  
सेमी०, ५. १७७, ६. २५-२८, ७. वि० सं० १८६६, ई० १८१२, केकिंद  
नगर, ८. अचलदास, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में निम्न-  
लिखित बातों का संग्रह है—

१. जलाल गहाण्णी री बात :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ८३७, रा० शो० सं० में वर्णित है । प्रारम्भ के  
पत्र १४ सुप्त होने से वार्ता अपूर्ण है यहाँ केवल इसका अन्तिम भाग दिया जा  
रहा है—

“.....वा की फौज लेकर आय न बसी ही, गढ गजनी को थो सो वाम  
करी पीछे जलाल बडो भोगी भमर हुवौ । इती जलाल गहाण्णि री बात संपूर्ण ।”  
(पत्र-१५)

२. हितोपदेश की कथावां :-

इसमें अनेक हितोपदेश सम्यन्धी कथायें गद्य-पद्य में संकलित हैं ।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः, श्री सारदायनमः, श्री गुरुभ्योनमः अथ हित उपदेश लिप्ये

दूहा—

श्री महादेव परताप ते सकल कोक की सिद्धि,

चंद सीस गंगा बहत, जानत लोक प्रमिद्धि ॥१॥” (पत्र-१११)

३. मधुमालती की चौपाई :-

मधु और मालती की प्रेम कथा चौपाई, दोहों और सोरठों (६३) में वर्णित है ।

प्रारम्भ—

“अथ मधुमालती की चौपाई लिपते—

गाहा वीर बिरांचित बावनमां पात्र संकर सुत गणपति गाऊं

चातुर रिहित सहस रिभाऊं रस मालती मनोहर गाऊं ॥१॥”

अन्तिम भाग—

दूहा—

“राज पाट ताहि रा जनीत, मत्रि पडे ताहि बुधि

कांभी काम बिलास रस, ग्यांभी ग्यांन सु बुधि…… ॥६३॥”

पुष्पिका—

“इति श्री मधुमालती की कथा चौपाई संपूरणम् समाप्त । लिपंत पंडित श्री श्री गुलालचंदजी पंडित श्री फतैचंदजी शिप कचरदास लिपत्वा आतमारथै समत् १८६६ विष्णु शाके १७३४ प्रवतमानै मासी उम मासै पौस मासै शुकल पण्ये १२ बुधवाहरै प्रभात समीर्य लिप्यत्वां केकिद नगरे …… ।”

४. जखड़ा मुखड़ा की वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता पाटण के उडा भाटी के पुत्र भीम की है । भीम के बादशाह कुतुबद्दीन की सेवा इत्यादि में जाने का उल्लेख है, वार्ता अपूर्ण है ।

प्रारम्भ—

“अथ जपड़ा मुखड़ा की वार्ता लिपते । पिछम देस में किवै एक पाटण देस गांव छं बडी सहर छं तठै उडो भाटी राज कं छं तिण रै दोय बेटा छं त्यांरा नाम बडो भीवो छोटो भाई देवो तिण रै गांव अढ़ीसै छं……तिण रै घणा रजपूत पांप पंप रा छं……भीवो टीके बैठी…… तिण समै दिल्ली रो घणी पिरोजसाह पतिसाह राज करै……तिण रै उमरावों रो घणी लाड छं…… ।” (पत्र-२)

प्रस्तुत ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर है। प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है।

### ६८. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ४६१६, ४. १६.५५  
२३ सेमी०, ५. ६६, ६. १५, ७. वि० सं० १८७५-१८८१, ई० सन् १८१८-  
१८२४, विलावास, ८. हुकम सोभाग्य, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत  
ग्रंथ में कुछ वार्ताएँ संग्रहीत हैं जो अन्य सर्वेक्षित ग्रंथों में प्रा चुकी है, यहाँ केवल  
वार्ता का नाम और प्रारम्भ दिया जा रहा है—

#### १. जगदेव पंचार री वार्ता :-

मिलावें ग्रंथांक ३५४६, रा० प्रा० वि० प्र० ।

प्रारम्भ—

“प्रथम मालव देश रै विपे धार नगरी छै तठै उदियादित्य राजा राज  
भोगवै छै । तिको जाति री पमार छै तिए रै दोय रांणी…… ।”

पुष्पिका—

“संवत् १८७५ रा शाके १७४० रा प्रवतर माने मासोत मासे उत्तमासे कृष्ण  
पक्षे चतुर दिस तिथी १४ बुधवासरे रात्री घड़ी च्यार……लिपंत पं० हुकम सोभाग्य  
गाणि विलावस मध्यै ।” (पत्र-४४)

#### २. राजा भोज माघ पंडित डोकरो री कथा :-

प्रारम्भ—

“एक समै राज भोज नै माघ पंडित सेहर सुं कोस दोय अथवा ४ कोस  
मार्थ गया । सो एक वाग जोवण नुं गया था … .. ।” (पत्र-२)

#### ३. चंद कुमर री वार्ता :-

प्रारम्भ—

दूहा— “समरुं सरसति माय गणपत देव के लागु पाय  
प्रतपसं आग्या करी, कथा सरस कवि राय ॥१॥” (पत्र-७३)

#### ४. सदैवच्छ साबलिंग री वार्ता :-

प्रारम्भ—

“न्यायक सुतार निरवाहण, सुगण करै सुरजाम,  
साबिलंगा सुदा, सरस, तेण भवंतर नाम ॥१॥”

वार्ता प्रारम्भ—

“प्रथमी मांहे घ्राणंदपुर नामा नगर छै तठै मानवाहन राजा राज करै तिण  
रै कामदार महंती छै ..... ।” (पत्र-१७३)

५. पनरमो विद्या राजा भोज री वार्ता :-

प्रारम्भ—

श्री गणपती गरसति सीव विष्णु रवि गुर देव  
व्याम करै घरदाम प्रभु दीजै अक्षर मेव ॥१॥ (२० दोहे)

वार्ता प्रारम्भ—

“राजा भोज यडो राजा दानवंत मतवंत साहसिक प्याग त्याग निकळंक  
मुषे राज करै ..... ।”

पुष्पिका—

“संवत १८८१ ग वैशाख सुद ५ रात्री उनायळ मुं तिपी से रात्र पोहर  
गड घका ।” (पत्र-१२३)

इन वार्ताओं के अतिरिक्त घांका री पाटी (गणिन सम्बंधी), नेमनाथजी री  
लावणी इत्यादि कृतियाँ संकलित है ।

ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ में निषिद्ध किया गया है । ग्रंथ की लिखावट  
साफ सुथरी है । ग्रंथ पर गत्ता नहीं है ।

### ६६. विक्रमादित्य चौबीली राणी री कथा इत्यादि

१. विक्रमादित्य चौबीली राणी री कथा इत्यादि, २. रा० सो० सं०,  
३. ४८५६, ४. ११.५ × १६ सेमी०, ५. ६०, ६. ६-११ ७. वि० सं० १८८०,  
ई० मन् १८२३, कैकीद नगर, ८. अज्ञात ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ का  
प्रारम्भ एक जैन कृति ‘समायक विध’ से हुआ है—

“नमो अरिहंताणं नमो सिघाणं नमो आय रियाणं ..... प्रादि ।”

विक्रमादित्य चौबीली राणी री कथा :-

प्रस्तुत कथा उज्जैन नगर के राजा विक्रमादित्य और उनकी रानी चौबीली  
व खापरिया चोर की है है ।

प्रारम्भ—

“मालवा देस में एक उज्जैनी नगरी छै । तठै पमारों री समोड । परदुप  
काटण माहासीक दार थी वीर विक्रमादित्य राजा राज करै छै । महा न्याई  
राजा छै, पिण उज्जैनी नगरी अड़ताली कोस लांबी छै बतीस कोस चौड़ी छै, चोरासी

बाजार छँ कोड़ीघज साहा घणा वसै छँ तटँ । पापरी चोर चोरी करँ छँ .....  
आदि ।”

कथा में वर्णित है कि गुन्दरी घोंघोली में राजा शादी करने की इच्छा प्रकट करता है । राजा के सामने एक शर्त रखी जाती है कि अणवोली रानी से वही शादी कर सकता है जो एक रात में चार बार रानी को बुलवावे । इस पर विग्रमादित्य कहानियों मुनाना है और रानी को चार बार बुलवाने पर शादी कर लेता है ।

अन्तिम भाग—

“राजा बोलीयी राणीजो दावजी को होयजो पिण आप तो चार बेला बोलीयां पछे लगन थापी, ओछव मोछव कीधा राजा चोबीली राणी परणीया घणा घवतमंगळ ओछाय कीया । गाजा वाजा कीया । राजा राणी पुमी हुवा । मा वाप घणा हायी घोड़ा दीया । गहणा गाठा सोना रूपो दास दासी दीवा । दत दायजो घणो देनै मीप दीधी । .....सुप में राज करँ छँ आ वात सुणमी वाचसी तिको सदा सुपी रहसी ।”

(पन-२३)

ग्रंथ पर कपटे का गत्ता है पर बेसिला हुआ है । मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा है, लिपि सुवाच्य है । ग्रंथ में इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयों की अनेक कृतियों संकलित है जैसे चौदिस तीर्थंकर, गौतम स्वामीजी तवन, नीकर री सम्भाय, नेमीनाथजी री तवन, पारसनाथजी री तवन, श्रावक री सिज्भाय, नेमीनाथजी री तवन, पंच तीर्थयां री तवन, राणपुरजी री तवन, जसवंतजी री तवन, साध बंदणा, नेमजी री तवन, मूरजजी री सिलोको, बारे मासियो, सनीसरजी री कथा, जीव काथा मभाय, और गणेशजी री नीसाणी इत्यादि ।

### ७०. कथा वार्ता इत्यादि

१. कथा वार्ता इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २५७३, ४. १६.५ × २४  
५. ३६ ६. १७-३० ७. वि० सं० १८८५, ई० सन् १८२८, ८. अज्ञात,  
९. राजस्थानी, संस्कृत, देवनागरी १०. इन अर्द्ध ऐतिहासिक बातों का विवरण-  
क्रम इस प्रकार है—

१. पना री बात :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ७७ में वर्णित है । प्रस्तुत वार्ता अपूर्ण है वार्ता का प्रारम्भ गणेशजी की स्तुति से किया गया है—

“सदा मनोरथ सिध कर वाणी अखर वैस  
साहरां पहिली समरीयं गुण दातार गरोश ॥१॥” (पत्र-२)

२. राव रिणमल खावड़ीया री बात :-

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक २५६६ के समरूप है । (पत्र-१०)

३. फुतबुद्दीन शाहिजादा री वचनिका :-

प्रस्तुत वार्ता वही है जो ग्रंथांक १६३ में वर्णित है । (पत्र-८३)

इन उपरोक्त बातों के अतिरिक्त चौथे भाता री कथा, गणपति री कथा, फूलवंती की वार्ता, शिवरात्रि व्रत कथा, विष्णु सहस्रनाम इत्यादि कृतियां ग्रंथ में संकलित हैं ।

ग्रंथ पर गत्ता नहीं है । ग्रंथ एक व्यक्ति के हाथ से लिखा हुआ है । कुछ पत्र चिपके हुए हैं और ग्रंथ के अन्तिम बहुत से पत्र कीट-भक्षित हैं । बहुत से पत्र खाली पड़े हैं ।

### ७१. प्रतापसिंह म्होकर्मसिंह, हरिसिंघोत री वार्ता आदि

१. प्रतापसिंह म्होकर्मसिंह हरिसिंघोत री वार्ता आदि, बहादुरसिंह, मुहणीत सिधदास आदि २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ७८७४ ४. २२ X १५.५ सेमी०, ५. ३०, ६. १६१६, ७. वि० सं० १८६५, ई० सन् १८३८, जयपुर ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनानरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. प्रतापसिंह म्होकर्मसिंह हरीसिंघोत री वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता में देवलिया के रावत हरीसिंह के पुत्र प्रतापगढ़ के संस्थापक रावत प्रतापसिंह और इनके अनुज म्होकर्मसिंह का वीरता पूर्ण चरित्र वर्णित है । मिलावें ग्रंथांक १५११, रा० शो० सं० ।

वार्ता प्रारम्भ—

“देवगढ़ रावत प्रतापसिंह हरीसिंघोत राज करे, जिकी किसोहेक पातसाहा सू आडो कंवारी घड़ा री लाडो अड़ संग्राम री नाटसाल चक्रवर्ता जिसड़ी चाल.....आदि ।”

अन्तिम भाग—

हो रावां हो रजिया हो सोहड़ भलाह  
सूरां सापुरसां तंणी, जुग रहसी गलाह ॥७॥



१६८ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

“इती श्री रावत मोहकमसीध हरीसीघोत री वात महाराज धिराज महाराज श्री वहादूरसिधजी कृत संपूर्ण किसनगढ़ राज राजस्थान सं० १८६५ चैत्र वद १३ लीपी जैपुर मे ।” (२५-३)

२. कवित .....(बिना शीर्षक तथा अज्ञात कृतृक) :-

प्रारम्भ—

“दुरजन सों जीत अस सजन मी गीत  
नीत गुरदेवन मी प्रीत तोहि मुजस क्रपांनी को ... ।”

३. गीत .....(बिना शीर्षक तथा अज्ञात कृतृक) :-

प्रारम्भ—

“डंडे पांन रो मेवास दिली आगरो स्वाहरै ।  
डंडे आगरो की गिरां विहारा हरी अनेक.....॥१॥”

४. सूर सती संवाद (मुहणोत सिवदास कृत) :-

प्रारम्भ—

राग मांड ॥ दोहा ॥  
“मरदां मोद वधावणो, सतिआं नेह सवाद ।  
असत्यां कायर ओलमो, सूर सती संवाद ॥१॥”

अन्तिम भाग—

“चढ़िया चढ़िया जी मारुजी अनंत उछाह,  
सूर सती री जी सूरज सापवी ॥२६॥  
इति”

५. महाराज नागरीदास जी रा बणाया जोसर :-

दोहा—

“प्यारी पीय सपियन सहित चोपर पेलत बँठ  
मनो मदनपुर चोहटे परी रूप की पैठ ॥१॥”

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है । ग्रंथ पर गत्ता नहीं है ।

७२. अचलदास खीची री वात तथा सकुन शास्त्र आदि

१. अचलदास खीची री वात तथा सकुन शास्त्र आदि, राव मालदेव आदि,  
२. रा० शो० सं०, ३. ६०, ४. १७.५ × २७ सेमी०, ५. २३६, ६. १८,

७. वि० सं० १६०८-१०, ई० सन् १८५१-३, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०.

१. हितोपदेश पंचाग्यांन :-

इसमें उपदेश और राजनीति से सम्बन्धित अनेक दोहे लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

“महादेव प्रतापतं सह काम की सिद्ध  
चंचसि संग गावहत जानत लोग प्रसिद्ध ॥१॥”

पुष्पिका—

“इति हितोपदेश ग्रंथ राजनीत पंचाग्यांन.....”

पंच पंड समाप्त । १६०२ रा मितो फागुण सुद ११ ।” (पत्र-५५)

२. अचलदास खीची री बात :-

यह गांगरोण के शासक अचलदास खीची उमा सांखली और लाला मेवाड़ की प्रेम वार्ता है । इसमें एक भीमा चारणी अचलदास के समक्ष उमा सांखली के रूप का वर्णन करती है तिस पर अचलदास उससे शादी करता है । उमा और लालों (मेवाड़ राणा मोकल की पुत्री) के बीच मनमुटाव हो जाता है । मांडू का मुसलमान सुल्तान गांगरोण पर आक्रमण करता है और दोनों दलों में भयंकर मारकाट व अचलदास वीरगति को प्राप्त होता है और ये दोनों रानियां सती होती है ।

प्रारम्भ—

“प्रथम तो अचलदास पीची गढ़ गांगुरण री धणी .....तिण रै रांणी लाला मेवाड़ी दस सहस मेवाड़ री धणी रांणी मोकल तिण री बेटी.....राज सगळो लालांजी रै हाथ.....आदि ।”

अन्तिम भाग—

“अचलदासजी काम आया.....लालां उमाजी नै खबर हुई तरै बेई आण सत किधी । तरै रूसणो भागी..... । इति अचलदास खीची री बात संपूर्ण सवत १६१० चैत्र वद ११ ।” (पत्र-८)

३. राव श्री मालदेवजी विरचित सकुन सास्त्र :-

प्रारम्भ में विभिन्न दिशाओं का ज्ञान कराया गया है ।

प्रारम्भ—

“अथ दिसा कूण री बीचार.....चालतां डावो जीमणी जोइर्ज तरै कूणा री बीचार उतराणी धुरी तारो उगै तठै इशांन । उनाळा री सूर्य उगै तठै

अगन प्रवाण सीयाली रो सूर्य उमै तिण रो जिमणी पासै रूपरास केसरी तारो तोरणीयो कहीजै.....।”

आगे विभिन्न सगुनों का वृत्तांत है—‘काली चीड़ी रा सुकन’, ‘सगारै करण नै जावे तिण रा सुकन’, ‘भगड़ो करण रो सुकन’, ‘नवो वास कीजे न सुल गाव वाडीजे तिणरा रा सुकन’, ‘घणी कनै हालतां रा सुकन’ आदि।

मुद्र में जाते समय अच्छे बुरे सगुनों का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—  
“घर धी चाली तो प्रथम तीतर डावी, रूपा मालाळो, हिरण मालाळो, काळ पूछ मालाळो भली। नाहर स्याल सांप रो देठाली क्यूं ही नही। नील टास उवेड़ी चीवरी जीमणी पर डावो सांवाळी डावी उवेड़ी भली। श्रे सुकन पतवांणीया हो तरै ..... ‘सुकन जोयर वीचार भगड़ो करणी .....।”

अन्तिम भाग—

“जो बोल सुकर के पेत, निहचल बादल बिरपा देत  
क्यूं पढे पिडत आळ जंलाळ,

जहास निसर जहां दुकाळ

इति श्री रावजी मालदेवजी कृत संपूर्ण।” (पत्र-२)

आगे सगुन संबंधी अनेक चाटं अंकित है।

इसके अतिरिक्त अनेक अनैतिहासिक फुटकर दोहे, छंद कवित्त आदि ग्रंथ में लिपिबद्ध है। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ की लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पूर्ण है। पत्र मोटे हैं। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंडा है।

### ७३. ऐतिहासिक बातों का संग्रह

१. ऐतिहासिक बातों का संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १२३५, ४. २४.५ × १६ सेमी०, ५. ११०, ६. २४, ७. १६ वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संकलित अधिकांश बातें जोधपुर के राठौड़ राजाओं व उमरावों से सम्बन्धित हैं। कुछ ऐतिहासिक बातों का प्रकाशन हो चुका है। संग्रहीत ऐतिहासिक बातों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. मालदेव की बात :-

प्रारम्भ—

“उण रावजी नै केयो। रावजी साचमानी पाछा आय कमर बांध ने निण हो नै कयो नही।”

ग्रंथ का प्रारम्भ जोधपुर के शासक गांगा के 'जेष्ठ पुत्र मालदेव से हुआ है। प्रस्तुत बात अधूरी है। इसमें मालदेव द्वारा लड़े गये विभिन्न युद्धों, युद्ध में काम आये योद्धाओं का वृत्तांत है—शेरशाह का जोधपुर पर आक्रमण व उसका १ वर्ष ५ महीने ६ दिन अधिकार, शेरशाह की मृत्यु के बाद पुनः मालदेव का अधिकार, उस समय मालदेव के पास जोधपुर, सिवाणा, सोजत, जैतारण, फलोदी, पोकरण आदि परगने अधिकार में होने का उल्लेख है। मालदेव का जैसलमेर मेड़ते पर आक्रमण व मेड़ते पर संमत १६१३ फागुन सुदि १२ को अधिकार, संवत् १६१४ में मालगढ़ दुर्ग की स्थापना और वहाँ देईदास जैतावत को नियुक्त करना, बादशाह अकबर की मदद से जयमल द्वारा मेड़ता पर आक्रमण (सं० १६१८) ३४ वर्षीय वीर देईदास जैतावत के साथ अनेक योद्धाओं के मारे जाने का वृत्तांत इस प्रकार है—

(१) भाखरसी जैतावत, (२) पूर्णमल प्रथीराज जैतावत, (३) तेजसी उरजन पंचायणोत का, (४) सहसो उरजन पंचायणोत का, (५) ईसरदास राणा अयेराज का, (६) गोवंद राणा असेराजोत का, (७) पतौ कूपा महाराजोत का, (८) भाण भोजराज साढ़ा रूपावत का, (९) अमरो रांमावत का, (१०) सहसो रांमावत का, (११) नैतसी सीहावत, (१२) जैमल तेजसीघोत, (१३) रांमो नैरदासोत, (१४) भाखरसी डूंगरसीयोत, (१५) अचलो भींवोत, (१६) महेश पंचायणोत, (१७) जैमल पंचायणोत पंचायण दूदावत मेड़तीघी, (१८) रिणधीर रायसिघोत, (१९) सांगी रिणधीरोत, (२०) राजसिंघ घड़सीयोत, (२१) ईसर घड़सीयोत, (२२) मांगळीघी वीरभ, (२३) तेजसी, (२४) भाटी तिलोकसी, (२५) भाटी पीयी, (२६) राणो जगनायोत, (२७) भाटी पिराग भारमलोत, (२८) देदो, (२९) सिपाई हूमजो, (३०) सूघार (बढ़ई) भानीदास, (३१) बारहट जीवो, (३२) बारहट जालप, (३३) बारहट चोलो।

सेनापति पृथ्वीराज के युद्ध में मारे जाने पर कूपा को सेनापति नियुक्त करना इत्यादि। बारट आसा के ७ कवित<sup>१</sup> दिये हुए हैं, जिसमें प्रथम २ कवित मालदेव की प्रशंसा में है तथा ५ कवित मालदेव के छोटे बड़े परगने<sup>२</sup> अधिकार में रहे उससे संबंधित हैं।

१. प्रकाशित, सं० ८१० नारायणसिंह भाटी, रा० शो० सं०, जोधपुर (परम्परा अंक ११)

२. प्रकाशित, सं० ८१० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर (जिगत भाग ३, पृ० ७४-७५)

२. राय चंद्रसेन की बात :-

प्रारम्भ—

संवत् १५६८ सांवण सुद ८ जनम । राय चंद्रसेन राय मालदे बांसे टीकें बैठो । बड़े बढाक्रम की घणी ………।”

यह वार्ता मारवाड़ नरेश राय मालदेव के पुत्र चंद्रसेन की है । पिता की मृत्यु के बाद संवत् १६१६ पौस सुद ६ को राज्याभिषेक, चंद्रसेन व उनके भाइयों में भगडा, चंद्रसेन का संवत् १६१६ वैशाख वदी १३ को राणा उदयसिंह के पुत्री से विवाह होने का उल्लेख, चंद्रसेन द्वारा अपने भाई उदयसिंह पर चढ़ाई, बड़े भ्राता राम का जोधपुर पर आक्रमण तथा राम को सरदारों द्वारा सोजत दिलाना, चंद्रसेन का अकबर बादशाह से मिलना इत्यादि अनेक घटनाओं का वृत्तांत है । (पत्र-१०)

३. बात महाराजा उर्दसिंहजी की :-

प्रस्तुत वार्ता मालदेव के पांचवें पुत्र उर्दसिंह की है । महाराजा का १६४० कार्तिक वदी ८ राज्याभिषेक, महाराजा द्वारा सिरौही और सिवाने पर अधिकार करना, युद्ध में लड़े व्यक्तियों का उल्लेख है । (पत्र-१)

४. बात महाराज सूरसिंह की :-

बादशाह अकबर द्वारा गुजरात में उपद्रव शांत करने हेतु वहां की रक्षा का भार सूरसिंह को सौंपना, महाराजा का संवत् १६६१ में मेड़ता पर अधिकार करना, किशनसिंह द्वारा भाटी गोविन्ददास को मरवाना, तत्पश्चात् महाराजा द्वारा किशन सिंह को मरवाने का उल्लेख आदि । (पत्र-४)

५. महाराजा अजीतसिंह की बात :-

यह वार्ता जोधपुर के शासक महाराजा जसवंतसिंह के पुत्र अजीतसिंह की बहुत संक्षेप में है, इसमें महाराजा के मनसब का उल्लेख कर विभिन्न कारखानों (विभागों) का वृत्तांत दिया है, जो प्रशासनिक दृष्टि से अव्ययन योग्य है ।

६. बात भाटी केलण की :-

प्रस्तुत वार्ता मोटाराजा और भाटी केलण के बीच फलीदी में युद्ध हुआ जिसमें भाटी जीते व मोटा राजा के हारने का उल्लेख है युद्ध में मरे राठीड़ बीरो के नाम और ५० भाटियों के वीरगति को प्राप्त होने का उल्लेख है । (पत्र-१३)

७. बात मेड़तोयां की :-

मेड़ता आहु राजा मानघाता द्वारा बसाया जाने का उल्लेख, मेड़ते पर जिन-जिन राजाओं का अधिकार संवत् १५१५ से १६५८ तक रहा उनका संक्षेप में हाल

है। ग्रामे नव कोटां की विगत दी गई है—बाडमेर, आवू, पारकर, पूंगल, जालोर, उमरकोट, अजमेर तथा गढ मंडोवर। (पत्र-३)

८. घात सोजत री :-

सोजत शहर और गांवां की भौगोलिक स्थिति का उल्लेख दिया गया है। (पत्र-१)

९. प्रंवाधती नगरी री घात :-

प्रस्तुत वार्ता इस नगरी के राजा प्रंबकसेन व उसकी पुत्री सोमल की है इसी लड़की के नाम पर इस नगरी का नाम सोमल दिया गया है। (पत्र-१)

१०. घात झलराज रिड़मलोत री :-

प्रस्तुत वार्ता बगडी के जागीरदार अखैराज (रिड़मल के पुत्र) की है। मेर जाति के लोग बगडी की धरती में नुवसान करने पर पंचायणजी द्वारा उनसे युद्ध, फिर पचायण का वावरीया हुल की पुत्री पारवती हुलणी के साथ शादी इत्यादि वृत्तांत है। (पत्र-१)

११. घात तेजसी धरसिध री :-

राध मालदेव द्वारा धरसिंह को रीयां की जागीर मिलने तथा रीया पर वीरमदे का आक्रमण करने का उल्लेख आदि है। (पत्र-१)

१२. घात अचला पंचाइरोत री :-

प्रस्तुत वार्ता अचला की है, राव मालदे ने इनको रड़ोद के धाने पर नियुक्त किया था। वीर अचला के एक समय ससुराल जाते समय मार्ग में दो बधेरों से झपट होने व उनको मारने का दिलचस्प उल्लेख है। (पत्र-१)

१३. घात जसवंत तिलोकसीयोत री :-

जसवंत तिलोकसीयोत और मांडणसी कूपावत का अकबर बादशाह के यहा नौकर होने का उल्लेख, अकबर द्वारा अपने पुत्र का संबंध मांडणसी की पुत्री के साथ करने की इच्छा प्रकट करने पर जसवंत का रुठ कर मेवाड के राणा अमरसिंह के वहाँ चले जाने का उल्लेख है। (पत्र-१)

१४. घात राठीड़ तेजसी कूपावत री :-

अनजाने में तेजसिंह कूपावत के मारे जाने पर सीहा द्वारा पश्चाताप करना तथा रामे और महेस द्वारा तेजसिंह कूपावत का बँर लेने हेतु किये गये प्रयत्नों का वृत्तांत है। (पत्र-१)

१५. घात मांडण जी कूपावत री :-

वीर मांडण कूपावत का मेवाड़ के राणा के पास जाना, वहा रहते हुए राणा की आलोचना करने वाले व्यक्तियों को मौत के घाट उतारना तथा सांबलदास को भगाना तिस पर राणा के दीवाण द्वारा मांडण का स्वागत इत्यादि करने का उल्लेख है। (पत्र-२)

१६. घात राठौड़ देईदास जंतावत री :-

प्रस्तुत वार्ता मालदेव के प्रसिद्ध सामन्त देवीदास की है। मालदेव द्वारा मेड़ता में दुर्ग बनवाये जाने का देवीदास द्वारा विरोध करना, तत्पश्चात मेड़ते में रहने के लिये राजी नही होना, राठौड़ जयमल द्वारा बादशाही फौज के आक्रमण में देवीदास का घायल होना, उसकी स्त्रियों का सती होना व देवीदास का सन्यासी होना, जैमल रूपसीधोत द्वारा देवीदास को बादशाह के समक्ष ले जाना, अन्त में राव कल्ला द्वारा देवीदास को सिरीपारी में चूक से मरवाने का वृत्तांत है। देवीदास की उपरोक्त घटनायें 'ऐतिहासिक बाता' (परम्परा) से मेल नही खाती हैं। (पत्र-३)

१७. वात राव जंतसीजी री :-

राव मालदेव के समय में एक पराक्रमी राजपूत हुआ। प्रस्तुत वार्ता में उसकी धाक से संबंधित एक किस्सा दिया गया है। (पत्र-१३)

१८. वात राठौड़ खीवा उदावत री :-

मालदेव के समय का बड़ा योद्धा, खीवा द्वारा ब्यावर पर अधिकार करना, फिर वधनोर पर अधिकार करने इत्यादि का वृत्तांत है। (पत्र-१)

१९. राठौड़ तेजसी डूंगरसीधोत री बात :-

राव मालदेव की तेजसीह उदावत पर विशेष कृपा इसके द्वारा चाटसू के पंवारो को लूट कर शेर लेने, राव मालदेव की ओर से सिवाने की रक्षा का भार तेजसिंह को देने और इस अवसर पर खर्च हेतु कुछ धन तेजसिंह को देने का आश्वासन देना, काफी समय तक खर्च के पैसे न दिये जाने पर तेजसी का खाना खाते हुए राव मालदेव के समक्ष पैसों की बात करना, तिस पर गुस्से में आये राव मालदेव द्वारा भोजन का थाल (सोने का) उसके आगे पटकना और तेजसी द्वारा यह थाल उठा कर ले जाने का वृत्तांत इत्यादि है जो मूल में इस प्रकार वर्णित है—

“पछे कितरै हेक दिन तेजसी दरबार आया। ऐक दिन रावजी अरोगवा था... आभीजी रावजी कन्है जाता था। तितरै तेजसी आभा नु कही-म्हारी

लाख दुगांणी इण तरै री देणी छै सू देनै जावौ..... कयी-घांनु समझ नै जवाव देस्यां ... रावजी वकै अमानु चितारियो ..... तरै रावजी कयी-तुं हुजदरां नुं कांय रोके क्यूं देणी छै तो म्है देस्यां ..... तरै तेजसी कयी—तो लाख दुगांणी थे दो, तरै रावजी आरोगता रिसाय नै सोने री तासळी नांखी जांणियो थो तासळी न लेसी तेजसीजी तो तासळी लेने डेरे आया, रावजी बुरी मानियो .....।” (प५-७)

## २०. घात राठौड़ जसवंतसिंघजी डूंगरसिंघोत री :-

एक गरीब राठौड़ बांसवाले चाकर रहते हुये, एक समय भालदेव द्वारा मगवाये हाथियों को बांसवाले रावल प्रताप द्वारा रोकने पर जसवंत द्वारा हाथियों को मुक्त करवाने, तत्पश्चात् जसवंत के ईडर रहते हुए अखितयारखां से लोहा लेने, जसवंत को जैतारण मिलने, मेरों से टक्कर लेने तथा नागौर के पास पहाड़ियों में मुगलों से युद्ध करते हुए वीर गति प्राप्त होने का वृत्तांत है ।

## २१. घात सिवांण री<sup>१</sup> :-

वीरनारायण पंवार द्वारा सिवांण के गढ़ का निर्माण करवाना, वीरनारायण को मार कर गढ़ पर चौहानों का अधिकार होना, फिर बादशाह का यहाँ अधिकार होना, तत्पश्चात् रावल भाल का अधिकार होने का वृत्तांत है ।

## २२. घात राव लखोजी सिरोही राज करे :-

प्रस्तुत वार्ता राजघर के पुत्र तथा सिरोही के शासक राव लाखे की है । राजघर द्वारा अपनी पुत्री का संंध लोहियाण के राव से करने तथा राव द्वारा अपने श्वसुर राजघर को धोके से मारने, तत्पश्चात् लाखे द्वारा बदला लेने हेतु राव को मारने का प्रयत्न करने और अन्त में लाखे को मूठा आश्वासन देने व मूठी महादेव की शपथ खाने पर राव के प्राण पखेरू उड़ जाने इत्यादि का वृत्तांत है । (प५-३)

आगे के वृत्तांत में सिवाने के शासक चौहान सातल और सोम (मारवाड़ के शासक राव टीडा के भानजों) पर सं० १३६४ में बादशाह अलाउद्दीन द्वारा आक्रमण करने पर टीडा के लड़ते हुए सिवाने में मारे जाने का उल्लेख है ।<sup>२</sup> जिसके संबंधित दोहे भी उद्धृत हैं :-

१. विस्तार के लिये देखें विगत (भाग २, पृ० २१५)

२. बीसा के मतानुसार अलाउद्दीन से लड़ते हुए राव टीडा के सिवाने में मारे जाने की घटना कपोल कल्पित है । बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड पृ० १७६)



सोम सिरी सिवीयाण, श्रावता सांभळ असुर,  
परमारथ तज प्राण, परत बीसी तीढै प्रथम ॥१॥  
सिवीयाणो अड़साल, जळ चाढ़ण जालण हरी,  
विढीयो चंवर वंवाळ, तीडी तिण साखी थये ॥२॥  
महरत कज मारु राव, गढ़ पत गढ़ बाधो गळै ।  
कमथां आद कहाव, घूहड़ हर चढीयां घरा ॥३॥

२३. यात दीवाण मेवाड़ रा घणीयां री वंसावली :-

ग्रंथ में श्री ब्रह्माजी से बनशर्मा तक मेवाड़ के दीवाणों की ५८ पीढ़ियों का वृत्तान्त है। आगे गोदसी दित्य से भोगादित्य तक ५५ दित्यों का उल्लेख किया गया है। फिर भोज रावळ से करण रावळ तक २६ रावळों की पीढ़ियों का वृत्तान्त है। (पत्र-३)

२४. यात राणा रायमलजी री :

प्रस्तुत वार्ता मेवाड़ के महाराणा कूभा के पुत्र राणा रायमल की है। राणा के राज्यकाल (वि० सं० १५३०-१५६६) में उसके तीनों पुत्रों पृथ्वीराज, जयमल और संग्रामसिंह के आपस में झगड़े के सिवाय अन्य कई विशेष उल्लेख योग्य घटनायें भी हैं। सांगा व उसके पिता में मनोमालिन्य होना तथा सांगा की मां के इच्छानुसार उसके उत्तराधिकारी होने का वृत्तान्त ग्रंथ में इस प्रकार दिया है—

“... लाडीजी कयो—म्हारै सांगो घणी बात छै.....तरै सांगा नै रजपूतां एक पास बुलायो सो राणाजी नै घरती उतारीया था नै गोवर री चौको दियो दो तिण समै सांगो आयो नै पगां रै माथां टेकियो, जणां राणांजी बोलिया—म्हारा पगां उपर कासूं छै, तरै कोई बोलिया नहीं तरै राणांजी कयो—सांगलो हरांमखीर न छै मूं करनै पग अछटीयो सो गोवर री भरीयोड़ी पगरी अंगूठी सांगा रै लिलाड़ रै लागो सोही टीकी हुवो नै राणाजी तो काळ कीयो, सांगोजी पाट बैठा .....।”

पृथ्वीराज की बहिन दमेती<sup>१</sup> का विवाह सिरोही के राव जगमाल से करने, पृथ्वीराज द्वारा आबू तथा जालोर पर आक्रमण करने तथा पृथ्वीराज के राव सुरतान सांखला (बघनोवर के शासक) की कन्या तारादे से विवाह होने तथा उस कंवराणी के युद्ध के समय पृथ्वीराज के साथ रहने व युद्ध करने का वृत्तान्त है।

१. जगदीशसिंह महलोत ने (राजपूताने का इतिहास भाग प्रथम, पृ० २१६ आनन्दवाई निवा है।

पृथ्वीराज को राव जगमाल द्वारा विध देने पर मृत्यु की प्राप्त होने का उल्लेख है ।

(पत्र-४)

२५. राणा रतनसिंही की यात :-

प्रस्तुत वार्ता मेवाड़ के शासक राणा सांगा के पुत्र रतनसिंह द्वितीय की है । रतनसिंह शिकार को बूढ़ी जाते हुए सूर्यमल्ल का मार्ग में मिलना तथा राणा द्वारा सूर्यमल्ल को मारने का असफल प्रयत्न करना, तत्पश्चात् राणा द्वारा तलवार का वार करने पर सूर्यमल्ल के सिर का आखों का ऊपरी हिस्सा कट कर अलग होना तथा सूर्यमल्ल द्वारा राणा पर वार करने से दोनों वीरगति को प्राप्त होने का उल्लेख है ।<sup>१</sup>

(पत्र-१)

आगे के वृत्तांत में सांगा के भाई पृथ्वीराज के दासी पुत्र वणवीर द्वारा विक्रमादित्य (रतनसिंह का भाई) को मारना तत्पश्चात् बालक उदयसिंह को मारने का प्रयत्न करने का वृत्तांत है ।

(पत्र-१)

२६. यात राणो लाखेजी :-

प्रस्तुत वार्ता मेवाड़ के महाराणा पेशसिंह के पुत्र लजसिंह की है । मारवाड़ के शासक राव चूड़े द्वारा अरुनी पुत्री का सम्बन्ध लाखे के साथ करने तथा लाखे के बाद उसके पुत्र मोकल का उत्तराधिकारी होने और अन्त में कुंभे द्वारा चूड़ा के पुत्र रिड़मल को चितोड़ रहते हुए धोके से मरवाने का उल्लेख है ।

(पत्र-१)

२७. विगत मांगलीयां की :-

मांगळिया गहलोत शाखा के हैं । इनका प्रमुख स्थान वैराट है, उसके बाद बासवाले और मारवाड़ में आने का उल्लेख है । मांगळियों द्वारा ग्राम खीवसर बसाने, भगासर तालाब भागांवाई द्वारा कराने, बड़े भ्राता लखोजी के खीवसर रहने व छोटे भाई किल्लुजी के गांव तापू रहने व उसके पुत्र मेहोजी का गायो की वार में वीर गति प्राप्त होने का उल्लेख है । आगे उनके पीढ़े सती हुई महिलाओं के सम्बन्धन दोहे दिये हैं । मेहोजी की स्मारक छत्ररी बापीगी में होने का उल्लेख है ।

(पत्र-१)

२८. विगत छतीस राजकुल की :-

ग्रंथ में ३६ कुलो का ज्योरा इस प्रकार दिया है—

(क) सूर्य वंशी :- (१) राठोड़, (२) कछवाह, (३) टाक, (४) बजा, (५) बडगूजर, (६) सिसोदिया, (७) गोहिल, (८) मोठ, (९) हाला, (१०)

१. विस्तार के लिये देखें, वीर वीरोंद, द्वितीय भाग, पृ० ७

हरवगस, (११) गौड़, (१२) चूड़समा, (१३) कदम, (१४) बला, (१५) बंदेल, (१६) सरवहया ।

(ख) चन्द्रवंशी :- (१) जादम, (२) चपट, (३) करीठ, (४) घनपाल, (५) खुद्या, (६) राजपाल, (७) दोदक, (८) तंवर, (९) आमंक, (१०) निकंम, (११) डातीत, (१२) राखुक, (१३) लूवव, (१४) संख, (१५) वासटक, (१६) कुंभ तथा अन्त में

(ग) अगन वंशी :- (१) सोलंकी, (२) पिड़ीहार, (३) चौहान, (४) पंवार आगे छत्तीस राजवंशी जिन गढ़ों पर राज्य करते हैं उनके नाम दिये हैं जो कि मुहता नैणसी द्वारा लिखित श्यात के समरूप है ।<sup>१</sup>

२६. आठ पदवियों की विगत :-

८ पदवियों के संबंधित दूहा दिया गया है—

राव, राज रावत कहां दाख जांम दीवांण ।

अस पदवी इळ ऊपरे, रावळ राजा रांण ॥

अर्थात् ८ पदवियां इस प्रकार है—(१) राव, (२) राजा, (३) रावत, (४) जांम, (५) दीवांण, (६) रावल, (७) राजा, (८) रांण । (पत्र-३)

३०. दिल्ली रं पातसाहों की विवरो :-

दिल्ली में राजा सिंहासनासीन हुए उन शासकों का वर्णन संक्षेप में दिया गया है । दिल्ली के ६६०००००० गांव सहर होने ५७१ राजाओं के राज करने तथा कलयुग में दिल्ली नाम दिये जाने का उल्लेख है । एक हजार ३० वर्ष यहाँ पांडवों द्वारा राज्य करने, सुखाधेन और विक्रमादित्य के बीच युद्ध में सुखाधेन के मारे जाने और विक्रमादित्य का दिल्ली पर अधिकार होने का उल्लेख है । आगे के वृत्तांत में विभिन्न राजाओं ने किसने कितने वर्ष राज्य किया उसका व्यौरा (वर्ष मास दिन घड़ी) फरूखसियर तक है । (पत्र-१२)

३१. दिल्ली की पातसाही रा सोबां रा खालसा रा देसां की रेख :-

दिल्ली के विभिन्न खालसा परगनों की रेख के आकड़े दिये हैं । (पत्र-१) अन्तिम भाग—

“सारा सोबा १६ सिरकार १४५ मैहल ४१०६ जिण रा ह्नीया ५७१२५३२००११ ऊपत, खरच १४२८१३३००१ खरच नै वाकी ह्नीया ५५६६७१८७०१० ईतरा वरस १ रा खासा खजांना में दाखल करे छै ।”

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है, लिपि सुवाच्य है। अन्त में कुछ पत्र रिक्त पड़े हैं, प्रारम्भ के १६ पत्र लुप्त हैं। मारवाड़ में सामन्तों की भूमिका पर इस ग्रंथ से विशेष प्रकाश पड़ता है।

जोधपुर तथा मेवाड़ राज्य के इतिहास अध्ययन हेतु बार्ते उपयोगी हैं।

### ७४. वात संग्रह

१. वात संग्रह, ३. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३६६५८, ४. २८ × १८ सेमी०, ५. १६४, ६. ३३-३४, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रन्थ में निम्नलिखित ऐतिहासिक बार्ते संग्रहीत है—

#### १. नापा सांखला री वात :-

इस वार्ते के प्रारम्भ में कूम्भा द्वारा राव रिड़मल के छल से मारे जाने की घटना अंकित है। फिर एक गीत दिया है।

प्रारम्भ—

“रावजी श्री रिणमलजी सूं रांणे कूंभे चूक करायो मेहपे पंवार रै कहे सो आदमी अठारे लेम महपो रिड़मलजी रै डेरे गयो””सो ढोलीया उपर पोढीया”” ।

गीत—

मेल्हीयां राण कूंभ रयण राव मरण

अठारे अमराव अचूक””””” ॥१॥”

राव जोधा का मेवाड़ के साथ चले संघर्ष में नापा द्वारा की गई बहुमूल्य सेवाओं का वृत्तांत है, जो मेवाड़ में रहते हुए गुप्त सूचनाएँ जोधा को देता था।

अन्तिम भाग—

“अर नापे रै जात सांपलां आयी पंनपाल पोतां नुं, नापे पोतो कोई नहीं, सो नापो अे सोच जर वाय की अकलवंत था ॥ इति श्री नापे सांपले री वात संपूर्ण ॥ श्री ॥”

(पत्र-६३)

#### २. करणसिंघजी रै कुंभरां री वात :-

इसमें बीकानेर के राजा करणसिंह के पुत्रों—अनूपसिंह, केसरीसिंह, पदमसिंह, मोहनसिंह और वनमालीदास (जो पासवानिया पुत्र था) की जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाएँ तथा बीरतापूर्ण कार्यों का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

“महाराजा श्री करणसिंघजी बीकानेर वडौं राज कीयो वडौं अड़पायत आंटीलो राज हुवा, श्री लपमी नाराईणजी रा वडा भक्त हुवा, तुरक री परभात

रो मुंह न देपता । दरवारी सइयद तुरक राख्या सुव रांवता कांनं में मोती घालीया, सो पातसाह चाकरी बदळे अहदी मेलीया सो भली तरं जावती करावता, पावण नै मोकळी देता पांणी खारी पावता, कहिता—म्हारै मुलक में इसो हीव पांणी छै ..... 'आदि ।"

वनमालीदास को मरवाने की घटना भी भ्रंकित है ।

अन्तिम भाग—

"पछै पातसाह कन्है वात मारी गई, बिसारै पड़ी तद बुलाय गांव दीया वधारै मे आठ गांव पुनीयांण रा परतासिध नुं दीया, दस गांव तो सारे लपमीदास नुं दीया सो वनमालीदास इसी हुवी इण तरै मारी लीयो ॥ इति करनसिधजी रा कुंवरा रो वात संपूर्ण ॥"

(पन-१८)

३. मारवाड़ रै अमरावां रो वात :-

प्रारम्भ में जोधपुर महाराजा अमैसिंह की मृत्यु के पश्चात् रामसिंह और बखतसिंह के बीच हुए संघर्ष में विभिन्न राठौड़ सरदारों के वीरतापूर्ण कार्यों का वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

"राजा अमैसिंहजी संमत अठारै सै पचोतरे रै आसाठ सुद पांचु देवलोक हुवा, अजमेर में श्री पोकरजी उपर दाग हुवी .....रामसिंहजी बाहर पधारीया सारा लोकां मुजरी कीयो, दलपत कुंपावत कनीराम रो बेटो आसोप थो सो पण जोधपुर आयी .....राजधिराज बखतसिंहजी नागौर सुं टीको हाथी घोड़ा दीया सो रामसिंहजी नाकारीयो, धाय नुं कही—काकेजी नुं कहावो जाळोर छोड़ी पछै टीको लेसां ..... ।"

आउवा ठाकुर चांपावत कुशलसिंह आदि सरदारों के प्रयत्नों से बखतसिंह का जोधपुर पर अधिकार होने, मराठों से लड़ने इत्यादि घटनाओं का वृत्तांत है । महाराजा के मृत्यु का उल्लेख इस प्रकार है—

"दपणी मालवे मे जाय बड़ीया तद माराज गजसिंहजी सीप कर बीकानेर पधारीया, माघोसिंहजी नै बोलाया सो पण पधारीया सुं गांव सोनोली मालपुरे भेळा हुवा, दिन एक मिळीया हुजे दिन बखतसिंहजी रो सरीर कुं बेचाक हुवो, दिन चार बेचाक रह्या, पांचवे दिन देवलोक हुवा..... ।"

इसके बाद फिर महाराजा विजयसिंह और मराठों के बीच हुए युद्धों में विभिन्न सरदारों इत्यादि द्वारा की गई सेवाओं का वृत्तांत है ।

अन्तिम भाग—

“घाय भाई पछै बरस दोय नुं समाय गयो पण राजा सारी वात सावधान सो धरती जमाय लीवी, लोक उमराव सारा कंठ लगाय लिया……” “अमरावां दोनुं ही मिसलां कही थी सो सांची कीवी, जीवणी मिसलां सो हाथ भाल नागौर रै पांवद नुं जोधपुर री पांवद कीयी, डावी मिसल मेड़तियो कही थी जो उभां पगां जमी बुडी नीचे दवै जितो न देवां सो सारा मर पुटा तद गई ॥ इति मारवाड़ में घमचक हुवा तिणरी वात संपूर्ण ।” (पत्र-१६३)

४. कुंवरसी सांखले री वात :-

यह जागलू के कुंवरसी सांखला तथा राणा वैष्णोदास की पुत्री भरमल की प्रेम-कथा गद्य-पद्य में है ।

प्रारम्भ—

“भांपलो पीवसी चरसकाल जांगलू राज करै वडी साहिबी वडी सरदार मो पीवसीजी हलोद भासै परणोया, वडी वोहा हुवो, गुडो परच चल अपल कीयो……” ।” (पत्र-२६)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में डाढाला एकल गीड़ वाराह री वात, पलक दरीयाव री वात, पंचाख्यान वार्ता, बैताल पच्चीसी, सिंघासन बत्तीसी री वात लिपिबद्ध है । जो सर्वेक्षित ग्रंथों में पहले आ चुकी है ।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । लिपि सुवाच्य है । ग्रंथ पर गत्ता मंडा हुआ है ।

मारवाड़ के सामन्तों की सेवाओं और विभिन्न सामाजिक मान्यताओं की दृष्टि से ग्रंथ उपयोगी है ।

### ७५. फुटकर बातों गीतों कविताओं री संग्रह

१. फुटकर बातों गीतों कविताओं री संग्रह, कल्याणदास, नानूराम, २. रा० शो० सं०, ३. १५११, ४. २६.५ × १६ सेमी०, ५. १२५, ६. २२, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ऐतिहासिक बातों इत्यादि का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. रावत मोहकर्मसिंह चूंडावत री वात :-

प्रस्तुत वार्ता देवगढ (प्रतापगढ़ राज्य की प्राचीन राजधानी) के शासक रावत हरीसिंह के पुत्र प्रतापसिंह और मोहकर्मसिंह की है ।

प्रारम्भ—

“देवगढ़ रावत प्रतापसिंह हरीसीघोत राज करें। तिकी किसड़ी हेत पातसाहा आढी। कंवारी घडा रो लाडी। भट संग्राम रो नाटसात। चर जिसडी चाल.....।”

वार्ता में सर्वप्रथम राजस्थानी कथा—परम्परानुसार रावत प्रतापसिंह व श्रेष्ठ क्षत्रिय शासक के रूप में चित्रण हुआ है तत्पश्चात् उसके भ्राता मोहकमसिंह का वीरतापूर्ण चरित्र वर्णित है। फिर देवगढ़ की घरती पर उपद्रव करने वाले भील को वीर मोहकमसिंह द्वारा मारे जाने की घटना का विस्तृत वर्णन है। भील को काल कवलित करने के बारे में वार्ताकार ने लिखा है—

“इण भांति बढूक न्हापि ढाल तलवार लेने भील रं सांमहो ज गयो नं पावडा बीस तीसेक सो वाकरियो, रोस रो रूप परत पिघारियो सो वाकारतो ही भीलडो भीपर मालां रो पाए.....भ्रांटा पेटा लेतो उधार सो देस देसां रा आंठ सेटा जारिया बंठो छो सो जोम रो मारियो.....नं वांह चड़ाय चउठा घणी र चडिन रावत सामहो ही तीर चलाये सो अछट रो रावत पगरं फूटि पार जाद पड़ियो.....भील तरवार बाही, सो तो ढाल उपरां कीधी अर भील रं मार्यं तरवार बाह कीधी दोहा.....इण भाति भील नुं मारि.....भ्रादि।”

आगे कथाकार ने औरंगजेब की शासन-नीति का वर्णन करते हुए उसके शाहजादे मुआजम के द्वितीय पुत्र अजीमुद्दौलान की बंगाल की सूबेदारी का उल्लेख किया है। अजीमुद्दौलान द्वारा औरंगजेब की इच्छा के विरुद्ध खबरनवीस को (सिर बुलंदखां द्वारा) मरवाने पर रावत प्रतापसिंह मोहकमसिंह द्वारा निडर होकर घेर बुलंदखां को अपने आश्रय में लेने पर उनकी और बढ़ने का उल्लेख है। अन्त में कथाकार ने पीपलोदा ग्राम के डोडिया राजपूतों द्वारा एक पण्डित को मार देने पर उनसे प्रतापसिंह व मोहकमसिंह के संघर्ष का वर्णन किया है। इस संघर्ष के प्रसंग में युद्ध सम्बन्धी जानकारी का विस्तृत विवरण दिया है। वार्ताकार ने वीररस के अनेक गीत, कवित्त, दूहे इत्यादि दिये हैं। (पत्र-१६)

२. कंवाट सरबहिपा रो नं अनंतराय सांखला रो बात :-

यह वार्ता गढ़ गिरनार के नृप कंवाट तथा उसके सयुर (कोयलापुर पाटणी सगर के शासक) अनंतराय सांखला की है। प्रारम्भ में वार्ताकार ने उक्त नगर के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए अनंतराय सांखला के रक्षक राजपूत योद्धाओं और १०१ भाई भतीजों की शोभा की है। राजा द्वारा सभार्ये करने, आशेट के लिए जाने तथा नाव में बैठ समुद्र भ्रमण का वृत्तांत है।

आगे के वृत्तांत में कथाकार लिखता है कि कैवाट द्वारा कुछ कटु वचन अनंतराय साखला को कहने पर कैवाट को बन्दी बना दिया जाता है और जब कैवाट के भानजे वीर ऊंकाजी को पता लगता है तो वह उक्त राजा के घोड़ों के लिये घास ले जाता है जिसमें अनेक छुपे हुए योद्धाओं द्वारा आक्रमण कर दिया जाता है। इस हादसे में अनंतराय साखला के परिवार के १०१ सदस्य वीरगति को प्राप्त होते हैं।

वार्ता गद्य-पद्य में है। इसमें मध्यकालीन राजपूताने के रीति-रिवाज, सान-पान और युद्ध सम्बन्धी जानकारी का वर्णन मिलता है। वार्ता के अन्त में लिखा है—

“इए दोहा मांही बात रै कहएँ वाळा रो नाम अर समत मितो छै—

दानव अरिहरि नाम दिख जिन संपी बरजणि  
हर जेठो कै मुत कही बात कवाट बख्ताणि ॥५॥  
अठारा सो चौवनवै समत कार्तिक मास  
कृष्ण पक्ष पड़िवा कथी बात कैवाट बिलास ॥६॥” (पत्र-२२)

### ३. गीत ठाकर साहब श्री सूरसिंहजी रो (कल्याणदास चारण कृत) :-

प्रस्तुत गीत जयपुर राज्य के बगरू ठिकाने का अधिराज ठाकुर सूरसिंह चतुर्भुजोत कछवाह का है। गीत में गीतकार ने उक्त ठाकुर के युद्ध-प्रयाण के लिए सज्जित होने का वृत्तांत है। गीतकार ने आगे शुभ घड़ी में जन्मे ठाकुर के कुंवर सांवतसिंह की सराहना की है। (पत्र-२)

### ४. ठाकर साहब श्री सूरसिंह रो रूपग (नानूराम भाट) :-

गीतकार ने ठाकुर सूरसिंह का यशोगान करते हुए राजसी ठाट-वाट का चित्र खींचा है। आगे गीत में ठाकुर के अश्वों, हाथियों और गड़ का वर्णन किया है। (पत्र-६)

### ५. वीरमवे पनां रो बात :-

यह वीरमदे और पनां की प्रेमकथा है। मिलावें ग्रंथांक ७७, रा० शो० सं०, पनां रो बात। (पत्र-४१३)

### ६. रुकमणी हरण बिजं व्याह :-

प्रस्तुत काव्य रुकमणी-हरण से सम्बन्धित है। मूल कथा वही है जो इस



२१४ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

परम्परा के ग्रन्थ काव्यों में वर्णित है। कर्ता का नाम इसमें नहीं दिया है। पर इसका कर्ता मुरारीदास है।

प्रारम्भ—

“अथ गायत्र्योऽस्य नमो अंग आभूषण,  
परमल निरमल पूरण हरण” ॥१॥

अन्तिम भाग—

देव पराक्रम दापियौ, इक सत अंक सत पंच में  
भाषा करि गुण भाषियौ ॥”

यह कृति कृष्ण भक्ति परम्परा को समझने में सहायक है। (पत्र-१३३)

ग्रंथ के अन्त में जती रासो, मोहकर्मसिंह जैतमालोत कलवा के ठाकुर का प्रशस्ति गीत, नाथिया के दोहे, राजिया के दोहे, किसनिया के दोहे इत्यादि संकलित है। ग्रन्थ सांस्कृतिक अध्ययन के लिए उपयोगी है।

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। अन्त में दोहे इत्यादि बाद में किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ से लिखे गये हैं। लिपि सुवाच्य है। प्रत्येक पृष्ठ पर लाल स्याही से दोहरी लाइनें खींच कर दोनों ओर पर्याप्त मार्जिन छोड़ा गया है। अन्तिम कुछ पत्र खाली हैं। ग्रंथ पर गत्ता मढ़ा हुआ है।

### ७६. बात गीत दोहे इत्यादि

१. बात दोहे गीत इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २३६, ४. १६×  
१२ सेमी०, ५. १७६, ६. १४, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात,  
९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. जलाल बूबना री बात :-

प्रस्तुत बार्ता ग्रंथांक ८३७, रा० शो० सं० के समरूप है। (पत्र-४४)

२. जगदेव पंवार री बात<sup>१</sup> :-

प्रस्तुत लोक कथा मालवा देश में धारा नगरी के पंवार राजा की दुहागिन रानी के पुत्र वीर जगदेव की है। सौतेली माता के दाह के कारण जगदेव को गृह परित्याग कर पाटण के राजा सिद्धराज के यहाँ रहने इत्यादि का उल्लेख है। बात अधूरी है।

१. प्रकाशित, सं० मूर्खनरुण पारिक, राजस्थानी बादा। ऐतिहासिकता के लिये देखें लेख 'त्रिविध वीर जगदेव पंवार', राजस्थान भारती (भाग ४, अंक ४) डॉ० दशरथ शर्मा।

इसमें मध्यकालीन राजपूत समाज की मान्यताओं स्वामीभक्ति और वीरता आदि का अच्छा चित्रण है।

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में अनेक फुटकर कवित्त, गीत, दोहे इत्यादि दिये गये हैं। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। कई पत्र खाली हैं।

### ७७. वार्ता दूहा कवित्त संग्रह

१. वार्ता दूहा कवित्त संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १६१, ४. २४.८ × २१ सेमी०, ५. ७८, ६. १८-२५, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-रूप इस प्रकार है—

१. मोजदीन मेहताब री बात :-

यह इरान के शाह खुदादीन के पुत्र मोजदीन और उसके वजीर रोसनखान के पुत्र मेहताबखा की एक प्रेम-वार्ता पद्य मे है।

प्रारम्भ—

“सेहर ईरानी बातस्या, पुदादीन तीस नांग

साप्त-बजादा मोजदीन, मीन केत के धाम ॥१॥” (पत्र-४३)

२. रतनां हमीर री बात :-

यह वार्ता पहले वर्णित वार्ता मे समरूप है। वार्ता का प्रारम्भ एक दूहे से होता है।

दूहा—

“कुसम तणा सरपंच कर, जग जिण लीनो जीत

तिण री समर कर तवां, रस ग्रंथा री रीत ॥१॥”

वार्ता का अधिकांश भाग पद्य में ही है। इसके अतिरिक्त ग्रंथ में वारे मासिया रा दूहा, फुटकर दूहा, बरसात रा दूहा, सात वार रा दूहा, आठ पोहर रा दूहा, सात सखियां रा दूहा, संजोगणी रा दूहा, विमोग सिणगार रा दूहा, करनीजी री छंद आदि कृतियां संकलित है।

यह ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। लिपि घसीट में है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। कुछ पत्र कीट भक्षित है।

### ७८. बात संग्रह इत्यादि

१. बात संग्रह इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. १२४३, ४. २० × २८ सेमी०, ५. ५६, ६. १८, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ का प्रारम्भ शिवरात्रि की कथा से हुआ है—

### १. शिवरात की कथा :-

प्रारम्भ—

“श्री माहादेवजी एकएण समे कैलास परवत विराजीया छै, सो कैलास किसड़ी छै तिका महिमा कहै छै ॥ .....आदि ।”

प्रस्तुत शिवरात्रि की व्रत कथा में पार्वती महादेव शिव को हाथ जोड़ कर विनती करते हुए आग्रह करती है कि आप कोई कहानी कहें। जब शिव कहते हैं कि जो व्यक्ति मेरा व्रत फागुन कृष्ण चौदस के दिन करे और रात को जागरण करे उसके पापों का नाश होगा और उन्हें स्वर्ग में स्थान मिलेगा। इस पर पार्वती कहती हैं इस व्रत से पहले किसी व्यक्ति का उद्धार हुआ, सो कहें, इस पर शिवजी एक भील की कहानी सुनाते हैं। धार्मिक मान्यताओं पर इससे प्रकाश पड़ता है।

(पत्र-७)

### २. बात गणगोरीयां मांहे गोंदोली गावं छै तिएरो :-

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक २०४ के समरूप है।

(पत्र-५)

### ३. जगदेव पंवार की बात :-

यह ग्रंथांक २३६ के समरूप है, प्रस्तुत वार्ता पूर्ण है। व्रत में जगदेव पंवार के सवत ११९१ में शीश-दान देने का और ११९९ में सिद्धराज के मरने का उल्लेख है।

“संवत इग्यारह इकाणवै, चैत दीन तीज रविवार ।

सीस कंकाळी भट्टणी, जगदै दियो उतार ॥”

अन्तिम भाग—

“संवत् ११९९ सिधराव जैसिघदे वैकुठ गया, सिधराव जैसिघदे रै प्रधान कूदम मंत्री साजन दे हुयी ।”

(१६३)

ग्रंथ में इसके अतिरिक्त प्रेम-पत्नी रा दूहा, पत्नी रा दूहा, पति रा दूहा, मदन कुंवर (कामदेव की एक पौराणिक कथा) इत्यादि कृतियां संकलित हैं। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है।

### ७९. तेजसिंह व मांडण कूपावत की बात इत्यादि

१. तेजसिंह व मांडण कूपावत की बात इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. ७८६१, ४. १०.५ × २०.६ सेमी०, ५. ४, ६. १२-१४, ७. १९वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ में अचला पंचायण की बात है जो अपूर्ण है, पूर्ण वार्ता के लिये देखें ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० ।

१. वात राठीइ तेजसी कूंपावत री :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० में वर्णित है। यहाँ केवल प्रस्तुत वार्ता का प्रारम्भ दिया जा रहा है—

“तेजसी कूंपावत आइची वेरधा री वसती सु ओजणा जाट तद आइची घणा वसता सु वित घणी थो सु सीधल सीहे गांव हेरायी थो मु हेरू आय जोयी तरै गांव माँहे तेजसी……” ।” (पत्र-१३)

२. घात मांडण कूंपावत री :-

यह वार्ता भी सर्वेक्षित ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० में आ चुकी है। दोनों में कुछ पाठ-भेद अवश्य है तथा यह वार्ता अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

“मांडणजी साहो कर नै रांणेजी कन्है गया। साथ साथे घणो हुतो सु दीवाण साथ वपाणीयो तरै भेवाड़े घात घाती…… आदि ।” (पत्र-२)

प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र चुस होने से ग्रंथ अपूर्ण है। ग्रन्थ पर गता नहीं है। कुछ पत्र कीट भक्षित हैं।

८०. तारा तंबोल री वार्ता

१. तारा तंबोल री वार्ता, २. रा० शो० सं०, ३. ५१२१, ४. ११ × २५ सेमी०, ५. १, ६. १४, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी मिश्रित हिन्दी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत लघु वार्ता तारा तंबोल नामक नगर व वहाँ के राजा चंद्र की है जो जैन धर्म का अनुयायी था।

प्रारम्भ—

“संवत् १६८४ वर्षे महा सुदि १३ पतिसाह श्री साहेजिहांन राज बैठी, ता समै मुलतान को घासी पत्री बुलाकीदास नै दूर देस की वात आय कही सो लिपी। प्रथम पुजरात देस मध्ये सहर अहमदाबाद नगर है तासु आगरो कोस ३२५ है आगरा सुं लाहौर कोस ३०० है……आदि ।”

अन्तिम भाग—

“देहरा उपर बळस ६०० मण सोने को है देहरा के आस पास ६२ चैताल है एक पूजा होती है या प्रकार जैन धर्म प्रवर्त है। तारा तंबोल के आस पास सिधु नदी है नदी का पाट ६२ का है, अहमदाबाद से तारा तंबोल ५६०० कोस है ।”

यह पत्र एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। जैन धर्म के विकास व विस्तार के अध्ययन की दृष्टि से वार्ता उपयोगी है।

२१६ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

१. शिवरात की कथा :-

प्रारम्भ—

“श्री माहादेवजी एकएण समी कैलास परवत विराजीया छै, सो कैलास किसड़ी छै तिका महिमा कहै छै ॥ ‘.....आदि ।”

प्रस्तुत शिवरात्रि की व्रत कथा में पार्वती महादेव शिव को हाथ जोड़ कर विनती करते हुए आग्रह करती है कि आप कोई कहानी कहे । जब शिव कहते हैं कि जो व्यक्ति मेरा व्रत फागुन कृष्ण चौदस के दिन करे और रात को जागरण करे उसके पापों का नाश होगा और उन्हें स्वर्ग में स्थान मिलेगा । इस पर पार्वती कहती है इस व्रत से पहले किसी व्यक्ति का उद्धार हुआ, सो कहें, इस पर शिवजी एक भील की कहानी सुनाते हैं । धार्मिक मान्यताओं पर इससे प्रकाश पड़ता है ।

(पत्र-७)

२. बात गणगोरीयां मांहे गौंदोली गावं छै तिएरी :-

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक २०४ के समरूप है ।

(पत्र-५)

३. जगदेव पंवार की बात :-

यह ग्रंथांक २३६ के समरूप है, प्रस्तुत वार्ता पूर्ण है । व्रत में जगदेव पंवार के संवत् ११६१ में शीश-दान देने का और ११६६ में सिद्धराज के मरने का उल्लेख है ।

“संवत् इग्यारह इकांणवै, चैत दीन तीज रविवार ।

सीस कंकाळी भट्टणी, जगदै दियो उतार ॥”

अन्तिम भाग—

“संवत् ११६६ सिधराव जैसिघदे बंकुठ गया, सिधराव जैसिघदे रँ प्रधान कृदम मंत्री साजन दे हुवौ ।”

(१६३)

ग्रंथ में इसके अतिरिक्त प्रेम-पत्री रा दूहा, पत्नी रा दूहा, पति रा दूहा, मदन कुंवर (कामदेव की एक पौराणिक कथा) [इत्यादि कृतियां संकलित है । ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है । लिपि सुवाच्य है ।

७६. तेजसिंह व मांडण कूपावत की बात इत्यादि

१. तेजसिंह व मांडण कूपावत की बात इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. ७८६१, ४. १०.५ × २०.६ सेमी०, ५. ४, ६. १२-१४, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ में अचला पंचायण की बात है जो अपूर्ण है, पूर्ण वार्ता के लिये देखें ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० ।

१. बात राठौड़ तेजसी कूंपावत री :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० में वर्णित है। यहाँ केवल प्रस्तुत वार्ता का प्रारम्भ दिया जा रहा है—

“तेजसी कूंपावत आइची देरवा री बसतौ सु ओजणा जाट तद आइची घणा बसता सु बित घणी थो सु सीघल सीहे गांव हेरायो थो सु हेरु आय जोयी तरै गांव मांहे तेजसी……।” (पत्र-१३)

२. बात मांडण कूंपावत री :-

यह वार्ता भी सर्वेक्षित ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० में आ चुकी है। दोनों में कुछ पाठ-भेद अवश्य है तथा यह वार्ता अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

“मांडणजी साहो कर नै रांरोजी कन्है गया। साथ साथे घणो हुतौ सु दीवाण साथ घपाणीयो तरै भेवाडे घात घाती…… आदि।” (पत्र-२)

प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है। कुछ पत्र कीट भक्षित हैं।

८०. तारा तंबोल री वार्ता

१. तारा तंबोल री वार्ता, २. रा० शो० सं०, ३. ५१२१, ४. ११×२५ सेमी०, ५. १, ६. १४, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी मिश्रित हिन्दी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत लघु वार्ता तारा तंबोल नामक नगर व वहाँ के राजा चंद्र की है जो जैन धर्म का अनुयायी था।

प्रारम्भ—

“संवत् १६८४ वर्षे महा सुदि १३ पतिसाह श्री साहेजिहांन राज बैठी, ता समै मुलतान को वासी पत्री बुलाकीदास नै दूर देस की बात आय कही सो लिपी। प्रथम पुजरात देस मध्ये सहर अहमदाबाद नगर है तामु आगरो कोस ३२५ है आगरा सुं लाहौर कोस ३०० है……आदि।”

अन्तिम भाग—

“देहरा उपर कळस ६०० मण सोने को है देहरा के आस पास ६२ चैताल है एक पूजा होती है या प्रकार जैन धर्म प्रवर्त है। तारा तंबोल के आस पास सिंधु नदी है नदी का पाट ६२ का है, अहमदाबाद से तारा तंबोल ५६०० कोस है।”

यह पत्र एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। जैन धर्म के विकास व विस्तार के अध्ययन की दृष्टि से वार्ता उपयोगी है।

## ८१. जगदेव पंचार री बात आदि

१. जगदेव पंचार री बात, २. रा० शो० सं०, ३. १०५०, ४. ३२ × २१.५ सेमी०, ५. ८२, ६, २६, ७. वि० सं० १६४३-४४, ई० सन् १८८६-८७, सासांणी ग्राम, ८. ब्राह्मण रामनाथ, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के दीमक लगने से प्रारम्भ के बहुत से पत्र नहीं हैं, दान शील तपभाव संवाद सालभद्रजी री सिलोको आदि कृतियाँ भी लिपिवद्ध है।

जगदेव पंचार री बात :-

प्रस्तुत वार्ता अपूर्ण है क्योंकि पत्र संख्या ३७ से ४६ तक के पत्र गायब है। यह वही वार्ता है जो ग्रंथ २३६ में वर्णित है। यहाँ केवल वार्ता का प्रारम्भ दिया जा रहा है।

प्रारम्भ—

“मालव देस रै विपे । धारा नगरी छै । तठै उदियादिय राजा राज करै छै । तिण रै पटराणी दोय छै । महारूप री निघान छै । वडी तो बाधेली छै, तिण रै रीणधवल कुंवर छै । दूनी राणी सोळंकणी छै, तिका दुहागण छै । तिण रै वरस दोय रै आंतरै एक कंवर हुवौ छै । तिण री नांव जगदेव दीधो । सो रंग मांहि काईक सावळी छै ……आदि ।” (पत्र-६)

## ८२. कवित्त दूहा बात संग्रह

१. कवित्त दूहा बात संग्रह, दधवाड़िया माधवदास, खड़िया जगा, नकुल आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५४६, ४. १५ × २२.५ सेमी०, ५. ६६, ६. २१-२५, ७. १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८. भूवर चंद्र, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. राम रासो (दधवाड़िया माधवदास कृत) :-

प्रस्तुत काव्य कृति राम भक्ति सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

“…… ॥ अथ दधवाड़िया माधवदास कृत राम रासो लिख्यते ॥

रामजी उंकार सूर् आप अनत, अंतरजामी आप अनंत…… ॥” (पत्र-२३)

२. राठोड़ रतन महेशदासोत री वचनिका (खड़िया जगा कृत) :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ६३४, रा० शो० सं० में वर्णित है। यहाँ केवल पुष्पिका दी जा रही है।

। राठौड़ रतन महेसदासोत री वचनिका संपूर्णम् कृत मास्तिः  
चंद ॥” (पत्र-७३)

। :-

हों मे घूमली नगर के राजकुमार जेठवा और उजली की प्रेम-कथा

“धण पापे घड़ियाह, भ्रैहरण आभड़ीया नहीं  
समुदां स्वात तणाह, मिळै न मोती नीपजै ॥१॥”  
(पत्र-१, दोहे ४४)

इल कृत) :-

।इं की चिकित्सा का विवरण दिया गया है। मिलावें ग्रंथांक  
। सं० ।

लहोत्तर ग्रंथ लिप्येत ॥ श्री नकुल कृतः एक समै इद्रलोक रं विषे  
तैतीस कोड़ि देवता सहित सभा मांडि बैठा छै इतरै श्री महारुद्रजी  
सधारिया इन्द्रजी नमस्कार कीघो.....आदि ।” अश्व चिकित्सा की  
। उपयोगी है। (पत्र-५३)

। री बात :-

र्ता पाटण अमैपुर के शासक अरिमर्दन के प्रधान राठौड़ विजयपाल  
पुत्रों की है। वार्ता के बीच में दोहे हैं। यह मध्यकालीन सामा-  
को समझने में बड़ी सहायक कृति है।

“गवरी नंदन वंद की अरु वंदूं सरसति  
सध गुरु कुं वंदन करी कहिस्युं अकल चरित ॥१॥”

नामा पाटण सटै राजा अरिमर्दन राज करै छै, महावीर दातार  
। राजा रं विजयपाल नामै राठौड़ प्रधान छै। तिए रं च्यार पुत्र  
एक दूजी सहस बुढी तीजी लाष बुद्धि चौघो कोड़ बुद्धि छै, महा  
वंकळा में प्रवीण छै.....आदि ।”

है तो साप मारीघो नै श्री महाराज नै रांणीजी री डील बचायो  
। रं मन री संदेह भागी घणी घुस्याली हुई, तरै राजाजी बीजा



भायां नै दूणी रोजगार दीयो नै सोबुद्धी नै चौगुणी रोजगार दीयो नै परधान थापियो.....पछै राजाजी कना थी सीप मांगनै.... घरै आया मा बाप सुं च्याहँ ही मिळीया घणी सुष हुशो, इति अकल बाहांदरां री बात संपूर्ण ।” (पत्र-१०३)

६. जलाल गहंणी री बात :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ८३७, रा० शो० सं० में वर्णित है । (पत्र-८)

७. अनंतराय सांपले री बात :-

प्रस्तुत वार्ता कोयलापुर पाटण के शासक अनंतराय सांखला व उसके सम्बन्धियों की है । इस वार्ता में युद्ध-वर्णन के अतिरिक्त अनेक रीति-रिवाजों और मान्यताओं का वर्णन भी है । मिलाने ग्रंथांक १५११(२), रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

“श्री गणपत्ये नमः अथ वार्ता अनंतराय सांपलो उगो बालो जेसो सरवहीयो तिण री बात लिख्यतेः समुद्र रै बीच कोइलापुर पाटण तिण री घणी अनंतराय सांपलो छत्रघारी तीण रै घडी गढ़ बडी जमीन री घणी छै तिण रै एक सी भाई-भतीजा छै तिको गढ़ मांहे भेळा रहे छै..... ।”

अन्तिम भाग—

“पातिसाह पचास असवारां सुं अहमदाबाद आयो बीसा तो .....जैसाजी रै चरणो चहोडया संवत् १३०० माहे हु ३ इतसु सूरु पूरा छत्रीयां री बात कही, सूरवीर दातार री मन री कही, इति श्री अनंतराय सापला री बात संपूर्णः ।”

(पत्र-४)

८. आलणसीह भाटी हराहुल री संवादो :-

यह आलणसिंह भाटी और हराहुल से सम्बन्धित अपूर्ण कृति है ।

प्रारम्भ—

“ .....बट जस पटेह, आवु तो आलण अवस ॥२४॥”

अन्तिम भाग—

नही बर सेहेजो बाळीयो सालुभायो अलुभाड़

हरे हुल परणावीयो आलवासी मोनाड़ ॥६०॥”

(पत्र-१)

९. राजकुल क्षत्तीस गीत :-

३६ राजवंशों से सम्बन्धित गीत लिपिवद्ध हैं ।

प्रारम्भ—

“घारा नगर परमार नरंद चहुवांण नाहुला

गढ़ आहेडे गहलोत महोत्रे गढ़ चंदेला ..... ।”

(पत्र-३)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में कुछ फुटकर कवित्त, दोहे, पार्श्वजिन स्तवन, महादेवजी का गीत इत्यादि कृतियाँ संकलित है।

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट एक सी नहीं है, ग्रंथ पर गत्ता है।

### ८३. जागीरदारों की पीढ़ियाँ आदि

१. जागीरदारों की पीढ़ियाँ आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ४०२१२-४०२१६ (मूलतः एक ही ग्रंथ के पत्र), ४. ५५ × १६.५ सेमी०, ५. १६५, ६. २३-२७, ७. वि० सं० १७२८, ई० सन् १६७१, ८. गुसाईं प्राणवल्लभ आदि, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में रावलोत व ग्रन्थ भाटियों, खीची तथा सोनगरा चौहानों, कूपावत मंडलावत, चांपावत, पातावत, मेड़तिया व ग्रन्थ राठोड़ सरदारों की जागीर के गाव पीढ़ियों इत्यादि का ब्यौरा दिया है।

प्रारम्भ—

“रावलोत भाटी

भाटी भोवसिख सगरांसिंध सूरसिंधोत माहसिंध डलसालोत से.... नु पटो ईनायत कीयो तेंरी विगत

जालपसर गोदारा रँ सूरसिंध कीयो पटें.....”

इसके अतिरिक्त बीकानेर महाराजा अनूपसिंह व उसके वंशजों का हाल व बीकानेर के राठोड़ सरदारों की पीढ़ियाँ भी अंकित है। ग्रंथांक ४०२१६ के प्रारम्भ में लिपि समय, लिपिकर्ता का नाम इस प्रकार अंकित है—

“श्री बीद्रावनजी में श्री रावलो कुंज मोल लीचीह प्रोहत अणदरांम तीण कुंज रा लीपत तीहारी नकल सं० १७२८ मीती फागुण सुद १२ लिपतु श्री गुंसाईं प्राणवल्लभजी श्री गुंसाईं बलभजी....”

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है। जो बड़ी अशुद्ध है। प्रस्तुत ग्रन्थ प्राचीन होने के कारण अनेक दृष्टियों से उपयोगी है।

### ८४. जदुवंश वंशावली

१. जदुवंश वंशावली, रतनू हमीर, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ६२३, ४. ११.५ × २४ सेमी०, ५. १६, ६. १३, ७. वि० सं० १८१५, ई० सन् १७५८, ८. पं० कुंभर कुशलगण, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत

काव्य कृति के प्रारम्भ में यदुवंश की वंशावली पौराणिक आधार पर दी गई है फिर राव देसल व उसके पुत्र लासे की प्रशंसा की गई है।

प्रारम्भ—

“॥श्री गणेशायनमः अथ गुण जदुवंश वंशावली वरणन ॥  
देवां देव घमर लंबोदर दुप दालिद भंजण लंबोदर  
दायक मुभ घामक लंबोदर, देवक दान मूळ लंबोदर ॥१॥

रचियता का नाम इस प्रकार दिया है—

“राजवट प्रिधी प्रमाण रहावां कीरति विरियां तणी कहावां  
कहियो सुकवि जांणी हितकारी भपी हमीर एह गुण भारी”

अन्तिम भाग—

“अकलिधारी दिल उजळ, सामंद इंद सरियो सहज पत्री तरहण त्याग पग  
तप यळी बाप बेटे तणी जोड़ अमर वहदीह जग ॥७॥”

पुष्पिका—

“इति श्री यदुवंश वंशावली संपूर्ण पं० कुमर कुशल गणि लिपितं संवत्  
१८१५ वर्षे ।”

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। कुछ पत्र धानी से भीगे हुए हैं। कृति पूर्ण है। पत्र सब खुले हैं।

### ८५. राठीड़ों की वंशावली, ऐतिहासिक बातें तथा गीत इत्यादि

१. राठीड़ों की वंशावली, ऐतिहासिक बातें तथा गीत इत्यादि, गाडण केसोदास, भाघोदास दघवाडिया, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५४६, ४. ३० × २४.६ सेमी०, ५. १४५, ६. ३२-३४, ७. वि० सं० १८०६-१८१६, ई० सन् १७४६-१७६२, बराटिया, ८. शिवराम, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संकलित कृतियों को निम्नलिखित अध्यायों में बांटा जा सकता है—

(अ) घोर भीत कवित्त संप्रह

१. गुण विवेक वार नीसाणी (गाडण केसोदास कृत) :-

प्रारम्भ—

“ऊं ऊंकार अरूप निरगुण निरवाण नाथ  
निरालव निराकार प्राण हंदा प्राण……” ।”

पुष्पिका—

“इति श्री गुण विवेक वार नीसाणी संपूर्ण संवत् १८०६ रा आसोज सुदि  
५ गुरुवार लिपितं पं० शिवराम बराटीया मध्ये ।” (पत्र-४३)

२. गीत संपयरौ सेरसिध भेइतीया रौ न कुशालसिध चांपायत रौ :-

प्रारम्भ—

“चवड़ै आबीया धरा रै बेघ बेहु राजा बंधे चाल, बेहु ई भरबं दगे छुटे  
गोळा बंबाळा बळी सिध राग वाजीया भुक्काउ वाजा…… ॥१॥”

३. गीत महाराज! बलतसिधजी रौ राजा जयसिधजी सुं राइ कीधी गंगघाणा  
तिए समीया रौ :-

प्रारम्भ—

“राता वासरी उपडी वागा सुपाता करेवा रूपंड पराता  
प्रवाड़ा भल भागै ही धिराज,  
भागरा ता फौज लीयां परातां जैसिध आयौ … ॥१॥”

४. गीत जाति संपयरौ महाराज श्री गजसिधजी रौ :-

प्रारम्भ—

“गजसिध ली गयंद वाजा मंगळी नीसाण वाजं  
दीवाणे जोधार राजा ठोडै हुवाह,  
पतिसाहां नाटसाल घाट थंभ पति…… ॥१॥”

५. गीत जाति संपयरौ महाराज जसवंतसिध रौ उजैण रा समीया रौ :-

प्रारम्भ—

“पगां थामीया पतंगां रंगा सुरंगां बगां पमगां उमगा  
नारद आए नगां धाए आज,  
मुजंगां चलकी काया विहंगां दुरंगां भगां…… ॥१॥”

६. गीत जाति संपयरौ महाराज श्री अजीतसिधजी रौ :-

प्रारम्भ—

“उभा ओळगं भूपती कोड़ि छत्रपति राजा अजो घुरती  
नोपती छती वाजती निघात,  
चिकथां विभाड़ै घड़ा चक्रवती वीयी चुंडो राव ॥१॥”

७. गीत जाति संपयरौ राजा सवाई जैसिध रौ :-

प्रारम्भ—

“मच सांभर अनोखी राड़ि धुंवाधोर मार मर्व, बळा बळी  
अंवागड़ समीबडां वाजि,  
वाचता कुरांण वेद हीदवां तुरका बैर आपरा … ॥१॥”

८. गीत जाति संपरौ :-

प्रारम्भ—

“देवां दातारां भुङ्गारां सारां च्यारां वेदां अवतारां  
दसां वार गिरां रूप सुरां घांम  
सतीयां सारा सूरा पूरां रपेसुरां पीरां पैगंबरी,  
सिधां साधिकां प्रमाण ॥१॥”

९. गीत जाति संपरौ (गणेशजी रौ) :-

प्रारम्भ—

सिदा साधि कांवडलो सिध मुद्राळो मोटो महंत उजाळो  
भंयक ओ भो जटालो जोगेंद्र,  
सचाळो भुजाळो सूरी सुंडाळो प्रसन सामर ढाळो..... ॥१॥

१०. गीत जाति संपरौ (गणेशजी रौ) :-

प्रारम्भ—

“गिरां भंगरां पोहाळां गाळां विचाळां फुलादां वाग  
भुरजाला गदां भैरु विमरालां वीर  
चांमड रौ चरताळां तेताला वैतालां तालां..... ॥१॥”

११. गीत संपरौ इंद्र महाराज रौ :-

प्रारम्भ—

“घणा वणावो वादळां रूप रचावो चोसरी घटा छिलावोत  
लावन दीह लावो अछेह,  
पवन परी पलावो प्रछळा करावो पांणी महाराज इंद्र  
आवो वरसावी मेह ॥१॥”

१२. गीत जाति संपरौ श्री सूरज रौ :-

प्रारम्भ—

“प्राभं दीपतो उद्योत भाभं कासिब सुत सुषाट पाट देह—  
वाट चडि दाटै ओटीवी अंधार,  
पुले कपाटां कुंदाळा हाटां धमीयां सु ध्रम पुले..... ॥१॥”

१३. गीत जाति संपरौ :-

प्रारम्भ—

“वडां वांनरां सधीरां लीधां बाहर सजी रौ बडो खडे  
लंका सीस कोपे राजा रामचंद्र,  
मिळै घाट वनचरां हिले निसाचरां मार्थे..... ॥१॥”

१४. गीत जाति संपरौ :-

प्रारम्भ—

“नरां पीयारी पीयारी सुरां असुरां पीयारी नागां प्यारी  
रिपां जिपा गैणां गंधवां प्रवीत  
घुतारी कंवारी नारी सदारी ठगारी घरा जिका... .. ॥१॥”

१५. गीत जाति संपरौ :-

प्रारम्भ—

“घड़ा कठठे वादळां दळा आंधी सोर उडै दांमणी  
चमकै भाला सालळै दुभाल,  
भेटेवा मलेछांणां महादेवा योग हौंदवाणां... .. ॥१॥”

१६. गीत जाति संपरौ :-

प्रारम्भ—

“कीधां केवांणी उवांणी करां सेवीयाणी घरा सोभे तिके  
राजा राव जांणी कांगुरां सु कठि  
नेड़ी गहांणी गहांणी तोडि सपलांणी... .. ॥१॥”

१७. गीत जाति संपरौ राजा अर्भसिंघजी रौ :-

प्रारम्भ—

“वडां तिवारां वधारै विनो सांभरि अहेमदावाद चाडे  
कमधां घणी वाटे अणी राड़ि,  
आगै दीवाळी में होळी हूं जीहु ती राजा अजे पूजीया' .. ॥१॥”

१८. गीत जाति संपरौ अर्भसिंहजी रौ :-

प्रारम्भ—

“घुरै त्रंवाळां नोबतां घुरै इंद्र ज्युं गयंद गाजै घैसारां  
घोड़ां भडां भीम जुं भाराथ,  
असवारी भारी अभी इंद्र ज्युं सवाई ओपे सवाई  
अजीतसाह नरिदां रौ नाथ ॥१॥”

१९. गीत जाति सांणोर (महाराजा अन्नर्यासिंह रौ) सर बुलंदखां रै युद्ध रौ :-

प्रारम्भ—

“पतिसाह अडग ठग बेड़ी पाळे जबरी पटभर केहरी म्यंद,  
आंकुस पाग मांनि अभमल रौ विण मद रद होय सेरवलंद ॥१॥”

२२६ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

२०. गीत जाति सांणोर :-

प्रारम्भ—

“असपति सुं लिपे निवाव इनायत दाव पेच करि थाको दौड़,  
मरूधर मांहे मुगलां नै ठौड़ ठोड मारै राठौड़ ॥१॥”

२१. गीत जाति सांणोर :-

प्रारम्भ—

“असपति री साल दिली री उंठंब सुणीयो बेहु पया सु प्रवीत,  
गिणीयां दिना मे क्षत्रीयां गुर जोघांणे लेसी जगजीत ॥१॥”

ग्रंथ में गोरपनाथजी री छंद, परमेश्वरजी री छंद, गौरंभजी री छंद, पार्श्वनाथजी री छंद इत्यादि कृतियाँ लिपिबद्ध हैं। पुष्पिका में इस प्रकार अंकित है—

“लिपत पंडित शिवराम वराठीया मध्ये संवत १८१७ रा माह सुदि ८  
गुरुवारे चिरं चेला गंगाराम मोतीराम वाचनायं ॥ पोयो पंडित गंगाराम मोतीराम  
री छं, सही सही ।”

(ब) राठौड़ों री वंशावली

राठौड़ों की वंशावली आदिनारायण से प्रारम्भ कर जोधपुर के शासक महाराज अर्भसिंह तक वर्णित है। प्रस्तुत वंशावली में अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ, गीत, कवित्त इत्यादि वर्णित है।

प्रारम्भ—

श्लोक—

“अविरल मद जल निवाह भ्रमर कुळां नेक सेवित  
कपोलं बद्धित फल दातार ..... ॥१॥

अथ वार्ता—

प्रथम अपरंपर श्री नारायणजी सिष्ट रक्षण री मनसा कीधी “आदि ।”

वास्तविक रूपायत का प्रारम्भ कन्नौज के राजा राठौड़ जयचंद के वृत्तांत से होता है। पृथ्वीराज चौहान और जयचंद के बीच विग्रह का वृत्तांत इस प्रकार वर्णित है—

“संवत ११५१ चैत मास आठम तिय राजा जैचंद री पुत्री संयोगिता परणी,  
चहुवाण प्रथीराज सुं लड़ाई हुई तठै प्रथीराज रा सामत काम आया तठै राजा  
जैचंद री सगो भाई वीरमदे महिलां में पोडयो तठै वीरा रस वाजिप्र सांभळि नै  
जाग्यो तरै सात पवास उभा सेवा करता था तिणां नै पुछीयो—वीरारस कठै वाजं  
छै तरै पवासां भरज करो .....पुत्री संयोगिता प्रथीराज चहुवाण से नै जाय छै सो

लड़ाई हुई छै तरै वीरमदे नै रीस आई, हरांमपोरां म्हांनू बयूं न जगाया तरै  
सात पवास मारीया.....वीरमदे प्रथीराज नै जाय पुहती तठै रिण संग्राम हुवौ  
प्रथीराज रा सौरंभ रै पाट सात सांमंत काम आया, धरम डाव प्रथीराज ले नै  
छूटी ..... ।”

वंशावली में अंकित महत्वपूर्ण घटनाओं एवं गीतों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) 'सेतराम रै पुत्र १०० हुवा तिण में एक सीहोजी भारवाड में आया  
तिको किसै प्रकार करि कनवज सुं कूच कीयो संवत १२६६ महा सुदि ७.....  
पेड़ पाटण महेस गोहिल राज करै, पाली नगर तठै पालीवाल बांमण राज करै.....  
सीहोजी महेस गोहिल नै मारिनै पेड़ लीधी.....

दूहा—

पेड़ लीधी पांडा बळे सीहे सेल बजाय  
दत दीधी सत संग्राहणी सो फळ केथी जाय ॥१॥”

(२) “आसथानजी तो पेड़ राज करै.....इतरै पीरोजसाह पतिसाह री  
बेटौ कुतबदीन साहिजादो मका री जात जातां पाली आय नै डेरा हुवा तरै तुरका  
पाली रै फिलसे बांमणां रै पेड़े गाय मारी तिण उपर आसथानजी नै पबर हुई,  
तिण सुं महाभारत रिण संग्राम लोह उडाय नै काम आया..... । कवित्त—

संवत वार चालै वरस बैसायी पुन्य प्रवीत,  
आवीयो काम आस्थान युं सात वीस सुभटां सहित ।

दूहा—

सोनिग मारयो सोमलो, ईडर वंठी आय  
कंहरि नै परभूय किसी, कदे न दीठी काय ॥१॥”

वार्ता—

“ईडरगढ़ सोनिग पुत्र हरभाण सहित राज आपना हुई तठै ईडरीया राठौड़  
नै हथूँ डिया राठौड़ ए दोग साष सोनिगजी सुं हुई ।”

(४) “धूहड़ आसथानोत रै आंना वाधेला सुं लड़ाई हुई तठै काम आया,  
पछै धूहड़जी री बैर अइसी उहखोल कादीयी आंना वाधेला नै मारीयो, धूहड़जी री  
देवळी चांतरौ सिवाणै रा गांव क्रिसंगड़ी जठै काम आया..... ।

धूहड़जी री गीत—

संग पैठा वने मने संक सबली दीयै वरस डंड एकण दोग  
अख गंजीयो नर हीयो..... ॥१॥”



२२८ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

५. जालणसी पुत्र छाडो तिए रौ गीत :-  
प्रारम्भ—

“तलवाड़ें हुत महादळ तांणें उतरीयो इसा बळ आइ  
जंसलमेर तथा जालण उत ..... ॥१॥”

६. गीत तीडोजी रौ :-  
प्रारम्भ—

“चक्रव्रत भ्रान चौक मिळ चलवल रहै राठोड़े रांणें  
तीडो भ्रमंग तुरकदळ भ्राए पाजां चडि न पुलांणें ॥१॥

७. गीत राव सलपाजी रौ :-

“राव तीडोजी काम आया संवत १३४४ तीडोजी पाट सलपोजी (बैठा) ।  
गीत प्रारम्भ—

बाहर नको नको वैराई घण उठ केकाण धूवा,  
प्रहसण पसरै पैरी सीमां राव पसीयो ..... ॥१॥  
संवत १३६६ राव सलपोजी काम आया ।”

८. कंवर जगमाल महमद वेगड़ा रौ बेटी गौदोलो लायो तिए रौ विवरण :-  
इसका विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है ।

९. वीरमदे सलपावत रौ वार्ता :-

वार्ता के साथ घटनाओं को प्रमाणित करने हेतु स्थान-स्थान पर निसाणी  
छंद साक्षी के रूप में लिपिबद्ध है ।  
प्रारम्भ—

“राव सलपाजी रौ बेटी वीरमदे वडो राजपूत पर-भोम पंचायण, वडी  
आपड़ .....आदि । वीरमदे सलपावत नै निसाणी वादर ढाडी कहै—  
प्रारम्भ—

मालो नै वीरमदे रंग भाई वित्तें हुवा दुरजन  
चितीया परपत विरत्ते वीरमदे ..... ॥१॥  
संवत १४४० वीरमदे काम आया काति वदि ५ तिण समीया रौ गीत हरसूर  
बारट कहै—

वटाउ वात कहौ वीरमांयण जोप महीह तणें जम्नीया  
पौरस आयस कोइ पूछै पैला कैता रिण पड़ीया ॥१॥”

१०. गोगादे घोरमोत की वार्ता :-

वीरम के पुत्र गोगादे राठोड़ द्वारा जोइयों से बैर इत्यादि लेने का वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

“गोगादे घोरमोत बड़ी रजपूत सेवाळे राजथान बड़ी आपड सिघ……  
भंसा नै आगै पाछै बांधि नै माथी बाढै तिण रा किसान बंपाण, रजपूती पणौ गोगादेजी  
रा जद जांणां दला जोइयां री माथी इण भांति पाडै तो आप री बैर लेतौ इसो  
वचन गोगादे नै सुणाय नै कह्यौ ……… ।

संवत् १४४७ रा जेठ वदि १३ तळाव उपरा काम आया, भूणीया रडा गांव  
री पापती ।”

११. रांणगदे रं पुत्र की वार्ता :-

रांणगदे भाटी के पुत्र सादूळ को अरड़कमल चूंडावत द्वारा मारे जाने पर  
राव चूंडा का बैर लेने इत्यादि का वृत्तांत है । यथा—

प्रारम्भ—

“रांणगदे भाटी तिण री बेटौ सादो तिण नूँ अरड़कमल चूंडावत मारीयो  
तिण री बैर राव चूंडैजी काढीयो, पछै तिण आटे केलण भाटी मुलतान री फौज  
लाय नै नागौर मराई, पछै तिण आटे राव रिड़मलजी आसणीकोट जाय भाटी  
देवराज सातलोत मारीयो, पछै बैर भागी ……… आदि ।”

१२. राव चूंडा की वार्ता :-

राव चूंडा द्वारा मंडोर तथा नागौर हस्तगत करने का वृत्तांत है । यथा—

“राव चूंडौ मंडोवर री घणी हुवौ इँदा रजपूत हुवा सो आगे घरती माँहै  
सींधल के कोटेचा मांगळिया रजपूत हुता तिणा नै राव चूंडे काढीया ………ठकुराई  
चूंडाजी री वधती गई ………तठा पछै राव चूंडौ नागौर उपर गया, तरै नागौर मां  
सु तुरक नाठा ………पछै राव चूंडौ नागौर हीज रीयो……इतरा में आलो  
रोहडीयो काळाउ सुं……नागौर आयौ, दिन पांच सात रियो, पण ओळये नही, तरै  
चारण समभावणी कीनी—

दूही—

हू काळाउ काह तोने चीत न आवै

चूंड रा फाटो फुटो जाइ डोडवांणो डंडीया पछै ॥१॥

……दूहो सुण नै तुरत ओळप्यौ ………चारण नै लाय पसाव दीयो, पिरज  
गांव सांसण में दीयो…… ।”

१३. राव रिड़मल की बात :-

प्रस्तुत वार्ता में राव रिड़मल की पुत्री राजकंवर की शादी मेवाड़ के राणा खेता के साथ करने का वृत्तांत है। इसके अतिरिक्त अन्य घटनायें प्रायः दूसरी ख्यातों इत्यादि से मिलती जुलती हैं।

१४. जोधा की बात :-

जोध्या द्वारा मंडोर पर अधिकार करने, जोधपुर दुर्ग का निर्माण करने इत्यादि अनेक घटनाओं का वृत्तांत है। राव जोधा से सम्बन्धित अनेक गीत, कवित्त, वार्ता के बीच-बीच में दिये हैं। यथा—

(क) अथ गीत राव जोधाजी की :-

“नर नाम मंडळे मेवाड़ निरपतां कमधज गुरड फिरँ को पंथ,  
कुंभकरण सिर संके न काई..... ॥१॥

(ख) अथ नीसांणी राव जोधा की :-

जिण दिन जोध जनमीया जस थाळ वजाय ।  
मांगळिया गहलोत गौड़ सोई पड़वाया..... ।”

जोध्याजी की वार्ता के पश्चात् जैतसी उदावत, वीरदे जैमलजी इत्यादि राठीड़ों का वृत्तांत दिया गया है। कुछ गीत जोधपुर महाराजाओं और उनके समसामयिक योद्धाओं के लिपिबद्ध हैं जिनका विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(अ) गीत अमरा विजावत की :-

प्रारम्भ—

“सूरज पुड़ भेदण जोति समावण सकत साराहीयो  
सूर सहस काहै विजै वरी सिर..... ॥१॥”

(ग) गीत राजा उदेसिधजी की :-

प्रारम्भ—

“भोटा राजा भेर समांणै त्रिहु रायां सिरसी तुड़ि तांणै,  
उदियासिध तपत अपांणै..... ॥१॥”

(घ) गीत राजा सूरसिध की अठताली (माधोदास दधवाड़िया कृत) :-

प्रारम्भ—

“रिण वरण घड़ चतुरंगजी घण मयण सूर तिघणी घणी  
जंकार ग्रीजण जोगणी तुड़ तांण..... ॥१॥”

(इ) गीत साह यहाबर जीता तिए समीया रौ :-

प्रारम्भ—

“कंपलांगिर घोम रजी घर किरण उर्दे होत सैहस कर  
पारंभ राम पदंग गज पापर ..... ॥१॥”

(घ) गीत जाति चितइलोत गजसिघजी रौ :-

जोधपुर के शासक गजसिंह के जन्म व राज्यारोहण के संवत् देकर प्रशस्ति गीत दिया है। घथा—

“संवत् १६५२ काती सुदि ८ गजसिघजी रौ जनम संवत् १६७६ आसोज सुदि ६ गुरवार राजा गजसिघजी टीकै बैठा ..... ।

गीत प्रारम्भ—

गज फौज गंज भडां मंत्रै सगा तोड़े सोग,  
पतिसाह भागी पैत पाधर धकं चडि सिर धोंग  
तो गजसिघ रं गजसिघ अरिदळ गहणौ गजसिघ ॥१॥”

(छ) महाराजा जसवंतसिघ रौ कवित्त :-

इसी प्रकार से संवत् देकर फिर एक कवित्त और संतति इत्यादि का उल्लेख किया है।

“जसवंतसिघजी रौ जन्म संवत् १६६५ असाढ़ वदि ७, महाराज श्री जसवंत-सिघजी टीकै बैठा संवत् १७१५ वसाय सुदि १ वार सुक्र उजैण पेत्र पातिसाह श्री अवरंग साह सुं लड़या—

कवित्त प्रारम्भ—

जांम इंद्र उवड़े जांम दिणीपर दरसावै  
जांम सोम सुभ श्रवै जांम हरि नांम रहावै  
जांम नाग कासिण जांमई सर जोगेसुर  
जांम सात समंद जांम घरती गिर अवरंग..... ।”

(ज) महाराजा अजीतसिघ अर अमर्यासिघ री घात :-

महाराजा अजीतसिंह के जन्म, राज्यारोहण और मृत्यु के संवत् के पश्चात् संतति का उल्लेख कर अमर्यासिंह का उत्तराधिकारी होना लिखा है।

(स) घाता संग्रह

वंशावली के तत्पश्चात् ऐतिहासिक घातों लिपिबद्ध है—

१. तेजसीजी की बात :-

जैतारण के स्वामी डूंगरसिंह उदावत के पुत्र तेजसिंह द्वारा पंचारों से बदला लेने, सिवाने पर मालदेव की ओर से अधिकार करने इत्यादि घटनाएं वर्णित हैं।  
मिलावें ग्रंथांक १२३४(१६), रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

“राव श्री जोधाजी भार्या हाडी जसमादे पुत्र मुजाजी, मुजाजी पुत्र उदा उदाजी सुं पांप उदावत कहांगी, उदाजी पुत्र डूंगरसीजी डूंगरसीजी पुत्र राज श्री तेजसिजी की वार्ता—तेजसिंह वडो रजपूत श्रापाड़ सिध, राव मालदेवजी रँ दरवार घणो कायदी’ ..... आदि ।”

२. राठीड़ जसवंत डूंगरसिपोत की वार्ता :-

डूंगरसिंह उदावत के पुत्र जसवंतसिंह द्वारा मालदेव से मेल करने फिर ईधर में रहते हुए अखतीयारखान से युद्ध करने इत्यादि घटनाओं का वृत्तांत परम्परा—  
'ऐतिहासिक वार्ता' (पृ० ६८) से मिलता जुलता है।

प्रारम्भ—

“अठै राव मालदेजी सोना की थाळी वावत तेजसी सुं बुरी मानीयो, तेजसीजी जैतारण मांहि सु परा काढीया नै जैतारण पालसँ कीवी, रतनसी उदावत नै पटै दोधी, तरँ जसवंतजी डूंगरसीजी रौ बेटो जैतारण छुटी तरँ डूंगरपुर बांसवाले गया । तठै रावळ प्रतापसिध राज करँ ..... ।”

३. राठीड़ देईदास की वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता मालदेव के प्रसिद्ध सामन्त देवीदास की है।

प्रारम्भ—

“राव मालदेजी भेडतो जैमलजी कना सुं लीयो तरँ मेड़ता दोळो कोट थो तिकँ राव मालदेजी पढायो’ ..... आदि ।”

४. राव मालदे जैता कूपा की वार्ता :

देखें ग्रंथांक १२३४(१७), रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

“संवत १६०० सइकँ मिंगसर वदि ३ बडी वेड़ि हुई, राव मालदे उपरा सूर पातिसाह नै लेनै वीरमदे दूदावत फोज ल्यायो’ ..... आदि ।”

१. प्रकाशित, सं० नारायणसिंह भाटी, रा० शो० सं०, जोधपुर ('परम्परा' ऐतिहासिक वार्ता, पृ० ६०)

#### ५. राठौड़ कूपा री बात :-

प्रस्तुत वार्ता में राव रिड़मल के प्रपौत्र और मेहराज के पुत्र राठौड़ वीर कूपा के द्वारा लड़े गये युद्धों इत्यादि का वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

“राठौड़ कूपाजी बडो ठाकुर हुवौ सो वीरमदे दूदावत रँ चाकर था, मेडता री गांव मुगघड़ो पटँ थो, तिकी किण हेक बोल वचन उपरा छांडि नँ वीरमदे बाघावत फनँ वसीया…… ।

पछै कूपाजी राव जंतसिध नँ मारि नँ वीकानेर लीची, पछै नागौर लीची खान नासि गयी रांणा उर्दसिध सांगावत नँ राणा सागाजी री पुतरेली छोकरी री बेटे वणवीर घणी साथ लेनँ रांणीजी नँ जाय घेरीया तद मेवाड़ रँ गांव मदारीये कूपाजी नँ राव मालदे थांणो रापीया था ……… ।”

#### ६. राठौड़ पीवा उदावत री बात :-

खींवा उदावत की वार्ता बहुत संक्षेप मे इस प्रकार वर्णित है—

प्रारम्भ—

“राठौड़ पीवो उदावत बडो ठाकुर हुवौ भाजण री परत वहती थो तिकी बडी बेड़ि में काम आया । गिररी पटे थो तिणरी साथ दुहो—

गिररी उपरि बट गड़ पीमो साल पळांह

कमघज केवा काढिया डाकणि धवी डळांह ॥१॥”

दीवाण री ब्यावर किणहेक बागड़ीया रजपूत नुं धी सो पीवोजी दवाय नँ उरी लीची, ब्यावर लीनां पछै बागड़ीयो रजपूत ब्यावर छोडि नँ बघनोर गयो, तरै पीवोजी बळे बघनोर मां सुं काडि नँ बघनोर उरी लीनीं, पछै राव मालदेजी ३६० गांवां सुं पीवाजी नँ बघनोर पटे दीधी ।”

#### ७. राठौड़ जंतसी उदावत री वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता अति संक्षेप में इस प्रकार वर्णित है—

प्रारम्भ—

“राठौड़ जंतसी उदावत बडो रजपूत थो……मेवाड़ रँ गांव कोसीयल राव मालदेजी राठौड़ जंतसी उदावत नँ थांणै रापीया सो रांणो उर्दसिधजी चलाय ने जंतसीजी उपरै आया, आछौ मांमलो कीयो नँ जंतसीजी री बोलवाला हुवौ, राणांजी चीतौड़ सिघाया । बळे राव सेवोजी पीपाड़ री घणी सेवकी री बेड़ि में राव गांजेजी मारीया था तरै सूरचंद रा चहुवाणां रँ माथँ राजा सूजा सूंडा री वर थो

सो सेवेजी मरतां जैतसीजी नै भळायी थो ओ दावो जैता भतीज ये वाळज्यो, पछे संवत १५६१ रा आसोज सुदि १० दावो वाळीयो । राजा सूडा रो वर लीयो ।”

८. चंद्रसेन, उग्रसेन और आसकरन की वार्ता:—

इसमें जोधपुर के शासक मालदेव के पुत्र चंद्रसेन और चंद्रसेन के पुत्र आसकरन और उग्रसेन की वार्ता वर्णित है ।

“राव मालदेजी कंवर रामसिंघ नै देसाटी दीयो, संवत १६१५ काती सुदि १५ तिको कवर रामसिंघ मेवाड़ रै गांव कलावे गयो, राणा उदैसिंघजी पटे दीयो ……आदि ।”

उदयसिंह द्वारा गागाणी ग्राम लूटने और राव राम द्वारा लूनी नदी के उरली तरफ से गाव इत्यादि लूटने पर चंद्रसेन द्वारा युद्ध करने तत्परचात् जोधपुर गढ़ पर मुगलों का अधिकार होने, चंद्रसेन का भाद्रजण जाना तथा मुगलों से मुकाबला इत्यादि करने का उल्लेख है ।

राव राम की मृत्यु का उल्लेख इस प्रकार है—

“जोधपुर तो तुरकां रो थाणो थो, सोजित राव राम नै तुरकां वणी नही तरै राव राम सोजित सूनो करि नै लोक साथे करि नै सिरीयारी जाय वसीया, पछे राव राम रै जोगीयां सु मांमलो हुवो तरै लपमण नाथ पतर भांजियो नै सराप दीयो तिण सुं राव राम तुरत मुवो । संवत १६२६ जेठ सुदि ३ राव राम नै दाग सीरियारी हुवो छै ।”

राव चंद्रसेन की मृत्यु का उल्लेख इस प्रकार है—

“पछे रावजी सचीयाय री गाळ माहै रह्या, पछे दुधवड़ राठीड़ वरसाल उदैसिंघोत रै मिजमानी पांण गया था सो तठै क्युं ही हुवो सो रावजी पाछा आय सचीयाय री गाळ माहै चंद्रसेन संवत १६३७ माहा सुदि ७ राम कइयो—रावजी नै दाग सारण गाव महाकाळ रै वड़ कनै हुवो छै, तठै सतियो ३ हुई…… ।”

चंद्रसेन के पुत्रों उग्रसेन और आसकरन के बीच राज्य-हक के लिए मनमुटाव होने का उल्लेख है, और अंत में दोनों के मारे जाने का उल्लेख है ।

“……सारण आया दोनु भाई माहो मांहि मिळिया दिन १० तथा १२ हुवा तरै राव आसकरन रजपूता नै भेळा करि नै कह्यो—एकण म्यान में दोय पांडा समावै नहीं, इणां री निजरी बुरी दीसै छै म्है भेळा नही रहां……म्हाने ये सीय दो, ज्युं मांमा कनै उदैपुर जासुं । राणा उदैसिंघजी कनै । तरै राजपूतां कह्यो-मजाल छै……आप (उग्रसेन) सिवाणे पधारी तरै इणा क्यूं वात दाय आई नही……।

“रावजी एक ढोलणी उपरि आडा हुवा, आदमी ५ तथा ७ रावजी कने था, आदमी ५ तथा ७ उग्रसेनजी कने छै, पहले दिन १ रांमति चौपड़ री रमीया था सो रावजी क्यूं मिठाई हारिया था सो उग्रसेन मिस घात नै कह्यौ, रावजी मिठाई हारी छै तिको मंगावौ”.....उग्रसेनजी कटारी काढ़ी”.... “दिपावण लागा आ म्हे कटारी मोलि लीनी छै तरै साथ रां जोय पाछी दीनी तरै उग्रसेनजी च्यारों आंगुलीयां सु कटारी भाली नै बीजी हाथ रावजी री छाती उपरि देय नै”.....कटारी बाही सो करक मांहि होय नै परि नीसरी”.....राठोड़ बीको उग्रसेन नै भालीयो तरै सेपे सांकरोत ईस उपरै पग देनै हाथ मरोड़ नै कटारी उरी लेनै ऊबा हीज कटारी उग्रसेन नै वाही सो एक पंवा मांहि लागि नै बीजी काप मांहि नीसरी, तरै उग्रसेन कह्यौ—फिट वीका हरांमखोर तें मनै मारियो”..... ।”

#### ६. सिवांणा गढ़ री घाता :-

मिलावें ग्रथांक १२३४ (११), रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

“प्रथम तो सिवांणो गढ़ पमारों री करायो, वीरनारायण पमार करायो थो, तिणरी ठकुराई निपट जोरै थी”.....आदि ।”

#### १०. नव कोटां री विगत री बात :-

इसमें नव कोटां की विगत इस प्रकार दी है—

१. मंडोवर कोट पंवार सांवत री बैसणी छै पछै पड़ियारां लीनी”.....।
२. दूजो कोट अजमेर पंवार सिधसुय री बैसणी छै बडौ तारागढ़ भापर उपर छै ।
३. तीजो कोट पंगल गजमल पमार री बैसणी, सिध री धरती सु अड़ती”....।
४. चौथो कोट लौद्रवी जैसलमेर कने सूनी छै, पंवार भांण री बैसणी छै”.... ।
५. पांचमो कोट आवूजी अनहपाल पंवार री बैसणी छै अचलगढ़ छै”.....।
६. छठो कोट पारकर हंस पंवार री बैसणी, पारकर भापर रै पुई छै, कछ भड़तौ छै”.....।
७. सातमो कोट घरघाट तिको उमरकोट कहीजै, पमार जोगराज री बैसणी छै”.....।
८. आठमो कोट जालोर, पमार भोज री बैसणी छै”..... ।
९. नवमो कोट किराडु छै, घरणी वाराह री बैसणी छै, गांव ७०० लारा लागा छै”.....।



११. सोजत री वार्ता :-

वही वार्ता है जो विगत भाग १ (पृष्ठ ३८३) में वर्णित है ।

प्रारम्भ—

“आदु अंवावती नगरी कहोजै छै, तांवा री पांन छै ……आदि ।”

१२. रांणा रायमल री वार्ता :-

उदयपुर के राना रायमल के पुत्रों की वार्ता वर्णित है, मिलावें ग्रंथांक १२३४ (२४), रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

“रांणा रायमलजी चीतौड़ राज करै, तिण रै रांणी भालीजी तिण रै पेट रा वेटा प्रियीराज १ जैमल २ सागो ३ ……आदि ।”

१३. चित्तौड़ रा धणियां री वंशावली :-

ब्रह्माजी से लेकर उदयपुर के राणा प्रतापसिंह (जगतसिंह का पुत्र) तक वंशावली अंकित है ।

प्रारम्भ—

“संवत् ५५० वर्षे नागद्रहा चुड़ामण देवी गोरा भैरव पुज्य ब्रह्मा री पुत्र विजय पांन रिप तठा धी विजय पांन गोत्र कहाण छै श्री ब्रह्माजी १ बीजयपांन २, देव सर्मा ३ ……आदि ।”

१४. जोधपुर रा धणी रं डावी जीमणी मिसल री विगत :-

मिसल जीमणी रा उमराव		मिसल डावी री विगत	
चांपावत	१	मेडतिया	१
कुंभावत	२	माघवदासोत	२
जैतावत	३	विसनदासोत	३
भदावत	४	चादावत	४
कलावत	५	रायमलोत	५
रांणावत	६	ईसरोत	६
करनोत	७	सुरतांणोत	७
वाला	८	केसोदासोत	८
घवेचा	९	गोयंददासोत	९
महेचा	१०	जगमालोत	१०
पाता	११	रायसिधोत	११

मांडला	१२	जोधवा	१२
उहड़	१३	उदावत	१३
भाटी	१४	करमसोत	१४
मांगळिया	१५	मुजावत	१५
पुरविया	१६	जंतावत	१६
प्रोहित	१७	सतावत	१७
		सोडा	१८
		कछवाह	१९
		इंदा	२०
		मुहता	२१
		सिपाई	२२
		भारवी	२३
		देस दीवाण	२४

१५. मोटी छोटी आसामियों की विगत :-

जोधपुर के ८ मोटे ठिकाने और १६ छोटी कोटि के ठिकानों के नाम भ्रंकित हैं ।

मोटा ठिकाना—

जीमणी मिसल

पाली	१
आजवो	२
आसोप	३
बगड़ी	४

पोहकरण की सिरी

परधानगी लारै

१६ आसामो छोटी

चंडावळ	१
रोहित	२
सभदड़ी	३
फळोधी	४
लबेरो	५
पेजड़लो	६

डायी मिसल

नीवाज	१
रीया	२
आलणीयावास	३
देरवो	४

रायपुर	६
रास	१०
छिपीयो	११
बलाडी	१२
नीबैंडो कुपावतो रो	१३
भाद्राजण	१४

२३८ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

घिणलो  
घांघाली

७  
८

बळुंदो  
पींवसर

१५  
१६

१६. महाराज अमरसिंघजी की वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता जोधपुर के शासक महाराजा गर्जसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह की है जिसमें उसका इतिवृत्त अंकित है।  
प्रारम्भ—

“संवत् १६४० रा वैशाख महीने महाराज श्री गर्जसिंघजी कंवर अमरसिंघजी ने देसोटी दीयी…… आदि।”

१७. सोनगरा वीरमदे की वार्ता :-

यह जालोर के शासक कान्हड़दे के पुत्र वीरमदे सोनगरा की वार्ता है ग्रंथांक २७६ (१), रा० शो० सं० से मिलती जुलती है।  
प्रारम्भ—

“गढ़ जाळोर सोनगराव वणवीरजी रै कंवर दोय हुवा—बडो कंवर का छोटी रांणगदे, टीकै कान्हड़दे बँठो, गढ़ जाळोर राज करै……।”

१८. अनंतराय सांयला की वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता कोयलापुर पाटण के स्वामी अनंतराय सांखला व मिलारै ग्रथांक १५११ (२), रा० शो० सं०।  
प्रारम्भ—

“कायलापुर पाटण रौ घणी अनंतराय सांयलो, बडो ठाकुर ……आदि।”

१९. जगदेव पंवार की बात :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक २३६, रा० शो० सं० में वर्णित है।  
प्रारम्भ—

“मालवा देस माहै धार नगरी तठै पमार उदयादीत राज क रांणी २…… आदि।

२०. जयरा मुयरा की वार्ता :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक १४९०८ (४), रा०शो०सं० में वर्णित है।  
प्रारम्भ—

“पछिम दिस नै पाटण गांव छै तठै मोठो भाटी राज करै, ति हुवा, एकण रौ तो नाम भीवो नै दूजो रौ नाम देवो ……आदि।”

२१. शिवरात्री की वार्ता :-

शिव रात्रि की व्रत कथा लिपिवद्ध है ।

प्रारम्भ—

“श्री महादेवजी कैलास पर्वत उपर विराजिया छै, कैलास पर्वत रूपा मई छै.....।”

२२. महाराज जसवंतसिंघ री वार्ता :-

प्रस्तुत वार्ता में जोधपुर के शासक जसवंतसिंह द्वारा लडे गये युद्धों विशेष तौर से उज्जैन की लड़ाई का विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“संवत् १६८३ रा पोग वदि ४ मंगलवार जसवंतसिंघजी री जन्म, संवत् १६९५ महाराज श्री जसवंतसिंघजी पाट बंठा, बढी राजा हुवी.....।”

महाराज की मृत्यु के पश्चात् जोधपुर गढ पर मुगलों का अधिकार हीने तथा राठोड़ दुरगादास और मुगलों के बीच हुए संघर्ष का वृत्तान्त दिया गया है । घटनाओं को प्रमाणित करने हेतु अनेक दोहे, गीत इत्यादि वार्ता के बीच-बीच में दिये गये हैं ।

इस वार्ता के पश्चात् राव सीहा के पुत्र आसधान की वार्ता पुनः लिपिवद्ध की गई है । जूफिर गढ़, शहर कव किसने बनाये उसकी विगत दी है जो प्रायः अन्य स्थातों, वार्ता में मिलनी है । मोटा राजा उदयसिंह, राव जोधा, राव गागा, राव चूंडा इत्यादि की वार्ता बहुत संक्षेप में (५-७ पंक्तियों में) लिपिवद्ध है ।

२३. महाराजा अजीतसिंघ री वार्ता :-

जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह के जीवन की कुछ अन्तिम घटनाओं का विवरण संक्षेप मे दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“महाराज श्री अजीतसिंघजी पातिसाह श्री फरकसाह रा विना हुकम नरबदा सु मुरड़ नै पाछा देस में पधारोया नै पातिसाहजी दिपण गया.....।”

वार्ता का अन्त महाराजा की मृत्यु से होता है—

महाराज परणीज नै जाडेचीजी रा महला पोड़ीया था तिण राति महाराज सु कंवर बखतसिंहजी चूक कीयी संवत् १७८१ रा असाड़ सुदि १३ मंगलवार.....।”

२४. एकलगिड़ वाराह री वार्ता :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक २१६, रा० शो० सं० में वर्णित है ।

२४० : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

२५. घाता महाराज अभयसिंह देवलोक हुआ मारवाड़ में बियो हूवो तिए समीया रो :-

महाराज अभयसिंह की मृत्यु के पश्चात् राज्यहक के लिये वसंतसिंह और रामसिंह के बीच हुए उत्तराधिकारी युद्ध का वृत्तांत विस्तार से दिया है।  
प्रारम्भ—

“संवत् १८०६ रा असाढ सुदि १४ री राति घड़ी २ पाछली रहितां महाराज अभयसिंहजी अजमेर देवलोक हुआ नं दाग पोहकरजी दीरायो……।”

इसके पश्चात् शिवरात्री की कथा पुनः लिपिवद्ध की गई है जो ग्रंथ की अन्तिम कृति है।

पुष्पिका—

“इति शिवरात्री कथा संपूर्ण लिपतं पं० शिवराम वराठीया मध्ये सं० १८१६ चैत्र सुदि १३ मोतीराम वचनायें।” (पत्र-८१)

यह वृहदाकार ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिखावट साफ सुथरी है। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता मढ़ा हुआ है। पत्र काफी जीर्ण मटमेले रंग के हैं। अन्तिम अधिकांश पत्र रिक्त पड़े हैं।

### ८६. राठीड़ों री वंशावली आदि

१. राठीड़ों री वंशावली आदि, २. २१० शी० सं०, ३. २७६२, ४. २२ × १५ सेमी०, ५. १६, ६. १६, ७. १८वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संकलित कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१. राठीड़ों री वंशावली :-

इसमें राठीड़ों की वंशावली पौराणिक आधार पर चली है। राठीड़ों का मूल स्थान करणाटक में कल्याणी बताया गया है और तत्पश्चात् कन्नौज।  
प्रारम्भ—

“सदन बुद्धि गज वदन रदन दुख विडरन  
गनपति उमया ईस तामु नंदन अध खंडन……।”

वास्तविक स्यात का प्रारम्भ राव सीहाजी से (पत्र ४) होता है। इसमें संबत्, घटनायें इत्यादि राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित ‘राठीड़ वंश री विगत एवं राठीड़ां री वंशावली’ के मिलती जुलती है। वृत्तांत महाराजा अजीत

सिंह व उनके कुँवर अभयसिंह तक चलता है। वृत्तांत में मुख्य रूप से इन राजाओं की सन्तति शादी-सम्बन्ध इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है।

ग्रन्थिम भाग—

“.....रतनसिंघजी शिशोदीयां रा दोहीता प्रथीसिंघजी देवळिया वाळा रा दोहीता जन्म १७७४ रा थां सुदि ६ री नै.....रूपसिंघजी नै रतनसिंघजी मा जाया भाई सं० १७७५ रा काती सुद १ री जन्म, सीभागसिंघजी गौड केसरीसिंघजी रा दोहिता।” (पत्र-१८)

२. छत्तीस कारखानों का नाम :-

यहां ३७ कारखानों के नाम इस प्रकार दिये हैं—(१) घरमपुरी (२) अंबरारखानो (३) खजांनारो कोठार (४) सिलेखानो (५) तवेलो (६) सुतरखानो (७) तोप खानो (८) दफतर खानो (९) सेज खानो (१०) तंबोल खानों (११) सिकार खानो (१२) कबूतर खानो (१३) बबर खानो (१४) रूसनाई खानो (१५) नौबत खानो (१६) अठाला री कोठार (१७) मोदी खानो (१८) जुहार खानो (१९) रसोड़ा खानो (२०) सुघा खानो (२१) कपडा री कोठार (२२) तोसा खानो (२३) कीली खानो (२४) गडखानो (२५) फरास खानो (२६) पालखी खानो (२७) तातेर खानो (२८) भरभर खानो (२९) बारूद खानो (३०) भीण खानो (३१) ओहड खानो (३२) अंबर खानो (३३) रथ खानो (३४) पंडत खानो (३५) भगस खानो (३६) मूरदार खानो (३७) सेत खानो। (पत्र-३)

३. अठारें सूर्यवंशी राजाओं का नाम :-

इसमें सूर्य वंशी १८ राजपूत शाखाओं के नाम अंकित हैं। (पत्र-३)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिखावट के अक्षर मोटे हैं। ग्रंथ पर गस्ता नहीं है।

### ८७. बादशाहों की पीढ़ियाँ

१. बादशाह री पीढ़ियाँ, २. रा० शो० सं०, ३. ३८७०, ४. ११.५ × १७ सेमी०, ५. ८, ६. १०-११, ७. १८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संवत् ६२६ से दिल्ली में राजा सिंहासनासीन हुए उन राजाओं की पीढ़ियाँ विसलदे से चौहान पोहड़दे तक अंकित है।

प्रारम्भ—

“अथ परतसारी पीढ़ीया लिपते—प्रथम पूंटी गाडो समत ६२६ वंशाख वदि १३ वार सोम अथ आसांभी वरस मास दिन घडी राज कीयी तिणरी वीगत ।”

(पत्र-१)

इन पीढ़ियों के बाद १६ सतियों से संबंधित ७ दोहे लिपिबद्ध हैं ।

ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । ग्रंथ पर गत्ता नहीं है, पत्र खुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है । विविध जानकारी हेतु ग्रंथ उपयोगी है ।

### ८८. कछवाहों की वंशावली

१. कछवाहों की वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ५२११, ४. १५ × २२.५ सेमी०, ५. ११४, ६. १०, ७. १६ वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

प्रारम्भ—

“श्री आदिनारायण तैं कंबळ में ब्रह्माजी १, मारीचर २, कस्यंप ३, सूर्य ४ ……।”

इसमें कछवाहों की वंशावली आदिनारायण से जयपुर के शासक सवाई जगतसिंह तक दी गई है । प्रारम्भ में देव वंश की वंशावली में २६३ नाम दिये हैं । कहीं-कहीं किसने कितने वर्ष राज्य किया अंकित है । फिर राजवंश में राजा ईसरीसिंह का वृत्तांत प्रारंभ होता है । यथा—

“राजा ईसीसिंहजी पंडिताना बुलार पुछी सो राज सदा थिर रहै सो दान वनाओ, जदि पंडितों राजा सु कही सो राज देस सुधा दान कर्या सदा थिर रहै……।”

यह वृत्तांत ग्रंथांक १३४६८, रा० शो० स० कछवाहा की ख्यात से मिलता जुलता है । आगे विभिन्न शासकों के वृत्तांत में मूल रूप से राजा का जन्म, राज्यारोहण और राजाओं के राजियों के नाम, उनकी संतति और मृत्यु संवत् इत्यादि दिये गये हैं । राजा भगवंतदास और सवाई मानसिंह तथा उसके वंशजों का विवरण अंकित है ।

यथा—

“तदि रानो प्रतापसी डेरै आयी और कही आपकी आज महमानी छैं तदि कंबर मानसिंहजी बोल्या कई तयारी करास्यो, जदे रांणोजी कही आप फुरमावो सो ही……जदि आप कही सो थीर की तयारी कराजै……।”

जयपुर कछवाहा राजाओं ने मुगल बादशाहों की जो सेवार्ये की उसका वृत्तांत विशेष तौर से दिया गया है।

अन्तिम भाग—

“महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंघजी महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी का वेटा, जन्म मिति वैशाख सुदि १ संवत् १८७० के साल। श्री जमवयजी पधारया जाति देवा, सर्व माज्यां माथ पधारी भीती असाढ़ सुदि ८ संवत् १८८४ के साल।”

यह ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिखावट मोटे अक्षरों में साफ सुधरी है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। कागज मोटे, हाथ के बने हुए हैं।

कछवाहा राजाओं के इतिहास अध्ययन हेतु ग्रंथ उपयोगी है।

८६. गौड़ों की वंशावली, विन्हे रासो, मिर्जा राजा जयसिंह के छप्पय आदि

१. गौड़ों की वंशावली, विन्हे रासो, मिर्जा राजा जयसिंह के छप्पय आदि, महेसदास, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३४६२१, ४. २४.५ × ३० सेमी०, ५. ११५, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १८७६, ई० सन् १८१६, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, ब्रज, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. गौड़ों की वंशावली (राव महेसदास कृत) :-

इस काव्य-कृति में गौड़ राजपूतों की वंशावली तथा राजा अनरूढसिंह, अजुंन, भीम आदि गौड़ों द्वारा शाहजहां की और स लड़े युद्धों का वृत्तांत है। प्रारम्भ का अंश, पत्र जीर्ण शीर्ण व स्रण्डित होने से अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

“स्वेता अमर वैसिता . . . . . । . . . . . लंबज चिहूर सोम सजिता  
.....॥१॥”

अन्तिम भाग—

“भरथ री भुजा सत्रघण मुजाल, सिरदार सूर फौजां सिजाल,  
मुज कहै आतमा रामसीह, अजमाल तणा पांचो अबीह ॥३३॥”

पुष्पिका—

“इती श्री वंशावली गौड़ों की राव महेसदास कृत लिपितम पठनार्थ अग्ररजो समत १८७६ भीती चैत्र सुदि २ सनवरा नै पूरी हुई . . . . . ।” (पत्र-१३)



२. बिन्है रासो (राव महेसदास कृत) :-

इसमें दिल्ली के बादशाह शाहजहां तथा उसके तीन विद्रोही पुत्रों (शाहमुजा, मुराद, औरंगजेब) के बीच हुए युद्धों का वृत्तांत है। जिसमें कवि का मूल उद्देश्य अपने आश्रयदाता राजगढ़ के शासक अर्जुन गौड़ की वीरता का गुण-गान करना रहा है।

प्रारम्भ—

“स्वेत अमर वेयसित्ता मुक्तासिरा भगता,  
श्वेतामर सोम लंबज चिहुर सोम सजिता,.....॥१॥” (पत्र-८०)

३. रघुनाथ चरित्र (महेसदास कृत) :-

इस १२७ छंदों की (ब्रज भाषा में) रचना में श्री रामचन्द्र के चरित्र का विवरण बाल काण्ड तक दिया है।

प्रारम्भ—

“सौतां पति सुमरि सुमरि गुर सरसुति  
सहति उमा सिव सुमरि गौरीस.....॥१॥”

अन्त—

“कवि महेस कहे सुप मिदर के मदि रंग  
बढो सू नये रंग लागे ॥१२७॥”

पुष्पिका—

“इति श्री कवि महेसदास विरचिता यान .....रामचरित्र संपूर्ण भीती  
जेठ सुदि वृषपतवार नै पूरी हुई संवत १८७६।” (पत्र-१२३)

४. गीत अरजनजी को राव कल्याणदास कहै :-

प्रारम्भ—

“उजेणि मंडप जुध अवरंग माडे, कंगळ केसरया अजै किया,  
तोरण थया तणी'र तरवारया.....॥१॥”

इसके अतिरिक्त राजा जयसिंह के छप्पय (महेसदास कृत), रत्तराज (पत्र-३०) आदि कृतियाँ लिपिवद्ध हैं।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिवद्ध किया गया है। लिखावट साधारण है। पत्र काफी जीर्ण है, रूपर का गत्ता फटा हुआ है। गौड़ों के इतिहास के अध्ययन हेतु यह ग्रंथ अति उपयोगी है।

## ६०. नाथों की पीढ़ियों व बातें तथा मानसिंह रा गीत कवित्त

१. नाथों की पीढ़ियों व बातें तथा मानसिंह रा गीत कवित्त, लालस सेंगा, चालकदान, अनाडसिंह, वारट तिलोक, भोपालदान, मेहुडू मोडा, आसिया बांकीदास आदि, २. पु० प्र०, ३. १५१०, ४. २८ × २१ सेमी०, ५. २२८, ६. २५-३०, ७. वि० सं० १८७८, ई० सन् १८२१, जोधपुर, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, संस्कृत, १०. प्रस्तुत वृहदाकार ग्रंथ में नाथों की वंशावलियों, उनके उत्पत्ति से संबंधित पौराणिक बातें हैं। उन पर रचे काव्य तथा महाराजा मानसिंह के अनेक प्रशस्ति गीत, कवित्त व निसांणीयाँ आदि सधिविष्ट है। केवल महत्वपूर्ण कृतियों का ही यहाँ विवरण-क्रम दिया जा रहा है—

प्रारम्भ में वर्षाकाल संबंधी दोहे आदि दिये हैं—

प्रारम्भ—

“॥सांकर सिद्ध जोगी स्वरूप आनंद मूर्ति महिमा अनूप ॥

दोहा—

पवन करण आनंद परम, सरवन धन संबध ।

त्रिविध चल रहो छै, तठै सीतल मंद सुगंध ॥१॥”

फिर मंगलाचरण, नाथ अवतार, नाथ चरित्र, गोरखपुर महिमा, चौरंगीनाथ कथा आदि कृतियों के अतिरिक्त नाथ उत्पत्ति की एक पौराणिक कथा भी दी है।

### १. नाथों की वंशावली :-

नाथों की वंशावली की प्रतिलिपि निरंजननाथ से लाडूनाथ तक इस प्रकार अंकित है, जो पदमनाथ भाट की पुस्तक से ली गई है।

(१) निरंजननाथ (२) अमैश्रुननाथ (३) परमश्रुनाथ (४) अधिकश्रुननाथ (५) चेतनश्रुन (६) ऊंकारनाथ (७) अणमैनाथ (८) आदिनाथ (९) मछेंद्रनाथ (१०) गोरखनाथ (११) जलंधरनाथ (१२) सिध सिणगारीनाथ (१३) सरवरी पाव (१४) सीतली पाव (१५) खखंदर पाव (१६) वंकी पाव (१७) चौरंगी पाव (१८) मसांणी पाव (१९) सागड़ी पाव (२०) सिद्ध सितली पाव (२१) दौलती पाव (२२) सिधली पाव (२३) निरमली पाव (२४) सुंदरी पाव (२५) सांवत पाव (२६) गरीबी पाव (२७) नगेन्द्र पाव (२८) तुरंगी पाव (२९) घ्यानी पाव (३०) बोहरंगी पाव (३१) विचारो पाव (३२) भिष्यारी पाव (३३) हाजरी पाव (३४) भरपूरी पाव (३५) मेलनाथजी (३६) पीरथान नाथजी (३७) तुरथनाथजी (३८) गोयदनाथजी (३९) गोयंदनाथजी के नाडानाथजी (४०) कंदलनाथजी केसरनाथ के

२४६ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

(४१) केसरनाथ के सिवनाथ महेशनाथजी, (४२) महेशनाथजी के हरनाथ घोपनाथ, सुरतनाथ, देवनाथजी भीवनाथजी (४३) फिर देवनाथजी के लाडू नाथजी ।

नेण सुख भाट द्वारा लिखाई गई वंशावली भी इसके आगे अंकित है जो इससे भिन्न है ।

२. मानसिंहजी रौ गीत लालस संणा कृत :-

प्रारम्भ—

“समहरि आचार जाव मूप साचा, मुदै करि भेलणा फौज मांहे,

जिके पल हुवा हरवळ जिके, सामध्रम तणा भर भार सा है ………” ॥१॥

३. गीत महाराज अजीतसिंहजी रौ :-

प्रारम्भ—

“कर्मध भोम छळ तोम तुरकां तणा काटिया,

सोम रवि जित्तै तरवार साराह

वेध सु तोम तुरका तण पपावण,

करै जुघ जोम तज होम कछवाहा ॥१॥”

४. गीत महाराज जसवंतसिंहजी रौ (उज्जैन युद्ध से संबन्धित) :-

प्रारम्भ—

“तरफां हुअो दारा तणी हुअी सूजा तरफ,

पिड लीयां पजांना पार पापे,

पून जितरा करै जसो वळ पाग रै,

रोद इतरा हिया मांहि रापे ॥१॥”

५. गीत महाराज अजीतसिंहजी रौ :-

प्रारम्भ—

“वपत विलंद इसड़ी हुआ तपत केवा वळे,

जिहानावाद प्रजळ हुअे जेर,

जोधपुर साह अवरंग कीधी जवत,

अजै लीधी विरड जेण अजमेर ॥१॥”

६. गीत हजूर साहवां रौ (मा० मानसिंह) :-

प्रारम्भ—

“वावड़िया कूआं वगीचां वाडी

पणघट आवै सह प्रजा,

पग पग हुओ जोधपुर पांणी

आस ततो दूसरा अजा ॥१॥”

७. अनाईसिंह री कह्यो कवित :-

प्रारम्भ--

“चात्रक की टेर धन धीन सुनहि कहु हंसन की सुमान सखरमु ।

नान चिकोरन की चंद विन पूरे कौन कार जे पखीरन को सरै तरवर सु ॥१॥”

(१ कवित)

८. गीत घातकदान कहै- (नाथ प्रशंसा) :-

प्रारम्भ—

“वणीयो वैराट रूप वरपाकृत भ्रंग तडित प्रतिबंध भ्रमै ।

चात्र कमाण देय आपै चित, नाथ नाम है बूंद नृमै ॥१॥”

९. गीत सांडू चंनो कहै :-

दोहू सचिनंद रा नूर मुपारविंद रा दोहू

आनंद रा मुछंद रा विहारी अलप,

जामी गोपीचंद रा भरअ्री देण चिरंजीवी .....॥१॥”

(४ गीत)

१०. गीत छोपो आढो कहै, छोटी सावभड़ो :-

“नहचल अय त्रिन बिना नारेना

अदम काळ नदी आरेवा,

पाट मदार क्यूंहीक पारेपा

गिर जळ जेम दीह गारेगा ॥१॥”

११. नीसांणी किसनगढ़ सूं वण आई (महाराजा मानसिंहजी की उपलब्धियों से सम्बन्धित है) :-

प्रारम्भ—

“उदै भाग मारू इळा रिब तेज उगाया,

फूले पोयण ज्यूं किता अरि तिमर बिलाया,

सारा गुण प्रथमी सरां भ्रंग एकण आया,

विघ राजाइ राहसां व साथ बघाया,

पुन श्री नाथ प्रताप कै मन बंछत पाया,

सीरोही के राव का मन मगज मिटाया..... आदि ।”

१२. मानसिंह की नीसांणी (घारट तिलोक री कही) :-

प्रारम्भ—

“सहस किरण दरिणयर समांण तप मानं तपावै,  
हरिचंद पीछन ज्यूं हमार, संगार सरावै,  
विजपात वारां सुं विसेस दुनियां गुप दावै,  
पट दरसण पेरात का नह दांम लिरावै,  
चारण भाट प्रांहुणां पिठ दवा पढ़ावै . . . . . प्रादि ।”

१३. गीत मानसिंह का मोपाल रा कहुया गीत :-

प्रारम्भ—

“विजपतहर भोज कर नयण बेळा,  
सेवागर पट वरण सचेला,  
भूप चरण पंकज रेह मेळा,  
मधुकर निकर कवेसर भेळा ॥१॥”

(पत्र-३)

१४. दोहा मानसिंहजी रा मेडू मोडा कहै :-

प्रारम्भ—

“दपे मानं भापी दुनी, सापी सूरज चाद,  
तुज पड़ग चापी तकां, वळे नु रापी बांध ॥१॥

(८ दोहे)

१५. राठोड़ों री वंश वर्णन :-

इसमें राठोड़ों का सूर्य वंशी होना लिखा है तथा कनौज के राजा पुंज से महाराजा मानसिंह तक राठोड़ राजाओं की वंशावली देकर राज मल्लीनाथ फिर महाराजा जसवंतसिंह से मानसिंह तक के राजाओं का बहुत संक्षिप्त विवरण दिया है।

१६. आसिया बांकीदास कृत हजूर (मानसिंह) रा रूपक :-

प्रारम्भ—

“जगदाता कमध अल्प तू जांरुं, दियै लाप वित सासण दान,  
सुपह सुमेर तणा सिखरां सुं, मन उंचौ महाराजा मान ॥१॥”

बांकीदास कृत महाराजा मानसिंह पर रचे कुछ प्रशस्ति गीत भी अंकित है।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत बृहदाकार ग्रंथ में नाथ वार्ताएं, नाथों एवं महाराज मानसिंह के प्रशस्ति गीत कवित्त (अज्ञात कर्तक) के अतिरिक्त बीच बीच में शृंगार तथा वसंत के दोहे आदि भी अंकित हैं। कृतियाँ शृंखला-बद्ध नहीं हैं, लिपिकार को समय-समय पर महाराजा एवं उनके गुरु नाथों के संबंध में जो सामग्री मिली

लिख दी गई। ग्रंथ के बीच-बीच में व अन्त में काफी पत्र रिक्त छोड़ दिये गये हैं। लिखावट माफ सुथरी है। ग्रंथ पर मुन्दर कपडे का गस्ता मंडा हुआ है। कागज हाथ के बने प्रतीत होते हैं।

### ६१. चौहानों की वंशावली

१. चौहानों की वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १६८ (इंद्रगढ़), ४. १७ × २५ सेमी०, ५. १४, ६. ८-९, ७. वि० म० १८८३, ई० सन् १८२६, ८, अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें चौहान राजपूत राजाओं की वंशावली दी है। इसकी प्रतिलिपि कहीं से की गई इसके बारे में लिखा है—

प्रारम्भ—

“चुहाणां की वंशावली लपाई बडवा गोमदराम कोटा हाळा की पोथी सुं वंसाप मुदि १२ मंगलवार संवत १८८३ परसराम वोतार हुआ त्यां नै छत्री सु नैछत्री प्रथमी करी वीरामणों नै राज कीनी .....।”

विभिन्न जतियों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई उसके बारे में लिखा है—

“जव बरमाजी न छत्रस्या का बोक पाडयो, प्रथम इंद्र नै फुतळो वणायो छो जोको तो पुंवार बोक पाडयो, धार उजीण को राज दीनी, दूसरां बरमाजी नै फुतळो वणायो छो तीको सोलंपी बोक पडयो ज्यांनै अणहलपुर पाटण को राज दीनी, तीसरो सिदेजी नै फुतळो बणायो छो, तीको पडिहार बोक पाडयो जिन लो नागरी को राज दीनी, चौथो श्री भगवान च्यारमुजा सुं पैदा हुआ ज्यांनै दपण को राज महे कावतीनगरु को राज्य दीनी। चुहाण बोक पाडयो, श्री चत्रमुज जी चहुवाण की कुळ की पीडियों।”

हाडा चौहानों के बारे में लिखा है—

“राव धरमागद राजा के पाट राजा बीसलदेव कुहाया, ज्यां के बेटा ९ ती में बडो बेटो अज रावजी हुवा, तीसुं छोटो बेटो अनुराजजी,.....अनुराज का अष्टपालजी हाडा वाज्या अस्टपाल का चंद करणजी .....आदि।”

बुंदी हाडों द्वारा हस्तगत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“बाकाजी के बेटा १२ त्यां में बडा बेटा राव देवाजी (देवसिंह) हुवा राव देवाजी नै बुंदी को राज लीनी संमत १३९८ के साल, भीणो ऊं सारी मारयो बुंदी में राज कीनी.....।”

२५० : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

इसमें अंकित है कि चौहानों की १३६ पीढ़ियों में से ३६ पीढ़ी हाडा चौहानों की हुई। ग्रंथ बूंदी कोटा राज्य के इतिहास के अध्ययन के लिये उपयोगी है।

### ६२. वंशावलियां तथा पाटण बसियां की बात

१. वंशावलियां तथा पाटण बसियां की बात, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०३, ४. ३४ × २६.५ सेमी०, ५. १७, ६. १८-२१, ७. १६ वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें किसी ग्रंथ के स्फुट खुले पत्र संकलित है। प्रारंभ के दो पत्रों में दिल्ली में किसने कितने वर्ष, माह और दिन राज्य किया उसकी सूची दी है। अन्य कुछ पत्रों में गहलोत व चौहान राजाओं उमरावों की वंशावली दी गई है। इसके अतिरिक्त पाटण की बातों दी है जो ग्रंथांक ८२४०, रा० शो० सं० के समरूप है।

प्रारम्भ—

“बात पाटण अणहलवाड़ा की—मूळ श्री गांव वनराज चावड़े वासायी सं० ८०२ बैसाप सुद ३ रोहीणी निक्षत्र, आ पाटण की ठीड़ अणहल गोवाळीये वनराज नुं दीपाईं .....।”

उपरोक्त सभी वंशावलियां अपूर्ण हैं। ग्रंथ के यह सभी पत्र एक व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किये गये हैं।

### ६३. पुरोहितों की वंशावली

१. पुरोहितों की वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १६०७४, ४. २८ × १६ सेमी०, ५. ३५८, ६. १५-१८, ७. १६ वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत बृहदाकार ग्रंथ में पुरोहितों की वंशावली अंकित है।

प्रारम्भ—

“साप कायड़ रा पीरायां की बछीस गोत्रीय : जुजर वेदाय मानधुनीस... .. जमदगन : कुजल कुलदे व्याये अजोध्या का.....नारायण को नाभी को कंबळ को ब्रह्मा को बसीष्ट को सकते फँवार सुर को बछीस को कंधेसर को कामदेव को श्री देयकी गौतम को हरध्यान को वीटु.....।”

इसमें पुरोहितों के गोत्र तथा कुछ व्यक्तियों की पीढ़ियां इत्यादि अंकित हैं, पर इनका सम्बन्ध मूल पुरेयों से नहीं जोड़ा गया है। न ही इन व्यक्तियों के

वारे में कोई टीका टिप्पणी की गई है। प्रारम्भ के पांच पत्र वाद में जोड़ दिये गये हैं, मूल ग्रंथ के प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र लुप्त हैं। पत्र काफी जीर्ण हैं जो किनारों से खंडित हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। लिखावट साधारण है।

पुरोहितों की शाखाओं और गोत्रों के अध्ययन के लिये ग्रंथ उपयोगी है।

### ६४. वंशावलियों की वही

१. वंशावलियों की वही, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १८८४१, ४. ५५.५ × १७.५ सेमी०, ५. ६२, ६. ३५-४६, ७. वि० सं० १६०६-१२, ई० सन् १८४६-५५, ८. विरधीलाल, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में कुछ राजपूत राजाओं की वंशावलियां अंकित है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

#### १. पड़िहार राजपूतों की वंशावली :-

पड़िहार राजपूतों की वंशावली ब्रह्मा से प्रारम्भ करके दी है, राजा सिवराजसिंह तक १२७ नाम दिये हैं।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः अथ वंशावली पड़िहार रजपूतों की लिपी गांव सोनड़ प्रगना लवारग इलाके जैपुर के जगा.....गांव सोनड़ सुती की पोषी सुं पड़िहारों की वंशावली लपी, मिती माहा बुदि १ संवत १८६७ उतारी लाल बरधीलाल नै। ॐ ब्रह्मा उतपति हो प्राकमंडल.....।” (पत्र-१४)

#### २. सोलंखियों की वंशावली :-

ब्रह्मा से राव डूंगरसिंह (टोडा) तक सोलंखियों की वंशावली मूल पुरूषों से सम्बन्धित वृत्तांत संतति आदि का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

“प्रथम ब्रमाजी अनल कुंड के घाट आया जदे वे दिन परसरामजी अवतार.....।” (पत्र-१८)

#### ३. पंचारों की वंशावली :-

प्रारम्भ में सवाई केसोदासजी (बिजोलिया) तक पीढ़ियां तथा इतिवृत्त अंकित है।



२५२ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

प्रारम्भ—

“अनल कुंड के धान च्यार पत्री पैदा कीया जदि राजा पल पंवार पैदा करि अर अेक क्रोड़ छनवै हजार गांवों सूं घार उजीएण को राज दीजी ………।”  
(पत्र-१०)

४. कछवाहों की वंशावली :-

प्रारम्भ से सवाई इस्वरसिंह (जयपुर) तक वंशावली अंकित है। फिर कुछ जागीरदारों की पीढ़ियां भी दी है।  
(पत्र-१३)

५. तंवर राजपूतों की वंशावली :-

तंवर क्षत्रियों की वंशावली ब्रह्मा से प्रारम्भ हुई है।

प्रारम्भ—

“पहली ब्राह्मा प्रगट हुवा, ज्याके अग्ने ज्या करानी, अनुस्वया ज्यां के सोम दूसरो नाव चंद्रमा ज्यां करानी ………।”

अन्त—

“चौधरी पंपल ॥२०॥ ज्यां व चौधरी घोरराज लंबरदार मुरलीपुर परगने मेरठ ॥२१॥ सं० १६०६।”  
(पत्र-३)

६. बीकानेर की वंशावली :-

राव जोधा से राजा डूंगरसिंह तक अंकित है।

७. जोधपुर की वंशावली :-

प्रारम्भ से महाराजा जसवंतसिंह तक अंकित है।

८. जैसलमेर रावल की पीढ़ियां (तिवाई ढाढ़ी दयाराम मिती बंसाय संवत १६१२)

जैसलमेर जादव वंश सूं) :-

यादव वंश से, महारावल गजसिंह भाटी तक पीढ़िया अंकित हैं। प्रथम एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नहीं है। प्रथम पर गत्ता नहीं है।

९. राठोड़ों का दोहा, वंशावली तथा कायस्थों की खांपों का नाम

१. राठोड़ों का दोहा, वंशावली तथा कायस्थों की खांपों का नाम,
२. रा० शो० सं०, ३. ६६७३, ४. १३.५ × १६ सेमी०, ५. ६१, ६. ६-८,
७. १६ वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी,
१०. ग्रंथ में अंकित कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

### १. राठौड़ों का दोहा :-

ग्रंथ के प्रारम्भ में फुटकर दोहे आदि दिये हैं, फिर मारवाड़ के प्रारम्भिक शासकों (राव सीहा) के संतति सम्बन्धी कुछ दोहे लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

“शासकान् सोनग भडर भवर गर्ज सुं भज  
मे च्चारुं पुत्र सीह तणा च्चारुं बढा सपूत ॥१॥”

तत्पश्चात् राठौड़ों के विभिन्न शासकों से सम्बन्धित कवित्त दिये हैं।

(पत्र-८)

### २. कायस्थों की पांसे :-

कायस्थों की ८४ पांसे (शाखाओं) का नामोल्लेख किया है। मिलावें  
ग्रंथांक २०६ से। (पत्र-२७)

### ३. राठौड़ों की वंशावली :-

राजा जयचंद से महाराजा तखतसिंह तक के राजाओं के नाम और संतति आदि का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

“राजा जयचंद रे प्रतापभाण रे भ्रमेभाण रे वरदाइसेन रे सेतराम रे रांणी  
८४ चौरासी परणीया नै कंवर १०१ हुवा, जिण मे राव सिंहोजी पचास भायां सुं  
बढा हुवा नै रांणी ३१ प्रणीजीया ‘ ‘ ‘ ‘।” (पत्र-१७)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य नहीं है।  
अंतिम व प्रारम्भ के कुछ पत्र खाली पड़े हैं।

### ६६. राठौड़ों की वंशावली, नागौर की हकिकत आदि

१. राठौड़ों की वंशावली, नागौर की हकिकत आदि, २. रा० प्रा०  
वि० प्र०, ३. १३७२५, ४. १२ × २८ सेमी०, ५. १६, ६. १४-१५,  
७. वि० सं० १६६४, ई० सन् १६३७, ८. रामचंद्र, ९. राजस्थानी, देवनागरी,  
१०. ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार हैं—

#### १. राजकुल छतीस :-

: यह वही कृति है जो ग्रंथांक ३८८६, रा० शो० सं० में अंकित है।

#### २. राठौड़ों की वंशावली :-

इसमें वर्णित है कि राठौड़ों की उत्पत्ति चंद्रकला के राजा जवनसुत से हुई।  
प्रारम्भ का वृत्तांत राठौड़ों की वंशावली, रा० प्रा० वि० प्र० (प्रकाशित) -से

२५४ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

से मिलती जुलती है। राव सीहा और उसके बाद के राठौड़ शासकों का विवरण संक्षेप में है जिसमें मुख्यरूप से संतति, कुछ घटनाओं इत्यादि का वृत्तान्त है जो कि बीकानेर के राजा जोरावरसिंह तक चलता है।

प्रारम्भ—  
“हिंवे एक चंद्रकला नगरी तिण री राजा जवनमुत् । सो बडो धरमातमा  
राजा । परण राजा रै पुत्र नही राजा वधं भयो……।” (पत्र-११)

३. कीसनगढ़ रूपनगर रा धणीयां री विगत :-

कीसनगढ़ के संस्थापक किसनसिंह से राजसिंह तक के राठौड़ राजाओं की सूची दी है।

प्रारम्भ—

“कीसनजी उदैसंधोत जोघपुर सूं जायनं सं० १६६८ व० कीसनगढ़ बसा  
नै भाटी गोइंददासजी नै अजमेर मांहि मारीया सं० १६७१ ज्येष्ठ सुदि ६……।”  
रूपनगर के बारे में लिखा है—

“पछे भारमलजी काळ कीयो तरै वेदो रूपसीघजी टीकै बैठा नै रूप  
बसायो। रूपसीघ रा मानासीघ टीकै बैठा……।”

४. राठौड़ों रा कवित्त दोहा :-

राठौड़ों की वंशावली से सम्बन्धित ३ दोहे फिर १६ कवित्त दिये हैं।  
दोहा प्रारम्भ—

“कुळ पूजा सीहैजी कीवी, दी मोहर सै दोय  
प्रोहित पोयी पूजसी, सीहावत सह कोय ॥१॥

कवित्त प्रारम्भ—

“सेत सुतन सुप्रसन रीके देवी राठेसूर, नुवै रां वाहरू ।  
केवणो दीघ दूजौ वर पाय हूं पुठि, राजा मारवाडि सिधारो ॥१॥”

५. अमरसिंघजी नागौर पाया तिएरी विगत :-

अमरसिंह राठौड़ के मारे जाने इत्यादि का विवरण इस प्रकार है—

“स १६७० पोष सु १२ वै० जन्म सं १६६० रा । व० देसोटो दीयो ।  
सं १६६५ रा काती मांहि नागौर अमल हुओ । पछै पातिस्थाहा रै मुजरै मोड़ा  
गया तरै पायो चूक उभा रह्या तरै सलावतपांन बसगी धो तिण अमरसिंघजी  
नूं कह्यो—बडा गिवार, तरै अमरसिंघजी सलावतखां रै कटारो री देर  
मारया……।”

#### ६. नागौर की हकीकत :-

इसमें नागौर बसाये जाने और कब किसके अधिकार में रहा का संक्षिप्त विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

“संवत् १११५ रा चैत वदि ३ मंगलवार नै कोट की नीव दीवी केवांसा दाहिमो राजा प्रिथीराज चहुवांण री मित्री घोड़ा परीद करण नै जावती थो हण जगं तळाव घो ……।”

#### ७. भगतों की वंशावली :-

भक्तों की वंशावली अंकित है। साधारण जातियों की भक्त परम्परा किससे प्रारम्भ हुई इसका उल्लेख है।

“ब्राह्मण जै जै देववंसी १, महाजन तिलोचन वंसी २, रजपूत पीपा वंसी ३, चारण तुमर वंसी ४, कायथ चित्रगुप्त वंसी ५, सरगरो बालमीक कवसी ६, थोरी कीतावंसी ७, मीणो घाट वंसी ८, कसाई सुदनां वंसी ९, पीजारो दादुवंसी १०, रेबारी हीरावंसी ११, भाट जनकवंसी १२, पाती परमा वंसी १३, कुंभार राकावंसी १४, माळी नापावंसी १५, जाट घनावंसी १६, जुलाहो कबीर वंसी १७, ढेढ बूहदां वंसी १८, डूब बीनरावंसी १९, छीपा नामदेवंसी २०, कीर कालु वंसी २१, नाई सनोवंसी २२, कलाळ बपना वंसी २३, पत्री नांगवंसी २४, मोची बलम वंसी २५, तेली पदमां वंसी २६।”

पुष्पिका—

“भगत वंशावली संपूरण लिखिते लेखक बनमाली रामचंद्र मु० नागौर मारवाड़ सं० १९९४ रा मित्ती कार्तिक सुदि सनीवार।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है।

#### ९७. राजाओं की पीढियां ख्यात बात संग्रह आदि

१. राजाओं की पीढियां ख्यात बात संग्रह आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०,, ३. २६६३२, ४. १६.५ × २१ सेमी०, ५. २३२, ६. १७-१८, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

#### १. सहर बसियों की विगत :-

विभिन्न शहर कब किसने बसाये उसके संवत् दिये हैं तथा जोधपुर के राजाओं द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य इत्यादि का विवरण दिया गया है।

२५६ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

प्रारम्भ—

“अजमेर सं० २०२ रा में अजेपान बमायो । दिल्ली सं० ६७८ रा में राज (पत्र-४)

अनंगपाल तुंबर वसाई ।”

२. दिल्ली राज की विगत :-

दिल्ली पर कब किसका अधिकार रहा अंकित है ।

प्रारम्भ—

“दिली प्रथम तो श्री विसन राज करतो नै ता पछे इंद्र राज कीयो..... नीलाघपत सुं राजा संपघज सड़ाई कीयो .....।”

दिल्ली पर राज्य करने वाले तुंबरों तथा चौहानों की वंशावली दी है, जिसमें बताया गया है कि किसने कितने समय राज्य किया । तत्पश्चात् गौरी व लोदी वंश के शासकों की वंशावली दी है । पृथ्वीराज चौहान आदि प्रसिद्ध शासकों के बारे में ऐतिहासिक टिप्पणियाँ भी दी हैं । अन्त में हुमायु व उसके वंशजों का हाल संक्षेप में दिया है । (पत्र-१८)

३. बीकानेर राजाओं की पीढ़ियाँ :-

राज बीका से सूरतसिंह तक के बीकानेर राजाओं की संक्षिप्त रूपरेखा अंकित है । (पत्र-३)

४. आंबेर राजा की पीढ़ियाँ :-

वंशावली आदि नारायण से प्रारम्भ हुई है जिसमें केवल नाम अंकित हैं, तत्पश्चात् जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंह व उसके वंशजों का हाल सवाई जयसिंह तक संक्षेप में दिया गया है । (पत्र-१३)

५. उदयपुर राणा की पीढ़ियाँ :-

यह पीढ़ियाँ कहां से उतारी गई उसके बारे में लिखा है—  
“राणाजी की पीढ़ियाँ की बीगत पंचोळी कलाण तीलोकसीजी पोथी सुं सं० १७५८ रा भादवा वदि ६ सुकर दायमा की नकल सं० १८६१ उदैपुर में लीयी ।”

प्रारम्भ—

“बात सीसोदीयाँ की आगे गहलौत कहीजै छै, अक वार इणां की, ठाकराई नासिक त्रिमय दीपण सुं हुती, ईणां रै पुरवजां रै सुरज की उपासना.....।”  
इसमें अंकित पीढ़ियाँ तथा बातें आदि मुहला नैणसी की हयात से मिलती जुलती हैं । (पत्र-८)

६. घात गौड़ों की :-

इसमें गौड़ बछराज का वृत्तांत दिया है और फिर उसके वंशजों की नामावली दी है।

प्रारम्भ—

“अहो रा बछेरा तो गौड़ देस नुं रहता चु० प्रधीराज सोमेसर री अजमेर राज करै तद इयां रा बछेरा सुं बछराज दोय भाई पोहकर जात करण आया, पछे सदभाव अजमेर देवण आया…… प्रधीराज सुं इयां जुहार कीयी……।”

गौड़ों के सीसोदियों, कछवाहों और राठौड़ सरदारों से हुए बँर संबंधी लघु वार्ताएँ इस प्रकार वर्णित हैं—

(क) बात एक गौड़ ने सीसोदियों रँ बँर की :-

प्रारम्भ—

“राजा बीठलदास गोपालदासोत नुं मालवा माहँ प्रगनो पेरवावद हुवो थो सू पहली थो परगनो सीसोदीया माधवसिध नगावत नुं थो सो गौड़ रा आदमी अमल करण नुं गया था तीणा नुं सीसोदीया माधवसीध री भतीज अमल दे नहीं, तरै……उपाव हुवी, माधवसिध री भतीज मारांणो, तिण बँर सीसोदीये नगावत गौड़ रांसिध गोपालदासोत मारोयो ………।”

(ख) बात एक गौड़ों की कछवाहा बँर पड़ियां की :-

प्रारम्भ—

“गौड़ गोपालदास पातसाह रँ वास न थै, तरै गांव टाकी था, तद बाकी वेग नै कछवाहो बीजल राजा जगनाथ री बेटो रीणथंभोर थो अरे चढ उपर आया। कछवाही मनरूप गौड़ गोपालदास भेळा था आदमी २००० उण कन्है था, आदमी ६०० गोपालदास कनै था तठै वेढ़ हुई……बीजल आदमी ४०० सू पेत रहौ……।”

(ग) बात एक गौड़ों की राठौड़ों रँ बेर की :-

इस वार्ता के बारे में लिखा है—

प्रारम्भ—

“बँर एक नवौ हुवो सं० १७४६ रँ मीती भादवा वद रा कीसनसिध सुजाणसिधोत सेरसिध भाघोसिधोत मोटा राजा रा, सु गौड़ गरीबदास बीजेरांमोत महोमांह लड़ाई हुई, आपर कंवर कीसनसिध काम आयो तिए री लीपी।

म्हारज जसवंतसिधजी रँ देवलोक हुणे सुं उमराव कीतराक पातसाही चाकर हुवा, रा सुजाणसिधजी पिण मुनसब पायो, सोजत जैतारण केकड़ी पीसांगण

२५८ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

पटे पाया .....केकड़ी बेटो किसानसिध यो तिण मूं गोड़ां सु भोम ग्वास उपर कलमय हुवा लडाई हुई, कंवर किसानसिध कांम प्रायों .....आदि।”  
इस प्रकार इन बातों में वर्णित है कि गौड़ों ने सीसोदियों, कछवाहों तथा राठोड़ों से किस प्रकार बंद मोल लिया।

७. बात हुलां री :-

इसमें गहलोतों की एक सासा हुल राजपूतों से संबंधित तथा कुछ फुटकर बातें संक्षेप में प्रकृत है। प्रारम्भ में दिया है कि पहले सोजत पर हुलों का अधिकार था। बाघरा हुल, जैता य उसके वंशजों राघव करन तथा कामा इत्यादि हुल राजपूतों का विवरण है।  
प्रारम्भ—

“गहलोता री साप २४ में एक साप हुला री छै, सोभन पेली हुलां री यी, वांघरो हुल तीण री करायी बाघेळाव तळाव छै, तिण री पौतरौ रांगो पेतो.....  
बडो राजपूत दातार.....।” (पत्र-६)

८. राठोड़ों री ख्यात बात :-

पहले तोडा के सोलंकीयों की वार्ता प्रकृत है।<sup>१</sup> फिर मूलराज सोलंकी के वृत्तांत में उसके आग्रह से राव सीहा द्वारा लाखी फुलांगी के मारे जाने का उल्लेख है।  
प्रारम्भ—

“बात एक तोडा रा सोलंकीयों री, सारा हींदुस्थान में तो मुसलमानी हुइ नै तोडा उचला अनवी थका रया, पादस्या ही फौजो मेली.....।”  
तत्पश्चात् राव सीहा से जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह तक के राठोड़ राजाओं का संक्षिप्त वृत्तांत है। इसमें मुख्य रूप से मोटा राजा उदयसिंह, गजसिंह, जसवंतसिंह तथा अभयसिंह द्वारा किये गये सैनिक अभियानों, दुर्गादास व मुगलों के बीच हुए संघर्ष इत्यादि का विवरण दिया गया है। घटनायें प्रायः अन्य ख्यातों से मिलती जुलती हैं। बीच-बीच में कुछ प्रशस्ति गीत भी प्रकृत हैं। ग्रहमदाबाद के युद्ध (महाराजा अभयसिंह सरबुलंदखां के बीच) में प्रोहित रिणछोड़ दास के वीरगति प्राप्त होने के उपलक्ष में कवि्या करणीदांन कृत एक गीत इस प्रकार है—

१. मुहता नैणसी री ख्यात (भाग १, पृ० २६३), ‘बात सोलंकीयों पाटण आयो री’ से मिलती जुलती है।

प्रारम्भ—

“अठी पांवद अभी दुसहा सेर वीलंदां उठी,  
जुटिओ भेहमदावाद दळ जोड़,  
सुरसुरी दवारका बीच जंदव सुत,  
राड़ धारै वपत हुई रीणछोड़ ॥१॥”

ख्यात का अन्तिम भाग—

“……मानसिघजी री नांव वठी विप्यात हुवौ ।” (पत्र-८०)

६. पंवार मेपा रा तथा सोढों रा पोतरां की बात :-

इसमें वर्णित है कि राणा भोकल की हत्या करने वाले चाचा मेरा के साथ पंवार मेपा भी था, अनंतर राव रिडमल द्वारा चाचा मेरा तो मार दिये गये पर मेपा हाथ नहीं आया और उसने राणा कुंभा को राजी कर राव रिडमल को छल से मरवाया । तत्पश्चात् मेपा पंवार के वंशजों की विगत दी है ।

प्रारम्भ—

“पंवार मेपो वडी घाट बराड रजपूत हुवौ, वडी राह वेदी, काम री मांणस,  
उदैपुर रांणा रै केइक दिन वास हुतौ राणा भोकल नुं चाचे मेरे मारीयो … …।”  
(पत्र-३३)

१०. पंवार रावत करमचंद री बात :-

इसमें वर्णित है कि पंवार करमचंद ने कुंवरपदे में सांगा की कई सेवार्यें की, रायमल की मृत्यु के पश्चात् सांगा के उत्तराधिकारी होने पर करमचंद का यथोचित आदर सत्कार करने का उल्लेख है ।

प्रारम्भ—

“पंवार रावत करमचंद धनोर रै आंवेसर बसती तिण दित राणी रायमल  
चीतौड़ राज करै, पाटवी बेटो प्रथ्वीराज……।” (पत्र-६)

११. रियायंभोर किलो रांणा री, रांणा री तरफ सुं बूदी री राव सुरजण रहतौ  
सु पातसाह अकबर नुं बीनी तिण री विगत :-

प्रारम्भ—

“पातसाह अकबर रीणयंभोर लागो, साथे आंवेर री राजा मान नै दूजा ही  
राजा, पण किलो मजबूत……सुरजन राजा मान, मासीयाइ भाई……।”  
(पत्र-१)



१२. बूंदी रा राय नारण री मात :-

इसमें प्रकृत है कि बूंदी का राय नारायण धफीम अधिक सेवन करता था। उसके सूरजमल नामक पराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ जो अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। उस समय मेवाड़ का शासक महाराणा सांगा का पुत्र रतनसिंह था। राय सूरजमल हाडा और रतनसिंह की मृत्यु एक दूसरे के हाथ में (वि० सं० १५८८) शिकार खेलते हुई।

प्रारम्भ—

“नारण धमल दोड पाव पावे एक रात रा ठाकराणी सामल मुतो मु पाज चाली तरै आपरै बदले ठाकराणी री जाग रै पाज पीणी, लोही धणी आयी...।”

अन्तिम भाग—

“.....माहोमाह लखपय प्राय राणा नै कटारी सुं मारीयी सो दोड इय मात भैसरोल रै गाव.....कांम आया।” (पत्र-१)

इसके बाद इंदों से संबंधित बातें दी हैं, जिसमें बताया है कि इंदों ने किस प्रकार मंडोर पर अधिकार किया इसके बाद मंडोर के स्वामी नाहुड़राव की वार्ता तथा जोधपुर, किसनगढ़ रूपनगर और ईडर के राठौड राजाओं की बंशावलीयां दी हैं। तत्पश्चात् मोटा राजा उदयसिंह का पुत्र भोपत, घाटूल, पंचरा से (वि० सं० १६६३) में लड़ता हुआ मारा गया उसका विवरण है।

महाराजा अजीतसिंह के विस्रे में जिन लोगों ने महाराजा का साथ दिया उन पर रचे हुए अनेक गीत भी महाराजा कृत लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

“कीया बाहरा ओछाड भाडे मांसिध धणी कोड सराहै संसार जैता कीया जै सामाना री घरा मंडार भरै गुळ घृत पांड राजे .....॥१॥”

ग्रंथ के अन्त में महाराजा बखतसिंह द्वारा प्रोहित जगनाथ को दिये गये श्लोक (वि० सं० १६०८) की प्रतिलिपि दी गई है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि घसीट में है। बीच में कुछ पत्र रिक्त छोड़ दिये गये हैं। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंडा हुआ है। ग्रंथ राजपूत संस्कृति के अध्ययन के लिये बड़ा उपयोगी है।

### ६८. भंडारी किशनमलजी की वही की नकल (राजाओं की पीढ़ीयां तथा जोधपुर राजाओं की फुटकर बातों और घटनाओं की संग्रह)

१. भंडारी किशनमलजी की वही की नकल (राजाओं की पीढ़ीयां तथा जोधपुर राजाओं की फुटकर बातों और घटनाओं की संग्रह), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३४, ४. २७ × २२ सेमी० (रजिस्टर नुमा), ५. ३३५, ६. १६-२०, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में सूची पत्र दिया है जिससे ग्रंथ में संकलित कृतियों की जानकारी प्राप्त होती है।

प्रारम्भ—

‘श्री नायजी सत्य छै’

भंडारी किशनमलजी की वही सुं प्यात की नकल उतारी तिण की सूची पत्रम्—

- (१) महाराजा देवलोक हुवै तीण की याद दासत विगत वार समत भीत वार।
- (२) राज्य किशनगढ़ की पीढ़ियों की विगत।
- (३) उदयपुर की पीढ़ियों की विगत।
- (४) जयपुर राज की पीढ़ियों की विगत।
- (५) बीकानेर राजाओं की पीढ़ीयां भर काळ कीनी तिण की विगत।
- (६) फेर भी आसामियों काळ कीनी तीण की याद।
- (७) ठावी ठावी आसामियों काळ कीनी तीरी विगत।
- (८) दरवाजा जोधपुर रा की एक दूसरा सुं फासला की तादाद।
- (९) जोधपुर सुं परगना और मुलका रै फासला रै कोसां की तादाद।
- (१०) राव मालदेजी राणा उदैसीधजी उपर गया और फरै पाकर जमी

दावी तिणरी विगत।

(११) विगत परगना लिया तिण की।

(१२) कोट कराया तिण की विगत।

(१३) कोट पढ़ाया तिण की विगत।

(१४) महाराजा अजीतसिधजी यादशाह औरंगजेव रै मुवा पछै जोधपुर

आय अमल कीयो नै उमरावों नै मुतसीदीयों नै ओदा बगसीया तिण की विगत।

(१५) फेर श्रीजी सांभर उपर कूच कीयो नै जैपुर सुं श्री जैसीधजी पधारीया नै भगड़ी कर सांभर डीडवाणा में दोनो रै सामलांत में ही अमल हुवी तिणरी विगत।

(१६) विगत काम सुं पीयां की।

(१७) राठौड़ों की बंसायसी विगत गमत मोती पार भ्राद श्री नारायण सुं ले नै गव घोरमदेजी तांई प्यात विगतपार समेत ।

(१८) जोधपुर रा राजाओं की पीढीयां की कवित ।

(१९) बीकानेर, कोटा, बूंदी, जैसलमेर, जयपुर, उदयपुर रा राजावां की पीढीयां रा कवित ।

(२०) धादसाह की पीढीयो रा कवित और विगत ।

(२१) जोधपुर रा गढ़ कमठा ने भेत कराया तिण की विगत.....।

(२२) फुटकर बेरा बावड़ियों कराइ तिण की विगत ।

(२३) १७३५ माराज जसवंतसिधजी धाम पधारिया जद सुं लगाम मा० मानसिधजी टीकं बैठा जठा तांई फुटकर बातां धरंरा की विगत ।

अंकित सूची पत्र के अनुसार घटनाओं का विवरण नहीं दिया गया है प्रतिलिपि में कृतियों का विवरण-रुम इस प्रकार है—

१. आसामियों काल कीनी की विगत :-

दो पत्र लुप्त होने के फलस्वरूप महाराजाओं के मृत्यु के संवत अंकित नहीं हैं, जोधपुर के करीब १५० राजकीय व्यक्तियों आदि के मृत्यु संवत दिये हैं ।

प्रारम्भ—

फेर ही इण मुजव आसामीयां काळ कीनी तिण की विगत—

१ नाजर गंगदासजी काळ कीयी १८५९ में भाद्रवा सुद २ रात रा ।

१ नयकरण १८६८ बैसाप सुद ५ काळ कीयी ।” (पत्र-४३)

२. कासला की तादाद :-

इसमें जोधपुर के विभिन्न स्थलों की दूरी (पांवढां में) दी है । यथा—

कासुजी की बावड़ी सुं श्री वंजनाथजी छाईससो पांवढा, मंडलेस्वर जी सुं वंजनाथ जी चवदेसो पांवढा .....आदि ।”

३. जोधपुर सुं परगना वगैरे कोस इण मुजव :-

जोधपुर के विभिन्न परगनों (करीब ५४) की दूरी का व्योरा दिया है ।

४. राव मालदेव की वरणन :-

इसमें जोधपुर के शासक राव मालदेव ने राणा उदयसिंह पर चढ़ाई की और विभिन्न क्षेत्र अथवा परगने हस्तगत किये उसका व्योरा दिया है । यथा—

“भाद्राजण सिधल वीरम नै मारनै लीवी १५८८ में ।”

आगे मालदेव द्वारा हस्तगत किये विभिन्न परगनों की सूची दी है, फिर उनके द्वारा धनवाये गये किले कोटड़ियों के नाम और कोट ध्वस्त कराये उनके नाम भी दिये हैं ।

५. उमरावों मुतसवियों ने ओदा बगसियां रो विगत :-

इसमें महाराजा अजीतसिंह द्वारा (१७६५ श्रावण सुद १३ को) की गई नियुक्तियों (परधानगी, दीवांगी, हाकमी आदि) का विवरण है।

६. महाराजा अजीतसिंह रो सांभर विजय :-

महाराजा अजीतसिंह और सवाई जयसिंह (आमेर) के सांभर पर जाने, वहां प्रबन्धकर्ता फौजदार हुसैनसां को मार कर सांभर डोडवाने पर अधिकार कर आधा आधा बांट लेने, वहां हाकिम नियुक्त करने का वृत्तांत है। फिर 'विगत १ काम सुं पीयां रो' अंकित है।

७. राठौड़ों रो वंशावली :-

राठौड़ों की वंशावलीं आदिनारायण से विरमदे तक दी है। वंशावली के साथ कुछ काल्पनिक घटनायें और दूहे आदि दिये हैं। इसमें राजा चंद का वृत्तांत इस प्रकार दिया है....

“राजा चंद में दोय हाथी रो बळ .....तिण नै राजा धरम वम्ब कासी रो राज दीनो, अठारै टंकी कवांण पीचे, हाथी रो माथो वाड़ नापे, पांच हाथियो मे एक तीर पार कर देवे, नै अड़तालीस मण रो मुगदर उठार्व ।”

वंशावली में मुख्य रूप से विभिन्न शासकों की रानियों तथा संतति का ब्यौरा दिया है और इसमें प्रायः उन्ही घटनाओं का विवरण आया है जो अन्य ख्यातो वंशावलियों में मिलता है।

८. पीढियों रा कवित :-

इसमें जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूंदी, जैसलमेर, जयपुर, उदयपुर के राजाओं और दिल्ली के बादशाहों की पीढियों से संबन्धी कवित लिपिवद्ध हैं। यथा—

“जोधपुर रो पीढियों रो कवत—

कमधज वंस सेतरांम सीहा आसथांन  
धुहड प्रतापी रायपाल जिम गाजे है.....।”

९. गड़ रा कमठां रो विगत :-

इसमें राव जोधा द्वारा जोधपुर गड़ और बाद के विभिन्न शासकों, रानियों द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण, जलाशय इत्यादि कार्यों का ब्यौरा दिया गया है। इस हकीकत की प्रतिलिपि कहां से की गई इसके बारे में लिखा है—

“आ हकीकत जोसी तीलोकचंद रं थी सु, जोसी तीलोकचंद कना सु' सिधवी म्यानमल लिपाई सं० १८७१ रं वंसाप सुद १० सुक्र ।”

प्रारम्भ—

“ठेट सुं गढ़ री नीव राव जोधाजी दीनी …… आदि ।” (पत्र-७३)

१०. धाम पदारियां री विगत :-

इसमें जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह, जसवंतसिंह, अजीतसिंह, अर्भसिंह, बखतसिंह, रामसिंह, विर्जसिंह, भीरसिंह और कुछ राजकुवरों के देहावसान के संवत् तथा दग्ध स्थान अंकित है ।

११. किशनगढ़ री पीढियां :-

महाराजा किसनसिंह से मोहकमसिंह तक किशनगढ़ के राठीड़ राजाओं की पीढिया अंकित है ।

१२. उदंपुर री पीढियां :-

केवल ३-४ नाम दिये हैं—‘राजसिघ, अड़सी, हमोरसिघजी, भीरसिघजी ।’

१३. जयपुर री पीढियां :-

किसनसिंह से सवाई प्रतापसिंह तक जयपुर कछवाह राजाओं की पीढियां अंकित है ।

१४. बीकानेर री पीढियां :-

राव बीका से सरदारसिंह तक बीकानेर के राठीड़ राजाओं की पीढियां अंकित है ।

१५. फुटकर ऐतिहासिक बातें :-

जोधपुर के महाराजाओं (वि० सं० १७३५ से १८६५) आदि से संबन्धित कुछ फुटकर बातें संग्रहीत हैं ।

महत्वपूर्ण घटनाएं जिनके संवत् इत्यादि अंकित है ।

इस ख्यात में करीब आधे (अंतिम) भाग में महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत है, जिसमें मुख्य रूप से उसके द्वारा मराठों से लड़े गये युद्धों, फतेसिंह, जालमसिंह, भोमसिंह व उसके पुत्र भीमसिंह के विवरण के अतिरिक्त विरोधी सरदारों को दण्ड देने, मरवाने का वृत्तांत दिया गया है । घटनायें जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती ही हैं । घटनाओं की प्रतिलिपि इस प्रकार की गई है कि कोई क्रमबद्ध इतिहास नहीं बनता है । फिर भी यह ख्यात महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें संकलित बातों, घटनाओं का वृत्तांत विस्तार से दिया है । जोधपुर राज्य के इतिहास तथा राज्य व्यवस्था आदि के अध्ययन हेतु संग्रह उपयोगी है ।

प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है। पत्र फीके पीले रंग के हैं जो कि जिल्द में सुरक्षित हैं। प्रारम्भ के कुछ पत्र खण्डित हैं। लिखावट काली स्याही में है, पर सुवाच्य नहीं है।

### ६६. चौहानों की वंशावली

१. चौहानों की वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०,, ३. १५८५४, ४. १५.८ X २६ सेमी०, ५. १७, ६. ११-१३, ७. २० वी शताब्दी का प्रारंभ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. चौहानों की वंशावली पौराणिक आधार पर दी है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) श्री नारायण से काशी ऋषि तक ६१ नाम दिये हैं। वर्णित है कि यह राजा ऋषि कहलाये और इन्होंने जगनर पर राज्य किया।

(२) मंगलपाल से खूमपाल २१५ नाम के राजा, मंगलनाथ जोगी की दवा से पाल नाम कहलाये।

(३) सूरतीत से केहरदीत २१६ नाम के राजा दीत कहलाये क्योंकि खूमपाल का पुत्र सूर्य के वरदाव से उत्पन्न हुआ।

(४) चंद्रचंद से हरिचन्द २०८ नाम के राजा चन्द कहलाये क्योंकि केहरदीत का पुत्र चन्द्र, चन्द्रमा के वरदान से उत्पन्न हुआ।

(५) राजा पिग से राममणि तक ८७ नाम के राजा मणि कहलाये क्योंकि हरिचन्द के पुत्र पिगनामा ने नागपुत्री से विवाह किया था, उससे उत्पन्न हुए मणि कहलाये। इन्होंने मांडणपुर राज्य किया।

(६) हरिपति से अमैपति ८१ नाम के राजा पति कहलाये, क्योंकि यह शिव के वरदान से हुए थे। इन्होंने अमरावतीपुर राज्य किया।

(७) बुधसेण से विनेसेण ६२ नाम के राजा सेण कहलाये, क्योंकि अमैपति का पुत्र बुधसेण नेमनाथजी के वरदान से हुआ। इन्होंने अमरापुरी राज्य किया।

(८) ध्यजबन्ध से पंचाणध्वज उद्र नाम के राजा ध्वज कहलाये क्योंकि विनेसेण ने केदारनाथ को ध्वजा चढ़ाई और नव कोटि भुद्रा लगाई। इन्होंने हरीगढ़ राज्य किया। आगे कलयुग की पीढ़ी दी है।

(९) चन्द्रध्वज से हरिभान तक ११४ राजाओं के नाम दिये हैं। इसके पुत्र मानिकराव के बारे में लिखा है—“मानिकराव राजा पुत्र रावी २२ गादि सां० संवत् विक्रमांकं ७०३ मानिक राव पै माता आसापुरा समरा प्रसन्न हुई, समरा के नाम साहवरि ग्राम बसायी, आसापुरा कुळ देवी हुई, समरा प्रसन्न होय वर दीयो-घोड़ा चौबीस दोड़ाई फिरी पिछो देये मती ...”।

२६६ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

(१०) एक तालिका में चौहानों की २४ शाखाएं, राज्य स्थान आदि अंकित हैं तथा अन्त में विजयराज इत्यादि राजाओं के रानियों संतति का उल्लेख किया है। अन्तिम भाग—

“.....चौधो कंबर वीरसेण रतन मंबर राज कीयौ, वीरसेण को बेटो जंतराव को बेटो हमीरराव अलावदीन पातसाह सूं साको कियो, गढ़ रणतमंबर। जिनका बेटा पोता भेवाड की घरती में राज करै छै तीन बेटां को वंश चल्यौ नही लपनसी राजा राणी ३ पुत्र १ गादी मठिन बेया राठ वीघोता देश में राज कीयो संवत् १२०४।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के द्वारा सुन्दर लिपि में लिखा गया है। ग्रंथ पर गढ़ नहीं है। कागज मटमले रंग के है।

ग्रंथ चौहान राजाओं के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

### १००. जयपुर रा राजाओं की वंशावली

१. जयपुर (रा) राजाओं की वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. २७७९६, ४. ४३ × ३३ सेमी०, ५. १, ६. २६, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत तालिका में कछवाह राजाओं की वंशावली ईससिंह (ग्वालियर) से सवाई माधवसिंह (जयपुर) तक ३६ राजाओं के नाम अंकित है। राजाओं के जन्म संवत्, राज्यारोहण संवत्, देहांत संवत्, राज्यकाल तथा रानियों व कुंवरो की संख्या अंकित है। जन्म संवत् अधिकांश राजाओं के नहीं हैं।

प्रारम्भ—

संख्या	नाम राजा	राजधानी	जन्म सं०	गादी सं०	देवलोक सं०	राज्य सं०	रानी पुत्र काल
१	इसेसिंगजी	ग्वालियर	—	—	१०२२	१	१
२	सोडदेवजी	दोसारामगढ़	—	१०२३	१०६३	४० वर्ष	१
						३ मास	१० दिन

यह तालिका एक ही व्यक्ति के हाथ से बनाई गई है। इसमें राजा मलय्यासी के पुत्रों की संख्या ३२ अंकित है।

### १०१. राठौड़ रतन महेसादासोता की वचनिका आदि

१. राठौड़ रतन महेसादासोता की वचनिका आदि, जग्गा खिड़िया आदि,  
२. रा० शो० सं०, ३. १०६५, ४. २३.५ × १८.५ सेमी०, ५. ६३, ६. २५.

७. वि० सं० १७८६, ई० सन् १७२६, करमावास, ८. न्यानविजय, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में प्रारंभ के ४ पत्र गायब हैं। प्रारंभ में भ्रमर बतीसी, धर्म बावनी, प्रस्ताविक पट पद कवित्त आदि कृतियां लिपिवद्ध हैं।

१. राठीइ रतन महेसादास री वचनिका :-

प्रस्तुत वचनिका ग्रंथांक ६३४, रा० शो० सं० के समरूप है पर यह लिपि उससे पुरानी है तथा वचनिका पूर्ण है। यहाँ केवल इसका अन्तिम भाग दिया जा रहा है।

“दिल्ली का बांका, उभेण का साका च्यार जुग रिहसी मु कवि पातसाह कहि सी ॥३३७॥”

पुष्पिका—

“इति श्री राव रतन री वचनिका समाप्त। संवत् १७८६ वर्षे मति मिहगसर शुद्ध १३ अनीधर वारे लिपंत ॥ ग्यान विजय ॥ करमा वश्र ग्रामे मध्ये ॥”

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में मनुष्य के अनेक रोग उनका इलाज करने की दवाइयों आदि का वृत्तान्त है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिपि में लाल स्याही का प्रयोग कहीं-कहीं किया गया है। ग्रंथ जीर्ण होने के फलस्वरूप बहुत से पत्र जिल्द से अलग हो गये हैं। पत्र मटमैले रंग के हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। अन्तिम १६ पत्र खाली पड़े हैं।

## १०२. आईन-ए-अकबरी भाषा वचनिका

१. आईन-ए-अकबरी भाषा वचनिका, गुमानीराम, २. रा० शो० सं०, ३. १६४६२, ४. ३६.५ × २५.५ सेमी०, ५. ७७, ६. ३२-३४, ७. वि० सं० १८५२, ई० सन् १७९५, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह आईने अकबरी (अबुल फजल कृत) के कुछ भाग का राजस्थानी भाषा में रूपान्तर है। इसमें सम्राट अकबर की शासन-व्यवस्था के विभिन्न विभागों तथा राज्यकाल की अनेकानेक सूचनायें समाविष्ट हैं।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥

सुमुख एकदंत सुचि कपोल गज कर्णक

लंबोदर इव विघाटो विघ्न नासो विनायक ॥१॥



दोहा—

मूरजवंसी कूमं कुलरवि सो तेज प्रताप ।  
तिमर नसांवन जगत को छत्रपति नृप आप ॥

श्रीमन् महाराजा धिराज श्री धरम मूरत घरमावतार प्रधीपत सूरज प्रताप सकल नृप सिरोमणि सुप निधान बुधिवंत विचक्षण गुणां सागर बिसे प्रकाती इन्द्र से सीतल अमृत समान मंगल मूलं करण सम दांनी परम दयाल परम गरिष्ट कर्हणा- मय परम उदार श्री विष्णुभक्ति परायण सब छत्रिन सिरमोर श्री राज राजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सवाई प्रतापसिंहजी देवाग्या ते यवन ग्रंथ आईने अकवरी की भाषा वचनिका जया प्रति लिपी ।”

लिपि समय व कर्ता आदि के नाम इस प्रकार उद्धृत है—  
“संबत असटादस सतं वावन अधिक पुनीत ।  
पोस मास तिय पंचमी किय अरंभ यह रीत ॥”

सो लाला हीरालाल मुनसी हुकम त्वायो—तव हुकम को सीस चढायो अरू लिपये को प्रारम्भ कियो परम सेवग आग्याकारी गुमानीराम कायसत ।”

ग्रंथ की भाषा शैली का उदाहरण प्रस्तुत है—  
“उकील मुतलक ॥ सो हिंदी भाषा में मुसहिव प्रतिनिधि कहै ॥—सो वह अपनी अकल के जोर से वार चाम घरमी से पहोंच कर नायव मुलक अरू मालका रहै अर मसलत येकांत समां में अपनी उग्र बुधि ते उंजियारी करके निसवे करै सो वो बडा काम वादस्याही का नै आपणी अँडी नियाह से बणावै.....आदि ।”

ग्रंथ मे विषय-सूची भी अंकित है, तथा वस्तुओं के भाव इत्यादि विविध विषयों से संबंधित अनेक तालिकायें अंकित है ।  
ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है । लिपि साफ सुवरी है प्रत्येक पत्र पर पत्र संख्या अंकित है । अन्त में कुछ पत्र खाली पड़े हैं, अन्त में कुछ पत्र खंडित है, कृति अपूर्ण है । पत्र हाथ के के बने प्रतीत होते हैं । ग्रंथ पर सुन्दर कपड़े का गत्ता मंडा हुआ है ।

### १०३. जैनियों की वंशावली व श्रावकों की विगत

१. जैनियों की वंशावली व श्रावकों की विगत, २. रा० शो० सं०, ३. १२७६७, ४. ३५ × २२ सेमी०, ५. २१७, ६. २०-२७, ७. वि० सं० १८५३, ६० सन् १७६५, खजुरपुर, ८. देवीचन्द, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में जैनियों के कुछ गीतों की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है और

विभिन्न जैनी पुरुषों, उनकी वंशावली तथा निवास-स्थान का उल्लेख भी दिया है। निवास-स्थान स्थलों आदि के नाम हासिये में एक ओर लिपिवद्ध हैं।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशाय नमः श्री सच्चिकाय नमः एक दंतो माहा बुधी सर्वं गुणो गण नायक सर्वं सीधी करो देवा गवरी पुत्र विनायका ……आदि।”

ग्रंथ के मध्य भाग में तातेड़ गोत्र की उत्पत्ति कैसे हुई वर्णित है। माताजी द्वारा सरपणी का रूप धारण कर इश्वरचन्द्र के पुत्र को डसने और उसकी मृत्यु पदचात् उसे लंकेश्वरी पाशवंताय की कृपा से जिन्दा होने पर जैन मन्दिर में पूजा आदि होने व जैन धर्म अंगीकार करने व उसके वंशज तातेड़ गोत्र कहलाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“ ……सहर में आहर मीत्यो नहीं ……आप श्री इश्वरचन्द्र रा बेटा नै मारी …… आप श्री माताजी सरपणी री भेष कीधी मेहला में जाय नै अमैचन्द सुतो तिणरै पापती पापती अस्त्री सुती छै ……सरपणी सास पीच लीनी ……कंवर सूतो मूवां समानं पड़ियौ ……ताड़पत्र मंगाय नै मतो घलाय लीनी नै लंकेश्वरी पारस्वनाथजी नै पेल नै पांणी पायौ, विस री कोथली वारै आण पड़ी इतरै कंवर आळस मोड़ नै उठीयौ ……जैन रा देवरा में पुजा प्रभावना करण लागा जनोईयां तड़ा तड़ तोड़ी तीण था तातेड़ कहाणा, माताजी री साचै वचन रही तरै सचीयाय कहीणी ……माताजी री कर लागै सवा मण बाट, घृत सेर १५, गुळ सेर १५, नाळेर २१, पुत्री फळ २१ कुंकुं चावळ …… चाडीजै चैत्री ८ पुजीजै आसोजी ६ पुजीजै ……आदि।”

पुष्पिका—

“समत १८५२ वर्षे मीति प्रथम भाद्रवा वदि २ लिपतां देविचंद पजुर पुर मध्ये।”

तातेड़ गोत्र के अतिरिक्त भूर गोत्र, चित्र गोत्र, बोरुदीया गोत्र और काग गोत्र की उत्पत्ति आदि पर प्रकाश डाला गया है। श्रावकों का वृत्तांत भी साथ में दिया है। जैनियों के इतिहास के लिये ग्रंथ अत्यन्त उपयोगी है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ के कुछ पत्र खाली पड़े हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

२७० : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

### १०४. जैन वंशावली व श्रावकों की विगत आदि, भाग-२

१. जैन वंशावली व श्रावकों की विगत आदि, भाग-२, २. रा० शो० सं०, ३. १२७६८, ४. ४३ × ३३ सेमी०, ५. १६६, ६. ४३-५०, ७. वि० सं० १८५७, ८. १८००, खजवाणा, ९. देवीचन्द, १०. इसमें जैनियों के विभिन्न गोत्रों की उत्पत्ति और उस गोत्र के मूल पुरुषों की वंशावली पूर्व स्वान आदि लिपिवद्ध है।

प्रारम्भ में दो रंगीन चित्र गणेशजी और माताजी के चित्रित हैं।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशाय नमः श्री सच्चिकाय नमः.....वंशावली सुपातां यकां नर है

पाप लीगार, जनमजे भारष सुष्या गया कोढ़ अड़ार ॥१॥

इसमें जैनियों के कुकड़ा चौपड़ा गोत्र, कुंभट गोत्र, नप्यत्र गोत्र, श्रीनाल गुरिबा गोत्र, पुकरणा गोत्र, सुचिती गोत्र, (विस्तार में), राका गोत्र, आभड़ गोत्र, भूट गोत्र, डीडु गोत्र, मोराक्ष गोत्र, छाहवत गोत्र, वाघमार गोत्र, समूदड़िया गोत्र, पिछोत्या गोत्र, ह्यूडिया राठीड़ गोत्र आदि वर्णित है।

उदाहरण—

“कुकड़ा चौपड़ा गोत्र—

श्री गणेशाय नमः, कुकड़ा गोत्र लीपते पूर्व राठीर वंसे, कनवजीया शायं, किचित्तय द्विहार कप्रयते कनोजीया राठीर वंसे सच्चिकालगा सवामण वाट कृत १५ सदसी पाटी नाळेर ४ फलकुकु फल घुय पुर सेइ चाकडीयो तिलक राठीड़ अड़कमल प्रति बोधता भट्टार करत्र प्रभू सूरभी कनौज गोत्र कूकड़ा १, चौपड़ा २, धूपीया ३, बट पटरां कवाल ४, एते शायं..... आदि।”

पुष्पिका—

“इति श्री ह्यूडिया राठीड़ गोत्र लीया कृत्वा समत १८५८ २॥ १७२२ मा० माहासुद १२ ली० देविचन्द पचवाण म०।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया हुआ है। लिपि सुन्दर व सुवाच्य है। पत्र मोटे, हाथ के बने हुए हैं।

धोसवालों के गोत्र संबंधी जानकारी के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

### १०५. जैनियों की वंशावली व श्रावकों की विगत, भाग-३

१. जैनियों की वंशावली व श्रावकों की विगत, भाग-३, २. रा० शो० सं०, ३. १२७६६, ४. ६३ × ३६ सेमी०, ५. ८८, ६. ६०-६६, ७. वि० सं० १८५५,

ई० सन् १७६५, संभवतः खजुरपुर, ८. देवीचन्द, ९. देवनागरी, १०. इसमें जैनियों के बाफना, कणावट लूणावत, गौत्रों की उत्पत्ति उनके मूल पुरुषों की वंशावली, पूर्व निवास स्थान आदि वर्णित है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशाय नमः श्री सच्चिकायनमः” .....वंशावली सुणतां थका नर है पाप लीगार जनमेजे भारथ सुणया, गया कोड अडार ॥१॥

पूर्व अग्रे जनमेजे राजा हुवो, तिणरै अडारै प्रकार रा कोड हुवा। राजा जनमेजे होम जोग सास्त्र मुज छै भोकळा कोया पण कोड नीवरतन हुवै नहीं” • देवी आय सपने में केयो जे राजा थूं थारो सवाल” .....भारथ कांना सू सुणे तो कोड निवरत हुवै, तद राजा वेद व्यासजी कने जाय नै कयो माहरो वंस सुणावो .....आदि।”

लिखने का ढंग जैन वंशावली भाग एक और दो जैसा ही है। इसमें भी विभिन्न जैनी पुरुषों के स्थलों के नाम ग्रंथ के हासिये में प्रकित है।

पुष्पिका—

“इति श्री लूणावत गौत्र लीपी कृत्वाः समत १८५५ मीती काती वद ७ ली० देवीचन्द।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। ग्रंथ पर चमड़े का गता मंडा हुआ है। लिपि सुवाच्य है। जैन धर्म के विस्तार को समझने हेतु ग्रंथ उपयोगी है।

### १०६. जैनियों की वंशावली व श्रावकों की विगत, भाग-४

१. जैनियों की वंशावली व श्रावकों की विगत, भाग-४, २. रा० शो० सं०, ३. १२७७०, ४. ४१.५ × ३१ सेमी०, ५. १३५, ६. ४८-५१, ७. वि० सं०, १८५३, ई० सन् १७६६, खजवाणा, ८. देवोचन्द, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ ग्रंथांक १२७६८ तथा १२७६९ की भांति ही हुआ है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः श्री सच्चिकाय नमः.....वंशावली सुणतां थकां नर है पाप लीगार जनमेजे भारथ सुणया गया कोड अडार।”

इसमें वर्णित है कि श्रावकों की उत्पत्ति कैसे हुई, इसके संबन्धित एक कथा वर्णित है—

“अथ उसवाला री उत्पत्त<sup>१</sup>..... श्री महालीक्ष्मी स्थान तिण री पहला युग मांहे रयण माला श्रेता युगे यु फमाला..... भीनमाला नगरै विपै परमारराज भीमसेन राजा राज करै तिणरै दोग पुत्र बडो उपलदे, लोडो सुरसुदक्ष । पिता ये छोटा बेटा नै राज तिलक दीघो, उपलदे नै देसोटो दीनी काळो घोड़ो सिरेपाव दे नै सीप दीनी नै कयो—बेटा सुनी घरती वसावज्यो तिणरी माता मुणीयो तरां मोहरां री पावरो भर मेलियो..... आदि ।”

जैनियों के चोरडिया, गाहदीया गौत्रों की उत्पत्ति, उनके मूल पुरुषों, उनकी वंशावली तथा पूर्व निवास-स्थान आदि का वृत्तान्त दिया गया है । साथ में श्रावकों का भी उल्लेख है ।

पुष्पिका—

“इति श्री चोरडीया गाहदीया गोत्र लिपी कृतं १७५३ लीपंत देविचंद पचवारण मध्ये करणोत्त राजे मती श्रावण वद ६ ली. दिवीचंद लीपी कृतं ॥”

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । लिपि सुन्दर व सुवाच्य है । ग्रन्थ के पत्र मोटे, हाथ के बने हुए हैं । ग्रन्थ पर कपड़े का गत्ता मड़ा हुआ है ।

१. ओसवाल जाति के इतिहास (पृ० ५) में ओसवाल जाति की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है जो इससे कुछ भिन्न है ।

द्वारा अध्याय

## विगत, हाल, हकीकत

### १०७. राजलोकों की विगत, वीर गीत आदि

१. ग्रंथ का नाम व कर्ता—राजलोकों की विगत, वीरगीत आदि, २. प्राप्ति स्थान—रा० शो० सं०, ३. ग्रंथांक—१४४८४, ४. माप—१२ × १४ सेमी०, ५. पत्र संख्या—३६६, ६. पंक्ति संख्या—२०-२६, ७. लिपि समय, लिपि स्थान—वि० सं० १६८०-८७, ई० सन् १७२३-३०, जोधपुर, ८- लिपिकार—पंचोली चुतुमुंज, मुहता सोभाचंद, बगसीराम आदि, ९. भाषा, लिपि—राजस्थानी, देवनागरी, १०. विशेष विवरण—प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ 'राम चरित्र' कृति से हुआ है।

प्रारम्भ—

“श्री रामजी सत छै अथ श्री राम चीरत लिखते—नमो नमो नीमसकार गुंसाई, घट घट व्यापक जल धल मांही…… ॥१॥”

१. महाराजा अजीतसिंह की उवाकी हुबो तिरण की विगत :-

अजीतसिंह की हत्या की घटना इस प्रकार उद्धृत है—

“सं० १७८० रा असाढ़ सुद ९ श्री महाराजजी ची० जगतसिंह सेहसमलौत की बेटी तलैठी रँ मेहलां परणीया……सुद १० डोलो ले गढ़ पदारीया नै सुद १२ कंकण डोरड़ा छोडीया…… पाछली रात घड़ी १ धी सुद १२ सोम की रात तरँ पीडीया मुं लोह हुबो नै बहारण १ हुड़बड़ी देती थी तीण नुं पीण मारी नै सुद १३ भोम दाग हुबो नै पछै ईतरी सतीयां हुई …… ।” (पत्र-१)

२. अमर्यासिंह की मनसब :-

महाराजा अमर्यासिंह के मनसब और जागीरी का ब्यौरा दिया गया है।

प्रारम्भ—

“याददासत महाराज श्री अर्जुनसिंहजी रै मनसब जागीरी री तोजी री नकल दीली मुं प्रा० सेहजरांम……लिप मेली धी सं० १७८३ रा घंत मुद १० मु० जनीवास रै डेरं तिए री नकल छै ………।” (पत्र-३)

३. ओसवाल रा गौत्र :-

ओसवाल जाति के गौत्रों का नामोल्लेख है । (पत्र-३३)

४. चौईस साय चोहण री त्पारी विगत आदि :-

चौहानों की २४ शाखाओं का नामोल्लेख है फिर दिल्ली में राजा (पृथ्वीराज चौहान से औरंगजेब) सिंहासनाहूड़ हुए व किसने कितने समय राज्य किया उसकी सूची दी है । (पत्र-४)

५. राठौड़ कहाणां तिए री विगत :-

राठौड़ों की उत्पत्ति कैसे हुई उसके सम्बन्ध में एक दंतकथा वर्णित है ।<sup>१</sup> फिर राठौड़ों की १३ शाखाओं का निर्माण हुआ उसका विवरण और मारवाड़ में राठौड़ों का प्रवेश राव सीहा के द्वारिका यात्रा से लिखा है, फिर मारवाड़ के शासकों के संतति आदि घटनाओं (संबत सहित) महाराजा अजीतसिंह तक का विवरण दिया है ।

प्रारम्भ—

“एक चंद्रकला नगरी छै तीण री राजा जवन सत छै । सु बडौ घरमात्मा जारा ………।” (पत्र-१६)

६. चूक कर मारियौ री विगत :-

राठौड़ सरदार इत्यादि धोखे से मारे गये उसका व्यौरा दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“रा० मुकनदास नै रूघनाथ सीधो सुजाणसींघोत चांपावत गढ़ माहै मारीया सं० १७६४।” (पत्र-१)

७. नीसांणी राव जोधा री :-

यह एक प्रशस्ति-काव्य जोधपुर के सस्थापक राव जोधा से सम्बन्धित है ।

प्रारम्भ—

“जिण दिन जोध जनमिया, जस थाळ बजाया ।

जे सिर किणी नमावता, जीण पत्र नमाया” ……… ॥१॥”

१. विस्तार के लिये देखें, राठौड़ वंश री विगत, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

८. गीत राठौड़ राधासिंह कीलाणमल्लोत बीकानेर री :-

प्रारम्भ—

“पाताळ बळ जठे उठे रँहण न पाउं  
रीध मंडै करण सरग रहे” “ ॥१॥”

९. होली री उत्पत्त कथा<sup>१</sup> :-

होली का त्यौहार मनाया जाता है उमके बारे में एक कथा वर्णित है—

प्रारम्भ—

“अथ राकस मालण री बेटी । बुद्धा राकसणी..... श्री महादेवजी उपर  
तपस्या कीवी.....आदि ।”

अन्तिम भाग—

“ईत श्री होळी री कथा संपुरण सं० १७८७ रा माह सुद १२ ।”

(पत्र-२३)

१०. राठौड़ प्रथीराज री कहो गीत (राव कल्याणमल की मृत्यु पर) :-

प्रारम्भ—

“सुप बास रमंतां पास.....आस पास मोकलां दांम  
न लीर्ये नांव पर्ये नारायण, कलीया तज चलीया बेकाम ॥१॥”

११. हाडा भुर्घासिंह री कवित्त :-

प्रारम्भ—

“देत धीली पन मीर माहाजल, सीद हीलोण ते भई गाढी  
हीदून की हद दाव दीसुं दीस..... ॥१॥”

१२. गीत महाराजा अजीतसिंह री :-

प्रारम्भ—

“हो रावां रजीयां मुणी हो रावळ राणा  
कमध तपी पर करी, समबड सुलतानां..... ॥१॥”

ग्रंथ में इसके अतिरिक्त जयपुर, जैसलमेर और बूंदी के शासकों की वंशावलियों के अतिरिक्त अनेक अनैतिहासिक कृतियाँ भी लिपिवद्ध हैं ।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । ग्रंथ पर गता नहीं है । कुछ पत्र कीट भक्षित है ।



### १०८. विगत बात संग्रह

१. विगत बात संग्रह, साक्षा जंमलोत आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५४६४, ४. १६ x २४ सेमी०, ५. १०५, ६. १२, ७. १८वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रन्थ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. राठौड़ अमरसिंह रा कवित्त भीसण लाखा जंमलोत रा कहीया :-  
यह ५५ पद्यों, दूहों आदि की कविता नागौर के राव अमरसिंह राठौड़ की वीरता और उत्सर्ग से सम्बन्धित है।  
प्रारम्भ—  
दूहा—

“लड़ीया आदि जुगादि लगि, सूरा सोहड समय,  
बडा सुपात्रां ओळये कहि सु भारत कथ ॥१॥  
कवित्त—

मति बुधि समपि हमेस जटाधारी जोगेसर  
आपे सर ईसवर, कहा बंदे जोडे कर..... ॥१॥  
अन्तिम—

अमर मण्णधर आगळं मुंस मेई पाव,  
गुर पुवाल मोडीया लकड़ी तणो गुणाव ॥५५॥” (पत्र-६)

२. दिली में राज कियो री विगत :-  
इसमें राजा दशरथ से मुरादबक्श तक के राजाओं की वंशावली तथा कितने कितने समय (वर्ष, मास, दिन) राज्य किया अंकित है। कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की जन्म कुण्डलियां भी दी हैं।

३. बात पाटण अणहलवाड़ा री :-  
पाटण के बारे में बताया है कि इसे कब कितने बसाया फिर इसका लखन देकर वनराज चावड़े से वादशाह जहागीर तक के शासकों ने कितने वर्ष राज्य किया अंकित है। (पत्र-२३)

४. अहमदाबाद यी सेरां री (दूरी) विगत :-  
अहमदाबाद से जोधपुर, सीरोही, उदयपुर आदि शहरों की दूरी अंकित है।

५. दिली रं पातिसाहों री विगत :-  
पृथ्वीराज चौहान से फरूकसियर तक के वादशाहों ने कितने वर्ष राज्य किया अंकित है। (पत्र-४)

६. राणा प्रताप की बात :-

इसमें हल्दी घाटी के युद्ध का संक्षिप्त वृत्तान्त है।

प्रारम्भ—

“राजा राम साह तुंअर गुमालेर री घणी महाराणा जी श्री प्रतापसीधजी कर्न था सो विपे मांहे रूपीआ ८०० रोज १ रोकड पावता, हल्दी री घाटी वेढ १ तठे काम आया सं० १६३२ श्रावण वदि ७ राणे प्रतापसीधजी कछवाहो मानसीध सुं वेढ तिण मांहे काम आया …… ।” (पत्र-१)

७. राणा अमरसिंह की बात :-

वि० सं० १६६६ में राणा अमरसिंह पर अबदुला द्वारा की गई चढाई और राणा की ओर से मारे गये वीरों के नाम आदि दिये हैं।

प्रारम्भ—

“राणाजी श्री अमरसीधजी उपर अबदुलो आयी तरै इतरी साथ काम आयी सं० १६६६ फागुण सुद ७ …… ।”

फिर अकबर के चित्तीड़ आक्रमण के समय राणा के पक्ष के मारे गये योद्धाओं की नामावली दी है। (पत्र-१३)

८. राणा सांगा की बात :-

इसमें राणा सांगा व बादशाह बाबर के बीच हुए युद्ध का संक्षिप्त विवरण है।

प्रारम्भ—

“राणो सांगाजी पीली श्रेपाल सिकरी बबर पातिसाह सुं लड़ाई कीधी सो बात संवत १५८४ काती सुदि ५ राणोजी ……श्रेपाल भागा बाबर पानिसाह विलाइत री आयी …… ।”

९. बात पातिसाही सोबां की पंचोली श्राणंदरूप लिपाई सं० १७१५ काती

सुदि १३ नै :-

इसमें दिल्ली के बादशाह के अधीनस्थ परगनों, सरकार, सोबा की विगत और उसके दाम आदि का ब्यौरा दिया गया है। (पत्र-२)

१०. बात गोलकुंडा की नं करणाट की :-

इन स्थानों की भौगोलिक स्थिति आदि के बारे में विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

“पातिसाह कुतबी कहावई जात मुगल पुरासांणी छै, घोड़ा हजार ४०००० री साहीबी छै, ब्राहनपुर सुं कोस ३०० दोलतावाद …… ।” (पत्र-१)



१६. रांणेजी परतापसौंघजी नै कुंअर मानसिघजी कछवाहै हलदीघाटी धमणोर राइ हई तिए री :-

इसमें भी हल्दीघाटी के युद्ध का ही वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

“कुंअर मानसीघ गुजरात दिसी किए हीक काम पातिसाह श्री अकबर मेल्यो धो…… ।” (पत्र-२३)

१७. पातिसाह फोत हुवा तिए रा संवत :-

इसमें हुमायूं, अकबर इत्यादि वादशाहों के मृत्यु संवत, तिथि आदि अंकित है । (पत्र-३)

१८. घात चीतोड़ री :-

इसमें चित्तौड़ पर बहादुरशाह के आक्रमण का विवरण दिया है ।

प्रारम्भ—

“रांणे सांगोजी बैकुंठ पधारया जद टीके राणी करमेती हाडी नरवद मांडावत री बेटी तिए री बेटी बैठी । उदैसिघजी बीकामदीतजी रा लहोडा भाई, तिण समै सं० १५६८ रा जेठ सुदि १२ बहादर पातिसाह चीतोड़ उपरि आयो…… ।” (पत्र-१)

१९. घात पुंवार रावत करमचंदजी री :-

इसमें राणा सागा द्वारा करमचंद को ‘रावताई’ का खिताब और भूमि आदि देने का उल्लेख है ।

प्रारम्भ—

“रांणेजी श्री रायमलजी चीतोड़ राज करै छै, टीकाइत कुंअर प्रियोराजजी था, पछै जमल टीकाइत रांणेजी करै थापीओ छै, तिण समै सांगोजी रायमलजी री बेटी बेहाल फिरै छै सो फिरता गांव आवेसर आया छै सो अठै पुंवार करमचंद…… ।” (पत्र-२)

२०. घात एक मेवाड़ री :-

महाराणा राजसिंह पर औरंगजेब की चढ़ाई का वृत्तांत है । साहजादे अकबर का राठौड़ों की ओर मिल जाने का भी उल्लेख है ।

प्रारम्भ—

“मेवाड़ उपर पातिसाह श्री औरंगजेब चढे आयो नै रांणेजी श्री राजसीघ जी राज करता था, सं० १७३८ रा आसोज सुदि २ रांणेजी मगरां मे गया…… ।” (पत्र-३)

२१. वात रांणा उदैसिघजी री :-

उसमें वर्णित है कि महाराणा उदैसिह किस प्रकार पासवानिये पुत्र बणवीर को हटा कर स्वयं गद्दी पर आरूढ़ हुए ।

प्रारम्भ—

“राणाजी उदैसीघजी नै : कुंअर प्रिथीराजजी री पवासण पूतली जिणी रा पेट री बणवीर जि श्री देवायी……।”

२२. पासवानां रा छोरू ठाकुर हुआं री विगत :-

इसमें कुछ राजाओं आदि के पासवानिये पुत्रों का हाल दिया है । यथा—

“वासवाले रावल मानसिघ प्रताप री बणीओणी रा पेट री निपट भली ठाकुर हुआ, पछै भोमीओं एक माहीडौ पकड़ीओ तिण मारीओ……।”

राव जगमाल सीरोहीयो तिण रै घरै पवास १ हुती, तिण रै पेट महाजल हुआ तिण री बेटी राव कलो सीरोही री को दिन घणी हुआ, सो राव कला री बहन मोटे राजा परणी, नै कला री बेटी राजा सूरजसिघ परणीया हुता …… आदि ।”

(पत्र-१३)

२३. हीरा जवाहर री कीमत :-

इस प्रकार दी है—

“जवाहर री कीमत टांक १ री रती २४ तथा ३२ मोती श्र० ५०००० तथा ६०००० ताई……हीरो रु० १००००० तथा रु० १२५००० ताई……।”

(पत्र-३)

२४. वारे आभूषण नाम :-

इस प्रकार अंकित है—

“(१) लज्या, (२) मान, (३) कटाक्ष, (४) आलः, (५) रत्याभय, (६) अभय, (७) प्रेम सरस, (८) हसगय, (९) घोरज, (१०) चित हरण, (११) गुहया स्थल, (१२) नीरसनां, (१३) सोभतः ।”

२५. महाराजा जसवंतसिहजी रै जागीर रा परगनों रा दांम री विगत :-

जोधपुर के शासक महाराजा जसवंतसिह (प्रथम) के जागीर में मिले परगनों की रेल के दांम व रूपये अंकित हैं, फिर विभिन्न परगनों में पड़ने वाले सांसण के गांवों की संख्या दी है । अन्त में मोटा राजा उदयसिह, सूरसिह, गजसिह और जसवंतसिह को बादशाह की ओर से मिले परगनों की भी कीमत दी है ।

(पत्र-२)

२६. देसों रं गांम री संख्या :-

विभिन्न प्रदेशों के गांवों की संख्या अंकित है। यथा—

“४० लाख गांम ओपामंडल रा,

१८ हजार गांम वैराट देस रा,

७२ हजार गांम गजना देस रा……।”

अन्त में इस प्रकार कुल गांवों की संख्या ११५४०६४४ दी है। जिसमें मारवाड़ के गांवों की संख्या १४ हजार दी है। (पत्र-३३)

२७. महेसरयां की बहोतर पांप :-

इसमें माहेदवरियों की १३६ शाखाएं अंकित है। यथा—

“१. भुंभर, २. जाजु, ३. जुरासंध, ४. भाला, आदि।” (पत्र-२)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में बादशाहों की दन्त कथाएँ, पठानों की पीढियों, गोमती गोदावरी आदि नदियों संबंधी बातें, तीर्थ स्थलों का वर्णन, वात बूंदेला री, जादवां री, पृथ्वीराज चौहान के सामन्तों के नाम, परगना वसियों री विगत तथा उदयपुर के जलाशयों की विगत इत्यादि कृतियां संग्रहीत हैं।

राजस्थान सम्बन्धी विविध ऐतिहासिक जानकारी के लिये ग्रंथ उपयोगी है।

ग्रन्त में अनेक पत्र खाली है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिपि मुन्दर है। कागज काफी जीर्ण हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

### १०६. मारवाड़ रा परगनां री विगत

१. मारवाड़ रा परगनां री विगत, (मुहता नैणसी), २. रा० शो० सं०, ३. ६७१६, ४. ३०.५ × २५ सेमी०, ५. ३०८, ६. २०-२३, ७. १८ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह मारवाड़ के बहुत बड़े भू भाग के संबंध में अनेक प्रकार की जानकारी प्रस्तुत करने वाला अद्वितीय ग्रंथ है। इसमें जसवंतसिंह प्रथम के समय के जोधपुर, सोजत, जैतारण, फलोदी, मेड़ता, सिवाना और पोकरण की विस्तृत जानकारी बड़े व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत की गई है। पहले प्रत्येक परगने का इतिहास देकर फिर प्रत्येक गांव की ५ वर्ष की आमदानी, बसने वाली जातियां, फसल, जमीन की किश्म, जलाशय कुए आदि की जानकारी दी गई है। प्रत्येक परगने के गांवों के विवरण के अन्तिम भाग में सांसेण स्वरूप ब्राह्मणों, भाटों, चारणों आदि को दिये गये गांवों का भी विस्तृत विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः ॥ श्री म्हार को । वासुधै कवि कुर्वतु । वासुधै कवि कुर्वतु । तिब री जोषडील  
परगने जोधपुर री—घादि सँहर मंडोव  
वात छै । मोग सोल परयत मेर गे  
घणो कहै छै .....घादि ।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ  
हुए तथा अलग प्रलग हैं । जीएँ होने  
कई पत्र बहुत जीएँ ओर मुद्रित हो  
यह वह मूल प्रति है जिसके प्रा  
विद्या प्रतिष्ठान में इन ग्रंथ का प्रकाश  
मह ग्रंथ मारवाड़ के इतिहास,  
वाली जातियों ओर मुगल साम्राज्य से

### ११०. जोधपुर रँ नीवांण

१. जोधपुर रँ नीवांणों री वि,
३. १२८७७, ४. १० × २१.५ सेमी
- १८५८, ई० सन् १८०१, जोधपुर,
१०. ग्रंथ में प्रकृत कृतियों का विवरण

१. नीवांणों री विगत :-

प्रारम्भ में जोधपुर के शासकों  
गये उसका वृत्तांत है—

“श्री जोधणी रा निवांणा  
उपरै रासा री वास थो, पछै उजड़  
पिणाइ.....घादि ।”

२. दिल्ली में राज कियां री विगत :-  
दिल्ली में बादशाह १०  
(राजा युधिष्ठिर से फरूकसियर तक)

माईजी तथा लहवा थी परलेवर ॥  
वास्तव माई री पवनपुच्छ  
की कही छै । तिब री जोषडील  
ले लिखित किया गया है । यह लकी कुँ  
के कारण कुछ पत्र किनारों से क्षतिग्रस्त  
है ।

पुस्तक पर इसका सम्पादन होकर राज० प्रा  
हुआ है ।  
सूचक, प्रकाशन राजस्थान व्यवस्था,  
सम्बन्ध आदि दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण।  
री विगत तथा बंसावसियां

१. १४, ६. ११-१६, ७.
८. बजात, ९. राजस्थानी,

रानियों आदि द्वारा कुछ जलाशय  
री विगत<sup>३</sup>—राजोनाह राठीड़ रा  
की तरै महाराजा थी जसवंती

१. प्रकाशित, सम्पादक डा० नारायणसिंह  
राजकीय प्रसिद्धा—‘मारवाड़’  
प्रसिद्ध

३. राठौड़ों की वंशावली :-

इसमें श्री नारायण से लेकर महाराजा भीवसिंह तक के राजाओं के नामोल्लेख है।

४. आंबेर का राजा की पीढ़ियाँ :-

जयपुर राजा भगवानदास से सघाई प्रतापसिंह तक के राजाओं की पीढ़ियाँ दी हैं।

इसके अतिरिक्त विभिन्न शासकों ने गढ़ शहर आदि बसाये उसका ब्यौरा दिया है।

यह ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों द्वारा लिपिवद्ध किया गया है। ग्रंथ के पत्र सब अलग-अलग हैं, कुछ पत्र दूसरे ग्रंथ के इसके साथ मिला दिये हैं।

१११. अकबर का अमल दस्तूर की हकीकत इत्यादि

१. अकबर का अमल दस्तूर की हकीकत इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २२७, ४. १५.५ × २३ सेमी०, ५. ३८, ६. १४-१८, ७. १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ऐतिहासिक विषयों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. अकबर का अमल दस्तूर आदि :-

प्रस्तुत प्रतिलिपि में ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास तथा सभी कार्य उसी की राजावंदी से करने, राज्य के प्रबन्ध हेतु कुछ नियमों का पालन करने, प्रजा के सुख-दुख का पूरा ध्यान रखने, न्याय की श्रेष्ठ व्यवस्था करने, अपने राज्य के मोहदेदारों व छोटे-बड़े नौकरों की परीक्षा लेने, उचित व्यवहार करने आदि दस्तूर गुणों का वृत्तांत है।

इससे मुगल सल्तनत की मान्यताओं तथा अनुभवों की जानकारी मिलती है।

(पत्र-८)

२. महाराजा विजयसिंह की नित्य कर्तव्य :-

जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के नित्य कर्तव्य दिनचर्या का उल्लेख किया गया है।

(पत्र-२)

११२. याद दास्त राठौड़ों की

१. याद दास्त राठौड़ों की, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३६६३६, ४. १६ × ११.५ सेमी०, ५. १३, ६. १७-१६, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रारम्भ में वर्णित है कि मोटा



राजा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात् (वि० सं० १६५२) सोजत का परगना कब किसके अधिकार में रहा। फिर राठीड़ दुर्गादास व अन्य राठीड़ सरदारों द्वारा अजीतसिंह के विसे में की गई सेवाओं के प्रतिरिक्त शहजादे अकबर वा भी बिबरण दिया है।

प्रारम्भ—

“याद दास्त

सं० १६१२ मोटो राजा देवलोक हुवा नै राजा मूरजसिंघजो टीके बँठा तरं पातिसाह अकबर सं० १६५३ प्र० सोजत जँतारण राव सगतासिंघ मोटा राजा रो ती नुं दी(यो) राजा मूरजसिंघजो गुजरात था ..... आदि।”

प्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। पत्र सब खुले हैं, किनारों से खण्डित हैं। सोजत के इतिहास-अध्ययन हेतु उपयोगी है।

### ११३. राजपूत शाखाओं की विगत आदि

१. राजपूत शाखाओं की विगत आदि, २. रा० शो० सं०, ३. २७३७, ४. २.२१ x ३० सेमी०, ५. एक लम्बा पत्र, ५. लगभग ३०८, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में इस एक पत्र का ऊपरी हिस्सा फट कर अलग हो गया है। प्रारम्भ में लिपिकार ने यह बताया है कि पृथ्वी पहले जल में समाई हुई थी और सात समुद्र थे, इसी प्रकार सूर्य चंद्रमा की जानकारी कराई है। पत्र खण्डित होने के कारण पूरा वृत्तांत नहीं मिलता है।

प्रारम्भ—

“.....लाख राहुज-चोबे छै। तेह थी अर्धं केतक हिजै। हिबं चौरस रो मानं कहै छै.....इत्यादि।”

१. सूर्य वंशी राजा तथा सतजुग कलयुग की वर्णन :-

१६ सूर्य वंशी राजाओं का उल्लेख किया गया और लिखा है—

“३२ हाथी रो बळ पत्री में हती, एक बार बोलता, २१ बार पाळता, अस्त्री पत्नीव्रता धरम पाळती, धरम रा पग ब्यार हुता, ब्राह्मण कण ही नै नवता नहीं, पृथ्वी में सदा धान नीपजती, वनास्पती १२ महिना फली फुली रेहती, मावीत पैली छोरु न मरता, सोना रो मोहर चालती, लोक नै ब्याधि पीडा न होती, जुडो न बोलता, बल भेद न हुती, पार की अस्त्री सांमु जोवता नहीं, अस्त्री परपुरस सांमो नहीं जोवती, कलेश न हुती, .....मनुष्य स्वर्ग मे जावता, देवता मृत्युलोक

में आवता, .....कामधेनु कहता तरै दूध देती, काची दूध पीवता, नै काचा फल पावता, तदि पेट में दरद होवण लागी तदि ब्रह्माजी नै कयो, तदि ब्रह्माजी अगनि देव पैदास कीधी नै कयो—इण में पकाय नै खावो ..... ।”

त्रेता युग तथा कलयुग का भी वृत्तान्त दिया है तत्पश्चात् विभिन्न राजपूत जातियों के शाखाओं के नाम अंकित है जो-नैणसी की ख्यात से कुछ भिन्न है ।

## २. परमारों की ३५ शाखाओं का नाम :-

यहाँ परमार राजपूतों की ३८ शाखाओं के नाम इस प्रकार अंकित है—

“(१) सरेचा परमार, (२) कावा परमार, (३) काटा परमार (४) काला परमार, (५) कुंबद परमार, (६) सबला परमार, (७) डोडीया परमार, (८) कुडली परमार, (९) भाभा परमार, (१०) भाइल परमार, (११) धाधु परमार, (१२) गोगुदो परमार, (१३) धुपर परमार, (१४) मोहावत परमार, (१५) सीलवत परमार, (१६) चरडावत परमार, (१७) पांणीवल परमार, (१८) चोसा परमार, (१९) ठबुह परमार, (२०) देवल परमार, (२१) घरसीया परमार, (२२) भीपद परमार, (२३) आवुहर परमार, (२४) बाहेगड़ा परमार, (२५) विकमाइत परमार, (२६) जोगाइत परमार, (२७) भोजाइत परमार, (२८) उजेणीया परमार, (२९) खेखा परमार, (३०) एरंड परमार, (३१) सोड़ा परमार, (३२) मायी परमार, (३३) चांदाउल परमार, (३४) मोहित परमार, (३५) कालोरा परमार, (३६) कालमुहा परमार, (३७) जैमल परमार, (३८) वाचेडा परमार ।”

## ३. सोलंकियों की शाखायें :-

सोलंकियों राजपूतों की १६ शाखाओं के नाम इस प्रकार दिये हैं—

“(१) बाधेला सोलंकी, (२) वीरपुरा सोलंकी, (३) बाधडीया सोलंकी, (४) साहेचा सोलंकी, (५) भीनमाला सोलंकी, (६) मणाउवा सोलंकी, (७) माचाला सोलंकी, (८) आलपचा सोलंकी, (९) बाधरेचा सोलंकी, (१०) लाखेचा सोलंकी, (११) रावरचा सोलंकी, (१२) वाखसेणा सोलंकी, (१३) उधमणा सोलंकी, (१४) खोटेचा सोलंकी, (१५) भमरणीया सोलंकी, (१६) चावडा सोलंकी ।”

## ४. चौहानों की शाखायें :-

प्रसिद्ध चौहान, राजपूतों के २५ शाखाओं के नाम इस प्रकार उद्धृत हैं—

“(१) सोनगरा, (२) देवड़ा, (३) हाडा, (४) खीची, (५) वंका, (६) बकर, (७) चंदेसा, (८) मादेसा, (९) सांचोरा, (१०) बालीया, (११) मोहल,

(१२) माल्हण, (१३) भादरेचा, (१४) खाडेचा, (१५) पापरेचा, (१६) वारदेचा, (१७) उदेणचा, (१८) वालोचा, (१९) खडेचा, (२०) वोडा, (२१) उदेणचा, (२२) उल्लेचा, (२३) सुपरचा, (२४) बडगामा, (२५) सहवाडेचा ।”

५. राठौड़ों की शाखाएँ :-

राठौड़ों की शाखाएँ इस प्रकार लिपिवद्ध है—

“(१) कनोजा, (२) गोहिल, (३) गलहया, (४) इढरीया, (५) सखोवीर, (६) घुहमीया, (७) घंघलीया, (८) भडबोला, (९) आसला, (१०) कोटेचा, (११) जमहेला, (१२) मुहपाखेडेचा ।”

ग्रंथ के अन्त में गीतम स्वामी का वृत्तांत है और एक हासिये में ३५ षवलों की सारणी बनी हुई है ।

अन्तिम पंक्ति—

“भेघाच.....पु० कल्याणजी मा० २ प्रभा कत्यादे पु० रवजी कल्यादि मा० केसर दे पु० ।”

यह पूरा पत्र एक व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । पत्र कीट-भक्षित होने के कारण कहीं पढ़ने में असुविधा होती है ।

११४. महाजनों तथा राजपूतों की शाखाओं, ओहदेदारों की विगत आदि

१. महाजनो तथा राजपूतों की शाखाओं, ओहदेदारों की विगत आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १६५८५, ४. २७.५ × १८.४ सेमी०, ५. १६६, ६. २०-२४, ७. वि० सं० १६२६, ई० सन् १८६६, जोधपुर, ८. नारसिंह, ९. राजस्थानी, देवनागरी, हिन्दी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत महत्वपूर्ण कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पातस्याओं की पुस्तक :-

इसमें दिल्ली पर राज्य करने वाले हिन्दू राजाओं तथा मुगल बादशाहों के नाम, सूबे की विगत इत्यादि अंकित है ।

प्रारम्भ—

“हिन्दू मुसलमान इतना बरस राज कीयो हिन्दुसतान की बादशाही मे इतनी पृथ्वी इतना सूबा जां की विगत आदि ।”

२. बाल समंद का बाग में आम छं ज्यों की जात :-

१. श्रीफल नाव, २. काकडियो, ३. परबूज्यो, ४. बगियावालो, ५. इमरस्यो, ६. पतास्यो, ७. कालो, ८. सिदूस्यो, ९. पीगस्यो, १०. ताडियो, ११. मेवाडो, १२. गोटको, १३. आवलोटण ।

३. महाजनों की साडी बारा जात की विगत :-

१. भोसवाल, २. पोरवाल, ३. श्रीमाल, ४. श्री श्रीमाल, ५. खडेलवाड, ६. महेसरी, ७. अगरवाल, ८. बीजावरगी, ९. नरसिंघपुर, १०. हूवड, ११. नागध्रुवा, १२. श्रावगा, १३. चीतोड़ री भाधी जात ।

४. पुराण उप-पुराण री विगत :-

१८ पुरान और १८ ही उप-पुरान, ४ वेद ४ ही उपवेद, ६ खटशास्त्र तथा ६ खट काव्य के नाम प्रकित हैं ।

५. राजपूतों की साखां :-

इसमें गहलोतों की २५, पंवारों की ३५, चौहानों की २४ शाखाओं के केवल नाम प्रकित है । (पत्र-३)

६. राणाजी उर्वपुर का परगना की विगत :-

इसमें उदयपुर के विभिन्न परगनों में पड़ने वाले गांवों की संख्या दी है । यथा—३०१ चीतोड़ का, ३६० गोडवाड़ का, ३४० जवासरा, ५२ गरवारा गांव ।

७. कुरव इनायत सरदारों नें होवे ज्यांकी विगत<sup>१</sup> :-

सरदारों को दिये जाने वाले ३७ कुरव कायदों का उल्लेख है ।

८. जोधपुर रा ओदेदारों री विगत<sup>२</sup> :-

इसमें ८६ राजकीय ओहदों के नाम दिये है । (पत्र-३)

९. पठाण की छत्तीस जात की विगत :-

पठानों की ३६ शाखाओं के नाम दिये है ।

१०. राजा, राव नं राणा री खिताब हुवे ज्यांकि विगत :-

विभिन्न राज्यों के राजाओं की पदवियों का नामोल्लेख है ।

११. याददास्ती मारवाड़ का सिरदारों के रेव भाईयो जीलो पड़ उतर आंका गांवां की वा रेप की विगत संमत १९०५ की साल :-

वि० सं० १९०५ मारवाड़ के विभिन्न जागीरदारों के रेख इत्यादि का ब्यौरा दिया गया है । यथा—

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर, 'मारवाड़ रा परगनां री विगत, (परिशिष्ट ७, पृ० ४८४, ४८५)

२. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर, 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' (परिशिष्ट ६, पृ० ४८२, ४८३)

(१२) माल्हण, (१३) भादरेचा, (१४) साडेचा, (१५) पापरेचा, (१६) वारदेचा, (१७) उदेणचा, (१८) वालीचा, (१९) खडेचा, (२०) बोडा, (२१) उदेणचा, (२२) उल्हेचा, (२३) सुपरचा, (२४) बटगामा, (२५) सहवाडेचा ।”

५. राठौड़ों की शाखाएँ :-

राठौड़ों की शाखाएँ इस प्रकार लिपिबद्ध है—

“(१) कनोजा, (२) गोहिल, (३) गलहया, (४) इडरीया, (५) सखोधीर, (६) घुहमीया, (७) घंघलीया, (८) झडबोला, (९) भासला, (१०) कोटेचा, (११) जमहेला, (१२) मुहपासेडेचा ।”

ग्रंथ के अन्त में गीतम स्वामी का वृत्तांत है और एक हासिये में ३५ घवसों की सारणी बनी हुई है ।

अन्तिम पंक्ति—

“भेषाच.....पु० कल्याणजी मा० २ प्रभा कत्यादे पु० खजी कल्यादि मा० केसर दे पु० ।”

यह पूरा पत्र एक व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । पत्र कीट-भक्षित होने के कारण कहीं पढ़ने में असुविधा होती है ।

११४. महाजनों तथा राजपूतों की शाखाओं, ओहदेदारों की विगत आदि

१. महाजनों तथा राजपूतों की शाखाओं, ओहदेदारों की विगत आदि,  
२. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १६५८५, ४. २७.५ × १८.४ सेमी०, ५. १६६,  
६. २०-२४, ७. वि० सं० १६२६, ई० सन् १८६६, जोधपुर, ८. नारसिंह,  
९. राजस्थानी, देवनागरी, हिन्दी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत महत्वपूर्ण कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पातस्याओं की पुस्तक :-

इसमें दिल्ली पर राज्य करने वाले हिन्दू राजाओं तथा मुगल बादशाहों के नाम, सूत्रे की विगत इत्यादि अंकित है ।

प्रारम्भ—

“हिन्दू मुसलमान इतना बरस राज कोयी हिन्दुसतान की बादशाही में इतनी पृथ्वी इतना सूबा जां की विगत आदि ।”

२. बाल समंद का बाग में आम छे ज्यो की जात :-

१. श्रीफल नावै, २. काकडियो, ३. परबूज्यो, ४. बगियावालो, ५. इमरत्यो, ६. पतास्यो, ७. कालो, ८. सिद्रूस्यो, ९. पीगस्यो, १०. वावनो, ११. ताडियो, १२. मेवाडो, १३. गोटकी, १४. आवलोटण ।

३. महाजनों की साडी बारा जात की विगत :-

१. ओसवाल, २. पोरवाल, ३. श्रीमाल, ४. श्री श्रीमाल, ५. खंडेलवाड, ६. महेसरी, ७. अगरवाल, ८. वीजावरगी, ९. नरसिंघपुर, १०. हूवड, ११. नागधुवा, १२. श्रावगा, १३. चीतोड़ री आधी जात ।

४. पुराण उप-पुराण री विगत :-

१८ पुरान और १८ ही उप-पुरान, ४ वेद ४ ही उपवेद, ६ खटगास्त्र तथा ६ खट काव्य के नाम अंकित हैं ।

५. राजपूतों की साखां :-

इसमें गहलोतों की २५, पंधारों की ३५, चौहानों की २४ शाखाओं के केवल नाम अंकित है । (पत्र-३)

६. राणाजी उदयपुर का परगना की विगत :-

इसमें उदयपुर के विभिन्न परगनों में पड़ने वाले गांवों की संख्या दी है । यथा—३०१ चीतोड़ का, ३६० गोडवाड़ का, ३४० जवासरा, ५२ गरवारा गांव ।

७. कूरव इनायत सरदारों न होवे ज्यांकी विगत<sup>१</sup> :-

सरदारों को दिये जाने वाले ३७ कूरव कायदों का उल्लेख है ।

८. जोधपुर रा ओदेदारों री विगत<sup>२</sup> :-

इसमें ८६ राजकीय ओहदों के नाम दिये हैं । (पत्र-३)

९. पठाण की छत्तीस जात की विगत :-

पठानों की ३६ शाखाओं के नाम दिये हैं ।

१०. राजा, राव न राणा री लिताब हुवं ज्यांकि विगत :-

विभिन्न राज्यों के राजाओं की पदवियों का नामोल्लेख है ।

११. यादवास्तो मारवाड़ का सिरदारों के रेव भाईयो जीलो पड़ उतर आंका गांवां की वा रेव की विगत संमत १६०५ की साल :-

वि० सं० १६०५ मारवाड़ के विभिन्न जागीरदारों के रेख इत्यादि का ब्यौरा दिया गया है । यथा—

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर, 'मारवाड़ रा परगनां री विगत, (परिशिष्ट ७, पृ० ४८४, ४८५)

२. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर, 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' (परिशिष्ट ६, पृ० ४८२, ४८३)

१. चांपावत बभूतसिंघजी के पिढां ८७७३/गांव ६७, भायपो ५२७७५/गांव २८, पडउतर गाव २०, १४६६२५

२. आउवा कुशालसिंघजी रेप ४०४०० गांव २५ भायपो जिला २८२२७।।)  
पडउतर १३०००/३ १७।।

१२. मारवाड़ का सिरदारों की चांप ठिकाना की विगत :-

इसमें चापावत, कूपावत, उदावत, मेडतिया, करमसोत, जोधा, करणोत, जंतावत, चादावत, चौहान, भाटी, राणावत, महेचा आदि राजपूत जाति के ठिकानों के नाम दिये हैं । (पत्र-१)

१३. फुटकर बातों राजनीत प्रस्तावीक दोहा :-

इसमें अकबर बादशाह व वीरयल के किस्से तथा अन्य फुटकर राजनीति की बातें आदि लिपिवद्ध हैं । (पत्र-३५३)

१४. दिली के बादशाह की सूवा की विगत :-

इसमें ११ सूवो की संक्षिप्त विगत इस प्रकार दी गई है—

प्रारम्भ—

“सूवो पास दिली को, फौजदार ४, परगना ६११, गांव सठसठ हजार आठ से तिराणवें, सिरकार २०,

अन्त—

सूवा ११ फौजदार ४५ सिरकार १६७, परगना ३१४२, गांव ७०३०४८ जीका रूपया ३५६२६५६६ ।” (पत्र-१)

१५. अजीतसिंह रं परवार की विगत :-

महाराजा अजीतसिंह की संतति का नामोल्लेख है ।

१६. अलंकार आसायानू प्रबोध सास्त्रम :-

दोहा—

“वरन विमल बसन वाहन विधि विदि विमल विचार  
वंयू वर वानी वनै विमल वरन विस्तार  
दीनो सुगम दिपाय सब सुघराई को पंथ ॥७७६॥

इती श्री अलंकर आसया नृपबोध सास्त्रम संपूरणम् । .....लीपतं जमादार तुवर नारसिंघ जोधपुर मध्य महाराज केसरीसिंघजी की हवेली.....स्व पठनारथ संमत १६२६ का भीती सावण वदि १ प्रथम सुकरवार को समाप्त” “ ” ।”

(पत्र-६३)

इनके अतिरिक्त ग्रन्थात्मक प्रकाश ग्रंथ, वसिष्ठ सार ग्रंथ, विन्याय कौमदी आदि कृतियों संग्रहीत हैं। ग्रन्थ में काफी पत्र खाली पड़े हैं। ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। ग्रन्थ पर गत्ता मढ़ा हुआ है।

### ११५. जैतावत राठौड़ों की हकीकत इत्यादि

१. जैतावत राठौड़ों की हकीकत इत्यादि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४८, ४. २८.४ × २१.५ सेमी०, ५. २८३, ६. १६-२०, ६. १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०, इसमें राव रिद्धमल के प्रपौत्र व राव पंचायण के पुत्र राव जैता के वंशजों (कुछ) का हाल दिया है जो बगड़ी इत्यादि गावों के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

#### १. बागसिंह भगवानदासोत और पीढ़ियों का हाल :-

बगड़ी के ठाकुर बागसिंह के पुत्र भगवानदास और उसके वंशजों का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

“भगवानदास भागसीघोत पीढ़ी बगड़ी.....भगवानदासजी रै बैभाव भटीयाणी.....हीरदासोत कंवर सुजाणसिधजी १, उदैभांणजी २, जगतसिधजी ३ महाराजा श्री गजसिधजी ठाकुरों भगवानसीधजी नुं बगड़ी दोनी समत १६८४ माहा वद २ भगवानदासजी रै दूजो ब्याव सीसोदीणी .....।

महाराजा गजसिंह नुं पातसाह जहारीर गढी कोट उपर विदा किना तरै राड़ हुई.....तठै भगवानदासजी पूरै लोहां होय नै काम आया.....तिण भाव री गीत—

कवल अड़े आकास जुवाल जड़े सीस कद

खड़हड़ै पड़ै हाक अनेक वाम हड़वड़ै दोली..... ॥१॥”

इसके बाद भगवानदास के ज्येष्ठ पुत्र सुजाणसिंह व उसके वंशजों का हाल चलता है जिसमें मुख्य रूप से उनके विवाह, संतति, जोधपुर महाराजाओं की और से लड़े गये युद्धों इत्यादि का विवरण दिया गया है। इसमें किसी को नया गांव इत्यादि जागीर में मिला उसका भी जिक्र यथा स्थान किया गया है। अन्त में भगसिंह हिंदूसिघोत के पुत्रों की नामावली दी है। (पत्र-७५)

#### २. गोइन्ददास मगावत की पीढ़ियां :-

जैतावत गोइन्ददास की संतति, उसके द्वारा जोधपुर राजघराने में की गई सेवाओं का वृत्तांत, तत्पश्चात् उसके वंशजों का हाल दिया है।



प्रारम्भ—

“गोइंददास रै व्याव देवड़ी रै, बेटो मुजाणसिध दूजी व्याव चहुवांणजी बेटो कीसनसिध, तीजो व्याव भटीयांणी रै बेटो कानसिध, चौयो व्याव सीसोदांणी रै बेटो मुन्दरदास

महाराजा श्री सूरसिधजी हरीषामाली गांव.... संवत् १६६५ में इनायत कियो पछै महाराज श्री सूरसिधजी सारा सीरदार नै ले नै चडीया सो भजमेर बेरा हुवा पातसाह जहांगोर खाजे साहव की जात करण नै आयौ ..... ।”

अन्त में भभूतसिध के पुत्रों के नाम दिये है । (पत्र-३१)

३. जगनाथसिध वागसींघोत री पीढ़ी :-

इसमें जगनार्थसिह वागसींघोत के वंशजों का हाल दिया है ।

प्रारम्भ—

“जगनाथ रै व्याव चुंडावत अभसिध बगड़ी सुं उठे सावस गांव बसायो नाथ केल्याद दीनो सं० १६७७ रा महा बद ३ भगडा रा सीव गांव बसायो पछै महाराज श्री गजसिधजी दिली पधारिया नै पछै सहजादो पुरम दपण मे..... ।”

अन्त में देवीसिह के ६ कुंवरानियो के नाम अंकित है । (पत्र-११)

४. रामसिध कानसिधोत री पीढ़ी :-

इसमें जैतावत कूंभकरणोत के वंशजों का विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

“रामसिध रै व्याव सोलंकणी उमजी का मुड़ी की बेटी—सीवदानसीधजी कानजी कांम आया मेरां सु भगडौ कर नै ..... ।”

अन्त में सादुलसिह कुशसिधोत का वृत्तांत है । (पत्र-१२)

५. देईदास जंतसिधोत री पीढ़ी :-

राठौड देवीदास जंतसिधोत के वंशजों का हाल दिया है ।

प्रारम्भ—

“देवीदास रै व्याव भटीयांणी रै बेटो सादुलसिध आस करण, ..... , दूजी व्याव चवोंण रै बेटो भोपतजी ..... , रावजी श्री मालदेजी सुं देवीदासजी बगडी इनायत हुई । संमत १६११ रा वसाप बद ३..... ।”

अन्त में करणसिध मांणीसिधोत का वृत्तांत दिया है । (पत्र-८०)

६. मारवाड़ गजट री खुलासा :-

इसमें ई० सन् १८८३ से १८८६ तक के मारवाड़ के गजट का खुलासा किया गया है । प्रत्येक दिन घटने वाली अनेक घटनाओं, रेखें इत्यादि मुकरर करने,

हासल लेने, पानी की व्यवस्था करने, विशिष्ट व्यक्तियों के मृत्यु शोक प्रकट करने, जन्म उत्सव, वर्ष गांठ इत्यादि मनाने, इनाम आदि दिये जाने, वस्तुओं के भाव आदि अंकित हैं ।

प्रारम्भ—

“ता० २१ मई सन् १८८३ वैसाख सुद १४ दुतीक सोम १६३६ अफसोच सुं आ पवर दरज की जावे है वैसाख सुद ८ नै महाराज श्री भोपालसिंघजी साहवां रा कंवर जो के महाराज श्री रणजीतसिंघजी साहवां रै पोळे था छोटी अवस्था मे घांम पघार्या सुणया..... ।”

७. स्वामी दयानन्द का जोधपुर आगमन :-

प्रारम्भ—

“ता० ४ जून सन ८३ जेठ वद १४.....सांमी दयानंद सरसतीजी महाराज जेठ वद १० नै जोधपुर आया..... रात रा ६ बजे सुं ले नै आठ बजे ताई लोगां नै वाह्यांन सुणाया, बहोत आदमी सवाल करै ।”

एक जगह अनाज का भाव इस प्रकार दिया है—

असाढ़ वद ५ नै समत १६३६ रा घांन रो ओ भाव थो तोल अंगरेजी सुं—

नांम जीनस	सेर	छटांक
१. गेहूं	✓ I)५	१५
२. बाजरी	✓ II)	—
३. मूंग	✓ I)८	१२
४. मोठ	✓ II)८	१२
५. चीणा	✓ I)८	१२
६. घी	१	१०
७. तेल	५	१०

(पत्र-१८२)

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है । लिखावट घसीट में व अशुद्ध है ।

### ११६. महाराजा मानसिंहजी रै गांवों की तफसील

१. महाराजा मानसिंहजी रै गांवों की तफसील (चौपड़ा हिन्दूमल तालके फिरसत), २. रा० शो० सं०, ३. ६७३१, ४. ५४ × १३.५ सेमी० (बहीनुमा), ५. १८८, ६. २०-२७, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में महाराजा मानसिंह के समय जोधपुर, सोजत, महेवा, सीवाना पोकरन, फलोदी, जैतारण आदि परगनों के गांवों की विगत दी गई है। प्रारम्भ में जोधपुर के आस-पास के गांवों के नाम उसकी रेख, उस समय वह गांव किसके पट्टे में था अंकित है। एक जगह सासन के गांवों की रेख का भी उल्लेख है।

प्रारम्भ—

“श्री नाथजी साय छै  
 स्यारूप थी अनेक सकल सुभ ओपमा विराजमान थी राज राजेश्वर  
 महाराजाधिराज श्री १०८ श्री मानसिंह महाराज कंवर श्री छत्रसिंहजी देव वचनापत  
 मुकाम पाव तखत गड़ जोधपुर चौकी नवेस चौपड़ा हीदुमल रुघनायोत तालके  
 फीरसत की बही ..... १८६५ रा।”

एक गांव का उदाहरण प्रस्तुत है—  
 रेख ७०००

गांव भँवर

रा० ईंदरकरण अयेकरणोत पा० करणोत

रा० कीलांणसिध सेरसिधोत पा० करणोत

रा० १८६४ की उनाली था सारो ही गांव

रा० कीलांणसिध सेरसिध बीसनसिधोत पा० करणोत रै ..... भाव २ की

रेख ८०००।

ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उस समय कौनसा गांव किस जागीर-  
 दार के पट्टे में था व उसकी रेख क्या थी इसकी जानकारी मिलती है, मानसिंहजी  
 ने कई जागीरों में परिवर्तन किये थे इस दृष्टि से भी इस ग्रंथ की उपयोगिता है।  
 ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य  
 नहीं है।

### ११७. मारवाड़ के महाराजाओं, जागीरदारों की हाल

१. मारवाड़ के महाराजाओं, जागीरदारों की हाल, २. रा० शो० सं०,  
 ३. ८१६०, ४. २४ × १६ सेमी०, ५. ३३४, ६. ११-२१, ७. १६वीं शताब्दी

का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, हिन्दी, देवनागरी, १०. ग्रंथ का प्रारम्भ भारवाड़ के महाराजाओं की पीढ़ियों से किया गया है। आगे विवरण-क्रम इस प्रकार है—

### १. पाँच चांपावतों रं ठिकानों री पीढ़ियां :-

इसमें चांपावतों के विभिन्न ठिकानों और ठाकुरों की पीढ़ियों के नाम अंकित हैं। ठिकानों के नाम क्रम इस प्रकार हैं—गांव आऊवा, गांव रोयट, गांव आहोर, गांव पोकरण, दासपां, गांव बाकरा, गांव खारडा, गांव हरसौळाव इत्यादि।

(पत्र-१)

### २. कूंपावतों रा ठिकाणा :-

कूंपावतों के ठिकानों के ग्राम और वहाँ के ठाकुरों की वंशावली अंकित है। ठिकानों के नाम इस क्रम से हैं—गांव चण्डावल, गांव कण्टालिया, गांव सिरियारी, गांव चेलावास, गांव घणला और गजसिधपुरी।

### ३. पाँच जैतावतों रा ठिकाणा :-

जैतावतों के ठिकानों में गांव बगडी का वृत्तांत है। आउवा के बारे में लिखा है कि भैरूदासजी ने बसाया और अजीतसिंह के विले में जब मुरजमलोट ने किसी प्रकार की सहायता नहीं दी तब आउवा उससे छीन कर तेजसिंह चांपावत को दे दिया। फिर आगे पोकरण और आसोप का वृत्तांत है।

(पत्र-२)

### ४. पाँच करनोतों रा ठिकाणा :-

दुर्गादास का वृत्तांत और करनोतों के ठिकानों का नामोल्लेख है—काणोणो, समदड़ी, वाधावास, भंवर, हीगोलो, चादसमो, भाखरी और कीटणोद।

(पत्र-१)

### ५. पाँच जोधों रा ठिकाणा :-

राठौड़ों की जोधा खांप के कुछ ठिकानों और वहाँ के ठाकुरों की पीढ़ियां अंकित हैं—“गांव पेरवो, गांव दुगोली, गांव लोटोती और गांव लाडनू।”

(पत्र-२)

### ६. पाँच मेड़तियों रा ठिकाणा :-

जोधजी के पुत्र दूदाजी द्वारा १५१८ में मेड़ता बसाये जाने का और मेड़ता कब-कब किसके अधिकार में रहा उसका वृत्तांत है। आगे ठिकाना रियां और आलणियावास का वृत्तांत है। फिर चांदाजी द्वारा संवत १६०३ में बलूँदा बसाने तथा नवाब हुसैन अली द्वारा चूक से संवत १६४३ में चांदोजी के मारे जाने का वृत्तांत है। फिर चांदोजी के वंशजों का हाल है। गांव कुड़की, गांव सेवरीयो, गांव नोपा, गांव गुलर, गांव जावळा, गांव भापरी, गांव रोयडी इत्यादि गांवों के

जागीरदारों का हाल फिर गोवंददासोंत मेइतियों व उनके वंशजों का हाल है ।  
इस प्रकार मेइतियों की विभिन्न सांपों का वृत्तांत चलता है । (पत्र-६३)

#### ७. पांप उदावतों रा ठिकाना :-

राव मुजाजी के पुत्र उदाजी<sup>१</sup> द्वारा गुदड़ी यावा की कृपा से जंतारण पर अधिकार करने के तत्पश्चात् इनकी मासी के शाप देने पर उदा के गलित कुष्ठ होने, बाद में गुदड़ी यावा के शाप से ही उदा के वंशज रतनसिंह के हाथ से जंतारण निकलने इत्यादि का वृत्तांत है । फिर उदावतों के ठिकानों के गांव रायपुर, छीपीयो, नीवाज, रास, पीह और जागीरदारों का हाल संक्षेप में है । (पत्र-६)

#### ८. पांप करमसोतों रा ठिकाना :-

इसमें गांव खीवसर के कुछ जागीरदारों के नामोल्लेख के बाद जोरावरसिंह के वंशजों का हाल दिया गया है । आगे मारवाड़ी में लिखा है—

“१८७७ रा मिगसर में भोपालसिंहजी दुरजनसालजी नै गढ़ पर पकड कैंद किया .....पटो पालसे कीयो पछै १८८२ छुटा तरै खीवसर.....रा एक एक गांव दे छोडिया.....।” (पत्र-१)

#### ९. पांप पातावतों री :-

राव रिड़मल के पुत्र पाता के वंशज पातावत कहलाये । इसमें वर्णित है कि पातावतों के ठिकानों के गांव फलोदी परगने में हैं । (पत्र-३)

#### १०. खांप रूपावतों री :-

राव रिड़मल के पुत्र रूपा के वंशज रूपावत कहलाये । रूपावत राजाओं की चाकरी नहीं कर सके इसलिये उन्हें गांव नहीं मिले और मिले वे छीन लिये गये । (पत्र-३)

#### ११. पांप बालों री :-

इसमें वर्णित है कि रिड़मलजी के पुत्र भाखरजी से बाला शाखा निकली, महाराजा मानसिंह के समय में बालों को ठिकाने मिले गांव के नाम नीवलाणा, श्रेलाणा और मोकलसर दिये हैं ।

#### १२. पांप सुंडा री :-

आस्थान के पुत्र जोप से सुंडा शाखा निकली, कोरणा ग्राम सुंडो का ठिकाना है । (पत्र-३)

१. उदाजी का वृत्तांत वैसा ही है जैसा रामकरण आशोप ने (इतिहास निवाज, पृ० १३) दिया है ।

१३. पांप नरावत री :-

वर्णित है कि नरावतों के पहले पोकरन गांव पट्टे में था फिर महाराजा अभयसिंह ने रूपावतों को दिया और नरावतों को नागौर परगने का गांव मंडाणा मिला । (पत्र-३)

१४. खांप मंडल जी :-

राव रिड़मल के पुत्र मंडल के वंशज मंडलावत कहलाये इनका प्रमुख ठिकाना भंवरानी है । (पत्र-३)

१५. खांप रायपालोतां री :-

वर्णित है कि यह खांप राव जोधाजी से फंटी है । इनकी खास ठिकाने नहीं मिले, नागौर के कुछ गांव मिले हुए थे । (पत्र-३)

१६. खांप देवराजोतां री :-

वीरमजी के ज्येष्ठ पुत्र देवराज के वंशज देवराजोत कहलाये । देवराज को सेतरावा गांव मिला फिर गांव नायड़ाउ, दीवांणीयो, लोडतो, जैठांणियो, पीपासरीयां और देचु पट्टे में मिले । (पत्र-१)

१७. खांप गोगादे :-

वीरमजी के पुत्र गोगादे के वंशज गोगादे राठीड़ कहलाये । वर्णित है कि वीरमजी जोयो द्वारा मारे गये उसका बँर गोगाजी ने लिया, इनके प्रमुख गांव केतु, खिरजों, भुंगरो, गडो, राईसर, सेपाळो हैं । (पत्र-३)

१८. पांप महेचा :-

राव मल्लीनाथ के पुत्र जगमाल के वंशज व महेचा के स्वामी महेचा कहलाये । इनका प्रमुख ठिकाना जसोल और सिणदरी हैं । (पत्र-१)

१९. पांप जैतमाल :-

सलखा के पुत्र जैतमाल के वंशज जैतमालोत राठीड़ कहलाये । इनके प्रमुख ठिकानों के गांव गंगराणा, कोटड़िया इत्यादि है ।

२०. पांप सिधल<sup>१</sup> :-

ऐसा वर्णित है कि यह पांप आस्थानजी में आकर मिलती है । इनके ठिकाना का गांव कंवरली लिखा है । (पत्र-३)

१. ओझाजी (जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० १६३ पर) वगत के अनुसार लिखा है कि आस्थान के पौत्र और सोधल के वंशज सीधल राठीड़ कहलाये ।

२०. पाँप भाटी :-

भाटियों को चाकरी से भूमि प्राप्त होने का उल्लेख है। जैसलमेर के संस्थापक व हरबु गाँवला के भानेज जेसोजी ये घोर इसमें ऐसा भी वर्णित है कि हरबु गाँवला को पूछ कर जोधाजी ने जोधपुर दुर्ग की नींव रखी। आगे लिखा है—

“..... पछे जोधोजी कयो—घारा बेटा नै मेल जो सूँ बेटा तो गयो नहीं नै जेसोजी परा गया, बेटा नै पूछायो तरं केयो—हुँतो गयो नहीं नै जेसा नै भेलियो है, तरं हरबुजी केयो—इए गढ़ रा घणी में जैसां री सीर है, जद सू जेसावता रा गाँव बालरवो, चामू, रायमलवाडी, मुडियाला घगेरं नळयेरो ठीकाणों कुरव हाथ है।”

आगे भाटियों के गाँव लवेरा, चामू, बालरवा, रायमलवाड़ी, मुडियाली, कपुरियो, तापु, भणवाणो, भेड़ महेव, धारासणी अंकित है। अन्त में उरजनोत भाटियों और उनके गाँवों के नाम दिये गये हैं। (पत्र-२३)

२२. पाँप चंवाणां रो :-

इसमें लिखा है कि चौहानों के प्रथम ठिकाने सांचोर में थे और यह खालसे हो जाने पर अब ठिकाणों का गाँव चीतलवाणा है तथा चतुरमुजोत चौहानों के संबंध जोधपुर राजपराने मे होते आये हैं। गाँव कील्याणपुर, रापी, संपवास इत्यादि ठिकानों के जागीरदारों की पीढ़ियाँ अंकित है। (पत्र-१)

२३. पाँप राणावतां रो, गाँव :-

राणावतो के ठिकाने सांडेराव व २-३ जागीरदारों के नाम अंकित हैं।

(पत्र-३)

२४. पाँप सोलंघीयों रा, गाँव :-

सोलखियों के ठिकाने रूपनगर का संक्षेप में वर्णन है।

(पत्र-३)

२५. पाँप ईदां रा गाँव :-

वर्णित है कि गाँव बेलवो, बालेसर, देवातु, जीयावेरी, जीजणयालो इत्यादि गाँव ईदों के पट्टे में हैं।

२६. पाँप मांगलियों रा, गाँव :-

ओसियाँ का बापीणी गाँव और अन्य १२ गाँव मांगलियों के पट्टे में हैं।

(पत्र-३)

२७. देवड़ां रा गाँव :-

इसमें केवल भीनमाल परगने के बड़गाँव और नोसरो गाँव के जागीरदार देवड़ा भोमसिंह का नाम अंकित है।

(पत्र-३)

२८. पवास पासवानां रा गांवां री विगत :-

इसमें खवास व पासवान के ओहदों पर चाकरी करने वालों को दिये गये गांव अंकित हैं ।

“अ्यार पांप ठेट सूं पावासी में है—पीची, घांघल, पड़िहार, गेलोत पछै दुजी पांप फुटकर” . . .।”

आगे उपरोक्त जातियों के गावों का हाल है । (पत्र-१३)

२९. ओसवालों री पांपां (सिधवी) :-

लिखा है कि ओसवालों में मंडारी, मुहणोत, सिधवी, वछावत राजाओं के चाकर रहे हैं । तत्पश्चात् यह वर्णित है कि सिधवी खांप किस प्रकार निकली तथा राजघराने में प्रमुख<sup>१</sup> सिधवियों ने जो सेवाये दी उनका वृत्तांत है ।

३०. भण्डारीयां री खांप :-

वर्णित है कि पहले भण्डारी मेवाड़ राणा की सेवा में थे, राव रिडमल के वहां चूक से मारे जाने पर जोधा के साथ मारवाड में आ गये । आगे भंडारियों की विभिन्न खांपों और पीढ़ियां अंकित हैं । (पत्र-३)

३१. पांप मुहणोत :-

मुहणोत गौत्र की उत्पत्ति रायपाल के पुत्र मोवणजी से होना लिखा है तथा जब से यह चाकरी करते आये हैं । (पत्र-३)

आगे लिखा है कि पहले कोलांणी ग्राम में ब्राह्मण रहते थे उनको व्यास की पदवी नहीं थी फिर उदैसिह महाराजा ने इनको व्यास की पदवी दी ।

३२. गढ़ मंडियों री विगत :-

पहले एक कवित्त दिया गया है फिर विभिन्न दुर्गों व शहरों के नाम, कब किसने बनाये उसका व्यौरा दिया गया है ।

३३. कयस पीरोजसा पातसा जात मका री जावतां :-

इस कवित्त के प्रारम्भ में बतलाया गया है कि फीरोजशाह ने मक्का जाते हुए मार्ग में पाली को लूटा । इस पर आस्थान ने खेड़ से आकर उसके साथ युद्ध किया व वि० सं० १२४८ वैशाख सुदि १५ को मारा गया । आगे कवित्तों में मारवाड के महाराजाओं, मुस्लिम शासकों, जयपुर नरेशों की पीढ़ियों के साथ कुछ घटनायें वर्णित हैं । (पत्र-२)

१. विस्तार के लिये देखें (ओसवाल जाति का इतिहास) पृ० ७८



३४. नागौर रं परगना कोलीया री रेख, गांव री विगत :-

३६ गांवों की रेख श्रीर नाम दिये ग्रये हैं । आगे दौलतपुरा की रेप दी गई है । डीढवाने के संवत् १८०१ से १८२५ तक की पैदावार इसी प्रकार नांवा श्रीर सांभर की आमदनी संवत् १८३८ से १८४६ तक दी गई है । (पत्र-२)

३५. राठौड़ों री पीढ़ियों री स्थित :-

आदिनारायण से पीढ़ियां अंकित हैं, आगे सिहाजी का हाल दिया गया है ।

महाराजा मानसिंह तक के राजाओं का हाल दिया गया है । कुछ स्थलों पर महत्वपूर्ण जानकारी इस प्रकार है—

भाटी गोयंददास प्रधान द्वारा की गई व्यवस्था (सूरसिंह का काल) :-

“गोयनदासजी सारा मुलक री सलुक बांदीयो, परगनां रा हाकम, कारकुन पोतदार, वाकानवेस वगैरे जांधपुर में छत्तीस ही कारखानां री दरोगाया मुकर कीया दीवाण, बगसी, खानसांमा, याद बगसी, चौकी नवेस इताद छत्तीस ही कारखानो ओदा रहै, परगनां ओदार है सु सारा परड़ा गोयंदासजी वादीया, सारा उमरावा मुसदीया री लुगायां जनाना में जावती सु मोकुब राखी, आगे भोमीचारा बाळी चाल ही सु सारी राजखान री रजवार री मुकन बांदीयो, सिरदारों रा कुरब बांदीया, आठ मिसला च्चार डावी जीवणी ... .. ।”

अन्त में सूरसिंह द्वारा बनाये गये स्थानों का विवरण है । (पत्र-४३)

मुहणोत नैणसी की मृत्यु सम्बन्धी ज्ञातव्य :-

मुहता नैणसी के बारे में लिखा है—“सं० १७२३ हंसी हंसार मो० नैणसी हो जीण सुं तागीर कर व्यास पदम नाभ नुं मेलीयो सु लोक बेराजी हुवो, पातसा कनै फराद गयी, तरै लाख १ री रकम छुडाई ।

सं० १७२३ पोवद ६ मो० नैणसी मुदर नै ओरंगावाद रा डेरा कैद कीया सं० १७२४ डंड कर छोडया.....सं० १७२६ म्हाब्द १ फेर कैद कीया, पछै ओरंगावाद सुं देस में जोधपुर मेलीया सु मारग में आवता दोनों भाई पेट मार मुवा । जद सुं श्री जी मोतां नै चाकर राखण री तलाक घाली.....।”

अन्य अधिकारियों को पद दिये उसके बारे में लिखा है—“सं० १७२५ में राव आसकरण नीबावत करणोत नै परदानगी नै.....केसरीसिंह रांमचदौत नुं दीवाणगी दीवी, देस री काम करण ने मेलिया ।

महाराजा तखतसिंह री मातमौ करावण जयपुर महाराज रामसिंह आया तिरण री विगत :-

महाराजा तखतसिंह के देवलोक होने के तत्पश्चात् जयपुर महाराजा राम सिंह शोक प्रकट करने के लिये आये, उसका हाल दिया गया है । लिखा है—

“फागुण सुद १२ जैपुर सुं पदारिया नै गांव डीगाड़ी में डेरा हुवा नै उठा सुं रवानै घोड़े असवार हुय मातमी रै वासते गढ उपर पदारिया……महाराज घापर डेरे पदारिया तरै श्रीजी साव जैपर माराज डेरे पदारीया तरै तोपां री सीत्कां दु तरफी हुई……।” (पत्र-६३)

नकल धसीयत नावां महाराज श्री तखतसिघजी री :-

महाराजा तखतसिह ने अपने अन्तिम समय में वसियतनामा लिखी उसकी नकल लिपिवद्ध की गई है, जैसे—

“पड़दायतीयां बीना पटा दीयोड़ी है जनि कु छव छव हजार का पटा देणा, अगाडी मेने पटा दीया है जीसमें छव छव हजार से कमती होवे उसके बराबर कर देना । ……जनानां भावा मेरां बीनां पटां दीयाड़ी जिनकु दस दस हजार का पटा मोतीसिघजी सरसते सब कुं देना ।” (पत्र-३३)

यह महत्वपूर्ण ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है, लिपि धसीट में है, सुवाच्य नहीं है । ग्रंथ पर कागज का गत्ता चढ़ा हुआ है ।

### ११८. जोधा राठौड़ों री विगत (प्रतिलिपि)

१. जोधा राठौड़ों री विगत (प्रतिलिपि) २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३६, ४. २८.३ × २१ सेमी०, ५. २१६, ६. १२-१३, ७. १६ बी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें राठौड़ों की जोधा खांप के कुछ विशिष्ट पुरुषों व उनके वंशजों की विगत अंकित की गई है ।

१. जोधा रतनसिघोत री विगत :-

राव मालदेव के पुत्र रतनसिह तथा उसके वंशजों का हाल दिया है । इनको भाद्राजण का ठिकाना मिला हुआ था ।

प्रारम्भ—

“ठीकाणो भादराजण री तवारीप रावजी श्री मालदेवजी रै कंबर रतनसिघ जी जोधपुर सुं ऊठ नै अचल में सरद भूकाम गांव गोदावे आय नै भूकरर कीयो गोदा रजपूत री ३ सुं गांव गोदावो बसायो समत १६४२ रा……पछै…… रतनसिघजी नाराज हुय नै गांव गोदावा सुं उदैपुर रांणा सांगाजी कनै गया सो सागाजी महेरवान हुय नै गांव चौरासी सुं फूलीयाठी…… दीवी ।”

इस प्रकार रतनसिह तथा उसके वंशजों के हाल में विभिन्न सरदारों द्वारा की गई राजकीय सेवाओं का वृत्तांत दिया गया है और उन सेवाओं के उपलक्ष

३०० : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

जो गांव इत्यादि उनको मिले उगका भी जिक्र किया गया है। रतनसिंह के बंदाजों के नाम इस प्रकार प्राये हैं—

रतनसिंह, सादुलसिंह, मुकनदास, उदेभाण, बीहारीदास, वागसिंह, उदेराज, उम्मेदसिंह, जालमसिंह, यमतावारसिंह।

इसके बाद वसतावारसिंह के रानियों, कुंवरों, कुवरियों के नाम उनकी शादी सख्तारों के संतति इत्यादि का विवरण अंकित किया गया है। रतनसिंहोत जोषा द्वारा मुकनदास को भाद्राजण का पट्टा देने का उल्लेख इस प्रकार है—

“सादुलसिंहजी रै कंवर मुकनदासजी महाराज श्री सूरसिंहजी कनै बंदगी में हजार रखा जद महाराज साहब मेहरवान होय गांव भादराजण चौरासी गांव सूं ईनायत कीवी संमत १६५३ में।”

डीरी ग्राम दिये जाने का उल्लेख—  
“करणसिंहजी विहारीदासजी रा नै चद्रभाणजी महाराज अजीतसिंहजी रा बीषा में हजार देह बंदगी कीवी नै दुनाडे मोहकर्मसिंहजी मेडता री घणी फीज लेने आयी १७६० में ऋगड़ी हुवी जठै करणसिंहजी रै लोह लागे नै चद्रभाणजी रै ही लोह लागे इण बंदगी सूं अजीतसिंहजी गाव डीरी ईनायत कीवी समत १७६५ में .....।”

चद्रभाण को देवाण ग्राम इनायत करने का वृत्तात—  
“धुनाडे ऋगड़ी हुवी उठै चद्रभाणजी नै बीहारीदास रै लोह लागे नै तखार आछी बजाई, इण बंदगी सु महाराज अजीतसिंहजी साहब मेहरवान हुय नै चंद्रभाणजी नै देवाण गाव २ सूं ईनायत कीयी बीहारीदास री अरज सूं १७६५ में।”

इसी प्रकार महाराज अजीतसिंह द्वारा मुवणदासजी को मंवरि ग्राम १७६५ में, महाराज अभयसिंह द्वारा देईदास उदैभाणोत को ग्राम गोदाबो समत १७८७ में, इनके द्वारा ही लखधीर बीहारीदासोत को नीवलो ग्राम संवत १८०६ में, महाराज अमसिंह के द्वारा ही अमराज (बगजी के पुत्र) को सेलड़ी ग्राम १८४७ में, महाराज मानसिंह द्वारा देवीसिंह कल्याणसिंहोत को जाइंली ग्राम १८६४ में, इनके द्वारा ही भवानीसिंह को ग्राम सीराणा १७६० में, मा० मानसिंह के द्वारा ही जगतसिंह को रामा ग्राम १८६४ में, महाराज सूरसिंह द्वारा लक्षमण (लिपमणजी) को पाताराबाळा ग्राम १६५३ में, मा० बीजेसिंह द्वारा लालसिंह को ग्राम उमकली १८४७ में, मा० अजीतसिंह द्वारा सगतसिंह को तोडसी ग्राम

१७६५ में, मा० मानसिंह के द्वारा गुमानसिंह को पीयलवास खारीयो ग्राम १७६४ में, इनायत करने का उल्लेख है। इसी प्रकार मजल, सीराणो, लुणवो, सालीयो इत्यादि किस प्रकार किस को मिले उसका वृत्तांत आगे दिया गया है। इन सरदारों से संबंधित कुछ अन्य संक्षिप्त घटनायें अंकित की गई हैं।

(२) जोधा प्रतापसिंघोत :-

राव गागा के पुत्र प्रतापसिंह और उसके वंशजों का हाल संक्षेप में दिया है। प्रारम्भ—

“राव गांगाजी रा बेटा प्रतापसिंघजी री पीडीया री विगत—

प्रतापसिंघजी रा व्याव ३

१ भाटी रामसिंघजी री बेटी हीरकंवर लवेरा ।

२ भाटी उदसिंघजी री बेटी पनेकंवर वीकमकोर ।

३ देवडा सुरताणसिंघजी री बेटी हीरकवर सीरोही ।

जिणारा बेटा कीलाणदासजी…… ।”

इसी प्रकार इनके वंशजों का हाल दिया है, इनको गांव इत्यादि प्राप्त हुए उसका भी यथा स्थान जिक्र किया गया है—(सिकारपुरा, छोपीया, आंटण, सुरजवेरो आदि)

(३) जोधा किसनदासोत :-

गांगा के पुत्र किसनदास व उसके वंशजों का हाल है—

प्रारम्भ—

“किसनदास गांगावत गांव २६० सुं सोजत पटे पाई समत १६८४ ।

किसनदासजी नरुका कु कपुर चद री बेटी……।”

इसमें भी इनके वंशजों ठकुरानियों संतति तथा गांव आदि मिले उसका विवरण दिया है। (गांव—राजसर, वस्ती, कांकाणा, वकपुरो, उस्तरां, जूड़, वस्तो आदि)

इसके आगे फिर जोधा प्रतापसिंघोत के वंशजों का हाल आ गया है।

(४) जोधा महेशदासोत :-

मालदेव के पुत्र महेशदास और उसके वंशजों का हाल में उनकी ठकुरानियों, कुंवर-कुंवरियों तथा गांव इत्यादि मिले उनके नाम अनुच्छेद में अंकित हैं, यथा गांव पाटोदी, साई, तिंवरी, नाजाणो. किवणु, फलसूंड, घड़सी री वाड़ी आदि।

१. मारवाड के परगनों की विगत, घ्यातो इत्यादि में गागा के पुत्र प्रतापसिंह का उल्लेख नहीं है।

प्रारम्भ—

“रावजी श्री मालदेजी रं कंवर महेसजी, महेस मालदेवोत रं सोडा  
घपेराजोत री बेटी उमरकोट री, कंवर रामसिंह केसोदास दुदाजी कीत्याए-  
दासजी……”

(५) जोधा सिवराजोत :-

राव जोधा के पुत्र सिवराज और उसके वंशजों का हाल दिया है जिसमें  
उनके ठुवरानियों, कुंवरों, कुवरियों उनकी शादी इत्यादि का विवरण अंकित है।

प्रारम्भ—

“राव जोधाजी रं कंवर सीवराजजी,…… सीवराजजी भाटी पुरणमलजी  
री बेटी, दूजी सोनगारा पेमचंद री बेटी।”  
गुवाड़, रामासर इत्यादि गांवों के नाम अनुच्छेद पर अंकित है। गांव कव  
किसको मिले यह नहीं दिया है। अन्त में प्रयागदास उसके वंशजों के नाम आदि  
दिये हैं।

अन्तिम भाग—

“लालसिध रं चवाण मोकमसिध री बेटी, कंवर मुरतराम हरीसिध  
? ?

अमरसिध ………।”

?

यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि है जो एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है।  
प्रतिलिपि अपूर्ण है, लिखावट अशुद्ध है। कागज मटमैले रंग के काम में लिये हैं।

यह ग्रंथ जोधा राठौड़ों के कुछ विशिष्ट सरदारों व उनके वंशजों के अध्ययन  
हेतु उपयोगी है, इसमें उनके संबंध आदि कहां हुए उसका भी विवरण यथा स्थान  
किया गया है।

### ११६. राठौड़ों का दान पत्रों की विगत की नकल

१. राठौड़ों का दान पत्रों की विगत की नकल, २. रा० प्रा० वि० प्र०,  
३. १५६५०, ४. ३३.५ × २१ सेमी०, ५. ८१, ६. ३४, ७. २० वीं शताब्दी  
का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. संस्कृत, देवनागरी आदि. १०, इसमें विविध राष्ट्र-  
कृत अथवा राठौड़ राजाओं के दान पत्रों व शिला लेखों की प्रतिलिपियां संग्रहीत  
हैं। इनकी जानकारी सूची-पत्र में इस प्रकार अंकित है—

(१) राष्ट्रकूट (राठौड़) वंश के राजा अभिमन्यु का दान पत्र, इस दान पत्र  
में संवत् नहीं दिया है किन्तु इसकी लिपि विक्रम संवत् की छठी शताब्दी की है।

प्रारम्भ—

“ओ स्वस्ति अनेक गुण गणलंकृत य शशा राष्ट्रकुटानां तिलक सूती ……”।”

(२) दक्षिण में एलोरा की गुफा में दशावतार के मन्दिर में खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा दत्तदुर्ग के समय का पर्वतीय शिलालेख ।

(३) कोल्हापुर राज्य के सामन्दगढ से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा दत्तदुर्ग का शक संवत् ६७५ का दान पत्र—यह दान पत्र इस समय लंडन नगर रायल ऐसियाटिक सोसाइटी के प्राचीन भस्तु-संग्रहालय में रखा हुआ है ।

(४) गुजरात के सुरतनगर से ५ कोस ईशान कोण में आंतरोली गांव जमीन खोदते समय मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कवक का दान पत्र शक संवत् ६७६ का (वि० सं० ८१४)

(५) दक्षिण में कलाइसी प्रान्त के पट्टड़ कल गांव में विरूपाक्ष देव के मन्दिर के एक स्तम्भ पर खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा धारावर्ष (ध्रुव) के समय का लेख ।

(६) निजाम के राज्य में पेटणनगर (प्रतिष्ठानपुर) से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविन्द का दान-पत्र शक संवत् ७१६ का ।

(७) राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविंद (प्रभूत वर्ष का) दान-पत्र शक संवत् ७२६ का ।

(८) राघनपुर से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविंद का दान-पत्र शक संवत् ७३० का ।

(९) दक्षिण में नाशिक प्रान्त डीडोरी तालुके के वाणी गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविन्द (प्रभूत वर्ष) का दान पत्र शक संवत् ७३० का यह दान पत्र इस समय बम्बई नगर की ऐसियाटिक सोसाइटी के संग्रह में रखा हुआ है ।

(१०) दक्षिण में भेसोर राज्य के तुंकुर परगने के कडव गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा प्रभूत वर्ष का दान पत्र शक संवत् ७३५ का ।

(११) दक्षिण में सुप्रसिद्ध कनेरी की गुफा में खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा अमोघवर्ष (प्रध्वीवलभ) के समय का पर्वतीय शिलालेख शक संवत् ७६५ का ।

(१२) इसी गुफा में अमोघवर्ष का दो और शिलालेख शक संवत् ७७५ व ७६६ के ।

(१३) बम्बई अहाते के धारवाड़ जिले के नवलगढ तालुके के शिरूर गांव में खड़े हुए एक पत्थर पर खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा अमोघवर्ष के समय का लेख शक संवत् ७८८ का ।

(१४) गुजरात के कण्व वंश से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कण्वराज का दान पत्र शक संवत् ८३२ का ।

(१५) गुजरात में नवक्षारी नगर से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा नित्यवर्ण का दान पत्र शक संवत् ८३६ का ।

(१६) दक्षिण में कोल्हापुर से १२ कोस ईशाण कोण में सांगली नाम के गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविन्द (सुवर्ण वर्ष) का दान पत्र शक संवत् ८५५ का ।

(१७) नागपुर के निकट के वरधास्थान से ४ कोस नेक्रत्य कोण के वरधा गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कण्व (अकाल वर्ष) के समय का दान पत्र शक संवत् ८६२ का ।

(१८) दक्षिण में कलाङ्गी प्रान्त के इण्डि तालुके के सालोट्गि गांव के दरवाजे के पास खड़े किये हुए एक स्तम्भ की ३ बाजू पर खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कण्वराज के समय का लेख शक संवत् ८६७ का ।

(१९) दक्षिण में खान देश प्रान्त के तलोदातालु के करदा गांव से मिला हुआ १० वं० के राजा आधोधवर्ष का दान पत्र श० सं० ८९४ का, इस समय यह दान पत्र बम्बई नगर की ऐसियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में है ।

(२०) दक्षिण में खैरापाटन नाम के स्थान से मिला हुआ १० व के राजा कवकल के समय का दान पत्र शक संवत् ९३० का ।

(२१) कन्नौज के गहरवालों के दान पत्र कदनपाल व गोविन्द चन्द्र के ।

(२२) पश्चिमोत्तर देश के इटावा जिले के बसही गांव से मिला हुआ कन्नौज के राजा गोविन्द चन्द्र देव के समय का दान पत्र वि० सं० ११७४ का ।

(२३) पश्चिमोत्तर देश में सीतापुर इलाके के रेवां नाम के गांव के पास जमीन खोदते समय मिला हुआ कन्नौज के राठीड़ राजा गोविन्दचन्द्र देव का दान पत्र वि० सं० ११८० का ।

(२४) काशी से मिला हुआ कन्नौज के (राठीड़) राजा गोविन्द चन्द्रराव का दान पत्र वि० सं० ११८१ का ।

(२५) कन्नौज के (राठीड़) राजा गोविन्द चन्द्रदेव के समय का दान पत्र वि० सं० ११८२ का ।

(२६) काशी से मिला हुआ कन्नौज के राजा गोविन्दचन्द्रदेव के समय का ताम्रपत्र वि० सं० ११८५ का ।

(२७) काशी से मिला हुआ इन्हीं का दान पत्र वि० सं० ११९६ का ।

(२८) लंडन नगर की रायल ऐसियाटिक सोसाइटी के संग्रह में रखा हुआ युवराज जयचंद्र का दान पत्र वि० सं० १२२५ का ।

(२९) काशी से ३ कोस ईशान कोण में सिहवर नाम के गांव में हल चलाते समय जमीन में निकला हुआ कन्नौज के राजा जयचंद्र का दान पत्र वि० सं० १२३२ का ।

(३०) काशी से कुछ दूर वरणा नदी के तट पर एक खेत में से निकला हुआ जयचंद्र देव का दान पत्र वि० सं० १२३३ का ।

(३१) वरणा नदी के तट पर के खेत में मिला हुआ जयचंद्र देव का दान पत्र वि० सं० १२३३ का ।

(३२) इसी जगह मिला हुआ जयचंद्र देव का दान पत्र वि० सं० १२३४ का ।

(३३) भ्रवध में फैजाबाद के पास से मिला हुआ जयचंद्र देव का दान पत्र वि० सं० १२४३ का ।

(३४) बडौदा शहर में एक भकान की नींव खोदते समय मिला हुआ गुजरात के राष्ट्रकूट राजा कर्क (सुवर्ण वर्ष) का दान पत्र शक संवत् ७३४ का ।

(३५) गुजरात में खंभात की खाड़ी के निकट मई नदी से कुछ दक्षिण में वावी नाम के गांव से मिला हुआ गुजरात के राजा (राष्ट्रकूट) गोविन्दकट का दान पत्र शक संवत् ७४९ का ।

(३६) दक्षिण में खान देश के शाहडे तालुके के तोरखेड़े गांव से मिला हुआ गोविन्दराय के समय का दान पत्र शक संवत् ७३५ का ।

(३७) बडौदा से मिला हुआ राष्ट्रकूट के वंश के राजा ध्रुव का दान पत्र शक संवत् ७५७ का, इस दान पत्र के पहले २ पत्र नहीं मिले ..... ।

(३८) बडौदा राज्य के बलेसर जिले के वागुमरा गांव से जमीन खोदते समय मिला हुआ राष्ट्रकूट के राजा ध्रुव का दान पत्र शक संवत् ७८९ का ।

(३९) बगमुरा से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्ण का दान पत्र शक संवत् ८१० का ।

(४०) मध्य प्रान्त के बेटूल परगने के मूलताई गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा जंदराज का दान पत्र शक संवत् ६३१ का ।

(४१) जोधपुर राज्य के गोडवाड़ प्रान्त में बीजापुर के पास हंडुदी नामक एक प्राचीन नगरी के खंडहर में से मिला हुआ रा० वं० के राजा धवल के समय का शिलालेख वि० सं० १०५३ का ।



(४२) पश्चिमोत्तर देश के वदाउं शहर को किले के खंडहर में से मिला हुआ रा० वं० के राजा लखण पाल के समय का शिलालेख, इसमें संवत् नहीं है। लिपि बारहवीं या तेरहवीं शताब्दी की प्रतीत होती है। इस समय यह लेख लखनऊ के म्युजियम में है।

प्रस्तुत रजिस्टर के गत्ते पर लिखा है कि यह नकल गौरीशंकर ने लिख भेजी। ओझाजी ने राष्ट्रकूटों (राठोड़ों) का प्राचीन इतिहास-लेखन में इस उपरोक्त सामग्री का उपयोग संभवतः किया है।

अनेक ऐतिहासिक पुरुषों और घटनाओं को सत्यापित करने के लिये यह सामग्री बड़ी उपयोगी है।

### १२०. शत्रुशाल हाडा रो हाल (प्रतिलिपि)

१. शत्रुशाल हाडा रो हाल (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६५५, ४. २७.८ × १८.५ सेमी०, ५. ३७, ६. २०-२४, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें वंश भास्कर के कुछ अंशों का हिन्दी में अनुवाद दिया है, जिसमें मूलतः बूदी के राव राजा शत्रुशाल हाडा के जीवन की कुछ घटनायें दी हैं, प्रतिलिपि अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

“दूसरा मयूख शत्रुशाल चरित्र का तर्जुमा—

पहले जमाने में राव रतजी ने शत्रुशालजी का अठवां ८ संबन्ध उदपुर राजा जगतसिंहजी की बहन से किया था—अब शत्रुशालजी दिल्ली जाने को तैयार हुवे तो राना जगतसिंहजी ने कहला भेजा कि शादी करके फिर दिल्ली जाइये…… उन दिनों में दखन की तरफ की दुर्गशा की खबर पहुँची—लोदी खानजिहा खां ने हुकम चलाना शुरू किया था …… तब बादशाह ने शत्रुशालजी को दखन की फतह का हुकम दिया ……आदि।”

अन्तिम—

“……विठलदासजी नहीं आये दुसमनों ने निदा की, शत्रुशालजी ने सुनी न सुनी की दूसरे रोज कंवर भगवंत ……।”

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। कागज मटमैले रंग के हैं।

### १२१. गछ व गोत्रों रो विगत आदि

१. गछ व गोत्रों रो विगत आदि, २. रा० शो० सं०, ३. ५६६, ४. १७ × १३ सेमी०, ५. ७३, ६. १८-२७, ७. संवत् १६१२, ई० सन् १८५५,

घोमनगर, ८. असे चन्द, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में नासकेत और मनोश्चर वार की कथायें दी गई हैं तथा अन्त में जैनियों ओसवालों गद्य गीतों की विगत दी है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. जैनियों के ८४ गद्य :-

८४ गद्य की नामावली इस प्रकार प्रकृत है—

“१. सतर गद्य २. उसवाल गद्य ३. जीएवला गद्य ४. बडगद्य ५. तपगद्य नागोरी ६. गंगसरी गद्य ७. भेरड़ी गद्य ८. मरुअद्या गद्य ९. घानपुए गद्य १०. उडवीया गद्य ११. गुदविया गद्य १२. देकरिया गद्य १३. भानमाला गद्य १४. मुह डामो गद्य १५. दास हीया गद्य १६. गद्यपाल गद्य १७. घोषावाल गद्य १८. मगो डिया गद्य १९. ब्राह्मणीया गद्य २०. जालेहरी गद्य २१. बोकडिया गद्य २२. मुहाहडा गद्य २३. चीतोडा गद्य २४. माचोए गद्य २५. कुचडिया गद्य २६. सिद्धा-तया गद्य २७. राममीणी गद्य २८. प्रागमिया गद्य २९. मल धारा गद्य ३०. माहरीया गद्य ३१. पालीवाल गद्य ३२. फोरडवाल गद्य ३३. नाकिद गद्य ३४. धर्मगोस गद्य ३५. नागोरा गद्य ३६. उद्धीतवाल गद्य ३७. नाणवाल गद्य ३८. साडेरवाल गद्य ३९. संडोरा गद्य ४०. सुरंडवाल गद्य ४१. तोडाला गद्य ४२. नागरवाल गद्य ४३. मुएण गद्य ४४. संमायता गद्य ४५. वाडवीय गद्य ४६. सापाए गद्य ४७. मंडलिया गद्य ४८. कोटीपुए गद्य ४९. जागडा गद्य ५०. वापरावाल गद्य ५१. बोरसंडा गद्य ५२. दोवदणीया गद्य ५३. चित्रवाल गद्य ५४. बेगडा गद्य ५५. विद्याहए गद्य ५६. कुनवपुए गद्य ५७. गअलिया गद्य ५८. सदेलिया गद्य ५९. दक णए गद्य ६०. कन्हरसा गद्य ६१. पूर्ण तिलक गद्य ६२. रेवईया गद्य ६३. धूधका गद्य ६४. यंमण गद्य ६५. पंचवह लीया गद्य ६६. पलहरणपुरू गद्य ६७. गंधारा गद्य ६८. मुगलिया गद्य ६९. उदेहवालिया गद्य ७०. नगरकोटिया गद्य ७१. हंसार कोपया गद्य ७२. माठनेरा गद्य ७३. मोरटिया गद्य ७४. भीमसेण गद्य ७५. टांकणी गद्य ७६. कंणोजा गद्य ७७. वाघेरा गद्य ७८. बहिवास गद्य ७९. सिद्धिपुरा गद्य ८०. धोंधे गद्य ८१. सेवंत री गद्य ८२. कोन्टिक गद्य ८३. माताजीसा गद्य ८४. वारे जावाल गद्य।”

(पत्र-२)

२. ओसवालों री जातां री विगत :-

इसमें ओसवालों की जाति के ४०० गीतों की नामावली इस प्रकार दी है—

१. मूराणा २. नाहर ३. पारख ४. मालडु ५. मुहणीत ६. लूणावत ७. मोहा ८. दोसी ९. दुगड़ १०. दुगरवाल ११. लोढ़ा १२. ललवांणी १३. लूकड १४. ब्रहेता १५. सांड १६. सोनी १७. सफला १८. सोरो खजा १९. ...

३०८ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वोद्योग, भाग-१

२०. केलान्धी २१. ककड़ २२. कुकड़ २३. सचेती २४. वेगड गौत्र २५. जोगड  
 २६. धमर २७. चौपरी २८. चिप्रावाल २९. पातावा ३०. लालण ३१. सेव  
 ३२. धीरात्या ३३. कुंनड़ ३४. मुर ३५. धारीवाहा ३६. तोडरवाल ३७. गणघर  
 ३८. गोलवेद्या ३९. गुणजाण ४०. भूरा ४१. चामणस ४२. वेहड ४३. भाण  
 ४४. पावेच ४५. धीया ४६. पालीवाल ४७. डीहू ४८. मंड ४९. डागी ५०.  
 चडातिया ५१. चीचड़ ५२. चउर ५३. रांवा ५४. करणाटी ५५. राखेचा ५६.  
 हीगड़ा ५७. मोरच ५८. भंडारी ५९. मंगला ६०. कुट ६१. बीराणी ६२. रेहड्या  
 ६३. बाघरेचा ६४. धूपीया ६५. आईडिया ६६. सोहोला ६७. सोहिचा ६८. द्रटा  
 ६९. जमड ७०. दुणीवाल ७१. वागणी ७२. बावलीया ७३. वोयस ७४. वंद  
 ७५. पटु ७६. पालडेचा ७७. पोकरवाल ७८. हेडाउ ७९. आमु ८०. कुंभट  
 ८१. पीपाड़ा ८२. घांघ ८३. रोटामिड ८४. पैम ८५. महिणांणी ८६. मेड़तवाल  
 ८७. बडहरा ८८. चागड़ीया ८९. वणवट ९०. सोसोदिया ९१. असुभगोचर  
 ९२. थोरवाड़ ९३. ठंठव ९४. भटेवरा ९५. डागा ९६. बोहरा ९७. महेशचा  
 ९८. बंभ ९९. घमांणी १००. मल्ल १०१. लिगा १०२. लूणीया १०३. खंडेलवाल  
 १०४. मासू १०५. जामड़ा १०६. गोलमु १०७. साडेला १०८. साउमुला १०९.  
 सुजाण ११०. मघा १११. भंडले ११२. मुहमवाल ११३. नादेचा ११४. उवड़  
 ११५. हिरण ११६. सोजतिया ११७. देसल ११८. डाकुलीया ११९. डुरडा  
 १२०. दलीवाल १२१. नाराइन १२२. निध १२३. कुहाड़ १२४. गिडीया १२५.  
 घंघवाल १२६. बोसुंदा १२७. गांधी १२८. बुरड १२९. साबुला १३०. बगगोत्री  
 १३१. श्रीमाली १३२. श्री श्रीमाल १३३. मडोवरा १३४. मालवीया १३५. धणू  
 १३६. उड़ीया १३७. घवल १३८. कोग १३९. कारुरिया १४०. किरणल १४१.  
 सारीवरी १४२. खीची १४३. बोला १४४. नगरागीत १४५. खाडहड १४६.  
 खीवसरा १४७. खेरच १४८. बलहया १४९. पुंगलिया १५०. वावेल १५१.  
 मंगेरिया १५२. मेलडीया १५३. सरमेलगो १५४. धावलीया १५५. भरहर  
 १५६. ओचितवाल १५७. छिलीया १५८. छजलाणी १५९. छोला १६०. पठाण  
 १६१. खरवड १६२. छाजेड १६३. पटेल १६४. भडकलीया १६५. हरसुर १६६.  
 तिलहेरा १६७. आडेचना १६८. तातेड १६९. बाधेल १७०. बाघरेचा १७१. खड  
 १७२. रवंड १७३. फुसला १७४. फुलफर १७५. फाला १७६. नाहटा १७७.  
 बाधमार १७८. सुधेचा १७९. सुरसा १८०. थूल १८१. बघा १८२. चौपड़ा  
 १८३. वाफणां १८४. चोरपेडीया १८५. चुखड १८६. दांगी १८७. नडूला १८८.  
 काजल गौत्र १८९. सावल १९०. कटारीया १९१. कावडीया १९२. पटवा



३१० : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

३५५. चुड ३५६. पवार ३५७. गुलगत्या ३५८. उंबट ३५९. देवड़ा ३६०. गघरा ३६१. सोटा गोत्र ३६२. कचारा ३६३. ढीच ३६४. डेलडाया ३६५. कांव ३६६. बोकड़ीया ३६७. घोरवा गोत्र ३६८. दख ३६९. डफरीया ३७०. फेलवाड ३७१. मुंगरोल ३७२. पंचोल्या ३७३. मेड गोत्र ३७४. निलखाण ३७५. मुंगरोल ३७६. सुरघुर ३७७. घणपाल ३७८. मरासड़ा ३७९. पाहणीया ३८०. जडमुर ३८१. पटणी ३८२. पाडीया ३८३. मकवाणा ३८४. कुंभलमेर ३८५. स्याल ३८६. जोनेरणा ३८७. थांवलेचा ३८८. जेलमो ३८९. आली ऋड ३९०. ठाकुराई ३९१. यदाल ३९२. गांवा ३९३. मुर ३९४. चंडाल गोत्र ३९५. संखवालेचा ३९६. भीलडीया ३९७. पडाइया ३९८. गोठी ३९९. मंडारी ४००. मंडसाली ।”

३. घोड़ों रा रंग रा दूहा :-

घोड़ों के विभिन्न रंगों से सम्बन्धित दोहे दिये गये हैं ।

प्रारम्भ—

“सेली समंद पीली सिर् सांवल वालस काज  
सोने री मटीयो सिकज, वोर रंगो फिर वाज ॥१॥”

४. गीत ठाकुरां कल्याणसांगजी नै (आसिया बुधा कृत) :-

प्रारम्भ—

“माला में कलोक लामँ मालक, वीरम रामे लेण वपाण ।  
क्यावर पग कलो नव कोटां, दस देसां चावो दुनीयाण ॥”

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । लिपि सुवाच्य है ।  
ग्रंथ पर कपडे का गत्ता चढ़ा हुआ है । ग्रंथ में अनेक पत्र खाली पड़े हैं ।

१२२. चौबीस तीर्थंकर व सोले सत्तियों री विगत

१. चौबीस तीर्थंकर व सोले सत्तियों री विगत, २. रा० शो० सं०,  
३. ३०७५, ४. ११ × २३ सेमी०, ५. १, ६. १६, ७. वि० सं० १८८९,  
ई० सन् १८३२, डेहरा नगर, ८. विजयमणि, ९. राजस्थानी, देवनागरी,  
१०. इस पत्र के एक ओर लाल स्याही से जैनियों के २४ तीर्थंकरों के नाम अंकित  
हैं जो इस प्रकार हैं—

- |                   |                       |                    |
|-------------------|-----------------------|--------------------|
| १. श्री कूपमदेजी  | २. श्री अजीतनाथजी     | ३. श्री संभवनाथजी  |
| ४. श्री अमीनंदनजी | ५. श्री सुमतिनाथजी    | ६. श्री पदमप्रभुजी |
| ७. श्री सूपार्वजी | ८. श्री चंद्र प्रभुजी | ९. श्री वधीनाथजी   |

१०. श्री शीतलनाथजी	११. श्री श्रेथेयासजी	१२. श्री वासपूज्यजी
१३. श्री वीमलनाथजी	१४. श्री अनंतनाथजी	१५. श्री धरमनाथजी
१६. श्री शांतिनाथजी	१७. श्री कुबुनाथजी	१८. श्री अरनाथजी
१९. श्री मल्लीनाथजी	२०. श्री मुनी मूदतजी	२१. श्री नमिनाथजी
२२. श्री नेमनाथजी	२३. श्री पारसनाथजी	२४. श्री महावीरजी

पत्र के दूसरी ओर जैनियों के १६ सत्तियों के नाम इस प्रकार अंकित हैं—

१. अांभी	२. बालीका	३. भागवती
४. राजेमती	५. ध्रोपदी	६. कौसल्यास
७. मृगावती	८. मूलसा	९. सीता
१०. सुभद्रा	११. शिवा	१२. कुंती
१३. शीलवती	१४. सूलाप्रभा	१५. पदमा
१६. सुन्दरी		

.....हिन मूद्ये कूरवृत्तवो मंगल । इति श्री सोले सत्तियां रा नाम संपूर्ण ।

तीसरा अध्याय

## ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ

### १२३. कायस्थों के गौत्र, पत्री श्रोपमा आदि

१. कायस्थों के गौत्र, पत्री श्रोपमा आदि, करणीदान, उमा, गोप भाट, २. रा० शो० सं०, ३. २०६, ४. १४×१६.४ सेमी०, ५. ११३, ६. १२-१४, ७. वि० सं० १८६१-६४, ई० सन् १८०४-७, ८. पंचोली अनोपचंद, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संग्रहित ऐतिहासिक कृतियों में से कुछ इस प्रकार है—

#### १. कायस्थों के गौत्र :—

इसमें कायस्थ जाति के १३७ गौत्रों का नामोल्लेख इस प्रकार दिया है—

“१. मेड़तवाल, २. मीवंणी, ३. माणक मंडारी, ४. सदेव मंडारी, ५. चोर गाडरीया, ६. दीलवाजी, ७. वसि मुरदा, ८. जोचेबा, ९. उत्तरोल्या, १०. राजोरिया, ११. फोजी, १२. चौवीसा, १३. सोढलनाग, १४. भ्रवाला, १५. धुपवास, १६. कलयोकटता, १७. गाडरिया, १८. मनाजीत वाल, १९. हरसनाग, २०. नारनोलीया, २१. ककोडनाग, २२. घीढाल, २३. कोठारी, २४. पोहमनाग, २५. नागर, २६. जूगत स्हारीया, २७. कुसिया, २८. भावरिया, २९. आनीलबद, ३०. पपरीया, ३१. महैपुता, ३२. पडहड़ बाल, ३३. कटारिया, ३४. कुरसीका, ३५. कलोलीया, ३६. टाक, ३७. मंडोवरा, ३८. नागरेवेद, ३९. असुबंद, ४०. तुहनगरा, ४१. पदणा, ४२. गोहरीया, ४३. मेसउरा, ४४. कावरया, ४५. गोवसीया, ४६. ककराणी, ४७. गजवेद, ४८. ओहवरणा, ४९. नोहवाल, ५०. छार छोल्या, ५१. गोप गीरा, ५२. नोहारीया, ५३. होद बासीया, ५४. पनत बरीया, ५५. पधरचटा, ५६. कंकोड़वाल, ५७. पडतांणी, ५८. पधुर मुप, ५९. जिणसाली, ६०. मेडबड, ६१. जीप्माल, ६२. अपडबड, ६३. कोरिया, ६४. वित्रवेद, ६५. बोहपोतीया, ६६. मुरारीया, ६७. असुवेद, ६८. दिवांनी, ६९. ववरीया, ७०.

नेपाला, ७१. तवकली, ७२. घोड़ा, ७३. साहरा, ७४. कामीप, ७५. बरणी, ७६. पुढीयाला, ७७. उरसोलिया, ७८. कंकधर, ७९. बोहरेलीया, ८०. परवलनाग, ८१. गाढीवाल, ८२. सांडील, ८३. कठोतिया, ८४. जोलधर, ८५. ढीलवाली, ८६. मंगोडरया, ८७. माईवत, ८८. दुसबेद, ८९. सांबलेर, ९०. बीरसमदा, ९१. बोहपडरीया, ९२. जैनसामानी, ९३. गोपगीरा, ९४. देवगीरा, ९५. चंडवालीया, ९६. जलेसुरी, ९७. इमरतनाग, ९८. गोउटा, ९९. ऊंट गीरवा, १००. संजोलीया, १०१. जोध्रा, १०२. पचीस, १०३. रतगीरया, १०४. अतावीया, १०५. अडवेसर, १०६. गुजोरीया, १०७. माहावनी, १०८. हीदकीया, १०९. सिरबही, ११०. सीरबही भूतड़ा, १११. जैन सबोडा, ११२. धीरोडा, ११३. टाक जलाधर, ११४. उप पुरिया, ११५. अमुभट, ११६. दरबीदार, ११७. बकराणीया नासीया, ११८. बबरवाल, ११९. उभरवाजिया, १२०. वीरवकहे, १२१. मूंडा, १२२. उदहीलारण, १२३. वीदरीणीया, १२४. सिरिडीया, १२५. भजाणीया, १२६. तोहनगरा, १२७. जेलेसुरिया, १२८. लाहीवीया, १२९. राकजडी, १३०. कनोतीया, १३१. कनावीया, १३२. वीलहारिया, १३३. मोहपूता, १३४. सुरबही, १३५. पधरपुरीया, १३६. गउहेर, १३७. वोकरणीया।”

## २. पत्री ओपमा :-

पत्र प्रारम्भ किस प्रकार किया जाता है और पुरुष-स्त्री को व स्त्री-पुरुष को पत्र में क्या उपमाएँ लिखते हैं, ये गद्य-पद्य में वर्णित है।

प्रारम्भ—

“सिध श्री सरब ओपमा तुम लायक परमाण

अव आदर तुम जाणीयो, प्यारी बोहत सुजाण ॥१॥

अठा रा संमाचार श्री माताजी री क्रिपा कर भला छै। थारा सदा भला चाहीजै, डीलां रा घणा जतन कीजै सारी बात डीलां सूं छै। अप्रंच कागद आगै दीया सु पोता हुसी। दुहा—

मास तीन दिन छव भए प्यारी तजीयां तोय

फागुण पहली आवसां ढील न जाणो कोय ॥१॥

स्त्री पुरुष को लिखती है—

“स्वस्त श्री श्रुभ सुभमुथान पत्री लिपतं बहु नेह

पुज्य हमारे हो तुमहि, परम पुज्य गुन नेह ॥१॥

तुमसे और कोई नहीं केता लिखुं बषाण,

जतन तुमारा ढील रै कीज्यो प्राण प्रमाण ॥६॥



आगे एक 'बड़ी ओपमा' का उदाहरण देखिये—

“श्री श्री स्वस्ति श्री सुभ मुया ने सरव ओपमा विराजमान अनेक सकल सुभ ओपमा लायक, अनेक गुण निधान, वोहोतर कळा मुजांण, छत्तीस विवेक निधान, चौसठ कळा मुजांण, सुरज जेहा सतेज, चंदा जेहा निरमळ, अनेक गुण सुग्यान, चवदे विद्या निधान, सूरवीर वचन रा साचा, आपडी रा निवाहण हार, प्रीतम प्रांण आघार, राज सभा सिणगार, विसाल नैश्री, सोना जेहा सुरंग, रुपा जेहा ऊजळा, मोत्या जेहा निर्मळ, मूंग्या जेहा सरंग, फूलां जेहा फूटरा, पांणी जेहा पातळा, चूनी जेहा रंग, गंगा जेहा निरमळ, चढ़ती तेज, बघती बेल, गुण रा सागर, समुद्र जेहा गंभीर, सर्वविवेक जांण, सर्वकळा प्रवीण, चंदन जेहा सुवास, कपूर रस शीतळ गंग प्रवाह, समुद्र री लहर, जगत रा आभरण, अनेक सकल सुभ ओपमान विराजमान प्रीतम……प्याराजी प्रांण आघारजी राज श्री कंवरजी श्री साहिब श्री चरण कुमलायन चिरं जीवी, स्याही रा लिपणा घणा बरस अपी रहो, सुरज जेहा तपी, अठायी लिपतु अग्याकारी सदा सेवग, ढोलिया री चाकर, लिखतू घणा हेत सुं प्यारी री मुजरी अवधारसी …… आदि ।” (पत्र-४)

इसके अतिरिक्त 'किशन विलास', 'फुटकर दोहे', 'जंत्र मंत्र', 'माताजी री छंद', 'गणेश चौथ री बात' आदि कृतियाँ संकलित हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है, अनेक पत्र ग्रंथ से अलग है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। सांस्कृतिक अध्ययन हेतु उपयोगी है।

### १२४. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें आदि

१. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें आदि, देवकरण पंचोली आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १२७१, ४. ४१ × २७ सेमी०, ५. ७०, ६. २५-३०, ७. १९वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, संस्कृत, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. वाराणसी विलास (देवकरण पंचोली कृत) :-

प्रस्तुत कृति का निर्माण उदयपुर के राणा जगतसिंह प्रथम के आश्रित देवकरण पंचोली द्वारा किया गया।

प्रस्तुत काव्य-कृति अपूर्ण है इसमें कुल ११ अध्याय लिपिबद्ध है। प्रथम अध्याय में उदयपुर के राणाओं और ग्रंथ रचयिता का वंश परिचय दिया गया है। प्रारम्भ—

“श्री जलंधर नाथाय नमः स्तुभ्यं । श्री गणेशायनमः

आयसजी श्री १०९ श्री देवनाथ जी गरूम्योनमः

रूहो—

मुज आपस बळ भार प्रण पट हंदा बाहरू ।  
देवा जग दातार, तूं इण समे महेम तण ॥१॥  
श्री कासी विद्वेसुराय नमः अथ कासी पंथ  
श्री जलंधर नाथजी प्रसादात् लिप्यते । श्लोकः .....आदि ।”

दूसरे अध्याय में देवताओं का सप्त लोग में गमन, तीसरे में अगस्त्याश्रम  
वर्णन, चौथे में पतिव्रत को ब्राह्म्याय, पांचवें में भ्रगस्त्व व लोप मुद्रा की कथा, छठे  
में तीर्थों का वृत्तांत, सातवें में सप्तपुरी वर्णन, आठवें में यमलोक का वर्णन, नवें में  
सूर्य लोक का वर्णन, दसवें में इंद्र व अग्नि का वृत्तांत, ग्यारहवें में शिवलोक का  
वृत्तांत है ।

ग्यारहवां अध्याय अपूर्ण है, दसवें अध्याय की पुष्पिका में लिखा है—  
“इति श्री मत्सकल ब्रूमंडला मंडलेस्वर श्री मन्महाराजाधिराज महाराणा  
श्री जगतसिंहामाल्यंचोली देववर्यं विरचते श्रीमत्काशीपंड श्लोकार्थानुक्त तिनिवध  
ब्रज वाक पपती वाराणसी विभासे इंद्राग्नि वर्णनं नाम दशम उल्नास ॥१०॥

(पत्र-५३)

### २. प्रोयांसा :-

इसमें ११२८ कहावतों का संपह है । ये कहावतें यहाँ के लौकिक जीवन  
शौर अनुभव व मान्यताओं की सूत्र रूप में व्यक्त करती हैं । सामाजिक अध्ययन के  
लिए इनका बड़ा महत्व है ।  
प्रारम्भ—

“श्री जलंधर नाथाय नमः अथ उपाणा लिप्यते—मोटो बेनि इस्वर नै छाजै  
१, पंचों में परमेस्वर २, पत्ताळ में पेसणी नै सांपा गुं डरणी ३.....”आदि ।”

(पत्र-१३)

### ३. शाहजहां की दिनचर्या :-

इसमें बादशाह शाहजहां की दिनचर्या का संक्षेप में वृत्तांत है ।  
प्रारम्भ—

“पातसाहि साहिजां नित मण माफक रहता सो बाद दासत लिपीजै है ।  
घाठ पड़ी छार ती रात रहै जद चठणी सो चठ नै महलां विचं जळ री होद हो जिण  
में सिनांन करणी.....”आदि ।”

(पत्र-१)

ग्रंथ के अन्त में विविध विषयों के प्रश्नों की सूची दी है ।

आगे एक 'बड़ी ओपमा' का उदाहरण देखिये—

"श्री श्री स्वस्ति श्री सुभ सुया ने सरव ओपमा विराजमान अनेक सकळ सुभ ओपमा लायक, अनेक गुण निधान, वोहोतर कळा सुजाण, छतीस विवेक निधान, चीसट कळा सुजाण, सुरज जेहा सतेज, चंदा जेहा निरमळ, अनेक गुण सुग्यान, चवदे विद्या निधान, सूरवीर वचन रा साचा, आखड़ी रा निवाहण हार, प्रीतम प्राण आधार, राज सभा सिणगार, विसाल नैत्री, सोना जेहा सुरंग, रूपा जेहा ऊजळा, मोत्या जेहा निर्मळ, मूंग्या जेहा सरंग, फूलां जेहा फूटरा, पांणी जेहा पातळा, चूनी जेहा रंग, गंगा जेहा निरमळ, चढ़ती तेज, वधती वेल, गुण रा सागर, समुद्र जेहा गभीर, सर्वविवेक जाण, सर्वकळा प्रवीण, चंदन जेहा सुवास, कपूर रस शीतळ गंग प्रवाह, समुद्र री लहर, जगत रा आभरण, अनेक सकल सुभ ओपमान विराजमान प्रीतम.....प्याराजी प्राण आधारजी राज श्री कंवरजी श्री साहिब श्री चरण कुमलायन चिरं जीवी, स्पाही रा लिपणा घणा वरस अपी रहो, सुरज जेहा तपो, अठायी लिपतु अग्याकारी सदा सेवग, डोलिया री चाकर, लिखतू घणा हेत सुं प्यारी री मुजरी अवधारसी ..... आदि ।"

(पत्र-४)

इसके अतिरिक्त 'किशन विलास', 'फुटकर दोहे', 'जंत्र मंत्र', 'माताजी री छंद', 'गणेश चौथ री वात' आदि कृतियाँ संकलित हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है, अनेक पत्र ग्रंथ से अलग है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। सांस्कृतिक अध्ययन हेतु उपयोगी है।

### १२४. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें आदि

१. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें आदि, देवकरण पंचोली आदि,  
२. रा० शो० सं०, ३. १२७१, ४. ४१ × २७ सेमी०, ५. ७०, ६. २५-३०,  
७. १९वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, संस्कृत, देवनागरी,  
१०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. वाराणसी विलास (देवकरण पंचोली कृत) :-

प्रस्तुत कृति का निर्माण उदयपुर के राणा जगतसिंह प्रथम के आश्रित देवकरण पंचोली द्वारा किया गया।

प्रस्तुत काव्य-कृति अपूर्ण है इसमें कुल ११ अध्याय लिपिबद्ध है। प्रथम अध्याय में उदयपुर के राणाओं और ग्रंथ रचयिता का वंश परिचय दिया गया है। प्रारम्भ—

"श्री जलंधर नाथाय नमः स्तुभ्यं । श्री गणेशाय नमः

आयसजी श्री १०६ श्री देवनाथ जी गरुड्यौ नमः

रूहो—

भुज आयस बळ भार ग्रण पट हंदा चाहरू ।

देवा जग दातार, तूं इण समै महेम तरण ॥१॥

श्री काशी विद्येश्वराय नमः अथ काशी पद्य

श्री जलंधर नाथजी प्रसादात् लिप्यते । श्लोक.....आदि ।”

दूसरे अध्याय में देवताओं का सप्त लोग में गमन, तीसरे में अगस्त्याश्रम वरुण, चौथे में पतिव्रत को आस्थान, पांचवें में अगस्त्य व लोप मुद्रा की कथा, छठे में तीर्थों का वृत्तांत, सातवें में सप्तपुरी वरुण, आठवें में धमलोक का वरुण, नवें में सूर्य लोक का वरुण, दसवें में इंद्र व अग्नि का वृत्तांत, ग्यारहवें में शिवलोक का वृत्तांत है ।

ग्यारहवां अध्याय अपूर्ण है, दसवें अध्याय की पुष्पिका में लिखा है—

“इति श्री मत्सकल भूमंडला मंडलेस्वर श्री मन्महाराजाधिराज महाराणा श्री जगतसिंहामातृपंचोली देवशरणं विरचते श्रीमत्काशीपंड श्लोकार्थानुक तिनिवध ब्रज वाक पथती वाराणसी विलासे इंद्राग्नि वरुणं नाम दशम उल्गास ॥१०॥

(पत्र-५३)

२. ओपांशा :-

इसमें ११२८ कहवावतों का संग्रह है । ये कहवावतें यहाँ के लौकिक जीवन और अनुभव व मान्यताओं को सूत्र रूप में व्यक्त करती हैं । सामाजिक अध्ययन के लिए इनका बड़ा महत्व है ।

प्रारम्भ—

“श्री जलंधर नाथाय नमः अथ उपांशा लिप्यते—मोटो बेलि इस्वर नै छाजँ १, पंचों में परमेस्वर २, पताळ में पेसणी नै सांपा सुं डरणौ ३.....आदि ।”

(पत्र-१३)

३. शाहजहां री दिनचर्या :-

इसमें बादशाह शाहजहां की दिनचर्या का संक्षेप में वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

“पातसाहि साहिजां नित यण माफक रहता सो याद दासत लिपीजै है । आठ घड़ी लार ली रात रहै जद उठणौ सो उठ नै महलां बिचै जळ री होद हो जिण में सिनांन करणौ.....आदि ।”

(पत्र-१)

ग्रंथ के अन्त में विविध विषयों के ग्रंथों की सूची दी है ।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर है। ग्रंथ में काफी पत्र रिक्त पड़े हैं।

### १२५. गुण भाषा चरित्र तथा गज गुण रूपक बंद आदि

१. गुण रूपक चरित्र तथा गज गुण रूपक बंद आदि, गाडण केसोदास,  
२. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४१, ४. ३४.५ × २१ सेमी०, ५. १५६,  
६. १६-२४, ७. १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी,  
देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह से सम्बन्धित कुछ फुटकर कवित्त, दोहे, श्लोक, निम्नांणी इत्यादि कृतिया संग्रहीत हैं।

१. गुण भाषा चरित्र महाराजा गजसिंहजी रौ (हेम कवि कृत) :-

महाराजा गजसिंह की प्रशंसा में अनेक कवित्त, दोहों की प्रतिलिपि यहां की गई हैं। मिलावें ग्रंथांक ११, पु० प्र०।

प्रारम्भ—

“गुण निधी गुण पति गुण सागर गुणदाता ।

लंबोदर दुख हरण वचन फल सुघ विधाता ॥

भाल चंद गज वदन कोटि रवि शोभा कुंडल ।

धूमकेत इद मेक वीर क्रांति महाबल ॥ ...॥१॥” (पत्र-४६)

२. (गज) गुण रूपक बंध (गाडण केसोदास कृत)<sup>१</sup> :-

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः श्री ॥ श्री मदिष्ट देवाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

गुण रूपक बंध महाराजा श्री गजसिंहजी नूँ गाडण केसोदास कृत लिख्यते ॥ गाहा ॥

देवी सुमति दायः वाणी केरेणी हंस वाहणया ।

जग जिणणी जोगमाया तस्मै सारदायनमः ॥१॥”

प्रस्तुत काव्य-कृति में जोधपुर के शासक महाराजा सूरसिंह के पराक्रमी युवराज गजसिंह द्वारा लड़े गये विविध युद्धों का वर्णन है। इसमें विशेष रूप से सम्राट जहागीर के विद्रोही शाहजादा खुर्रम के विरुद्ध वि० सं० १६८१ में उसके बहादुर सेनापति भीम सीसोदीया के साथ लड़े गये युद्ध का वृत्तांत दिया गया गया है। इस युद्ध में महाराजा गजसिंह के हाथ से भीम सीसोदीया के मारे जाने की घटना के साथ ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है। कवि (केसोदास गाडण) युद्धों में प्रायः

१. प्रकाशित, सं० सीताराम लालस, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

महाराजा के साथ रहता था, उसने आँखों देखा हाल लिखा है अतः इसमें अंकित घटनायें बाद में लिखी गई ख्यातों से अधिक प्रामाणिक हैं ।

प्रारम्भ में राठौड़ों की वंशावली पौराणिक आधार पर दी है फिर सूरसिंह से सम्बन्धित कुछ घटनाओं का जिज्ञा करने के तत्पश्चात् गजसिंह द्वारा लड़े गये युद्धों का वृत्तांत दिया है । महाराजा सूरसिंह व गजसिंह के इतिहास-अध्ययन हेतु कृति बहुत उपयोगी है ।

अन्तिम भाग—

“सुरताण पुरम भागी भिड़ै, चडि चकया चकवै  
गजसिंघ प्रवाड़ो पटीयो, वहै भीम चीतोड़वै ॥२०॥

इति श्री महाराजधिराज महाराजजी श्री गजसिंघजी रौ गुण रूपक बंध गाडण केसोदास रौ कह्यो संपूर्ण ॥ श्लोक शुभम् ॥”

महाराजा गजसिंह के इतिहास अध्ययन हेतु ही नहीं उस समय की वेशभूषा, खानपान युद्ध कौशल आदि की जानकारी के लिए भी उपयोगी है । (पत्र-११०)

प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है । पत्र मटमैले रंग के हैं । ऊपर गत्ता चड़ा हुआ है ।

## १२६. वीरगीत संग्रह, रस गुलजार आदि

१. वीर गीत संग्रह, रस गुलजार आदि, वदनजी मीसण आदि, २. पु०प्र०, ३. ३६, ४. १६.५ × २८ सेमी०, ५. १६१, ६. १२-१६, ७. वि० सं० १८६७, ई० सन् १८२१, हरण, ८, अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. अमलदारों की आपत बत्तीसी :-

कवित्त—

“प्रथम जनम पंचमै वरस देखै पावण विधि  
पंच द्रण पूगतां जागि अमलांह लीयां जदि  
वारह ग्यारह विचा पाण धारण करियो थो …… ॥१॥”

(६ छप्पय)

२. निसांणी राव राजा विसनसिंघजी रौ .-

प्रारम्भ—

“कल चहुवाणां मुकट मणि अवषाण अडर  
राव राणा राइया सुरताणां सादूर

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर है। ग्रंथ में काफी पत्र रिक्त पड़े हैं।

### १२५. गुण भाषा चरित्र तथा गज गुण रूपक बंद आदि

१. गुण रूपक चरित्र तथा गज गुण रूपक बंद आदि, गाडण केसोदास, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४१, ४. ३४.५ × २१ सेमी०, ५. १५६, ६. १६-२४, ७. १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह से सम्बन्धित कुछ फुटकर कवित्त, दोहे, श्लोक, निसांणी इत्यादि कृतियां संग्रहित हैं।

१. गुण आठ भाषा चित्र महाराजा गजसिंहजी रौ (हेम कवि कृत) :-

महाराजा गजसिंह की प्रशंसा में अनेक कवित्त, दोहों की प्रतिलिपि यहाँ की गई है। मिलावें ग्रंथांक ११, पु० प्र०।

प्रारम्भ—

“गुण निधी गुण पत्ति गुण सागर गुणदाता ।  
लंबोदर दुख हरण वचन फल सुध विधाता ॥  
भाल चंद गज वदन कोटि रवि शोभा कुंडल ।  
धूमकेतु इद मेक वीर क्रावृति महाबल ॥ ...॥१॥” (पत्र-४६)

२. (गज) गुण रूपक बंध (गाडण केसोदास कृत) :-

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनमः श्री ॥ श्री मदिष्ट देवाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
गुण रूपक बंध महाराजा श्री गजसिंहजी नूँ गाडण केसोदास कृत लिख्यते ॥गाहा ॥

देवी सुमति दायाः वाणी करेणी हंस बाहणया ।

जग जिणणी जोगमाया तस्मै सारदायनमः ॥१॥”

प्रस्तुत काव्य-कृति में जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह के पराक्रमी युवराज गजसिंह द्वारा लड़े गये विविध युद्धों का वर्णन है। इसमें विशेष रूप से सम्राट जहांगीर के विद्रोही शाहजादा खुर्रम के विरुद्ध वि० सं० १६८१ में उसके बहादुर सेनापति भीम सीसोदीया के साथ लड़े गये युद्ध का वृत्तांत दिया गया गया है। इस युद्ध में महाराजा गजसिंह के हाथ से भीम सीसोदीया के मारे जाने की घटना के साथ ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है। कवि (केसोदास गाडण) युद्धों में प्रायः

महाराजा के साथ रहता था, उसने आँखों देखा हाल लिखा है अतः इसमें अंकित घटनाओं बाद में लिखी गई ख्यातों से अधिक प्रामाणिक हैं ।

प्रारम्भ में राठीड़ों की वंशावली पौराणिक आधार पर दी है फिर सूरसिंह से सम्बन्धित कुछ घटनाओं का जिक्र करने के तत्पश्चात् गजसिंह द्वारा लड़े गये युद्धों का वृत्तांत दिया है । महाराजा सूरसिंह व गजसिंह के इतिहास-अध्ययन हेतु कृति बहुत उपयोगी है ।

अन्तिम भाग—

“सुरताण पुरम भागौ भिड़ै, चडि चकया चकयै  
गजसिंघ प्रवाडो घटीयो, वहै भीम चीतोडवै ॥२०॥

इति श्री महाराजधिराज महाराजजी श्री गजसिंघजी री गुण रूपक बंध गाडण केसोदास री कह्यौ संपूर्ण ॥ इलोक शुभम् ॥”

महाराजा गजसिंह के इतिहास अध्ययन हेतु ही नहीं उस समय की वेशभूषा, खानपान युद्ध कौशल आदि की जानकारी के लिए भी उपयोगी है । (पत्र-११०)

प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है । पत्र मटमैले रंग के हैं । ऊपर गता चड़ा हुआ है ।

### १२६. वीरगीत संग्रह, रस गुलजार आदि

१. वीर गीत संग्रह, रस गुलजार आदि, बदनजी मीसण आदि, २. पु० प्र०, ३. ३६, ४. १६.५ × २८ सेमी०, ५. १६१, ६. १२-१६, ७. वि० सं० १८६७, ८. सन् १८२१, हरण, ८, अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. अमलदारों की आपत घत्तीसी :-

कवित्त—

“प्रथम जनम पंचमै वरस देखै पावण विधि  
पंच द्रण पूगतां जागि अमलांह लीयां जदि  
वारह ग्यारह विचा पाण धारण करियौ थो …… ॥१॥”

(६ छप्पय)

२. निसांणो राव राजा विसनसिंघजी री .-

प्रारम्भ—

“कल चहुवाणां मुकट मणि अवषाण अढ़र  
राव राणा राइयां सुरताणां सादूर



रहीमत कीमत हीदवां स वहुत बघोतर  
कटीया दोप अनेक तें लटीया गौर भंगर ॥१॥”

अन्तिम—

“तू सारी विधि समझीया बुधि बेरा आगर,  
आज अबनी चंदणी ग्रहणी ग्रहराज तणी पर  
दूजा रतन दीवाण श्री इळ उतन उजागर,  
जमी साज सुरेस ज्यूं विसनेस नरेसुर ॥३२॥”

३. गीत सावभङ्गो भाला जालमसिध को भीसण बदनजी कहै :-

यह भाला सरदार वह है जिसने भालावाड राज्य की स्थापना की और जो अपने समय का बड़ा राजनीतिज्ञ माना जाता था ।

प्रारम्भ—

“चीतीड़ जोघपुर जंपुर चावै आय समाभ विरोध उपावै  
अरज जीकां री कोटे आवै सुलजै जदि जालिम सुलभावै ॥१॥

अन्तिम—

दसे रीभ पीज इक दावै इलपत वीजा जोड़ न आवै,  
गुण पौरूप चारी कुण गावै इता कहेतों छेह न आवै ॥२७॥

मीती वंशाप वदि १ समत १८६७ शाके १७३१ .....मंगल दिने प्रमदा  
नक्षत्र चित्रा घाटिका २४ गत लपी ग्राम हरण मध्य ।”

४. रस गुलजार (बदनजी भीसण कृत) :-

इसमें राव सीहा से महाराजा मानसिंह तक के राजाओं का संक्षिप्त विवरण दिया गया है । अनेक दोहे कवित्त (जिनकी संख्या नहीं दी है) अंकित हैं, फिर उनका अर्थ वचनिका लिख कर किया गया है । महाराजा मानसिंह के राज्य-काल का हाल कुछ विस्तार से दिया है । कृति अपूर्ण जान पड़ती है ।

प्रारम्भ—

वचनका ग्रंथ महाराज मानसिधजी को  
रस गुलजार बदनजी भीसण री कह्यौ, गाथा—

परसी कर घर पूर सुडाडंड लाल सिनूरं,  
नले दोज सति नूर, जय गणपति गज बदन गरोसुर ॥१॥”

प्रारम्भ में नाथजी की स्तुति आदि की गई है फिर दूहा दे कर अर्थ लिखा है

यथा—

दूहा—

“जिण जल उपजियो जगत सोन जि रूप समाप ।

व्यापक विद्व सुठाम, विचि नाम जलंधर नाथ ॥

वचनका—

जिकण जलंधर नाथ रं भ्रवार की वपत में देवनाथ सरीपो सिप दरसायो, जिकण देवनाथ रा वरदान सू मानसिध मारवाड़ रो राज पायो ।”

राव सीहा के भ्रागमन का हाल भी दिया है । गया—

“एकण रामे सोहो सेत (रामोत) कतयज सुं द्वारीकानाय रो जात्रा करण नूं आयो उण वपत सोलंकी मूलराज रपायच आप रा बापरा मारण रो व्रतांत सीहा नूं सुणायो…… .. ।”

अन्तिम भाग—

“भ्रवार वपत में भ्रसी रजपूती येकले मानसीग रपाई छं, भ्रसी रीत सत साहस सु हीडत परं छै जकांरो मदत पुदाप करं छै ।” (पत्र-५५)

प्रस्तुत ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । प्रारम्भ की कृतियां कुछ सुवाच्य जरूर हैं पर अन्तिम भाग घटुद्ध है ।

ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंदा हुआ है ।

### १२७. विजय विलास (बारट विशन सिंह)

१. विजय विलास (बारट विशनसिंह), २. रा० शी० सं०, ३. ४५, ५. २१.८ × २३ सेमी०, ५. ६६, ६. १८, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी (पड भाषा के उदाहरण भी हैं), १०. प्रस्तुत काव्य जोधपुर के शासक महाराजा विजयसिंह से सम्बन्धित है । इसमें केवल एक पहला और अन्तिम पत्र लुप्त हैं ।

प्रारम्भ—

“उजल गिर आवास, वास उजला विराजै उजल हंस आरूहण

गहर उजली गिराजै, वीणा आच वायणी सबद गायणी सुमंगल ॥८॥”

इसमें जोधपुर के शासक महाराजा बखतसिंह और विजयसिंह का हाल अंकित है जिसमें बखतसिंह का वृत्तांत कुछ विस्तार से देकर विजयसिंह व जयभपा सिधिया के बीच हुए युद्ध का हाल दिया है ।

१. आसोपा (मारवाड़ का मूल इतिहास, पृ० २५२) के अनुसार संवत् १८११ में महाराजा रामसिंह जय भाषा सिधिया को ६० हजार सेना सहित मारवाड़ पर ले आया, महाराजा विजयसिंह भी ५० हजार सेना लेकर सामने गए । सं० १८११ की आश्विन वदि १३ को पांच घण्टाप्या में भयंकर युद्ध हुआ इसमें महाराज की पराजय हुई । महाराजा भाग कर नागौर गए ।

प्रारम्भ में महाराजा का यश वर्णन है, फिर मराठों से लड़े गये युद्धों का विस्तार से वर्णन किया गया है। उदाहरणार्थ कुछ दोहे छप्पय उद्धृत हैं—  
दोहा—

“आवै दीपणी ओम्रठी, जोजम सादन जाय ।  
घड़ पड़तां लड़तां घड़ां, आपो दीयां वढाय ॥

छप्पय—

करै मिसल कारण भंग धारणां वसंगे  
बाहर आय अबीह लोक तेडीयो लड़ंगे  
पाळा चढ़ीया ब प्रबळ मिळि वेढ माता रा  
अंमल अंसघर ओप सवळ ग्राहणा सतारा  
डेरा अनेक रंगा दिये छिपै भाति वादल छलां  
कळहळां साद है गै करै एम सेन मिळ आवलां ॥१६॥

अन्तिम भाग—

त्रय वाहक रिया सुर तरा घकचालक रिण पड़ीयो घरा  
हलव चलां दुय भड है .....आदि ।”

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि मोटे अक्षरों में एवं मुवाच्य है। यह किसी अन्य ग्रंथ की प्रतिलिपि है जिसका अनुमान बीच-बीच में छोड़े गये खाली स्थलों से होता है। महाराजा विजयसिंह के इतिहास अध्ययन हेतु कृति महत्वपूर्ण है। इसमें कर्ता का नाम नहीं दिया है। इस ग्रंथ की एक प्रति खीवसर ठाकुर साहिब के पास भी है परन्तु वह भी अपूर्ण है।

ओझाजी के भी 'विजय विलास' ग्रंथ की एक अपूर्ण प्रति देखने में आई थी उन्होंने इसके रचयिता का नाम वारट बिशनसिंह दिया है। देखें जोधपुर राज्य का इतिहास (द्वितीय खण्ड, पृ० ७६३)।

### १२८. अजीत चरित्र, बाल कृष्ण दीक्षित

१. अजीत चरित्र, बाल कृष्ण दीक्षित, २. पु० प्र०, ३. ४६३ (संस्कृत सूची), ४. ११ × २२ सेमी०, ५. ६२, ६. ५, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. संस्कृत, देवनागरी, १०. जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह के समय में इस ग्रंथ का निर्माण किया गया, इसमें 'अजीत विलास' की भांति प्रारम्भ में उक्त महाराजा के पूर्वजों का वृत्तांत संक्षिप्त रूप में दिया है फिर महाराज गजसिंह व जसवंतसिंह का विवरण तथा अन्त में अजीतसिंह के प्रारम्भिक जीवन की

घटनाओं का वृत्तांत सन्निविष्ट है। इस प्रकार इस रचना के कुल १० सर्गों में से अन्तिम केवल ४ सर्गों में ही अजीतसिंह का विवरण अंकित है।

प्रारम्भ—

“श्री तवान्येनमः ॥ श्री गणपतयेनमः ॥

वंदेह जगतां शुभाय जननी भक्ते शितार्थ

प्रदामार्तानाथ दयापरायणमनः

संसार तापापहांम् सर्वोपद्रवनाशीनी भगवती दवानु कंपाकरी

मोकानेकतनु धरा हरिहर ब्रह्मादिभि सस्तुता ॥१॥”

अन्तिम भाग व पुष्पिका—

“.....गगद्या सरितो वाहंति परितो यावदरामंडल

श्री महाराज शिरोमणे तव यश्स्तावत् सदा वर्धताम ॥४६॥

इति श्री दीक्षित बालकृष्ण कृतो महाराज अजीत चरित्रे

महा काव्ये अज दुर्ग नागपुर जयो दिल्ली पति संधि

राज्या लिपेक कवि सुक्ति रचनं नाम दशम सर्ग ॥१०॥ श्री”

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। प्रत्येक पत्र पर पत्र संख्या अंकित है। पत्र सब खुले हैं।

## १२६. राज विलास

१. राज विलास, ग्यानी बोडा, २. पु० प्र०, ३. ३८, ४. १७.५ × २४ सेमी०, ५. ४५, ६. १५, ७. १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, अज, देवनागरी, १०. प्रस्तुत काव्य कृति जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह से सम्बन्धित है, इसमें कुल तीन अध्याय हैं, प्रारम्भ के दो अध्याय में महाराजा के राज प्रासाद (महल, दरवाजे) तथा न्याय-व्यवस्था इत्यादि का वर्णन करते हुए राज्य-शोभा का चित्रण किया है। तीसरे अध्याय में विवाह महिमा वर्णित है जिसमें महाराजा के विवाहोत्सव बरात व रानियाँ इत्यादि का वृत्तांत सन्निविष्ट है। इस प्रकार ५१७ दोहे, चौपाइयाँ आदि लिपिबद्ध हैं। ग्रन्थ मानसिंह की राज्य-व्यवस्था, वैभव, रीति-रिवाज आदि की जानकारी हेतु उपयोगी है।

प्रारम्भ—

“श्री मह गणधिपतयेनमः ॥ अथ श्री महाराज श्री मानसिंघजी रौ राज विलास लिप्यते ॥

दोहा—

श्री गनपति को नाम जो सुमरत होय कल्याण  
जाके पद जुगत मत हां सदा जु मंगल जांन ॥१॥

छंद—

एक दंत को जु ध्याय, हीय मांहि ग्यान थाय  
तीन लोक के मु नाथ, तांहि वंदि जोर हाथ ॥२॥”

उदाहरण के लिये कुछ दोहे, चौपाइयां उद्धृत हैं—

चौपाई—

ताके निकट सोह वर थानू,  
चाकेलांव नाम वर जानू ।  
चंद्र दिस सोभत कोट सोहाए,  
बुरज वने ते वरनि न जाए ॥१६॥  
तोप रेपळा राजत तेऊ,  
गिने न जाय बुध उर जेउ ।  
धांन तेल के घृत मंडारा,  
भरे सकल तां जय जय कारा ॥२०॥

दोहा—

रानीसर तिह नाम है, अति अथाघ जल पूर ।  
घाट मनोहर राज ही, कोट चहुं दिस भूर ॥२२॥

चौपाई—

उदैपोल नाम ते दीन्हा,  
ताके निकट बुरज वा कीन्हा,  
सूरज सांमी पील प्रकासू,  
किह विध उपमा कह मुप जासू ॥३६॥

दोहा—

सिरे पोल कौ कहत मुप, अनंद उर न समाय ।  
लोहपोल ते नाम है सबसां इधक सोभाय ॥४८॥

चौपाई—

पटरांनी भटयांनी राजत,  
ताकै निकट देवड़ी भ्राजत  
और सदन सदा मुप दाई

तां राजत वरजी भाई ॥११४॥  
 चोर जुवारी संपट होवे  
 तिनके द्रष्ट काल सम जावै  
 जो को होय नग्र में चोर  
 तिन को बांध मारावै भोर ॥१५७॥

दोहा—

जीवणदास जू नाम है गेहलोत तिह जात ।  
 करत न्याय ते चोंतरै नरपति के सिर हात ॥१६०॥

चोपाई—

ताके दांम भागते राजे  
 हुकमीचंद विप्रय भ्राजे  
 मुसरप ओधो वृष तिह दीनां  
 भ्रपनां जान सपीधर कीनां ॥१६१॥”

अन्तिम पुच्छ दोहे दिये जा रहे हैं, जिनमें रचना-काल इत्यादि अंकित है—

“ग्यान प्रबंध प्रकास पुन श्री नृप मान विलास  
 नरपति की रचना कही कही जुक्ति प्रकास  
 ग्यानी बोड़ो जानियो सब दासन को दास  
 मान चरित्र मुपसां कहै नाथ जु पूरै आस ॥१५८॥  
 संघत अठारे सततइयासी वर होय  
 मिगसर म सइ सुकल दिन बुधा अष्टमी सोय ॥१५९॥  
 मैं अजांन मत आपनी, कही ग्यान जुत वात  
 बकसत मुत अप्राद की, सकल कवी पितु मात ॥१६०॥  
 इष्ट देव इम नाय के, आद अंत मुप सेय  
 ताके धरन प्रताप ते भाव गवण न होय ॥१६१॥”

पुष्पिका—

“इति श्री महाराजधिराज श्री मानसिधजी री राजविलास बिवाह महिमा  
 वरन नाम तृतीयो विलास संपूर्ण ॥ श्री रस्तु ॥ कल्यांकमस्तु ॥ सुमं भवंतु ।”

(पत्र-३३)

ग्रंथ में इसके अतिरिक्त ‘नाथजी री भजन विलास’ (१२५ दोहे), ‘ज्ञान  
 प्रकाश’ (४२ दोहे), ‘नाथजी री नाम माला’ (१०५ दोहे) तथा लक्ष्मीनाम कृत

३२४ : राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-१

भजन विलास आदि कृतिया लिपिवद्ध हैं। यह ग्रंथ मानसिंह के राजसी ठाट और तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से अध्ययन योग्य है।  
ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है, प्रारम्भ में लिखावट के अक्षर कुछ मोटे हैं, लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता मढ़ा हुआ है।

### १३०. केहर प्रकाश

१. केहर प्रकाश, राव वस्तावर, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३४६१६, ४. ३५ × २७ सेमी०, ५. ११०, ६. १६, ७. वि० सं० १६४२, ८. सन् १८८५, उदयपुर, ८. जोसी चुन्नमुज, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह पृथ्वीराज चहुवान के वंशजों में देवगढ़ बाहरिये के स्वामी भीम के पुत्र केसरीसिंह और जांगलू के शासक सांखला मण्डलीक के कनिष्ठ भ्राता जला की प्रेम पात्री वंश्या से उत्पन्न हुई सुन्दर लडकी कमला की प्रेम कथा है।  
प्रारम्भ में विषय सूची अंकित है।

“श्री गणेशायनमः श्री सारदायै नमः श्री चतुर्भुजाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
प्रथम कवि वस्तावर राव कृत केहर प्रकाश ग्रंथ लिख्यते ॥ छपै ॥  
श्री लम्बोदर सिवासुतण, सुर नरां सहायक ।  
करण मंगल कोट दुस हरण विरदायक ॥ ... ॥ १ ॥”

पुष्पिका—

“श्री महाराजधिराज महाराजा जी श्री श्री १०८ श्री फतहसिंहजी विजय राज्ये लिपि कृत जोसी चुन्नमुज श्री उदयपुर निवासी । संवत् १६४२ वैशाख सुक्ला ३ गुरुवासरे पठनार्थ चिरंजीव मादोसिधजी मेतावसिधजी जसराजजी पत्रव कसोर सिधजी गमानसिधजी गोमंदसिधजी श्री रस्तु ॥”

ग्रंथ एक ही एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है, लिखावट सुन्दर है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। मुद्र के तौर-तरीकों, विविध शस्त्रों इत्यादि के प्रयोग, अनेक प्रकार की विद्याओं आदि की जानकारी हेतु ग्रंथ बहुत उपयोगी है।

### १३१. अभय विलास

१. अभय विलास, सांडू पृथ्वीराज, २. पु० प्र०, ३. १, ४. २८.५ × २६ सेमी०, ५. २८, ६. २०-२२, ७. १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८. अज्ञात, १. प्रवाशिन, सं० राव मोहन, उदयपुर

६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें जोधपुर के शासक महाराज अभयसिंह के राज्यकाल का वर्णन है। इसका प्रारम्भ अभयसिंह के जन्म से न होकर कन्नौज के राजा जयचंद से होता है तथा अजीतसिंह तक राठौड़ राजाओं का संक्षिप्त विवरण दिया है (पत्र-६) तत्पश्चात् महाराज अर्जुनसिंह के प्रारम्भिक राज्य-काल की कुछ घटनाओं का वृत्तान्त अंकित है जिसमें अहमदाबाद की चढ़ाई मुख्य है। लिपिकार द्वारा कृति पूर्ण लिपिवद्ध नहीं की गई है। ग्रंथ का प्रारम्भ गणेश स्तुति से हुआ है। प्रारम्भ—

“गणेश स्तुति काव्य लिपते—

उजल दत सुमेक गिज दत मुडाडंड प्रचंडयं

भ्रंगं मुंज कपोलं लालो लसत संम गंध धारा वहं ...आदि ।”

जोधपुर के संस्थापक राव जोधा पर लिखा छंद द्रष्टव्य है—

“जिन त्रिपट पाट तपि जोधराव,

उदार चित पौरप अमाव,

पित वर लगि धरि घष अपार,

दल रान सीस घेरत दुधार,

जिन करीय कुंभ हू अनत जंग,

पीछोल आनि पाया पमंग.....आदि ।”

अर्जुनसिंह का जन्म संवत् इस प्रकार अंकित है—

“सतरं जु सत्त समत प्रकास,

गुनसट हि वर्षे मगसर हि मास

वदि चतुरदस नि तिथ सनिवार

नपिन्न बिसाप सुभ लगन सार.... आदि ।”

बीच-बीच में ऋषु वर्णन के अतिरिक्त त्यौहार इत्यादि का वर्णन भी किया है। उदाहरण स्वरूप होली के त्यौहार सम्बन्धी दो दोहे उद्धृत हैं—

“सकट गुलाल अबीर सरस, अरू केसर त्रिग मद

होरी पेलत फाग त्रिप, आयै बाल समंद ॥१॥

अतर गुलाब न कुंभ कुंभ, अरू घनसार अबीर

कल कंचन पिचकार करि, निज हौदन भरि नीर ॥२॥”

अन्तिम भाग इस प्रकार लिपिवद्ध है—

“छन्द हनुफाल

.....



विच विच सु मानिक कृतं,  
 जनुं अदित उदित कस्तं,  
 पुपराज पीत प्रकास,  
 मनुं करत सुर गुर मास,  
 मनि नील दमक निहोवय,  
 चित हरत सुर न जोय,  
 सर मुक्त लुंब सनीर,  
 भाई मनु हुं उडगन भीर,  
 गनि त्रिप न मुप गहरा  
 .....(अपूर्ण)''

छंद संख्या अंकित नहीं है। अभयसिंह के समय के अध्ययन के लिए ग्रंथ उपयोगी है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। प्रारम्भ के पत्र फटे हुए हैं तथा षष्ठे पत्र का कुछ हिस्सा अनुपलब्ध है। अन्त में काफी पत्र रिक्त पड़े हैं। लिपि सुवाच्य नहीं है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंडा हुआ है। कागज मटमैले रंग के हैं जो हाथ के बने प्रतीत होते हैं।

### १३२. छत्रपता-रासो (प्रतिलिपि)

१. छत्रपता-रासो (प्रतिलिपि संग्रह), कासी छंगाणी, २. रा० शो० सं०, ३. ८३, ४. ३३.८ × २१.५ सेमी०, ५. ११४, ६. १६-२४, ७. १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, श्रीरंगबाद, करणपुरा, ८. कासी छंगाणी (म० अनूपसिंह का समसामयिक), ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में बीकानेर के राजा कर्णसिंह तथा अनूपसिंह के राज्यकाल का इतिहास वर्णित है। प्रारम्भ में राव सीहा से जोधा तक वंशावली दी है तत्पश्चात् राव बीका से राजा कर्णसिंह तक राठौड़ राजाओं की मुख्य उपलब्धियों का वृत्तांत अंकित है। प्रत्येक राजा के गद्दीनशीनी के संवत् दोहे के रूप में देकर फिर घटनाओं का उल्लेख किया है। संवत् ठीक नहीं दिये हैं। राजा कर्णसिंह और अनूपसिंह के समय की घटनाओं के संवत् ठीक दिये हैं।

प्रारम्भ—

“॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री सारदासहाय ॥

कवित्त—

नमो नाथ इम वदन, रदन ईक सदन युद्ध गुण ।  
गवरनंद गणपत, दते रिघ हत दरिद्र दुप ॥  
प्रवल पिड पळपंड सुंड सिदूर समुजल ।  
फरस पाण अघि हणि माण यप कोट सउजल ॥ .....आदि ।”

राजा कर्णसिंह का वृत्तांत उनके उद्‌नशीनी से प्रारम्भ हुआ है, यथा—

दूहा—

गोल्हेसे भठयासिये, रासा हरो नरेस ।  
राजा पाट विराजियो, कमधपत करणोस ॥”

भमरसिंह राठीड़ द्वारा बीकानेर की सीमा का ग्राम जाखंगिया हस्तगत करने पर कर्णसिंह और भमरसिंह के बीच हुए युद्ध (मतीरे री राड़) का विस्तृत वर्णन दिया है । यथा—

प्रारम्भ गाहा—

“पुवीया जोध अघिगो,  
सोलहवे न्याण समते  
भिड भमरेसर भगो  
जंप गुणंदिडीयं जेहा ॥३०॥

दोहा—

नागपुरे बीकानगर, जापणी विच संघ ।  
उण उपर अहरसीय, करनो अमर कमध ॥३१॥”

युद्ध होने का कारण इस कवित्त में स्पष्ट रूप से उद्धृत है—

कवित्त—

“साहिजहा पतसाह रोम्कि नागौर संमर्प ।  
देवाराम उदराव, भमरेसर धर्प ॥  
ताअपटा वांटीया, अमर मोटे छत्रपति ।  
अधिपति रीम्कि अळाय दीधि भोपत भूपती ॥  
तिण वार अपे मंडणोत ने ले जापणीयो पटे दीयो ।  
कळह री बीज अमरे कमध उण वेळा आरोपीयो ॥३३॥”

युद्ध में भाग लेने वाले विभिन्न योद्धाओं के नाम खांपानुसार दिये हैं ।  
उदाहरण के लिए कुछ दोहे द्रष्टव्य हैं—

“मनहरदास महाबळी भोपत तणी भ्रमंग ।  
 वळभद सुत धीरम प्रवल, जुटि जीर्ण रिणजंग ॥३६॥  
 नीवावत भोपत धनद केमय सुत बुळ भांण ।  
 चत्रमुज घवरंग रंचण, जैमलोत घण जांण ॥४०॥  
 रिणवट वेळा रामचन्द्र तेजसीपोत मताब ।  
 लायां भडां उयेलणी, प्राभो साह निवाव ॥४१॥  
 किसनदास मुजसे मुयल, पंथावत पप मुघ ।  
 रिणछोडा दयाल री जिय पारय रिण जुघ ॥४४॥  
 दुरगां कमंध दयान री, रूपावन बुळ रूप ।  
 पथी भ्रम पालिण परो, मुजा सराहे भूप ॥४५॥

छंद जात मोतीदाम (युद्ध वर्णन)—

डूवे रिण जंग बहै पगधार  
 पछाड़ पडे सर सेल्ह अपार  
 वडाबड़ अथग नीनाल बन्दूक  
 राठीड उमै रिण माचवि रूक  
 धमाधम सेल्ह पड़े घमरोड़  
 फूटे भड भंग बगतर कोड़.....आदि ।”

युद्ध काल—

सोल्हे से न्याणवे, आसू सुदि चबदस ।  
 जुघ प्रथम जापणीयो सोहड़ कीयो सरस ॥५६॥”

तत्पश्चात् दोनों के बीच युद्ध होने का विवरण दिया गया है । युद्ध में भाग लेने वाले विभिन्न योद्धाओं के नाम, युद्ध की तैयारियां, युद्ध-विभोषिका तथा दोनों ओर से वीरगति प्राप्त होने वाले योद्धाओं के नाम संक्षिप्त हैं । इसका प्रारम्भ यहाँ से हुआ है—

“सुणी बात ईम सीहमेल, मुड़िया भड़ भ्रमरेस  
 वीका पूंजा वालीया कीध फते करनेस ॥५७॥  
 विक्रमपुरी आबी यबर, राका दिन भ्रघरात ।  
 रास भंडल मभि रामचन्द्र सुणी सु बोली बात ॥५८॥”

खांपों के नाम इस प्रकार संक्षिप्त हैं—

कवित्त (कराँसिह के योद्धाओं की खांपें)—

“वीका बीदा जोधवंश, कांधिल उजवाळा ।  
 भाटी सोनिगराणि, भणां पमाण मुजाळ ॥

मंडलावत रिणधीर, कमंध रूधा रिण मंडण,  
उदावत वाघोड़ पत्री अरीयां घड़ पंडण ॥  
चहुवाण गोगली सापली, पाहू भ्रजे वाघडे ।  
पटतीस वंस भ्रणभंग भड़ पांप पांप आया पडे ॥६२॥

धर्मसिंह के योद्धाओं की खापें—

“कूपावत कमघज, चवां चांपा रिणचाळा ।  
जोध्या माल दुजोण, वदां रूपां विगताळा ॥  
मेड़तीया मछरीक नरा ऊहड पूमाणा ।  
भाटी करमसीयोत पता केक वखाणा ॥  
सक्ति रूप दळां सोनिगरा, धीम निहचा धारीया ।  
उमराव राव अमरेस रा, प्रबळ जोध पधारीया ॥६८॥”

फिर इन मरदारों के नाम आदि भी दिये हैं तथा युद्ध में काम आये योद्धाओं की सूची (दोहों में) अंकित हैं ।

इस युद्ध में भी कर्णसिंह की विजय हुई, इसका समय इस प्रकार अंकित है—  
कवित्त—

“सोल्हेसे नंन्याण मास काती वद ग्यारस  
अमरे करन अधिप दळां मातो वीरा रस..... ॥१६॥”

कर्णसिंह की जवारी (औरंगाबाद सूबे का एक प्रांत) पर चढ़ाई तथा धरमाट के युद्ध का वृत्तांत है, फिर औरंगजेब के उत्तराधिकारी बनने इत्यादि घटनाएँ वर्णित हैं, यथा—

“औरंग दिल्ली आवीयो घणा करे गजगाह  
माये छत्र मंडावीयो, हुई बैठी पतसाह ॥१६४॥”

राजा कर्णसिंह के विद्यानुरागी होने का भी उल्लेख कवि ने किया है—

“वेद पुराणह भागवत, जोतिक आगम तत्त  
गुण पिगल संगीत रस, मेदालिग भुजपत्त ॥३५॥  
औरंग धुर हींदू असुर ईम अपे सह कोई  
राजा करने सरिखो कळि मक्ति हुवो न कोई ॥३५२॥”

मृत्यु संवत—

“सतरे से छावीस तेण संवत महिपत  
धवल पछ आसाढ़ चौथ दिन..... ॥३५१॥”

कर्णसिंह के सतियो आदि का उल्लेख कर, फिर अनूपसिंह के राज्याभिषेक, विवाह, बादशाह द्वारा उसकी औरंगाबाद में नियुक्ति तथा महाराजा द्वारा लड़े गये युद्धों इत्यादि घटनाओं के संवत् इस प्रकार अंकित है—

“सतरे इकतीस मभि, हुय कळहळ चहु कृण ।  
 धूघ गिनीमें मंडीया धर दपण घकघूण ॥४०६॥  
 सेन फिरे सिवराज री, कर घूमर केकाण ।  
 चौथ लिये चौरंग रच भळ मुगलाण ॥४१०॥  
 सतरे से तेंतीस मभि नौरंग साह नरेस ।  
 वीजापुर उपर प्रवळ मुहिम धपी मुगलेस ॥४४०॥  
 सतरे से पेंतीस ताम सूबा दलेले ।  
 प्रवळ धाक पठाण हुकम नह कोई उधेले ॥४५५॥  
 अठतीसे आनूपसिंघ ले सूबो बळवंत ।  
 औरंगपुर उवारीथी सरहरे सामंत ॥४६६॥  
 सतरे से गुणताल मभि गांजण धरा गनीम ।  
 आजंम संभू ऊपर हीसल रची मुहीम ॥४६५॥  
 संमत चालीसे संमरस हुय पतसाह प्रफुल ।  
 औरंग आलम ने कही करी मुहीम कबूल ॥५०८॥”

कवित्त—

“सतरै से इकताल, मास बैसाप निरमळ ।  
 धवल पद्य तिथ व्रीज वळे ससिवासर निरमळ ॥  
 दत सुमत गणेश दई सरसत सु वांणी ।  
 किव अनूप कुळत्रंन ग्रंथ कासी छांगाणी …… ॥५३५॥”

अन्तिम दोहा—

“सती भिले आसीस किव, भूप अंता कुळ भांण  
 कोड जुगां लगी राज कर, वीकहरा वीकाण ॥५३६॥

इस प्रकार उक्त महाराजा के वि० सं० १७४१ तक ही घटनाएं अंकित हैं ।

अन्त में इसी कवि द्वारा रचित ‘बारा मासा’ कृति और एक गीत (पवास किसना दास रौ) की प्रतिलिपि दी गई है । पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

“श्रुंभ भूयात कविता छायाणी कासी  
लिपंत श्रीरंगाबाद करणपुरा मध्ये लि०  
छायाणी कासी ।”

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। राजा कर्णसिंह व उनके पुत्र अनूपसिंह के राज्यकाल की घटनाओं के अध्ययन हेतु उपयोगी है। ओझा आदि लेखकों ने बीकानेर राज्य के इतिहास लेखन में इसका प्रयोग नहीं किया है।

### १३३. विरद सिणगार तथा वीरमांण

१. विरद सिणगार तथा वीरमांण, करणीदान, बादर ढाढी, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. २६६४५, ४. १४.५ × १६ सेमी०, ५. ८६, ६. ८-१३, ७. वि० सं० १९३४-१९५८, ई० सन् १८७७-१९०१, धु दाडा, ८. शिवराम, शिवनारायण, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-रूम इस प्रकार है—

१. विरद सिणगार (करणीदान कृत) :-

यह 'सूरज प्रकाश' का संक्षिप्त रूप है। मिलावें ग्रंथांक २०६, रा०शो०सं०। प्रारम्भ मे एक दोहा अंकित है जो ग्रंथांक २०६ में नहीं दिया है।

प्रारम्भ—

नराताल ऐहमद नगर, नर हिन्दू'र नवाब ।  
अभी विलंद भिड़िया उमर, ज्योरा एह जवाब ।  
श्री सरसत गणपतति नमस्कार ।  
दीजिये मुज वर बुद उदार ..... ॥१२॥

पुष्पिका—

“अर्भसिंघजी री विरद सणगार संपूर्ण संवत १९३४ रा वर्षे मिति दुतीयक जेष्ठ वद ७ लिपंत दवे शिवनारायण धुनाड़ा मध्ये ।” (पत्र-२२)

२. वीरमांण राव वीरमदेजी री (बहादर ढाढी कृत) :-

इसमें राव वीरमजी राठौड़ का शौर्य-वर्णन है। इसमें मारवाड़ मे राठौड़ों की राज्य-स्थापना के पहले हुए संघर्ष पर प्रकाश पड़ता है।

प्रारम्भ—

दोहा—

“मालो राजस नगर मह, शोभत जैत शिवांण,  
यांन पेड़ वीरम थप, जुग जाहर घण जांण ॥१॥”

नीसांणी—

सुत च्यारू सलपेसरे, कुळ में किरणाल,  
राजस वंका राठवड़ वर वीर वहाला, .....आदि ।

पुष्पिका—

“इति श्री गुण वीरमाण संपूर्ण संवत १६५८ रा पोस वद १ ने लिपिकृत  
राव सीवरांम ।” (पत्र-६४)

ग्रन्थ दो व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है । ग्रन्थ पर कपड़े का  
गत्ता चढ़ा है । ग्रन्थ में अनेक पत्र रिक्त भी पड़े हैं ।

10977  
914192

— × —  
शुद्धि पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्ध पाठ
२	३१	१५'१८१४	१८१४-१५
४	२६	५.	३.
६	२७	गहाराजा	महाराजा
१३	२६	(न)	(अ)
१४	२७	(क)	(प)
१२०	१६	वा	का
१३५	१६	(६)	(५)
१७७	२६	१८.	१७.
१८२	१	२६	२६
१८६	२८	४२.	४३.
१६२	२०	६६.	६७.
३३१	२३	कुत	कृत









- ★ जन्म : सन् १९३०, माळूंगा ग्राम (जोधपुर)
- ★ शिक्षा : एम.ए., एल-एल.बी., पी-एच डी.  
(राजस्थान विश्वविद्यालय)
- ★ संस्थापक निदेशक 'राजस्थानी शोध संस्थान,  
चौपासनी, जोधपुर (१९५५)  
(जोधपुर विश्वविद्यालय से मान्यता  
प्राप्त शोधकेन्द्र)
- ★ सम्पादक : शोध पत्रिका 'परम्परा' (१९५६ से  
वर्तमान तक)
- ★ सम्पादित ग्रन्थ . इतिहास की सामग्री—बीस ग्रंथ  
प्राचीन राजस्थानी साहित्य—पचास ग्रंथ
- ★ ग्रन्थ लेखन : डिगल गीत साहित्य, राजस्थानी  
साहित्य कोष व छंद शास्त्र आदि
- ★ राजस्थानी के युग-प्रवर्तक मूर्धन्य कवि  
ग्यारह काव्य कृतिमां प्रकाशित
- ★ केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा अनेक संस्थाओं  
से पुरस्कृत व सम्मानित
- ★ शोध-निदेशक : इतिहास व राजस्थानी विषय  
(जोधपुर विश्वविद्यालय)
- ★ प्रोजेक्ट निदेशक : भारतीय इतिहास अनुसंधान  
परिषद्, नई दिल्ली
- ★ महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (फोटो  
जोधपुर) के सम्मान्य निदेशक